विदेह • साहित्य-समालोचना

नित नवल

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क

बारह कृतिक समग्र आलोचनात्मक अध्ययन

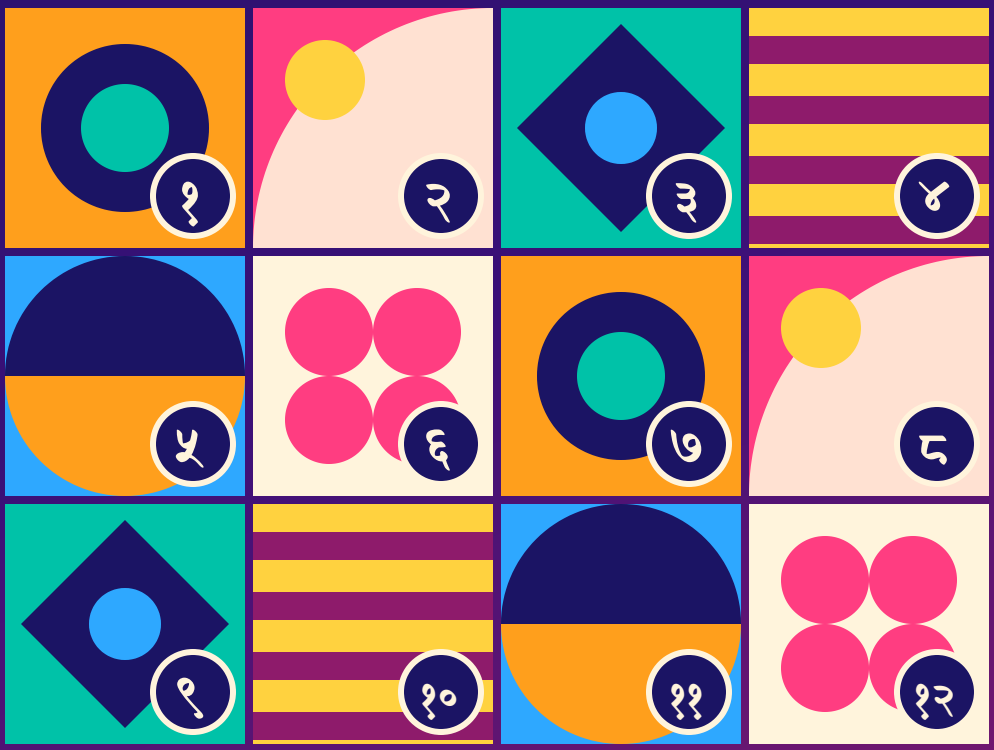

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२६

विदेह • साहित्य-समालोचना

नित नवल

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’

क बारह कृतिक समग्र आलोचनात्मक अध्ययन

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२६

प्रकाशन-विवरण

नित नवल : नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क बारह कृतिक समालोचनात्मक अध्ययन

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

मुद्रण-विन्यास : ६ × ९ इञ्च • आन्तरिक रङ्ग : द्विरङ्गी आभास

पुस्तकक क्रम

कथा, उपन्यास, शब्दचित्र, प्रवचनात्मक गद्य, कविता आ बाल-आख्यानक द्वादश आलोचनात्मक अध्ययन चारि परस्पर सम्बद्ध खण्डमे प्रस्तुत अछि।

पहिल खण्ड — लोकजीवन, कथा आ सामाजिक प्रतिरोध

- गाम-घर
- आडम्बर

दोसर खण्ड — समाज, स्त्री-अस्मिता आ उपन्यास

- गुदड़ीक लाल
- अनठिया कुकुर
- सुजाता
- सुकन्या
- परिवार

तेसर खण्ड — शब्दचित्र, सत्ता आ मिथकीय पुनर्विचार

- दिल्लीक पार्क
- याचक के नञि
- महारानी कैकेयी

चारिम खण्ड — गीतक लोकधारा आ बाल-कल्पना

- काव्य सरिता
- स्वर्ण-कमल

अनुक्रमणिका

समग्र दृष्टि : नन्दक रचनाधर्मिता.....5

पहिल खण्ड : लोकजीवन, कथा आ सामाजिक प्रतिरोध.....8

अध्याय १ गाम-घर.....9

अध्याय २ आडम्बर.....27

दोसर खण्ड : समाज, स्त्री-अस्मिता आ उपन्यास.....50

अध्याय ३ गुदड़ीक लाल.....51

अध्याय ४ अनठिया कुकुर.....76

अध्याय ५ सुजाता.....94

अध्याय ६ सुकन्या.....113

अध्याय ७ परिवार.....133

तेसर खण्ड : शब्दचित्र, सत्ता आ मिथकीय पुनर्विचार.....152

अध्याय ८ दिल्लीक पार्क.....153

अध्याय ९ याचक के नञि.....166

अध्याय १० महारानी कैकेयी.....186

चारिम खण्ड : गीतक लोकधारा आ बाल-कल्पना.....201

अध्याय ११ काव्य सरिता.....202

अध्याय १२ स्वर्ण-कमल.....221

समेकित निष्कर्ष : साहित्यिक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा.....245

सन्दर्भग्रन्थ आ साहित्यिक अभिलेख.....247

समग्र दृष्टि

नन्दक रचनाधर्मिता आ मैथिली सामाजिक कल्पना

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क रचना-संसारकेँ एकटा विधा, एकटा कथानक-प्रविधि वा एकटा सामाजिक प्रश्नमे समेटल नहि जा सकैत अछि। ‘गाम-घर’ आ ‘आडम्बर’क कथा-संसारसँ आरम्भ कऽ ‘गुदड़ीक लाल’, ‘अनठिया कुकुर’, ‘सुजाता’, ‘सुकन्या’ आ ‘परिवार’ धरि हुनकर गद्य समानता, पारिवारिक पुनर्गठन, स्त्रीक सम्मान आ सामाजिक न्यायक अनेक रूप पर विचार करैत अछि। ‘दिल्लीक पार्क’ आ ‘याचक के नञि’मे चर्चा, स्मृति आ सामाजिक व्यंग्यक रूप बदलि जाइत अछि। ‘महारानी कैकेयी’ परिचित आख्यानक नैतिक निर्णयक प्रतिपक्ष रचैत अछि; ‘काव्य सरिता’ गीत आ लोकधुनक विस्तृत क्षेत्र खोलैत अछि; आ ‘स्वर्ण-कमल’ बाल-कल्पना, लोककथा आ न्याय-बोधकेँ एक संग आबद्ध करैत अछि।

एहि विविधताक भीतर मुख्य सूत्र समाजक असमान व्यवस्था आ व्यक्तिगत नैतिक विवेकक बीचक टकराव अछि। ग्रामजीवन एतय केवल रमणीय स्मृति नहि। खेती, बेगार, श्राद्ध-भोज, जाति, दहेज, सम्पत्तिक विवाद, कार्यालयी व्यवस्था आ सार्वजनिक पदक मर्यादा—ई सभ कृति मे कमोबेश सामाजिक शक्तिक रूपमे उपस्थित अछि। कथाकार समाजसुधारक आग्रहक कारण कखनो प्रत्यक्ष तर्क देइत छथि आ कखनो पात्रक दैनिक व्यवहारक भीतर तर्कक परिणाम देखबैत छथि। एहि दूनू स्थितिक बीचक तनाव हुनकर साहित्यिक शिल्पक शक्ति आ सीमा दूनू बुझबाक आधार बनैत अछि।

प्रौढ़ सामाजिक आख्यानसभमे वर्ग आ जातिक अन्तर्सम्बन्ध बहुत बेर व्यंग्य, संवाद आ सार्वजनिक घटनाक मार्फत प्रकट होइत अछि। ‘गुदड़ीक लाल’मे श्रमिक परिवारक अनुभव आ शिक्षा-न्यायक प्रश्नक संग सामन्ती प्रभुत्वक द्वन्द्व अछि। ‘अनठिया कुकुर’मे गाम आ नगरक अलग-अलग मनोवृत्ति परस्पर सम्बद्ध होइत अछि। ‘सुजाता’ आ ‘सुकन्या’ स्त्रीक निर्णयक अधिकारकेँ विवाह, वैधव्य, परिवार आ कार्यस्थलक संस्था-सापेक्ष परिस्थितिमे

देखैत अछि। 'परिवार' स्मृतिक माध्यमसँ साझा जीवनक अर्थ खोजैत अछि। ई कृतिसभ सामाजिक प्रश्नक हिसाबसँ एक-दोसरसँ संवाद करैत अछि, तथापि प्रत्येकक रचनात्मक आकार आ पात्र-संरचना अलग अछि।

नन्दक सामाजिक चेतना केवल समस्या-चिह्नित करबामे नहि, समाधानक कल्पनामे सेहो सक्रिय अछि। ओ शिक्षाकेँ सम्मान आ अवसरक मार्ग, न्यायकेँ सार्वजनिक मूल्य, स्त्रीक आत्मनिर्णयकेँ नैतिक आवश्यकता आ पारिवारिक सहकारकेँ सामाजिक शक्ति मानि चलैत छथि। मुदा साहित्यिक आलोचनाकेँ ईहो पूछय पड़ैत अछि जे आदर्शवादी समाधान कथाक अन्त:विकाससँ कतेक स्वाभाविक रूपेँ निकलैत अछि। जखन नायक वा नैतिक वक्ता सहजतासँ जटिल सामाजिक गाँठ खोलि दैत अछि, तखन कथा अपन जीवनगत प्रतिरोधक कतेक अंश सुरक्षित रखैत अछि? एहि प्रश्नकेँ उठाएब साहित्यकारक सामाजिक उद्देश्यक अवमानना नहि, बल्कि कृतिक कलात्मक उपलब्धिक परीक्षण अछि।

'दिल्लीक पार्क' आ 'याचक के नञि' एहि समीक्षा-संकलनमे महत्त्वपूर्ण मोड़ प्रदान करैत अछि। पहिल रचनामे सार्वजनिक उद्यान आपसी अनुभव-विनिमयक मंच बनैत अछि, जकरा माध्यमसँ गामक स्मृति आ शहरी नागरिकता एक-दोसरसँ संवाद करैत अछि। दोसर रचनामे 'याचना' शब्दक नैतिक अर्थ-विस्तार भिक्षुक आ प्रतिष्ठित लाभार्थीक बीच समाज द्वारा बनाओल भेदकेँ प्रश्न करैत अछि। एतय कथानकक गतिसँ बेसी विचारक टकराव, संवादक लय आ व्यंग्यक धार महत्त्वपूर्ण भऽ उठैत अछि।

'महारानी कैकेयी'क पाठ मिथकीय पात्रक स्थापित दोषारोपणक पुनर्परीक्षा करैत अछि। मिथकक पुनर्व्याख्या साहित्यिक रूपेँ तखन महत्त्वपूर्ण बनैत अछि जखन ओ परिचित चरित्रकेँ नब प्रश्नक केन्द्रमे अनैत अछि। तथापि नैतिक पुनर्मूल्यांकन आ ऐतिहासिक प्रमाण एक वस्तु नहि; वैकल्पिक व्याख्याकेँ तर्कक आ अन्तर्विरोधक कसौटीपर जाँचब जरूरी अछि। एहि कारण एकर स्थान सामाजिक उपन्याससभक संग नहि, विचारप्रधान गद्यक अलग खण्डमे रखल गेल अछि।

कविताक रूपमे 'काव्य सरिता' वन्दना, भजन, नचारी, लोकगीत, सामाजिक व्यंग्य, मातृभाषा-चेतना आ पारिवारिक अनुभूतिक बहुधारात्मक प्रवाह अछि। 'स्वर्ण-कमल'मे एहि लोकानुभूतिक दोसर रूप भेटैत अछि : बाबीक कथावाचन, नेनासभक जिज्ञासा, वनयात्रा, चमत्कार, न्याय आ क्षमाक प्रश्न। बाल-उपन्यासक रूपेँ एकर स्वायत्त विधागत स्थिति स्वीकार करब अनिवार्य अछि। प्रौढ़ कृतिसभमे शिक्षा अथवा नैतिक उपदेशक उपस्थितिसँ ओ सभ बालसाहित्य नहि भऽ जाइत अछि। विषय, कथन-दृष्टि, अनुभवक जटिलता आ पाठकीय आयुक भेद सुरक्षित रहबाक चाही।

एहि पुस्तकक चारि खण्ड विधा आ विचारक एही परस्पर सम्बन्धकेँ देखबैत अछि। पहिल खण्ड समाजक लघु आख्यान, दोसर खण्ड दीर्घ सामाजिक उपन्यास, तेसर खण्ड शब्दचित्र आ विचारप्रधान गद्य, आ चारिम खण्ड काव्य तथा बालकथा पर केन्द्रित अछि। प्रत्येक कृतिक विवेचन ओकर अपन पात्र, रचना-विन्यास आ भाषिक प्रविधिसँ आरम्भ होइत अछि; ओकर पश्चात् व्यापक साहित्यिक, सामाजिक आ तुलनात्मक अर्थ खुलैत अछि। ई क्रम साहित्यकारक विविध रचनाकेँ एकरूप घोषित नहि करैत, बल्कि भिन्न रचनात्मक पद्धतिक भीतर चलैत समान नैतिक आग्रहक रूप स्पष्ट करैत अछि।

पहिल खण्ड

लोकजीवन, कथा आ सामाजिक प्रतिरोध

गाम-घर · आडम्बर

अध्याय १

गाम-घर

ग्राम्य जीवनक नैतिक अर्थनीति, सामाजिक व्यंग्य आ बालकथात्मक प्रतिमान

नन्द कुमार मिश्रक ‘गाम-घर’ (मैथिली कथा एवं निबन्ध संग्रह) ग्राम्य अनुभवक सहारे सामाजिक विषमता, मृत्यु-संस्कारक अपव्यय, जातिगत ऊँच-नीच, स्त्रीक सार्वजनिक भागीदारी, विवाह आ दहेज, धर्मक आडम्बर, चुनावी स्वार्थ तथा शोषणक विविध रूप पर प्रश्न करैत अछि। संग्रहक पन्द्रह रचना एकरूप साहित्यिक विधामे सीमित नहि अछि : आरम्भिक कथा ग्रामीण यथार्थ आ संवादक निकट छथि; मध्य भागमे सामाजिक-राजनीतिक चिंतन कथात्मक संरचनाक भीतर पैसैत अछि; अन्तक ‘उनटा चालि’, ‘घोड़ीक अण्डा’ आ ‘शेरक आतंक’मे दृष्टान्त, विनोद आ पशु-रूपकक बल अधिक अछि। एहि लेखमे मूल पोथीक अनुक्रमणिका, आरम्भिक निवेदन, रचनाक मुद्रित पाठ आ अन्तर्निहित आलोचनात्मक सूत्रक आधारपर पाठविश्लेषण कयल गेल अछि। मैथिली बाल-साहित्यक तुलनात्मक सन्दर्भमे एहि कृतिक महत्त्व केवल ओकर ‘बालकथा’ होयब नहि, अपितु एहि बातमे अछि जे लेखक प्रौढ़ सामाजिक व्यंग्यसँ बालोपयोगी दृष्टान्त धरि एक साहित्यिक सेतु तैयार करैत छथि। तथापि दीर्घ उपदेशात्मक अंश, पात्रक सीमित मनोवैज्ञानिक विकास आ किछु स्थानपर समाधानक सरल आदर्शीकरण एकर कलात्मक सीमा बनैत अछि। इतिहास-विवेचन साहित्य अकादेमीक प्रकाशन-अभिलेख, बाल साहित्य पुरस्कार-सूची आ भारतीय विद्यालयी पाठन सम्बन्धी नीतिगत दस्तावेजक संग तुलनात्मक धरातलपर आधारित अछि।

भूमिका : संग्रहक साहित्यिक स्थिति आ आलोचनाक प्रश्न

'गाम-घर' शीर्षक पाठककेँ स्थानविशेषक परिचित संसारमे लऽ जाइत अछि, मुदा संग्रहक कथ्य गामक सीमामे बन्द नहि रहैत। गाम लेखकक लेल एक एहन सामाजिक प्रयोगभूमि अछि जतय रीति, प्रतिष्ठा, धन, पारिवारिक आशा, धर्म, सत्ता आ न्याय परस्पर टकराइत अछि। लेखक सतहपर साधारण देखायवला घटनासँ सामाजिक प्रश्न उपजाबैत छथि : श्राद्धक भोज कतय धरि श्रद्धा अछि आ कतयसँ प्रतिष्ठा-प्रदर्शन? बरक गाछक पूजन पर्यावरण-चिन्ता आ धार्मिक रूढ़िक बीच कोन अर्थ बनबैत अछि? ग्राम-पंचायतमे स्त्रीक नेतृत्वक वास्तविक बाधा की अछि? लोकतन्त्रक भाषा आ सत्ता-व्यवहारमे कतेक अन्तर अछि?

कृतिक उपशीर्षक "मैथिली कथा एवं निबन्ध संग्रह" अछि। तेँ एकरा शुद्ध बालकथा-संग्रह मानब विधागत भ्रम होयत। कथात्मक प्रसंगक संग विचारप्रधान गद्य मिश्रित अछि; एहि मिश्रणसँ सामाजिक हस्तक्षेप तीव्र बनैत अछि, यद्यपि कखनहुँ कथा स्वयं निबन्धक वाहक बनि जाइत अछि। लेखकक 'दू शब्द'मे गाम-घरक ओझापन, जातीय भेदभाव, सामाजिक कुरीति आ चक्रचालिकेँ रचनात्मक प्रयोजनक रूपमे राखल गेल अछि। आरम्भिक मंगलकामनामे नरेंद्र झा कथाक व्यंग्यात्मकता, 'शंकरक खोज'क सामाजिक आशय आ अन्तक दुई रचनाक बालकथात्मकताक चर्चा करैत छथि। एहि दू परिपाठकेँ पाठसँ मिला देखला पर संग्रहक आन्तरिक गठन स्पष्ट होइत अछि।

एहि निबन्धक प्रश्न ई नहि जे प्रत्येक प्रसंग आधुनिक लघुकथाक कसौटीपर पूर्ण अछि कि नहि। मूल प्रश्न ई अछि जे सामाजिक सुधारक आकांक्षा साहित्यिक दृश्य, संवाद आ घटना बनिकय कतय सफल होइत अछि, आ कतय विचारक प्रत्यक्ष घोषणा बनिकय रहि जाइत अछि। बाल-साहित्यक इतिहास एहि मूल्यांकनमे एकटा तुलनात्मक कसौटी अछि; समस्त कृतिक गलत विधा-निर्धारण नहि।

कृतिपरिचय आ रचना-अनुक्रम

आवरण पर पुस्तकक नाम ‘गाम-घर’, विधा ‘मैथिली कथा एवं निबन्ध संग्रह’ आ लेखक ‘नन्द कुमार मिश्र’ मुद्रित अछि। आरम्भिक प्रकाशकीय विवरणमे श्रीमती अमल देवी आ श्रीमती शान्ता भूषण (भीखनपुर, भागलपुर) केर नाम, तथा मुद्रणमे आशा प्रिन्टिंग प्रेस, तिलकामांझी, भागलपुर अंकित अछि। लेखकक ‘दू शब्द’ पर २६.११.०४ केर तिथि अछि; ई लेखकक निवेदनक तिथि अछि, पुस्तकक निश्चित प्रकाशन-वर्षक पर्याय नहि। पश्चावरण पर लेखकक पूर्व प्रकाशित ‘विद्यार्थी’क २५.०४.२००४ केर उल्लेख भेटैत अछि। एहि कारण ‘गाम-घर’क प्रकाशन-वर्षकेँ ओहि मितिसँ अनुमानित कऽ निश्चित घोषित करब उचित नहि।

मूल अनुक्रमणिका कुल पन्द्रह रचना दर्शबैत अछि, जे मुद्रित कथा-पृष्ठ १ सँ ९९ धरि पसरल छथि। रचनाक क्रम आ पृष्ठ-सीमा निम्न प्रकार अछि। एहि क्रमसँ ईहो स्पष्ट होइत अछि जे अन्तक तीन रचना विशेष रूपसँ दृष्टान्तप्रधान अछि।

क्रम	रचना	मुद्रित पृष्ठ
1	बाबाक भोज	१–७
2	डबडबायल आँखि	८–१४
3	भोरक सपना	१५–२२
4	बरक गाछ	२३–२८
5	बुटक साग	२९–३६
6	शंकरक खोज	३७–४७
7	फेकनी माय	४८–५५
8	कोढ़	५६–६३
9	चक्र–चालि	६४–६९
10	स्वाभिमान	७०–७६

क्रम	रचना	मुद्रित पृष्ठ
11	लूट–तंत्र	७७–८१
12	दण्ड	८२–८६
13	उनटा चालि	८७–९०
14	घोड़ीक अण्डा	९१–९४
15	शेरक आतंक	९५–९९

कथाकेंद्री दृष्टि : ग्राम, परिवार, धर्म आ सत्ता

संग्रहमे “गाम” कौनो अपरिवर्तनीय, निश्चिन्त सांस्कृतिक इकाइ नहि। एतय पड़ोसीक देखादेखी खर्च बढ़ैत अछि; किसानक आजीविका प्रतिष्ठाक प्रदर्शनमे व्यय होइत अछि; जाति-आधारित दूरी धार्मिक व्यवहारक आड़मे ठाढ़ रहैत अछि; स्त्री सार्वजनिक निर्णय-क्षेत्रमे प्रवेश करय चाहैत छथि; आ राजनीति गामक सम्बन्धमे विष घोलैत अछि। लेखक आर्थिक विषमताकेँ केवल आमदनीक अन्तर नहि, अपितु लोक-व्यवहारमे प्रतिष्ठा आ अधिकारक असमान वितरणक रूपमे देखबैत छथि। एहि दृष्टिसँ संग्रहक केन्द्रीय विचार ‘नैतिक अर्थनीति’ कहल जा सकैत अछि—समाज धन केना खर्च करैत अछि, कोन खर्चकेँ प्रतिष्ठा मानैत अछि आ केकर पर ओहि व्ययक भार पड़ैत अछि।

कथक प्रायः घटनाक पहिने सामान्य सामाजिक स्थिति कहैत छथि, फेर एकटा परिवार, पात्र वा संवादक सहारे तकर उदाहरण दैत छथि। एहि क्रमसँ पाठक तुरन्त मुद्दासँ परिचित भऽ जाइत छथि। मुदा एतबे संरचना बहुत बेर कथा-संकेत, प्रसंग-विकास आ पूर्वनिर्धारित निष्कर्षक रूप धऽ लैत अछि। पात्रक क्रियाक स्वतन्त्र अवकाश कम रहि जाइत अछि। एकर प्रभाव ई अछि जे पुस्तक लोकशिक्षणक रूपमे सुलभ अछि, पर गहन मनोवैज्ञानिक अन्वेषणक कसौटीपर ओकर उपलब्धि असमान अछि।

पन्द्रह रचनाक पृथक पाठविश्लेषण

'बाबाक भोज' : मृत्यु-संस्कार आ सामाजिक प्रदर्शन

कथा फेकू बाबाक मृत्यु-सूचनासँ खुलैत अछि आ ग्रामसमुदायक प्रतिक्रिया ओकर कथात्मक पृष्ठभूमि बनैत अछि। आरम्भे मृतकक पारिवारिक हैसियत, संसाधन आ सामुदायिक प्रतिष्ठाक संकेत देल गेल अछि। अन्तिम भागमे श्राद्धक भोजक भव्य आयोजन, व्यंजनक बहुलता, बाहरी भीड़, अव्यवस्था आ धनक क्षय पाठकक सोझाँ अबैत अछि। बाहरी वैभव आ अन्तर्निहित अपव्ययक विरोध कथा-व्यंग्यक केन्द्र अछि।

महत्त्वपूर्ण ई अछि जे भोज केवल पारिवारिक घटना नहि रहैत; समाजक अदृश्य दबाव ओकर आकार तय करैत अछि। कथा प्रश्न करैत अछि जे लोकक देखादेखी कयल व्यय मृत व्यक्तिक सम्मान अछि अथवा जीवित परिवारक प्रतिष्ठा-स्पर्धा। लेखकक प्रत्यक्ष टिप्पणी कखनहुँ अन्तर्निहित व्यंग्यकेँ कम सूक्ष्म बनबैत अछि, मुदा दृश्यात्मक विवरण अर्थहीन खर्चक सामाजिक मनोविज्ञान स्पष्ट करैत अछि।

'डबडबायल आँखि' : स्मृति, पीढ़ी आ बदलैत संस्कार

कथावाचक पुरान गामक परिचित संस्कारक स्मरणसँ प्रसंग उठबैत छथि। लाल भैया-सँ जुड़ल सम्बन्ध आ बदलैत आचरणक तुलना कथा-भावनाक आधार बनैत अछि। शीर्षकक डबडबायल आँखि केवल करुणाक सजावटी प्रतीक नहि, बल्कि स्मृति आ वर्तमानक बीच नैतिक दूरीक सूचक अछि। एक दिशि पुरान आत्मीयता आ सामुदायिक सलंग्नताक स्मरण अछि; दोसर दिस नब सामाजिक व्यवहार पर अविश्वास आ क्षोभ।

लेखकक कथा-विधि स्मृतिमूलक अछि। अतीतक आदर्शीकरणक खतरा एतय मौजूद अछि : पुरान सामाजिक व्यवस्था स्वयं समानतामूलक छल, एहन निष्कर्ष बिना शर्त स्वीकार्य नहि। तथापि कथाक मूल संवेदना ई अछि जे सामाजिक परिवर्तनक मूल्यांकन केवल बाह्य सुविधा या वस्तुगत वृद्धि सँ नहि, आपसी सम्मान आ भावनात्मक जिम्मेदारी सँ सेहो होयबाक चाही।

'भोरक सपना' : जाति-व्यवस्था, पूजा आ कल्पित सामाजिक समानता

रचनाक आरम्भ भोरमे देखल गेल सपनक अनिश्चितताक चर्चासँ होइत अछि। गामक ब्रह्म-पूजामे समुदायकेँ जोड़बाक प्रसंग जातीय दूरीक प्रश्न उठा दैत अछि। "सपना"क साहित्यिक सुविधा लेखककेँ एहन समानतामूलक दृश्य कल्पना करबाक अवसर दैत अछि जे जाग्रत सामाजिक यथार्थमे कठोर अवरोधसँ टकराइत अछि। एहि कारण सपना पलायन नहि, बल्कि वर्तमानक आलोचना करबाक एकटा प्रतिकल्पनात्मक उपाय अछि।

कथाक अन्ततः स्थानीय लोकक मिलिजुलि शिक्षण, वाचनालय आदि सामुदायिक प्रयत्न दिस संकेत करैत अछि। ई रूपान्तरणक सकारात्मक कल्पना अछि, मुदा ओकर सामाजिक कार्यान्वयन कतेक कठिन अछि, ओहि प्रक्रियाक जटिलता अपेक्षाकृत कम खुलैत अछि। एतय लेखक समस्या-विवेचन आ आदर्श समाजक प्रस्तावकेँ एकसंग रखैत छथि।

'बरक गाछ' : लोक-आस्था, प्रकृति आ पर्यावरणीय जिम्मेदारी

बरक गाछ कथा-भूमिमे साधारण वनस्पति नहि : व्रत, पूजा, छाँह, विश्राम, बरसाइत आ ग्राम्य मेल-मिलापक केंद्र अछि। प्रथम चरणमे लेखक बरक गाछक सामाजिक-धार्मिक उपयोगक वर्णन करैत छथि; आगाँ संरक्षण आ सामुदायिक सहभागिताक विचार उभरैत अछि। एहि द्वैतसँ गाछक रूपक मात्र धार्मिक चिन्ह नहि, जनजीवनक सार्वजनिक स्थल बनैत अछि।

कथाक एक उपलब्धि ई अछि जे परम्पराकेँ पूर्णतः नकारि नहि दैत, बल्कि ओकर सामाजिक आ पर्यावरणीय उपयोगिता खोजैत अछि। एक सीमा ई जे पूजा-विधान आ वृक्ष-संरक्षणक सम्बन्ध अधिक विवेचित रहैत, तँ रचनाक तर्क आ गाढ़ होइत। ताहूमे गाछक आसपासक सामाजिक दृश्य गामक साझी सांस्कृतिक भूगोलक सार्थक पुनर्स्मरण करबैत अछि।

'बुटक साग' : शिक्षा, विवाह आ स्त्रीक विकल्प

एहि कथामे पढ़ाइ जारी रखय चाहनिहार युवतीक विवाह-संबन्धी दबाव प्रमुख समस्या बनि उपस्थित होइत अछि। मायक इच्छा, समाजक राय आ विद्यार्थिनी जीवनक अधूरा रहि जाएबाक सम्भावना एक-दोसरासँ गाँथल अछि। बादक प्रसंगमे शालिनी आ वैवाहिक निर्णय पाठककेँ साधारण घरेलू प्रश्नसँ स्त्रीक स्वनिर्णय आ सम्मानक बड़ प्रश्न धरि अनैत अछि।

"बुटक साग" शीर्षक अपन ग्रामीण घरेलूपनक कारण आकर्षक अछि, मुदा कथा वास्तविक बहस शिक्षा, विवाहक समय आ निर्णयक अधिकार पर केन्द्रित करैत अछि। लेखक शिक्षा-विरोधी परम्परा पर कटाक्ष करैत छथि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ देखल जाय तँ पात्रकेँ अधिक आत्मसंवादी अवकाश देल जाय, तँ स्त्री-अनुभवक जटिलता आ स्वतंत्र व्यक्तित्व बढ़ि सकैत छल; एतय परिवर्तनक पक्ष स्पष्ट अछि, पर दृष्टिकोणक विस्तार सीमित।

'शंकरक खोज' : पौराणिक कथनसँ वर्गीय आ राजनीतिक प्रश्न धरि

रचना समुद्र-मंथनक पौराणिक प्रसंगसँ शुरू भऽ जहर पान करयवला शंकरक रूपक तक पहुँचैत अछि। ओकर बाद प्रश्न आधुनिक समाजक विष—भ्रष्टाचार, लूट, आर्थिक असमानता, कर्मक्षेत्रक अन्याय, श्रमिक-शोषण आ लोकतान्त्रिक संस्थाक विकार—दिस मुड़ैत अछि। एतय शंकर कौनो निष्क्रिय दैवी समाधान नहि, बल्कि सामूहिक नैतिक साहस आ आत्ममंथनक माँग बनि उपस्थित छथि।

कथाक रूप आधुनिक निबन्धात्मक व्यंग्यक निकट अछि; पौराणिक आरम्भ पाठकक स्मृति सक्रिय करैत अछि, मुदा मध्य आ अन्तमे विमर्शक विस्तार ओकर लघुकथात्मक एकाग्रताकेँ ढीला करैत अछि। तथापि लेखकक महत्त्वपूर्ण कथन ई अछि जे परिवर्तनक लेल बाहरी उद्धारक मात्र नहि, समाजक भीतर सक्रिय जिम्मेदार व्यक्ति चाही। एहि रचनामे ग्रामीण सीमासँ बाहर राष्ट्रीय सामाजिक चिन्ताक अभिव्यक्ति सर्वाधिक स्पष्ट अछि।

'फेकनी माय' : स्त्री-नेतृत्व आ पंचायतक लोकतान्त्रिक सम्भावना

फेकनी मायक गरीबी, श्रम आ लोकजीवनक व्यवहारक चित्रसँ कथा शुरू होइत अछि। घरेलू वंचना आ जीविकोपार्जनक कठिनाईक बीच ओकरा ग्राम-पंचायतक नेतृत्वमे आगाँ बढ़ेबाक विचार बनैत अछि। कथा फेकनी मायकेँ दया-पात्र बनाकय नहि छोड़ैत; ओकर जनविश्वास, परिचय आ सामुदायिक समर्थनकेँ राजनीतिक शक्तिक स्रोत बनबैत अछि। ग्रामक शिक्षित आ सामान्य लोक मिलिकय उपेक्षित स्त्रीकेँ सार्वजनिक पद धरि पहुँचबय चाहैत छथि।

एहि प्रसंगक विशेष महत्त्व एहि मे अछि जे लोकतन्त्रक भाषाकेँ जीवित ग्रामसमुदायमे मूर्त करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। मुदा संघर्ष अपेक्षाकृत सरल बनि जाइत अछि; सत्ता-संरचनाक बाधा, जाति आ वर्गक अन्तर्विरोध, चुनावी प्रतिस्पर्धाक जटिलता आ निर्वाचित नेतृत्वक बादक प्रशासनिक प्रश्न विस्तारसँ नहि खुलैत। तथापि ई संग्रहक प्रमुख सकारात्मक कथा अछि, कारण स्त्रीक सामाजिक स्थिति परिवर्तनक केंद्र बनैत अछि।

'कोढ़' : दहेज, ऋण आ पारिवारिक नैतिकताक विघटन

कथा विवाहक तयारी आ परिवारक आर्थिक अपेक्षासँ सम्बन्धित अछि। कमलेश, विवाह-सम्बन्ध, मांगलिक अवसर आ धनक दबावक सहारे दहेजक सामाजिक हानि सोझाँ अबैत अछि। रचनामे दहेज केवल वस्तुगत विनिमय नहि, बल्कि विश्वासक अपमान आ सम्बन्धक अवमूल्यन बनि जाइत अछि। शीर्षकक "कोढ़" एकटा नैतिक रूपक अछि—व्यक्ति नहि, सामाजिक लोभकेँ रोगक रूपमे चिन्हित करबाक प्रवृत्ति।

पाठककेँ एहि कथा सँ ई विचार भेटैत अछि जे विवाहक गरिमा केनाकय लेनदेनक तर्कसँ भ्रष्ट होइत अछि। कथाकेँ उपदेशात्मक निष्कर्ष सँ अधिक पात्रसभक संकोच, भय आ आर्थिक विवशताक अन्तःसंघर्ष देल गेल रहित, तँ अनुभवक घनत्व बढ़ैत। तथापि दहेज-विरोधी तर्क ग्राम्य यथार्थक ठोस परिस्थिति सँ जुड़ल अछि।

'चक्र–चालि' : ग्रामीण राजनीति आ सामुदायिक विभाजन

लेखक आरम्भमे राजधानीक राजनीति आ गाम-घरक राजनीति बीच अन्तर चिन्हित करैत छथि। ग्रामक गुटबन्दी, एक-दोसरक विरोध, प्रतिस्पर्धी कर्मकाण्ड आ सामुदायिक आयोजनक राजनीति एहि निबन्धात्मक कथाक मुख्य सामग्री अछि। १९९९ केर नवाह आयोजनक प्रसंग द्वारा लेखक देखबैत छथि जे सामुदायिक धर्मानुष्ठान सेहो प्रतिष्ठा आ समूहगत प्रभुत्वक प्रतिस्पर्धा बनि सकैत अछि।

कथाक कथक स्वयं समुदाय द्वारा झेलल गेल अपमानक प्रसंग उठबैत छथि; एहि आत्मकथात्मक स्वर सँ आलोचना अधिक व्यक्तिनिष्ठ, पर साथे अधिक तात्कालिक बनैत अछि। 'चक्र–चालि'क एक सीमा ई अछि जे स्थानीय सत्ता-संघर्षक विविध पक्ष बराबर जटिलतासँ नहि खुलैत; लेखकक नैतिक पक्ष स्पष्ट रहैत अछि। ताहूमे ई रचना बतबैत अछि जे सामाजिक विघटन केवल "बड़ राजनीति"क देन नहि, गामक भीतरक दैनिक व्यवहारमे सेहो सक्रिय अछि।

'स्वाभिमान' : साधारण नागरिकक प्रतिष्ठा बनाम प्रभावशाली पद

रचना परिचित व्यक्तिसँ संवादक रूपमे आरम्भ होइत अछि। अधिकारी, पुलिस, चिकित्सकीय प्रतिष्ठा आ सामान्य व्यक्ति बीच व्यवहारक विषमता कथा-क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। निषाद बाबू-सँ सम्बन्धित प्रसंग स्वाभिमानक धारणा स्पष्ट करैत अछि : मान केवल पद, सम्पत्ति वा बाहरी आदेश पालनसँ नहि, बल्कि आत्मसम्मानक अनुभूतिसँ बनैत अछि।

वाचिक कथा-विधि एतय प्रभावशाली अछि; कथक एकटा घटना सुनबैत छथि आ नायक-सदृश व्यक्तिक आत्मसम्मान पर पाठकक ध्यान केन्द्रित करैत छथि। यद्यपि समाधान एक व्यक्ति-विशेषक उदार आ दृढ़ आचरण पर निर्भर बनैत अछि, रचना सामान्य जनक गरिमाक पक्षमे दृढ़ हस्तक्षेप करैत अछि।

'लूट–तंत्र' : लोकतन्त्रक भाषिक विडम्बना

शीर्षक स्वयं तीक्ष्ण व्यंग्य अछि : "लोकतन्त्र"क स्थानपर "लूट–तंत्र" सत्ता आ जन-अधिकारक बीच दूरी व्यक्त करैत अछि। गांधीवादी स्वाधीनताक स्मरणसँ आरम्भ भऽ पाठ मतदान, अपराध, भ्रष्टाचार, निरंकुश प्रशासन आ जाति-आधारित राजनीतिक विभाजनक आलोचना करैत अछि। एहि रचनामे अपेक्षाकृत स्पष्ट निबन्धात्मक संरचना अछि; कथानक कम, पर नैतिक-राजनीतिक तर्कक क्रम अधिक।

लेखक मताधिकारकेँ औपचारिक अधिकारसँ बेसी जन-जवाबदेहीक उपकरण मानैत छथि। कृतिक समयक राजनीतिक चेतनाक साक्ष्यक रूपमे ई महत्वपूर्ण अछि; किन्तु राजनीति-संबन्धी दावाकेँ ऐतिहासिक तथ्य नहि, लेखकक समकालीन आलोचनात्मक दृष्टिकोणक रूपमे पढ़ब उचित अछि। एकर भाषा उग्र नैतिक प्रतिवादक अछि, सन्तुलित राजनीतिक सर्वेक्षणक नहि।

'दण्ड' : धार्मिक पुण्यक प्रदर्शन आ नैतिक न्याय

सोनू झा आ मोनू झाक विरोधी स्वभावक सहारे कथा धर्मक बाहरी आचरण आ वास्तविक करुणाक भेद उठबैत अछि। एक पात्र सरल, सहयोगी आ उदार; दोसर धार्मिक आडम्बरक संग आत्मकेन्द्रित व्यवहार करैत अछि। रचनाक अन्तमे 'दण्ड'क धारणा प्रत्यक्ष प्रतिशोधक कथा नहि, बल्कि नैतिक आ आध्यात्मिक परिणामक बोध बनैत अछि।

दुइ विपरीत पात्रक व्यवस्था लोकदृष्टान्तक परिचित शिल्प अछि, जाहिमे पात्रसभक मानवीय जटिलता घटि जाइत अछि जाहिसँ मूल सीख स्पष्ट भऽ सकय। एहि रचनाकेँ बालोपयोगी नैतिक आख्यानक एक सीमा तक निकट मानल जा सकैत अछि; मुदा एकर न्यायबोध धार्मिक आ नैतिक धारणासँ गाँथल अछि, वैज्ञानिक सत्यापनक प्रश्न नहि।

'उनटा चालि' : ठगी, पंडितक सरलता आ चेतावनीमूलक दृष्टान्त

एकटा विद्वान, किन्तु व्यवहारमे सरल पंडितजीक परिचय देकर कथा शुरू होइत अछि। किछु ठग हुनक सहजता, सामाजिक प्रतिष्ठा आ परिस्थितिजन्य असावधानीक लाभ

उठाबैत छथि। घटनाक क्रममे कथित बुद्धिमत्ता आ वास्तविक व्यावहारिक विवेकक बीच अन्तर स्पष्ट होइत अछि। शीर्षक "उनटा चालि" अन्यायपूर्ण चालबाजी आ उलटल परिस्थिति दुनूक संकेत बनैत अछि।

लोककथाक परिचित धोखा-प्रसंगक सहायता सँ ई कथा हास्य आ सावधानीक पाठ एकसंग दैत अछि। बालक पाठक लेल एकर आकर्षण घटनाक उलटफेरमे अछि। मुदा लेखक पात्रक वर्ग-चित्रण आ नैतिक निष्कर्षकेँ सरल करैत छथि; एहन रचनाकेँ सामाजिक यथार्थक प्रत्यक्ष दस्तावेज बुझबाक बदला लोक-शिक्षणक विनोदी कथा मानब अधिक उपयुक्त अछि।

'घोड़ीक अण्डा' : असम्भव वस्तुक कारोबार आ विश्वासक ठगी

मटुरवा नामक शैतान-स्वभावक छोड़ा आ बूढ़ व्यक्ति बीचक हास्यपूर्ण सम्पर्कसँ कथाक गति बनैत अछि। असम्भव "घोड़ीक अण्डा"क कल्पना भोले विश्वास आ धूर्त व्यापारिक इच्छाक टक्कर बनबैत अछि। पाठक आरम्भसँ जानैत छथि जे एहन अण्डा असम्भव अछि; एहि कारण कथा "की होयत?"क अपेक्षा "विश्वास केना ठगल जाइत अछि?"क रुचि जगबैत अछि।

रचनाक अन्तमे समुदाय धूर्तताक पर्दाफाशक चर्चा करैत अछि आ उपभोक्ताक सावधानीक संकेत उभरैत अछि। बाल-साहित्यक दृष्टिसँ ई संग्रहक सर्वाधिक स्वाभाविक रचना मे एक अछि : कथानक छोट, वस्तु रोचक, संवाद स्पष्ट, हास्य सहज। तथापि व्यंग्यक उग्रता आ दण्डक भाषा कखनहुँ बाल-मनक अनुकूल संवेदनशील पुनर्पाठ माँगि सकैत अछि।

'शेरक आतंक' : पशु-रूपकमे निरंकुश सत्ता

सघन जंगलमे शेर आ अन्य पशुक सम्बन्ध शक्तिक असन्तुलनसँ निर्धारित अछि। अत्याचारी शेरक आतंकसँ त्रस्त प्राणी सामूहिक उपाय सोचैत छथि; रचना आगाँ चुनाव, पक्ष, मत आ सत्ता-परिवर्तनक रूपकमे विकसित होइत अछि। पशु-जगतक दृश्य पाठककेँ

आकर्षित करैत अछि, किन्तु एकर राजनैतिक आशय वयस्क समाजक सत्तासंघर्षक आलोचना सँ सोझाँ सम्बद्ध अछि।

एहि कथामे लोककथात्मक फेबल आ राजनीतिक व्यंग्यक सफल सन्धि देखबा लेल भेटैत अछि। बालपाठक पशुपात्रक संग कथा ग्रहण कऽ सकैत छथि, आ प्रौढ़ पाठक भ्रष्ट नेतृत्वक संरचनात्मक आलोचना पढ़ि सकैत छथि। अन्तमे निरंकुश सत्ता फेर रूप बदलि सकैत अछि, ई सम्भावना जटिल नैतिक प्रश्न बनबैत अछि—शासक बदलनासँ मात्र शोषण समाप्त होइत अछि कि संस्थागत सजगता सेहो चाही? एहि खुलल राजनीतिक अर्थक कारण ई रचना संग्रहक अन्तमे प्रभावशाली स्थान लैत अछि।

मूल पाठक संक्षिप्त उद्धरण : भाषिक साक्ष्य आ आलोचनात्मक अर्थ

नीचाँक उद्धरण मूल पुस्तकमे मुद्रित पृष्ठ-संख्याक अनुसार देल गेल अछि। प्रत्येक उद्धरण ओहि स्थानक स्पष्ट पठनीय मुद्रित शब्द धरि सीमित राखल गेल अछि; एतय पुनर्निर्मित, अनुमानित वा संदिग्ध पाठ उद्धृत नहि अछि। उद्धरणक पछाति देल टिप्पणी आलोचनात्मक अर्थ-विवेचन अछि, मूल पाठक हिस्सा नहि।

> 1. “पता लागल जे फेकू बाबा स्वर्गवासी भय गेलाह।” — ‘बाबाक भोज’, पृ. १

मृत्यु-सूचना सँ सामुदायिक सामाजिक नाटकक आरम्भ; असाधारण घटना नहि, साधारण गामक खबर व्यंग्यक द्वार खोलैत अछि।

> 2. “लोक कहैत अछि जे भोरक सपना सच होइत अछि मुदा हमरा विश्वास नहि भेल।” — ‘भोरक सपना’, पृ. १५

सपनाक सत्यक प्रश्न कथकक संशय आ सामाजिक यथार्थक असमानताकेँ एकसंग खोलैत अछि।

> 3. “मुदा बरक गाछक अपन अलग महत्व अछि।” — ‘बरक गाछ’, पृ. २३

एहि सानो वाक्यमे गाछक जैविक रूपसँ आगाँ लोकजीवनक सामुदायिक अर्थ निहित अछि।

> 4. “एकटा पंडितजी छलाह। प्रकांड विद्वान आ कर्मकाण्डी सेहो रहथि।” — ‘उनटा चालि’, पृ. ८७

व्यक्तिक विद्वत्ता आ व्यवहारिक विवेकक अन्तर पर ठग-कथाक आरम्भिक नाटकीय व्यंग्य।

> 5. “ई घोड़ीक अण्डा छियैक।” — ‘घोड़ीक अण्डा’, पृ. ९१

असम्भव दावाक हास्य कथामे विश्वास आ छलक सम्बन्धक मुख्य सूत्र।

> 6. “एकटा बहुत पैघ आ सघन जंगल छल।” — ‘शेरक आतंक’, पृ. ९५

लोककथात्मक अवकाश निर्मित कर राजनीतिक पशु-रूपकक प्रवेश।

उद्धरणक चयनक सीमा जानि-बुझि छोट राखल गेल अछि : पूर्ण प्रसंगकेँ अर्थ-व्याख्याक माध्यमसँ प्रस्तुत कयल गेल अछि, विस्तृत मूल पाठ प्रतिलिपि कयल नहि गेल। एहि सँ लेखकक भाषिक स्वर, मुद्रित पृष्ठ-सन्दर्भ आ आलोचनात्मक विवेचनक बीच स्पष्ट अन्तर बनल रहैत अछि।

भाषा, वाचिकता, कथाशिल्प आ सौन्दर्यबोध

संग्रहक प्रमुख शैली प्रत्यक्ष सम्बोधन आ बोलचालक निकट भाषिक लय अछि। “हम देखलहुँ”, “ओना तँ”, “मुदा” आ “जखन कि” सन वाक्य-विन्यास कथककेँ पाठकक संग संवादमे रखैत अछि। कहावत-जेकाँ परिचित निर्णयात्मक वाक्य, ग्रामीण अर्थव्यवहारक शब्द, भोज-भातक प्रसंग, पंचायत-चुनाव आ घर-आँगनक दृश्य मिलिकय स्थानीय अनुभवकेँ भरोसेमन्द बनबैत अछि। एहि सुलभताक कारण सामाजिक प्रश्न जटिल होइतहुँ कथा दूरस्थ नहि होइत।

संरचनागत दृष्टिसँ पहिल छह-सात रचनामे घटना, स्मृति, घरेलू संवाद आ सामुदायिक व्यवहारक अनुपात बदलैत रहैत अछि। 'शंकरक खोज' आ 'लूट–तंत्र'मे निबन्धक प्रधानता स्पष्ट अछि; 'उनटा चालि' आ 'घोड़ीक अण्डा'मे घटनाक अनुक्रम आ विडम्बनापूर्ण मोड़ कथाक केन्द्र बनैत अछि; 'शेरक आतंक' पशु-रूपक द्वारा राजनीतिक सन्देश पहुँचबैत अछि। एहि विविधताकेँ पुस्तकक कमजोरी मात्र नहि, ओकर विधागत आत्मपरिचय 'कथा एवं निबन्ध'क एक प्रामाणिक संकेत मानल जा सकैत अछि।

रचनाक नैतिक वाक्य बहुत बेर पाठककेँ अर्थ खोजबाक स्वाधीनता कम दैत अछि। पात्रक अस्पष्टता, मनोवैज्ञानिक द्वन्द्व, बहुअर्थी प्रतीक आ अनिश्चित अन्त आधुनिक कथा-सौन्दर्यक जे साधन छथि, हुनक उपयोग सीमित अछि। एकर बावजूद व्यंग्यक व्यावहारिक ऊर्जा उल्लेखनीय अछि : लेखक छोटी घटना सँ सामाजिक संस्थाक आलोचना गढ़ैत छथि आ अनेक कथा पाठककेँ आचरणपर विचार करबा लेल बाध्य करैत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहासमे कृतिक स्थान : तुलनात्मक अनुशीलन

लोककथा, पाठक-वर्ग आ विधाक समस्या

बाल-साहित्यक इतिहास लिखैत पहिल अंतर स्मरणीय अछि : बालककेँ पढ़ाओल जा सकयवला प्रत्येक रचना आवश्यक रूपसँ बालक लेल लिखल नहि होइत अछि। लोक-आख्यान, पशु-दृष्टान्त, नीतिकथा आ सामाजिक व्यंग्य परस्पर लग छथि, मुदा हुनका बीच पाठकक आयु, अनुभव, भाषा, कथात्मक जटिलता आ रचनाक मूल प्रयोजनक अन्तर रहैत अछि। 'गाम-घर' एहि अर्थमे संक्रमणशील संग्रह अछि। 'बाबाक भोज', 'कोढ़', 'स्वाभिमान' आ 'लूट–तंत्र' प्रौढ़ सामाजिक जीवनक आर्थिक-संस्थागत प्रश्न उठबैत अछि। 'उनटा चालि', 'घोड़ीक अण्डा' आ 'शेरक आतंक'मे लोकदृष्टान्तक सहज विनोद आ रूपक बालपाठकीय प्रवेशक अनुकूल अछि।

रचनाक प्रकाशकीय आरम्भक मंगलकामना सेहो एहि भेदक पुष्टि करैत अछि : ओतय अन्तक किछु रचनाक बालकथात्मक स्वरूपक संकेत अछि, समस्त पुस्तककेँ बालसंग्रह

घोषित करबाक आग्रह नहि। एकर सही साहित्येतिहासिक स्थान मैथिली सामाजिक-व्यंग्यक भीतर एहन कथाभूमिक रूपमे अछि जाहिसँ बालोपयोगी दृष्टान्तक दिशा निकलैत अछि।

१९९०क दशकक बहुभाषिक बालपाठ सँ स्थानीय कथा धरि

साहित्य अकादेमीक मैथिली प्रकाशन-सूची बतबैत अछि जे १९९०क दशकसँ बाल-साहित्यक लेल मूल मैथिली कथा आ अन्य भाषाक अनुवाद दुनू दिशामे पुस्तक उपलब्ध कराओल जाइत रहल। उदाहरणार्थ जयंत नार्लीकरक विज्ञान-कथाक सुरेश्वर झा कृत अनुवाद ‘अंतरिक्ष में विस्फोट’ (१९९६), ‘रवींद्रनाथक बाल साहित्य’क उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’ कृत अनुवाद (१९९७), लीलावती भागवतक मराठी कथा ‘जंगलमे एक रात’क अनुवाद (१९९८), आ चंद्रनाथ मिश्र ‘अमर’ सम्पादित मूल मैथिली कथा-संचयन ‘कथा किसलय’ (१९९९) केर प्रकाशन-अभिलेख उपलब्ध अछि। लक्ष्मीनाथ बेजबरूआक असमिया कथासँ ‘ओ बाबा : की बउआ’ (अनुवाद गोविंद झा, २०००) सेहो एहि सूचीमे अछि।

एहि प्रकाशित अभिलेखसँ एकटा सीमित, किन्तु ठोस निष्कर्ष निकलैत अछि : मैथिली बालपाठक लेल विज्ञान, अनूदित लोककथा, रवीन्द्र-साहित्य आ मूल मैथिली रचनाक समवर्ती प्रयत्न छल। एकर तुलना ‘गाम-घर’क अन्तिम आख्यानसँ करैत काल ज्ञात होइत अछि जे मिश्रक बालोपयोगी कथा विज्ञान-आधारित जिज्ञासाक अपेक्षा लोकदृष्टान्त, नैतिक प्रश्न आ सामाजिक व्यंग्यक परम्परा सँ जुड़ैत अछि। ई तुलना प्रकाशन-वर्ष आ विधा-श्रेणी पर आधारित अछि; उपर्युक्त पुस्तकसभक सम्पूर्ण पाठक तुलनात्मक प्रत्यक्ष विश्लेषण एहि आलेखक दावा नहि।

२०१०–२०२५ : मान्यताप्राप्त बालविधाक विस्तार

साहित्य अकादेमीक आधिकारिक मैथिली बाल साहित्य पुरस्कार-सूची (२०१०–२०२५) बाल-साहित्यक विधागत विविधताक प्रमाण दैत अछि। २०१०मे तारानन्द वियोगीक ‘ई भेटल तन कि भेटल’ (कथा), २०११मे मायानाथ झाक ‘जकर नारी चतुर होइ’ (कथा),

२०१२मे मुरलीधर झाक 'पिलपिलहा गाछ' (कथा), २०१३मे धीरेन्द्र कुमार झाक 'हमरा बीच विज्ञान' (निबन्ध), २०१४मे जीवकान्तक 'हमर अठन्नी खसलै वन मे' (कविता), २०१५मे रामदेव झाक 'हंसनि पान आ बजन्ता सुपारी' (उपन्यास), २०१७मे अमलेन्दु शेखर पाठकक 'लालगाछी' (उपन्यास), २०१८मे वैद्यनाथ झाक 'खिस्सा सुनु बाउ' (कथा) आ २०१९मे ऋषि बशिष्ठक 'ई फूलक गुलदस्ता' (कथा) सूचीबद्ध छथि।

बादक क्रममे २०२०मे सियाराम झा 'सरस'क काव्य, २०२१मे अनमोल झाक कविता, २०२२मे वीरेन्द्र झाक 'उड़न-छू' (कथा), २०२३मे अक्षय आनन्द 'सन्नी'क कविता 'ओल कतरा, झोल कतरा', २०२४मे नारायणजीक 'अनार' आ २०२५मे मुन्नी कामतक 'चुक्का' सम्मिलित अछि। एहि आधिकारिक नामावलीसँ एतबे सिद्ध होइत अछि जे कथा, कविता, उपन्यास, जीवनी आ विज्ञान-निबन्ध बाल-साहित्यक मान्य सृजन-क्षेत्र बनल। पुरस्कार-सूचीकेँ बाल-साहित्यक सम्पूर्ण इतिहास, गुणवत्ताक एकमात्र मापदण्ड अथवा अन्य रचनाक अनुपस्थितिक प्रमाण मानब अनुचित होयत।

'गाम-घर' एहि पछिला संस्थागत परिदृश्यसँ पहिनुका सामाजिक बोधक एकटा अनोखा सेतु प्रस्तुत करैत अछि : एके संग्रहमे वयस्क सामाजिक विवेचन आ बालसुलभ दृष्टान्तक संयोग। 'घोड़ीक अण्डा' हास्यक कारण सहज बालोपयोगी अछि, जबकि 'शेरक आतंक'क चुनावी रूपक उच्चतर आयु-वर्ग वा शिक्षकक मध्यस्थतासँ अधिक सार्थक भऽ सकैत अछि। एहि विभाजनकेँ आयु-श्रेणीकरणक शाश्वत नियम नहि, पाठकीय उपयोगिताक विवेकपूर्ण प्रस्ताव मानल जाय।

मातृभाषा, चित्र आ स्थानीय अनुभव : शैक्षिक कसौटी

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, बुनियादी अवस्था (२०२२), स्थानीय संस्कृति सँ जुड़ल कथा-गीत, मातृभाषाक पाठ्य-सामग्री, आयु-अनुरूप कथाचयन, चित्र-सहायक पठन आ विविध बोलिक प्रतिष्ठाक महत्त्व पर बल दैत अछि। एहि नीतिगत कसौटीपर 'गाम-घर'क गाम-घरक परिचित भाषा आ लोकदृष्टान्त उपयोगी सामग्री बनि सकैत अछि; मुदा मुद्रित स्वरूप मुख्यत: दीर्घ गद्यक अछि, चित्रित आरम्भिक पाठक-पुस्तकक नहि। बालपाठक लेल

चुनिन्दा कथा, कठिन शब्दक सहायता, दृश्यात्मक प्रस्तुति, संवादोत्तर प्रश्न आ भिन्न आयु-वर्ग अनुकूल सम्पादन आवश्यक भऽ सकैत अछि।

उदाहरणार्थ 'घोड़ीक अण्डा'क संक्षिप्त नाट्यरूपान्तरण पाठककेँ अफवाह आ प्रमाणक अन्तर बुझा सकैत अछि। 'शेरक आतंक' लोकतन्त्र, बहुमत आ नागरिक जिम्मेदारी पर संवादक आधार बनि सकैत अछि। 'फेकनी माय' लिंगसमानता आ ग्राम-शासन पर उच्चतर कक्षामे विमर्श सम्भव बनबैत अछि। एहि प्रस्तावसभकेँ मूल रचनाक अर्थसँ अलग नव कथ्य मानल जाय, लेखक द्वारा निर्मित शैक्षिक उपकरण नहि।

समग्र मूल्यांकन : उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ आलोचनात्मक सीमा

कृतिक मुख्य उपलब्धि सरल मैथिलीमे सामाजिक अनर्थक पहिचान करब आ ओकरा कथा-स्थितिक माध्यमसँ साझा बहस बनायब अछि। 'बाबाक भोज'मे खर्चक प्रताप, 'भोरक सपना'मे जाति-उन्मूलनक कल्पना, 'बुटक साग'मे विवाह-शिक्षाक द्वन्द्व, 'फेकनी माय'मे स्त्रीक नेतृत्व, 'कोढ़'मे दहेज-विरोध, 'लूट–तंत्र'मे लोकतन्त्रक विडम्बना आ 'शेरक आतंक'मे निरंकुश सत्ताक प्रतीकात्मक प्रस्तुति एक-दोसरासँ सम्बन्धित नैतिक प्रश्नक शृंखला बनबैत अछि। लेखकक सामाजिक प्रतिबद्धता इन रचनासभमे निरन्तर उपस्थित अछि।

द्वितीय उपलब्धि विधागत मिश्रण अछि। कथा, संस्मरणात्मक कथन, सामाजिक निबन्ध, धार्मिक दृष्टान्त, लोकहास्य आ पशुकथा एके संग्रहमे छथि। एहि बहुविधता सँ अलग-अलग पाठक-समूहक प्रवेश सम्भव अछि। विशेषतः अन्तिम तीन रचनामे स्थानीय कथोपकथन आ लोकप्रचलित विनोद सामाजिक व्यवस्था पर अप्रत्यक्ष टिप्पणी करैत अछि।

सीमासभ सेहो स्पष्ट अछि। अनेक स्थानपर कथक घटना सँ पूर्वे निष्कर्ष बता दैत छथि; फलतः पात्रक स्वाधीनता सीमित आ कथात्मक कौतूहल क्षीण होइत अछि। सामाजिक समस्याक समाधान कखनहुँ आदर्श पात्रक सदाशयता वा सामुदायिक एकमततापर

अत्यधिक निर्भर अछि। स्त्री-पात्रक समर्थक प्रस्तुति रहितहुँ ओकर आन्तरिक अनुभवक सूक्ष्म अन्वेषण अपेक्षाकृत कम अछि। राजनीतिक विवेचनमे तीक्ष्ण व्यंग्य कतिपय स्थानपर विश्लेषणक बहुपक्षीयता पर भारी पड़ैत अछि। इएह कारण एहि संग्रहकेँ सैद्धान्तिक आख्यान नहि, सामाजिक हस्तक्षेपक कथात्मक पुस्तक कहब अधिक सटीक होयत।

मुद्रित पुस्तकक स्थानीय प्रकाशन-विवरण, समर्पण, मंगलकामना आ आत्मीय ‘दू शब्द’ ओकर सांस्कृतिक वातावरणक प्रमाण छथि। ई कृति केवल पृथक कथासभक योग नहि; एक लेखकक समाज-सम्बद्ध नैतिक चेतनाक संगठित अभिव्यक्ति अछि। तखन साहित्यिक इतिहासमे एकर स्थान निर्धारित करैत समय क्षेत्रीय अनुभव आ कलात्मक रूपदृष्टि दुनूकेँ समान महत्व देब आवश्यक अछि।

निष्कर्ष

नन्द कुमार मिश्रक ‘गाम-घर’ मिथिलाक सामाजिक जीवनक ओहि बिन्दु पर केन्द्रित अछि जतय परम्परा, आधुनिक अधिकार-बोध आ सामुदायिक नैतिकता लगातार मोलभाव करैत अछि। संग्रहक कथामे ग्राम्य अनुभव अपन स्थानीय रङ्ग बनौने रहैतो राष्ट्रीय सामाजिक समस्यासँ संवाद करैत अछि। लेखक दोसराक पीड़ा, अपव्यय, लूट, भेदभाव आ अन्यायक विरुद्ध स्पष्ट दृष्टि रखैत छथि; एहि स्पष्टताक कारण अनेक प्रसंग पाठककेँ विचार करबाक सीधा आमन्त्रण दैत अछि।

बाल-साहित्यक दृष्टिसँ एकर स्थान विशेष सावधानीसँ चिन्हित करबाक चाही। सम्पूर्ण ‘गाम-घर’ बाल-साहित्य नहि अछि, किन्तु ओकर भीतर बालोपयोगी दृष्टान्तक सशक्त तत्त्व उपस्थित अछि। ‘उनटा चालि’क ठगी-विवेक, ‘घोड़ीक अण्डा’क हास्यपूर्ण अविश्वसनीय दावा आ ‘शेरक आतंक’क पशु-राजनीति बालपाठकीय पाठ, उच्चतर कक्षा आ प्रौढ़ आलोचना तीनू स्तर पर अलग-अलग सम्भावना दैत अछि। एहि प्रकार ‘गाम-घर’केँ मैथिली ग्राम्य सामाजिक-व्यंग्य आ लोकाधारित बालकथात्मक रूपबीचक सेतु मानब एकर सन्तुलित साहित्यिक मूल्यांकन होयत।

अध्याय २

आडम्बर

लोकजीवन, सामाजिक पाखण्ड आ प्रतिरोधक कथा-संरचना

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘आडम्बर’ (२०१७) बीसटा मैथिली कथाक संग्रह अछि, जकर केन्द्रमे मिथिलाक गाम-समाज, पारिवारिक सम्बन्ध, श्राद्ध-भोजक प्रतिष्ठा, जातीय असमानता, चुनावी राजनीति, शिक्षा, श्रम, सम्पत्ति, धार्मिक विश्वास आ सार्वजनिक नैतिकताक प्रश्न अछि। शीर्षक-कथा सामाजिक प्रदर्शनक मनोविज्ञान खोलैत अछि; अन्य कथामे ‘आरक्षण’, ‘लोकतंत्र’, ‘एतेक जाति किएक?’ आ ‘रेल-यात्रा’ समानता तथा संस्थागत व्यवहारक बहसक रूप धारण करैत अछि। ‘बेगार’ वर्गीय निर्भरता, ‘लाश’ सम्पत्ति आ पारिवारिक स्वार्थ, ‘कविक जिनगी’ रचनाकारक सामाजिक स्थिति, आ ‘जानि कऽ बेसाहब’ धन-संग्रह तथा परोपकारक नैतिक द्वन्द्व प्रस्तुत करैत अछि। एहि अध्ययनमे मुद्रित विषय-सूची द्वारा निर्धारित बीसो कथाक क्रम आ पृष्ठसीमा मानिकय पृथक पाठविश्लेषण, कथ्य-शिल्पक परीक्षण, भाषिक स्वरूप, आलोचनात्मक सीमा तथा मैथिली बाल-साहित्यक ऐतिहासिक परिदृश्यसँ विधागत तुलनाक प्रयास कएल गेल अछि। मूल पुस्तकक सामाजिक कथा-साहित्य आ सचेत बाल-किशोर साहित्यक बीच भेदकेँ सुरक्षित रखैत ई लेख तर्क करैत अछि जे ‘आडम्बर’क विशेषता विवादास्पद विषय पर लोकभाषी सार्वजनिक संवाद आरम्भ करब अछि; ओकर सीमा कतिपय ठाम कथाक भीतर प्रत्यक्ष उपदेशक अत्यधिक विस्तार अछि।

प्रस्तावना : शीर्षकक विडम्बना आ कथा-संग्रहक स्वर

‘आडम्बर’ शब्दसँ बाह्य प्रदर्शन, प्रतिष्ठा-प्रेम आ वास्तविक आचरणसँ अलग देखाबटी मूल्यक बोध होइत अछि। संग्रहक शीर्षक एतबे अर्थ तक सीमित नहि रहैत अछि। बीस कथा पढ़लापर ई शब्द सामाजिक संस्थासभक ओहि आन्तरिक विसंगतिपर टिप्पणी बनि

जाइत अछि जतय धर्मक आयोजन करुणाक विकल्प बनैत अछि, चुनाव न्यायसँ कटि जाइत अछि, शिक्षा रोजगारक अनिश्चिततासँ टकराइत अछि, आ धन-संग्रह सामाजिक दायित्वकेँ विस्मृत कऽ दैत अछि। कथा-संसारक पात्र सामान्यतः महानगरीय विशेषाधिकार प्राप्त नायक नहि, बल्कि गाँवक किसान, शिक्षक, निर्भर श्रमिक, गरीब परिवार, राजनीतिक आकांक्षी, कवि, रिश्तेदार आ गामक बतकहीमे संलग्न लोक छथि।

एहि कथासभमे हास्य प्रायः ऊपरी परत अछि; भीतरी बुनावटमे असुरक्षा, असमानता, मानवीय अपमान आ आत्मरक्षा चलैत रहैत अछि। व्यंग्यक कथाकार पाठककेँ एकटा निष्कर्ष धरि पहुँचेबाक प्रयत्न करैत छथि, मुदा सँगे ई प्रश्न उठैत रहैत अछि जे साहित्यिक कथा की विमर्शक मंच मात्र अछि, अथवा ओ पात्रक विशिष्ट जीवन-स्थितिसँ स्वतन्त्र कलात्मक अनुभूति सेहो रचैत अछि। संग्रहक उपलब्धि आ सीमा दूनू एहि तनावमे निहित अछि।

पुस्तकक मुद्रित प्रकाशन-विवरण अनुसार प्रथम संस्करण २०१७ मे गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, दरभंगासँ प्रकाशित भेल। मूल्य १५० टाका निर्दिष्ट अछि। पुस्तकक कथा-पृष्ठ १ सँ १६० धरि अंकित अछि। मुखपृष्ठ आ अन्दरक प्रस्तुतिमे लेखकक नाम नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’ देल अछि। आरम्भिक ‘दू शब्द’ तथा ‘लेखकीय’क पश्चात् बीस कथाक अनुक्रम आओर मुद्रित पृष्ठाङ्क देल गेल अछि। एतेक सामग्री समीक्षा लेल महत्वपूर्ण अछि, कारण एहि आधारपर कृति केँ स्वतंत्र कथा-संग्रहक रूपमे पहचानल जाइत अछि, बालकथा-संकलन वा बाल-उपन्यासक रूपमे नहि।

कथासंग्रहक रूपरेखा आ कथा-अनुक्रम

एहि विवेचनक प्राथमिक पाठ २०१७क ‘आडम्बर’क मुद्रित संस्करण अछि। कथाक नाम आ आरम्भिक पृष्ठ विषय-सूचीसँ मिलाओल गेल अछि; यथास्थान जे पृष्ठाङ्क देल गेल अछि, से पुस्तकमे मुद्रित कथा-पृष्ठक अछि। कथावस्तुक विवेचनमे पात्र, प्रसंग, संवाद, अन्त आ कथन-शैलीक पारस्परिक सम्बन्धपर बल देल गेल अछि। पाठविश्लेषणक

प्रयोजन लेखकक कथित ‘सन्देश’ दोहरायब मात्र नहि, बल्कि कथाक तनाव, कथाकारक हस्तक्षेप, सामाजिक परिस्थिति आ रचनात्मक परिणतिक परीक्षण करब अछि।

उद्धरणक रूपमे केवल स्पष्ट पठनीय, शब्दशः पुष्ट छोट अंश ग्रहण कएल गेल अछि। जतय पाठक अक्षर-क्रम निश्चित रूपसँ स्थापित नहि भेल, ओतय कथ्यक विश्लेषण परोक्ष वर्णनक माध्यमसँ कएल गेल अछि। एहि कारण विस्तृत कथासारकेँ मूल पाठक स्थानापन्न नहि मानल जाए। विदेहक पुस्तक-सूची, बाल-साहित्य सूची, गद्य-सूची आ समानान्तर साहित्य-इतिहासक सूचीकरण तुलनात्मक सन्दर्भ प्रदान करैत अछि; केवल सूचीमे प्रविष्ट होयब ककरो पुस्तकक सम्पूर्ण अन्तर्वस्तु पढ़ि लेल जाएबाक प्रमाण नहि अछि। तेँ तुलनात्मक खण्डमे सामग्रीक प्रमाण-स्तरक भेद राखल गेल अछि।

कथा-अनुक्रम आ मुद्रित पृष्ठसीमा

क्रम	कथाक शीर्षक	मुद्रित पृष्ठ
1	आडम्बर	1–6
2	रोपल गाछ बबूर	7–15
3	पश्चाताप	16–23
4	ओझा लेखेँ गाम बताह	24–28
5	आरक्षण	29–36
6	लोकतंत्र	37–46
7	रेल-यात्रा	47–52
8	एतेक जाति किएक?	53–65
9	लाश	66–76
10	हर्ट एटैक	77–84
11	बेगार	85–91

क्रम	कथाक शीर्षक	मुद्रित पृष्ठ
12	परी-कथा	92–103
13	कुकुरुक नाङरि	104–113
14	लति	114–123
15	कविक जिनगी	124–132
16	उद्यान	133–137
17	नरकक यात्रा	138–144
18	संकेत	145–150
19	अरजल भोग	151–155
20	जानि कऽ बेसाहब	156–160

स्रोत : नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’, आडम्बर, कथा-क्रम; अन्तिम पृष्ठक निर्धारण अगिला कथाक आरम्भ तथा अन्तिम कथा-पृष्ठ १६०क आधारपर।

संग्रहक कथा-दृष्टि : लोकवृत्त, संवाद आ व्यंग्य

‘आडम्बर’क कथा-परिसरकेँ तीन परस्पर गुँथल वृत्तमे देखल जा सकैत अछि। पहिल वृत्त गामक पारिवारिक-सामाजिक व्यवहार अछि, जतय श्राद्ध, भोजन, प्रतिष्ठा, रोग, रिश्तेदारी, विवाह आ मृत्युसँ जुड़ल प्रश्न उपजैत अछि। दोसर वृत्त सार्वजनिक संस्थाक अछि, जतय आरक्षण, चुनाव, जाति, शिक्षा, रेलयात्रा आ वेतनभोगी पेशाक अनुभव प्रवेश करैत अछि। तेसर वृत्त दृष्टान्त तथा नैतिक कल्पनाक अछि, जतय परी-कथा, नरक-यात्रा, कविक स्थिति आ धन-पुण्यक तर्क बहस बनैत अछि। ई विभाजन कठोर नहि, किएक तँ परिवारक भीतर सत्ता अछि आ सार्वजनिक व्यवस्थाक भीतर निजी स्वार्थ।

लेखकक बल संवादपर अछि। पात्र अकसर प्रश्न उठबैत छथि, प्रतिपक्ष तर्क दैत अछि, आ घटना धीरे-धीरे विचार-विनिमयमे रूपान्तरित होइत अछि। एहि शिल्पक सामाजिक लाभ ई जे जाति, शोषण, गरीबी वा धार्मिक विश्वास सन मुद्दा पाठकसँ दूर नहि रहैत अछि। एकर कलात्मक जोखिम सेहो अछि : पात्रक व्यक्तिगत आवाज कतहु-कतहु लेखकक प्रत्यक्ष भाषणमे विलीन होइत देखाइत अछि। कथाकार जखन पात्रक मौन, संकोच, भय, लालच आ असमर्थताकेँ घटना द्वारा व्यक्त करैत छथि, तखन कथा अधिक प्रभावकारी बनैत अछि; जखन ओ समाधान पूर्ण वाक्यमे घोषित कऽ दैत छथि, तखन अर्थक बहुलता सीमित होइत अछि।

मैथिली लोक-उक्ति, गामक रोजमर्रा व्यवहारक शब्द, सहज विनोद, सम्बोधन आ विनम्र-अविनम्र बोलचाल संग्रहक भाषिक पहचान अछि। भाषा मुख्यत: कथ्यकेँ पाठक लग अनबाक माध्यम अछि, सजावटी संस्कृतनिष्ठ गद्य नहि। तथापि राजनीति आ न्याय सम्बन्धी कथामे नीतिगत विचारसँ जुड़ल आधुनिक शब्दावली लोक-प्रयोगक संग-संग चलैत अछि। एहि मिश्रणमे समकालीन समाजक परिवर्तित अनुभव दखल दैत अछि।

बीस कथाक पृथक पाठविश्लेषण

आडम्बर

संग्रहक पहिल कथा श्राद्धक आयोजनसँ आरम्भ होइत अछि। कथाक आरम्भिक पंक्ति —"आइ सांकतेक बाबाक श्राद्ध थिकन्हि ।" (पृ. १)—सम्पूर्ण सामाजिक प्रसंग तुरन्त स्थापित करैत अछि। मुदा कथा शोकक निजत्वसँ बेसी श्राद्धक सामाजिक दृश्य, अतिथि-संख्या, भोज, श्रम आ प्रतिष्ठाक सन्तुलनपर केन्द्रित अछि। सांकतेक पारिवारिक आयोजन गामक सामूहिक निगाहक अधीन भऽ जाइत अछि; 'सभकेँ देखाबय' आ 'काज करय'क बीच दूरी बढ़ैत अछि।

एहि कथाक वास्तविक व्यंग्य कर्मकाण्डक अस्तित्वपर नहि, ओकर प्रदर्शनप्रिय सार्वजनिक रूपपर अछि। बड़का आयोजन मानवीय सहानुभूतिक प्रमाण नहि बनि पबैत अछि। बाप-मायक स्मृतिसँ जुड़ल संस्कार जखन सामाजिक प्रतियोगिता बनैत अछि, तखन

मूल्यक उलटफेर देखाइत अछि। कथाक अन्त प्रश्नोत्तर आ तर्कमार्फत आडम्बरक विकल्प सोचबाक आग्रह करैत अछि। ई कहानी शीर्षक-निर्धारणक कारण संकलनक व्याख्यात्मक प्रवेश-द्वार अछि, मुदा कतिपय विस्तृत वार्तालाप कथा-गतिकेँ धीमा सेहो करैत अछि।

रोपल गाछ बबूर

कथाक आरम्भमे भान आ हुनकर पत्नी रीता गामक सहानुभूतिक प्रतीक्षामे छथि। पारिवारिक अन्याय आ सामाजिक व्यवहारक बीच फँसल व्यक्ति सभक छवि एहि प्रसंगमे उभरैत अछि। 'रोपल गाछ बबूर' मुहावरात्मक शीर्षक अछि : अपन कएल निर्णय, पूर्व व्यवहार आ ओकर फल परस्पर जुड़ैत अछि। किएक तँ कथा सामाजिक मूल्यांकनक वातावरणमे घटित होइत अछि, एकरा केवल निजी 'गलतीक दण्ड' मानब पर्याप्त नहि।

कथामे आत्मनिर्णय, सामाजिक दायित्व आ सम्बन्धक परिणामक बीच सम्बन्ध पर विचार कएल गेल अछि। कथा जखन पुरान निर्णयक स्मरण आ वर्तमान असहायताकेँ जोड़ैत अछि, तखन नैतिकता उपदेशक अपेक्षा जीवनक अनुभव बनैत अछि। अन्तभागमे गाँवक ओर लौटब आ सम्बन्धक पुनर्विचारक प्रसंग कथा केँ पूर्णत: दण्डात्मक बनबाक सँ रोकैत अछि। एतय विचारणीय प्रश्न ईहो अछि जे न्याय करबाक अधिकार कोना सामाजिक जमात अपना हाथमे लैत अछि, आ पीड़ित लोकक आवाज ओकर बीच कतय बचैत अछि।

पश्चाताप

'पश्चाताप'क केन्द्रमे रोग, निर्धनता आ परिवारक अस्थिरता अछि। राघवक बीमारी, इलाजक कठिनाई, सीमित संसाधन आ अपन लोकसँ सहायता अपेक्षा करबाक बाध्यता कथा केँ तत्काल सामाजिक धरातल प्रदान करैत अछि। गरीबी एहि कथामे कोनो अमूर्त दुर्दशा नहि, बल्कि उपचारक विकल्प घटा दैत वास्तविक परिस्थिति अछि।

कथाक अन्त दिस सामाजिक सम्बन्ध आ अतीतक व्यवहारक जाँच महत्वपूर्ण होइत अछि। पछतावाक भाव मात्र व्यक्तिगत मन:स्थिति बनि नहि रहैत; ओ सहायता, दायित्व आ सामाजिक उपेक्षाक आलोचनासँ जुड़ैत अछि। कथाकारक सहानुभूति पीड़ित परिवारक

संग अछि, मुदा आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे व्यक्तिगत पश्चातापसँ इलाज, जीविका आ सामाजिक सुरक्षा सन संरचनागत समस्याक समाधान कतेक सम्भव अछि। साहित्यिक प्रभाव ओतय बेसी अछि जतय पात्रक असुरक्षा संवादक तुलनामे ठोस घटना द्वारा प्रकट होइत अछि।

ओझा लेखें गाम बताह

ई कथा गामक सार्वजनिक विवेक आ राजनीतिक उपहासक तीक्ष्ण उदाहरण अछि। शीर्षकमे 'ओझा' आ 'गाम बताह'क लोकप्रचलित कथन सामूहिक निर्णयक असंगतिपर व्यंग्य बनि जाइत अछि। ग्रामीण समाजक संवादमे प्रतिनिधित्व, वोट, नेता आ उपयोगिताक प्रश्न उठैत अछि। पात्र सार्वजनिक व्यवस्था सम्बन्धी जिज्ञासा राखैत छथि; व्यंग्य केवल व्यक्तिगत मूर्खतापर नहि, बल्कि सामूहिक राजनीतिक विवशतापर सेहो पड़ैत अछि।

कथाक संवाद-प्रणाली लोकमञ्च सन अछि, जतय एक प्रश्न दोसर प्रश्नकेँ जन्म दैत अछि। एहि तकनीकसँ पाठककेँ गामक वाद-विवादक अनुभूति होइत अछि। सीमा ई जे राजनीतिक प्रतिपादन आ कथा-घटनाक अनुपात कतिपय ठाम असन्तुलित अछि। तइयो कथा गामकेँ 'राजनीतिसँ दूर' मानबाक सरलीकृत धारणाकेँ नकारैत अछि : ग्रामीण लोक राजनीति बुझैत, ओकर व्यवहारिक प्रतिफल भोगैत आ आलोचना सेहो करैत छथि।

आरक्षण

'आरक्षण'मे सामाजिक पिछड़ापन, न्याय, अवसर आ प्रतिनिधित्वक प्रश्न ग्राम्य वार्तालापक ढाँचामे सोझाँ अबैत अछि। कथा आरक्षणकेँ केवल सरकारी नियमक घोषणाक रूपमे नहि, बल्कि बराबरीक अलग-अलग समझक टकरावक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। पात्रक प्रश्न संकेत दैत अछि जे 'न्याय'क एकटा रूप ऐतिहासिक वंचना दूर करब अछि, तऽ दोसर रूप वर्तमान प्रतिस्पर्धा आ योग्यता सम्बन्धी आशंका। एहि द्वन्द्वसँ कथा समकालीन सामाजिक मानसिकताक दस्तावेज बनैत अछि।

समाजनीतिक प्रसंगक कारण आलोचनामे जरूरी अछि जे पात्रक कथनकेँ स्वतः लेखकक प्रमाणित निष्कर्ष नहि मानल जाए। तर्कक खण्ड आ चरित्रक अनुभवकेँ फराक रखबाक आवश्यकता अछि। कथाक अन्तमे प्रतिनिधित्व आ जनहितक प्रति जे जोर देखाइत अछि, से लोकतान्त्रिक विमर्शक संकेत अछि। मुदा वास्तविक वंचनाकेँ व्यक्तिगत उदाहरणसँ बेसी व्यापक ऐतिहासिक सन्दर्भ चाही; एतय कथाक विवेचनात्मक महत्व ओकर समाधानसँ बेसी प्रश्नोत्तरीमे निहित अछि।

लोकतंत्र

'लोकतंत्र'क आरम्भ रोजमर्रा हताशा व्यक्त करैत एक पात्रक कथनसँ होइत अछि (पृ. ३७)। एक आम आदमीक कष्ट, रोजी-रोटीक अनिश्चितता आ जनप्रतिनिधिक दूरिक बीच लोकतन्त्रक अर्थ पूछल जाइत अछि। लोकतन्त्र एतय केवल मतदानक नाम नहि, बल्कि नागरिकक जीवनमे न्याय, सम्मान आ व्यवहारिक अधिकारक उपलब्धतासँ परखल गेल अछि।

एहि कथामे सत्ता-विमर्शक भाषा गामक लोकबोलीसँ मिलि जाइत अछि। पात्रसँ पात्रक संवाद प्रशासनिक भाषा पर जनभाषाक प्रतिक्रिया जकाँ काज करैत अछि। अन्तिम खण्डमे आर्थिक निर्भरता आ प्रतिनिधित्वक सम्बन्ध उभरैत अछि। कथा समानताक आदर्श आ अभावग्रस्त जीवनक वास्तविकता बीचक विरोधकेँ तीखा करैत अछि। एकर विचारात्मक विस्तार शक्ति अछि, मुदा अति दीर्घ तर्क-प्रसंग पाठकीय तनाव कम करबाक जोखिम सेहो रखैत अछि।

रेल-यात्रा

'रेल-यात्रा'मे आरक्षण, यात्रा, सहयात्री आ सार्वजनिक सेवाक व्यवहार एकत्र होइत अछि। सीट, अधिकार आ सुविधा जकाँ सामान्य वस्तु ग्रामीण यात्रीक अनुभवमे सामाजिक प्रतिष्ठा आ प्रशासनिक व्यवहारक प्रश्न बनि उठैत अछि। रेलक डब्बा एक लघु सार्वजनिक समाज अछि, जतय भिन्न अवस्था, वर्ग आ सोचक लोक अल्प समय लेल एक-दोसरसँ भिड़ैत छथि।

कथाक मुख्य विशेषता स्थानक गतिशीलता अछि। गामक स्थिर बतकहीक स्थानपर यात्राक आकस्मिकता तर्कक अवसर प्रदान करैत अछि। मुदा चर्चा बारम्बार नीतिगत विचार दिस मुड़ैत अछि, तें रेलक दृश्य, ध्वनि आ शारीरिक असुविधाक कलात्मक सम्भावना पूरा विस्तार नहि पबैत। एतय कथाकारक अभिप्राय सार्वजनिक नियम आ वास्तविक व्यवहार बीचक फाँक देखेबाक अछि, आ कथा यात्रा कैं सामाजिक परीक्षणक माध्यम बनबैत अछि।

एतेक जाति किएक?

संग्रहक अपेक्षाकृत दीर्घ कथामे जातिक आधार, विभाजन, सामाजिक सम्मान आ मनुष्यता सम्बन्धी तर्कक विस्तार अछि। प्रश्नवाचक शीर्षक स्वयं पाठकसँ संवाद करैत अछि। कथा जातिक संख्या मात्र नहि गनैत, बल्कि लोक-व्यवहारमे 'हम' आ 'ओ'क विभाजन कोना दृढ़ होइत अछि, से बुझबाक प्रयत्न करैत अछि। जनजीवनक सन्दर्भमे सम्मान तथा सामाजिक दूरीक प्रश्न स्पष्ट होइत अछि।

अलग-अलग पात्र जाति सम्बन्धी सामाजिक धारणाक तर्क प्रस्तुत करैत छथि। ई पाठकैं तत्कालीन विवादक भाषिक दस्तावेज बनबैत अछि, मुदा कथाक प्रत्येक विचारकैं ऐतिहासिक तथ्यक स्थापित रूप मानब जोखिमपूर्ण होयत। वैज्ञानिक समाज-अध्ययनक दृष्टिसँ जाति श्रम-विभाजनक सरल परिणति मात्र नहि; सत्ता, जन्माधारित पदानुक्रम आ बहिष्कारक संस्था सेहो अछि। कथा जखन एकता आ पारस्परिक सम्मानक ओर मुड़ैत अछि, तखन ओकर नैतिक आकांक्षा स्पष्ट होइत अछि; कथा-वस्तुक विशिष्टता ओहि विचारक पृष्ठभूमिमे देखल जाए।

लाश

'लाश' शीर्षक तात्कालिक रूपसँ मृत्युक संकेत दैत अछि, मुदा कथा जीवित लोकक व्यवहारक परीक्षण बनि उठैत अछि। आरम्भमे जमींदारी पृष्ठभूमिक कुमार साहेब, परिवार, सम्पत्ति आ सामाजिक सम्बन्धक उल्लेख अछि। मृत्यु नातेदारीक नैतिकताकैं सहज बनबैत अछि—ई अपेक्षा कथा क्रमशः तोड़ैत अछि। पारिवारिक दायित्व आ सम्पत्तिक आकर्षणक बीच अन्तर्विरोध बढ़ैत जाइत अछि।

अन्तिम खण्डमे मृतदेहक उपस्थिति आ जीवन्त सम्बन्धक शिथिलता व्यंग्यक अत्यन्त तीखा बिन्दु बनैत अछि। देहक प्रति सम्मान जतय आवश्यक अछि, ततय व्यक्तिक जीवनकालीन सम्बन्ध आ उत्तराधिकारक स्वार्थ अधिक मुखर भऽ उठैत अछि। 'लाश'क महत्त्व एहि असहज बिम्बमे अछि : मृतक मात्र वस्तु नहि, ओ परिवारक मूल्य-परीक्षाक मौन केन्द्र बनि जाइत अछि। नैतिक कथन सापेक्षतः स्पष्ट अछि, मुदा दृश्यात्मक विडम्बना ओकर अपेक्षाकृत स्थायी कलात्मक उपलब्धि बनैत अछि।

हर्ट एटैक

एहि कथामे मनोहर बाबू नामक विद्यालय-सम्बद्ध पात्रक जीवन, पद, आय आ परिवारक आकांक्षा सँ जुड़ल प्रसंग अबैत अछि। अंग्रेजी चिकित्सा-शब्दक शीर्षक पारम्परिक सामाजिक कथा-संसारमे आधुनिक शहरी-मध्यवर्गीय असुरक्षाक प्रवेश करबैत अछि। स्वास्थ्य, धन आ आकांक्षाक सम्बन्ध कथा-घटनाक केन्द्रमे अछि।

अन्त दिस आकस्मिक हृदयाघातक प्रभाव जीवनक योजनासभकेँ प्रश्नांकित करैत अछि। प्राप्ति आ संचयक परिमाण जीवनपर नियंत्रणक आश्वासन नहि दऽ पबैत—ई बोध कथा कैँ नैतिक व्यंग्यक दिशा दैत अछि। रचनात्मक स्तरपर आकस्मिक परिणति प्रभावशाली अछि; मुदा यदि घटना मात्र नैतिक 'दण्ड' बुझल जाए तँ रोग आ मृत्यु सम्बन्धी जटिल मानवीय अनुभव सरलीकृत भऽ सकैत अछि। कथा पढ़ैत एहि दूनू सम्भावनाक बीच फराक राखब आवश्यक अछि।

बेगार

'बेगार'क आरम्भे व्यवस्था आ वास्तविकताक अन्तर रेखांकित करैत अछि : "आइ-काल्हि सरकारी नियमक मुताबिक केओ व्यक्ति बेगार अर्थात् बंधुआ मजदूर नहि राखि सकैत अछि ।" (पृ. ८५)। अगिला घटनामे ग्राम्य सामर्थ्यवान परिवार आ निर्भर श्रमिकक जीवन-सम्बन्धक चित्र अछि। औपचारिक नियम लागू होयबाक घोषणा आ सामाजिक निर्भरता समाप्त भऽ जएबाक बीच जे अन्तर अछि, कथाक तनाव ओहि ठाम सँ जन्मैत अछि।

ई कथा विशेष महत्त्वक अछि कारण एहिमे शोषण मात्र क्रूर मालिकक मनोवृत्ति नहि, बल्कि गरीबी, कर्ज, रोजी-रोटी आ सामाजिक हैसियतक सम्बन्धसँ संचालित होइत अछि। कमला आ विश्वनाथ बाबूक परिवारसँ जुड़ल प्रसंग श्रमिकक गरिमा आ निर्णयाधिकारक प्रश्न उठबैत अछि। अन्तमे 'बेगार' शब्दक सामाजिक अर्थ कानूनी निषेधसँ बड़ होइत देखाइत अछि। कथा व्यक्तिक व्यवहारमे परिवर्तनक नैतिक सम्भावना देखबैत अछि, मुदा संरचनागत शोषण समाप्त करबाक लेल व्यापक आर्थिक सम्बन्ध बदलबाक आवश्यकता अनुत्तरित रहि जाइत अछि।

परी-कथा

'परी-कथा' संग्रहक यथार्थवादी सामाजिक वृत्तसँ अलग किस्सागोईक प्रयोग प्रस्तुत करैत अछि। प्रारम्भमे राजा, राजकुमार आ पारम्परिक कथा-परिस्थितिक परिचय दऽ पाठकेँ परिचित लोककथात्मक धरातल पर लऽ जाओल गेल अछि। राजसत्ता आ राजपरिवारक प्रसंगक भीतर मानवीय इच्छा, विवेक आ सम्बन्धक परीक्षा चलैत अछि।

शीर्षकमे 'परी' होयबाक कारण कथा कैँ स्वभावत: बाल-साहित्यक श्रेणीमे राखि देब साहित्य-विधाक गलत पहिचान होयत। परी-कथा बाल-पाठक द्वारा सेहो ग्रहण कएल जा सकैत अछि, मुदा एकर वास्तविक विधा पाठकीय विन्यास, भाषिक स्तर, भय-आश्चर्य, नीतिक प्रस्तुति आ कथा-विस्तार पर निर्भर करैत अछि। एहि कथामे राजकुमार सम्बन्धी रूपक आ नैतिक तर्क प्रौढ़ पाठक लेल सेहो सुसंगत अछि। लोककथाक संरचनाक नव सामाजिक अर्थ निकालब एकर विशेषता अछि; अन्तक अधिक स्पष्ट विवेचन ओकर रहस्यभाव घटबैत अछि।

कुकुरुक नाङरि

शीर्षकक विचित्र, लोकबोलीपर आधारित छवि पाठकीय जिज्ञासा जगबैत अछि। कथा धनी गृहस्थ, ग्रामीण निर्भरता, सामाजिक अपमान आ मनुष्यक आचरणक प्रसंगसँ निर्मित अछि। पशुसम्बन्धी रूपकक उपयोग मानवीय व्यवहारपर चोट करबाक परम्परासँ जुड़ल

अछि; एतय 'कुकुर' बिम्ब केकरा लेल आ कोन परिस्थितिमे प्रयुक्त होइत अछि, से कथा-सन्दर्भ देखिकय बुझल चाही।

ई कथा असमान शक्ति-संबन्धक बीच व्यक्ति कोना छोट कहल जाइत अछि, आ कतेक हद धरि अपन स्वाभिमान बचबैत अछि, एहि प्रश्नकेँ उठबैत अछि। पात्रक व्यवहारक सामाजिक कारणक जांच ओकर नैतिक वर्गीकरणसँ अधिक उपयोगी अछि। अन्तमे मानवीय गरिमाक आग्रह स्पष्ट अछि; कथाकार उपहासक भाषा केँ समाजपर उलटा कऽ प्रयोग करैत छथि। तथापि पशु-उपमाक नैतिक असर पर प्रश्न करब जरूरी अछि, किएक तँ अपमानक आलोचना कखनो-कखनो अपन भाषामे अपमानक छवि पुनरुत्पन्न करैत अछि।

लति

'लति'क आरम्भमे गामक बाटपर अनियन्त्रित हँसी, असंगत व्यवहार आ मादकता-सदृश अवस्थाक दृश्य अछि। एक पात्रक शरीर आ बोली सामाजिक दृष्टिक सोझाँ तमाशा बनि जाइत अछि। किन्तु 'लति' केँ केवल व्यक्तिगत दुर्गुण मानलासँ कथा केँ सीमित करब होयत; एहि अवस्थासँ परिवार, आर्थिक दायित्व आ सामाजिक लज्जाक प्रश्न जुड़ल अछि।

विस्तारमे व्यक्ति आ परिवारक दृष्टि आमने-सामने अबैत अछि। स्वभाव बदलबाक कथा-आकांक्षा नैतिक सुधारक परिचित ढाँचा बनबैत अछि, मुदा व्यसन वा बारम्बार दोहराओल आचरणक मनोवैज्ञानिक-सामाजिक कारणक जटिलता पूरा नहि उभरैत। एतय आलोचक लेल जरूरी अछि जे व्यंग्यक पात्रकेँ केवल हास्यक वस्तु नहि मानल जाए। कथा समाजक व्यवहारक प्रमाण दैत अछि कि अनियन्त्रित लत परिवारक भीतर केना संकट बनैत अछि; करुणा आ आरोपक सन्तुलन ओकर मुख्य कसौटी अछि।

कविक जिनगी

एहि कथामे रचनाकारक सामाजिक स्थिति एक महत्त्वपूर्ण विषय बनैत अछि। आरम्भिक उपमा—"कविक जिनगी ठीक ओहि डिबिया सन होइत अछि जे दोसरकेँ तँ प्रकाशित करैत अछि, मुदा स्वयं ओकरा चारू कात अन्हार रहैत छैक ।" (पृ. १२४)—

कथाक करुण-व्यंग्यात्मक केन्द्र अछि। प्रकाशक उपमा रचनाक लोकहित आ कविक निजी अभावक विरोध स्थापित करैत अछि।

कथा रचनात्मक श्रमक अस्थिर सम्मान, कविक आत्मबोध आ सार्वजनिक उपेक्षाक प्रश्न उठबैत अछि। काव्य-प्रतिभाक प्रतीकात्मक आदर्श आ रोजमर्रा आर्थिक सम्मानक बीच तनाव साहित्यिक संस्थाक सामाजिक इतिहाससँ जुड़ल अछि। ई कथा आत्मपरक साहित्यिक दृष्टान्त सेहो कहल जा सकैत अछि। एहि रूपमे ओकर महत्त्व केवल कविक महिमामण्डनमे नहि, बल्कि साहित्यक सामाजिक उपयोग आ साहित्यकारक वास्तविक जीवन बीचक असंगतिपर प्रश्न करबमे अछि। अन्तमे संस्थागत मान्यता सम्बन्धी प्रसंगक कारण व्यक्तिगत पीड़ा सार्वजनिक प्रश्न बनैत अछि।

उद्यान

'उद्यान'मे परिवारक निजी सम्बन्ध आ सार्वजनिक भूमिकासँ बनल तनाव अछि। पिता-पुत्री, विवाह, धनक स्थिति आ बदलैत मानवीय समीकरणक प्रसंग कथा कैँ घरेलू भावभूमि दैत अछि। उद्यानक शीर्षक सहज रूपसँ सौन्दर्य, जीवन-विकास आ सम्भावनाक बोध करबैत अछि; कथाक भीतर सामाजिक व्यवहारक प्रश्न एहि रमणीय संकेतकेँ विडम्बनात्मक बनबैत अछि।

कथा आकारमे छोट अछि, तेँ घटना आ परिणामक गति अपेक्षाकृत तीव्र अछि। निजी सम्बन्धमे शक्ति आ अपेक्षाक सवाल जटिल अछि : परिवारक 'कल्याण'क परिभाषा ककरा अधिकारसँ बनैत अछि? कथा कतहु समाधानक रूपमे व्यक्तिक नैतिक सुधारपर भरोसा करैत अछि। शीर्षकक प्रतीक यदि आरो बेसी दृश्यात्मक विस्तार पबितए, तँ भावात्मक परिणाम सघन भऽ सकित छल; मुदा संक्षिप्तता सेहो कथा कैँ अनावश्यक प्रसंगसँ बचबैत अछि।

नरकक यात्रा

ई कथा धर्म, कर्मफल आ स्वर्ग-नरकक विश्वासक सहारा लऽ सामाजिक आचरणक जाँच करैत अछि। प्रारम्भिक वाक्य—"लोक कहैत अछि, मरनोपरान्त प्राणी स्वर्ग वा नरक जाइत अछि ।" (पृ. १३८)—लोकविश्वासकेँ आधार बनबैत अछि, प्रमाणित परलोक-विज्ञान प्रस्तुत नहि करैत। कथाक रूपकीय यात्रा व्यक्ति द्वारा कएल कर्म, आत्मपरीक्षण आ धार्मिक भाषाक सामाजिक उपयोग पर व्यंग्यक सम्भावना जगबैत अछि।

नरकक दृश्य वास्तविक भूगोल नहि, नैतिक कल्पना अछि। धर्मग्रन्थीय कल्पना आ दैनिक जीवनक अनैतिक व्यवहार एक-दोसरकेँ आलोकित करैत अछि। अन्तमे धार्मिक स्मरण आ प्रार्थनाक ओर जएबाक संकेत कथा केँ परिचित नीतिपरक अन्त दैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण ई जे डर पैदा करब आ आत्मालोचन जगायब—दूनू अलग क्रिया अछि। कथा एही द्वन्द्वमे लोकधर्मक विश्वासक संरचना उजागर करैत अछि।

संकेत

'संकेत'मे परिचित परिवार, कवि आ व्यक्तिगत सम्बन्धक प्रसंग कथा शुरू करैत अछि। घर-परिवारक साधारण बातचीत आ संकेतक अप्रत्यक्ष भाषा मिलि कऽ कथा केँ अन्तरंग बनबैत अछि। कथाकार स्पष्ट तर्कक बदलामे एतय धीरे-धीरे खुलैत स्थिति आ सम्बन्धक अनुमान पर अपेक्षाकृत अधिक भरोसा करैत छथि।

अन्तमे जीवनक अनिश्चितता, मानवीय स्नेह आ लोक-व्यवहार पर विचार उभरैत अछि। कथाक अर्थ शीर्षकसँ जुड़ल अछि—सभ महत्वपूर्ण बात घोषित वाक्यमे नहि कहल जाइत; व्यवहार सेहो संकेत दैत अछि। जँ एहि कथाकेँ संग्रहक राजनीतिक व्यंग्यसभक संग राखल जाए, तँ शिल्पक एक अलग सम्भावना देखाइत अछि : अपेक्षाकृत कम प्रत्यक्ष भाषण आ अधिक मनोभावात्मक तनाव। तथापि समापनमे कथाकारक नैतिक व्याख्या फेर स्पष्ट भऽ उठैत अछि।

अरजल भोग

'अरजल भोग'मे ग्रामीण सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक उत्सव, सम्पत्ति आ सम्बन्धक व्यंग्यात्मक प्रश्न अछि। आरम्भमे चन्दाक परिवार आ विवाह-संबन्धी आकांक्षा सोझाँ अबैत अछि। आयोजनक चहल-पहल बाहरी उल्लासक छवि बनबैत अछि, मुदा लोकक इरादा आ संसाधनक असमानता एहि खुशीक भीतर अलग-अलग अर्थ पैदा करैत अछि।

एहि कथाक आलोचनात्मक महत्त्व ई जे भोज आ उत्सव केवल भोजनक दृश्य नहि, सामाजिक पदानुक्रमक प्रदर्शन सेहो छथि। परिवारक समृद्धिक कल्पना, नातेदारीक अपेक्षा आ खर्चक दवाब एकत्र होइत अछि। अन्तमे विवाह सम्बन्धी निर्णय आ सजावट-विस्तारक प्रसंग समाजक मूल्यांकनक प्रश्नकेँ खुला रखैत अछि। कथा 'आडम्बर' शीर्षक-कथाक सामाजिक प्रदर्शनक विषयसँ अन्तरपाठीय सम्बन्ध स्थापित करैत अछि, मुदा एतय बहस सामुदायिक धार्मिक कर्मसँ हटि निजी पारिवारिक उत्सवमे केन्द्रित अछि।

जानि कऽ बेसाहब

अन्तिम कथा आधुनिक दूरदर्शनक लोकप्रिय प्रश्नोत्तरी कार्यक्रमक उल्लेखसँ शुरू होइत अछि : "एक दिन टी.भी. देखैत छलहुँ । कार्यक्रम छलैक 'कौन बनेगा करोड़पति' ।" (पृ. १५६)। धनक सम्भावित प्राप्ति एक नैतिक कल्पनाक प्रवेशद्वार बनैत अछि। कथा क्रमशः धनार्जन, भोग, दान, अतिथि-सत्कार, दीनता आ पुण्यक तर्क पर पहुँचैत अछि।

एहि संरचनामे पारम्परिक नैतिक दृष्टान्त आ आधुनिक उपभोक्तावादी आकांक्षा आमने-सामने अछि। अन्तमे सेठजी आ महात्माजीक संवादक माध्यमसँ सत्कर्म आ वास्तविक सहायताक प्रश्न उठैत अछि। नैतिक निर्णयक महत्त्व धनक प्रदर्शनसँ बेसी जीवनक व्यवहारमे ठहरैत अछि। एहि कथा केँ आडम्बर-विरोधी संग्रहक समापनक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि : जाहि मूल्यक नामपर लोक आदर चाहैत अछि, ताहि मूल्यक पालन व्यवहारमे कतेक कएल जाइत अछि? जँ कथा बहुत स्पष्ट शिक्षा सुनबैत अछि, तथापि शीर्षकसँ अन्त धरि विचारक एकता एकरा संग्रहक सुसंगत अन्त प्रदान करैत अछि।

कथा-शिल्पक समेकित मूल्यांकन

शीर्षक-व्यवस्था, विडम्बना आ वैचारिक एकता

बीस शीर्षकक एक संग अवलोकन केलासँ एक विशिष्ट द्वैध स्पष्ट होइत अछि। 'आडम्बर', 'बेगार', 'लाश', 'आरक्षण', 'लोकतंत्र' आ 'संकेत' सन शीर्षक सामाजिक संस्थाक जटिलता तथा अमूर्त विचार दिस निर्देश करैत अछि; 'रोपल गाछ बबूर', 'ओझा लेखें गाम बताह', 'कुकुरुक नाङरि' आ 'जानि कऽ बेसाहब' लोक-उक्ति आ जनभाषाक स्मृतिसँ उपजल अछि। 'परी-कथा' आ 'नरकक यात्रा' मे दृष्टान्तक सम्भावना, 'हर्ट एटैक' आ 'रेल-यात्रा'मे समकालीन जीवनानुभवक स्वर अछि। ई विविधता कथाकारक विषय-क्षेत्रक विस्तार सिद्ध करैत अछि।

संग्रहक वैचारिक एकता ओहि आवर्ती प्रश्नमे अछि : सार्वजनिक रूपसँ जकरा पुण्य, न्याय, प्रतिष्ठा, विकास वा नैतिकता कहल जाइत अछि, वास्तविक जीवनमे ओकर रूप की अछि? एहि प्रश्नक कारण अलग-अलग कथा एक दोसरकेँ उजागर करैत अछि। 'आडम्बर' आ 'अरजल भोग'मे उत्सवक प्रदर्शन, 'आरक्षण' आ 'एतेक जाति किएक?'मे न्याय तथा सामाजिक विभाजन, 'लाश' आ 'हर्ट एटैक'मे जीवन-मृत्यु आ सम्पत्ति, 'बेगार' आ 'लोकतंत्र'मे अधिकार तथा जीवन-स्थितिक विरोध देखल जा सकैत अछि।

संवाद, कथावाचक आ दृश्य-निर्माण

कथाकारक प्रिय संरचना बहस अछि। पात्र प्रश्न करैत छथि, एकाधिक उत्तर अबैत अछि, तकर बाद कथा नैतिक निष्कर्षक ओर अग्रसर होइत अछि। ई मौखिक कथन-परम्पराक निकट अछि : दरबारक वाद, चौपालक गप्प, घरक नोकझोंक, यात्राक सहचर्य—सभ स्थानपर कथाक सूत्र बोलचाल होइत अछि। एहि शिल्पसँ भाषा सजीव रहैत अछि आ वैचारिक विषय सामान्य पाठक लेल ग्राह्य बनैत अछि।

मुदा अनेक कथामे बोलबैत पात्रक विशिष्ट चरित्र-विकास सैद्धान्तिक चर्चाक दबावमे दबि जाइत अछि। 'एतेक जाति किएक?'मे विचारक विस्तृत व्याख्या, 'आरक्षण' आ

'लोकतंत्र'मे राजनीतिक विमर्श, 'जानि कऽ बेसाहब'मे धार्मिक नैतिक बहस—ई सभ केन्द्रीय कथात्मक आकर्षण छथि, मुदा कथाकारक प्रत्यक्ष पक्षधरता कखनो-कखनो पाठककेँ स्वतन्त्र व्याख्याक अवकाश कम दैत अछि। विपरीत रूपसँ 'लाश'क मृतदेह, 'बेगार'क आर्थिक निर्भरता आ 'कविक जिनगी'क प्रकाश-अन्हार उपमा एहन दृश्यात्मक वा प्रतीकात्मक बिन्दु छथि जे निष्कर्ष कहबाक बदला पाठकीय अनुभव रचैत छथि।

भाषा : मैथिली गामक बोली आ सार्वजनिक विचार

मैथिली कथावस्तुमे अपन लोक-जीवनसँ जुड़ल सम्बोधन, प्रश्नवाचक विन्यास, उक्ति, तर्कक लय आ सामाजिक दूरीक सूक्ष्म स्तर विद्यमान अछि। प्रामाणिक बोलीक अनुभूति मात्र दुर्लभ शब्दक अधिकता सँ नहि, बल्कि जीवन-प्रसंग, पात्रक सामाजिक स्थिति आ संवादक लहजासँ बनैत अछि। 'आडम्बर'मे भोज-व्यवस्था आ तिरस्कार, 'लोकतंत्र'मे जनसत्ता पर क्षोभ, 'बेगार'मे कानून-व्यवहारक विरोध—एहिसभमे भाषा सामाजिक ज्ञानक वाहक अछि।

जतय प्रशासन, न्याय वा शिक्षा सम्बन्धी चर्चा अबैत अछि, ओतय राजनीतिक-सामाजिक शब्दावली संग मैथिलीक लोक-लयक सहअस्तित्व एहि युगक भाषिक अवस्था देखबैत अछि। भाषिक दृष्टिसँ ई संग्रह दस्तावेजात्मक महत्त्व रखैत अछि। तथापि चरित्रानुकूल बोलीक भिन्नता आ दृश्य-विशिष्ट ध्वनि-चित्रण अधिक विकसित होइत, तँ कथानकक बहुस्तरता बढ़ितए।

स्त्री-पात्र, परिवार आ आलोचनात्मक सीमा

रीता, कमला, सीमा आदि स्त्री-पात्रक उपस्थिति समाजक निर्णयक भीतर स्त्रीक संवेदनात्मक स्थिति देखबाक अवसर दैत अछि। मुदा अनेक कथामे राजनीतिक वा सार्वजनिक नैतिक तर्कक प्रमुख वाहक पुरुष पात्र छथि। सामाजिक अन्यायक प्रश्न उठेबाक बावजूद स्त्रीक आर्थिक निर्णयाधिकार, इच्छा, वैवाहिक संस्था आ स्वतन्त्र कथात्मक दृष्टिकोणकेँ सर्वत्र समान विस्तार नहि भेटैत अछि। एहि असन्तुलनपर विमर्श

करब ग्रन्थक अस्वीकार नहि; वरन् ओकर सामाजिक यथार्थवादक आलोचनात्मक जाँच अछि।

दोसर सीमा कथाक अन्तिम वाक्यसभमे शिक्षात्मक निष्कर्षक आवृत्ति अछि। नैतिक आग्रहक अपन साहित्यिक परम्परा अछि, मुदा आधुनिक लघुकथाक महत्त्व प्रश्न खुला रखब, भावात्मक अनिश्चितता पैदा करब आ पाठकक्केँ विचारक सहलेखक बनयबाक क्षमता सेहो अछि। ‘आडम्बर’ इन दू प्रवृत्तिक बीच झूलैत अछि। ओकर संगति सार्वजनिक शिक्षामूलक कहानीमे अछि, मुदा सर्वोत्तम दृश्य एकरा उपदेशक सीमासँ बाहर लऽ जाइत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक विवेचन

विधा-निर्धारण : सामाजिक कथा आ बाल-कथा बीचक आवश्यक भेद

‘आडम्बर’क मूल्यांकनमे एकटा बुनियादी सावधानी जरूरी अछि : लेखकक अन्य कृति ‘स्वर्ण कमल’ विदेह पोथी-सूचीमे बाल-उपन्यासक रूपमे दर्ज अछि, मुदा ‘आडम्बर’क प्रकाशन-विवरण आ विषय-सूची स्पष्ट रूपसँ एकरा कथा-संग्रह कहैत अछि। एहि तथ्यक कारण लेखकक सम्पूर्ण साहित्यकेँ ‘बाल-साहित्य’ नहि मानल जा सकैत अछि। ‘परी-कथा’ सन शीर्षक वा नैतिक कथा-रूप बाल-पाठक लेल सुलभ भऽ सकैत अछि, मुदा पाठक-वय, पाठकीय पूर्वज्ञान, कथाक संरचना, हिंसात्मक वा जटिल सामाजिक प्रसंग आ भाषाक कठिनाई सभ मिलि कऽ विधागत वर्गीकरण निर्धारित करैत अछि।

बाल-साहित्यक मूल कसौटी केवल ‘सिखेनाइ’ नहि अछि। बाल-कथा बालकक अनुभव-केन्द्र, खेल, जिज्ञासा, कल्पना, तात्कालिक दृश्य, स्वायत्त प्रश्न आ संवेदनात्मक ग्रहणशीलताकेँ स्थान दैत अछि। एक वयस्क सामाजिक कथा जँ नैतिक शिक्षा दैत अछि तँ ओ अवश्य बाल-कथा नहि भऽ जाइत। ‘आडम्बर’क आरक्षण, जाति, बंधुआ श्रम, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, सम्पत्ति-संघर्ष आ धार्मिक नैतिकता-विषयक अनेक वार्तालाप प्रौढ़

सामाजिक अनुभवक आधारपर अधिक स्पष्ट होइत अछि। एही कारण एकर बाल-साहित्यसँ सम्बन्ध ‘विधागत तुलना’क अछि, प्रत्यक्ष श्रेणीकरणक नहि।

लोककथा, मुद्रित बाल-पोथी आ डिजिटल संरक्षण

मैथिली बाल-कथनक इतिहासक आरम्भिक आधार मौखिक लोककथा, नेना-गीत, घरक बुजुर्गक किस्सा, लोक-प्राणी कथा आ नैतिक दृष्टान्तक परम्परामे देखल जा सकैत अछि। आधुनिक मुद्रित बाल-पोथी एहि मौखिक सम्पदाकेँ चित्र, पाठ्यक्रम, विज्ञान, साहस-कथा, बाल-नाटक आ अनुवादक माध्यमसँ विस्तृत करैत अछि। एहि इतिहासकेँ एकल रैखिक विकास मानब उचित नहि; मौखिक, मुद्रित आ डिजिटल रूप आजुओ एक संग विद्यमान अछि।

विदेहक ‘शिशु उत्सव’ तथा बाल-साहित्य सूचीमे अनुवादित चित्रकथा, मौलिक बाल-कथा, बाल कविता, नाटक, विज्ञान-सम्बद्ध रचना आ उपन्यासक अनेक प्रविष्टि भेटैत अछि। एहिमे मुन्नी कामतक ‘चुक्का’ (बाल कथा-संग्रह), सुजीत कुमार झाक ‘कोइली घूरि आउ’ (बाल लघु-विहनि कथा-संग्रह), योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क ‘विज्ञानक बतकही’, तथा प्रीति ठाकुरक अनूदित चित्रकथा-श्रृंखला सन श्रेणी-दृष्टान्त सम्मिलित अछि। ई सूची प्रमाण दैत अछि जे वर्तमान मैथिली बाल-साहित्य एकरूप उपदेशात्मक कथामे सीमित नहि, बल्कि चित्र, विज्ञान, मंच, अनुवाद आ अलग-अलग पाठक-वयकेँ समेटैत अछि। एहि रचनाक स्वतन्त्र अन्तर्वस्तु-विश्लेषण एहि निबन्धक दायरासँ बाहर अछि; इएह तथ्य सूचीपर आधारित ऐतिहासिक तुलना आ प्रत्यक्ष पाठसमीक्षा बीचक भेद स्पष्ट करैत अछि।

नन्दक सामाजिक कथा आ ‘स्वर्ण कमल’क विधागत अन्तर

विदेह पोथी-सूची ‘स्वर्ण कमल’केँ नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क बाल-उपन्यास कहैत अछि, जखन कि ‘आडम्बर’केँ कथा-संग्रह। लेखकक एकहि नामसँ प्रकाशित ई अलग-अलग विधागत पहिचान विशेष अर्थपूर्ण अछि। एक ओर बाल-उपन्यासमे कथा-यात्रा, आश्चर्य, बालकक कल्पना आ रचनात्मक आत्मनिर्भरता अपेक्षित रहैत अछि; दोसर ओर

‘आडम्बर’क सामाजिक कथा सभ वयस्क सामाजिक संस्थाक प्रश्नोत्तर, विवेक आ सामाजिक अनुभव पर आश्रित अछि।

‘परी-कथा’ जकाँ कृति एहि विभाजनक सीमाक्षेत्र उजागर करैत अछि। पारम्परिक राजा-राजकुमारक कथा बाल-पाठककेँ आकर्षित कऽ सकैत अछि, मुदा एकर भीतरक नीतिशास्त्रीय विमर्श आ सामाजिक व्यंग्य ओकर वयस्क स्तरक पुनर्पाठ सम्भव बनबैत अछि। एहि लचीलेपनकेँ मानि कऽ सेहो लेखकक स्वीकृत बाल-उपन्यास आ सामाजिक कथा-संग्रहकेँ एक विधा घोषित करब उचित नहि होयत।

नीतिपरकता, बाल-दृष्टि आ नागरिक शिक्षा

‘आडम्बर’क अनेक कथामे न्याय, श्रमक सम्मान, समानता, करुणा, विवेक आ लोभक आलोचना सन प्रश्न अछि। एहि विषयसभक नागरिक शिक्षा आ किशोर पाठक्रममे निश्चित उपयोग सम्भव अछि। उदाहरणस्वरूप ‘बेगार’ श्रमिक अधिकार पर, ‘एतेक जाति किएक?’ पूर्वाग्रह पर, ‘कविक जिनगी’ रचनात्मक श्रम पर, आ ‘नरकक यात्रा’ नैतिक निर्णय पर चर्चा करबाक सामग्री दऽ सकैत अछि। मुदा पाठ्य-उपयोग आ साहित्यिक विधा एक नहि।

एकटा बालक-केंद्रित नव प्रस्तुति लेल संक्षिप्त दृश्य, वयसापेक्ष पृष्ठभूमि, जातिगत वा वर्गीय उत्पीड़नक संवेदनशील भाषिक रूप, खुला प्रश्न, सहज पात्र-परिचय, आ चित्रकथा वा नाट्यरूपान्तरणक आवश्यकता होयत। मूल कहानीक सभ नैतिक दावाकेँ निर्विवाद सत्यक रूपमे पढ़ेबाक बदला बच्चासँ प्रश्न पूछल जाए—ककरा संग अन्याय भेल, किएक भेल, दोसर उपाय की होइत, आ पात्र अपन निर्णय कतेक स्वतन्त्रतासँ लेलनि?—तँ ‘आडम्बर’ सामाजिक शिक्षा लेल उपयोगी सह-पाठ बनि सकैत अछि। ई सम्भावित उपयोग मूल पाठक बाल-साहित्य होयबाक दावा नहि करैत अछि।

समकालीन विदेह-सन्दर्भमे बाल-साहित्यक बहुधारात्मकता

विदेहक शिशु उत्सवमे बाल गीत, चित्रकथा, विज्ञान-कथन, लोककथा, अनुवाद, नाटक आ किशोरक रचनाक स्वतंत्र प्रविष्टि समकालीन संग्रहण-प्रक्रियाक संकेत अछि। गजेन्द्र

ठाकुरक अनेक बाल-उपन्यासक सूची, नव किशोर-कथा तथा बाल-चित्रकथाक उल्लेखसँ ई स्पष्ट अछि जे बाल-पाठकक विषयक्षेत्र विज्ञान, कल्पना, सामाजिक जीवन आ समकालीन प्रौद्योगिकी धरि बढ़ल अछि। ई प्रविष्टि साहित्य-इतिहास लिखबाक सामग्री उपलब्ध करबैत अछि; मुदा केवल सूची-संख्या सँ साहित्यिक गुणवत्ता अथवा ऐतिहासिक 'प्रथम'क दावा स्थापित नहि कएल जा सकैत।

एहि पृष्ठभूमिमे 'आडम्बर'क ऐतिहासिक स्थान सामाजिक व्यंग्यक वयस्क कथा-परम्परामे अधिक सुस्पष्ट अछि। बाल-साहित्यक इतिहाससँ एकर सम्बन्ध मुख्यतः साझा मौखिकता, नीतिपरक प्रश्न, लोकभाषा आ कथन-विधानक स्तरपर अछि। दोसर दिस बाल-साहित्यमे बालकक आत्मदृष्टि आ खेल-कल्पनाक जी व्यापकता चाही, से संग्रहक मूल केन्द्र नहि। ई भेद मानल जाए तँ लेखकक बहुविध रचनाशीलताक सम्यक् सम्मान सम्भव अछि।

सामाजिक इतिहासक दस्तावेज आ साहित्यिक स्वायत्तता

'आडम्बर'कैं केवल नैतिक सुधारक लघु पुस्तिका कहि देब एकर साहित्यिक आयाम घटायब होयत; एकरा पूर्ण विकसित बहुस्तरीय आधुनिकतावादी कथाशिल्पक समान मानब सेहो अतिशयोक्ति होयत। ई संग्रह सामाजिक यथार्थ, व्यंग्य, दृष्टान्त आ बहसमूलक गद्यक संगमपर अछि। समाजक सामान्य चरित्रसभकैं कथा-केन्द्रमे अनबाक कारण एकर दस्तावेजी महत्व अछि। पाठक ग्रामीण समाजक पाखण्ड, परिवारक निर्भरता, लोकतन्त्रक दैनन्दिन अनुभव आ साहित्यकारक जीविकाक प्रश्नसँ सामना करैत अछि।

एहि दस्तावेजीय शक्तिक संग एक आलोचनात्मक दायित्व जुड़ैत अछि : पात्रक मान्यता आ सामाजिक तथ्य अलग रखब। जातिक इतिहास, आरक्षणक प्रभाव, श्रमक कानूनी स्थिति वा चिकित्सकीय कारणक सत्यापन साहित्यिक पाठकैं मात्र उद्धृत करिकय नहि भऽ सकैत। कथा विचार, अनुभव आ मूल्य-संघर्षक साक्ष्य अछि; ओ स्वयं समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण वा विधिक प्रतिवेदन नहि। एहि सीमाबोधसँ साहित्यिक विश्लेषण आ सामाजिक अनुसंधानक सम्बन्ध अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

लोक-समाजक भीतर ‘न्याय’क आकांक्षा लेखकक नैतिक केन्द्र अछि। मुदा ई न्याय कतहु व्यक्तिक सुधार, कतहु समुदायिक कर्तव्य, कतहु राजनीतिक अधिकार, कतहु परोपकारक रूप धारण करैत अछि। एहि भिन्नताकेँ एक शब्दमे समेटबाक बजाय कथाक विशेष परिस्थिति अनुसार परखब उचित अछि। ‘लाश’मे करुणाक अभाव आ ‘बेगार’मे आर्थिक पराधीनता एकहि नैतिक भाषासँ वर्णित होइत अछि, मुदा हुनका सामाजिक कारण एक समान नहि। एही अन्तरक आलोचनात्मक पहिचान पाठककेँ संग्रहक भीतरक विविधता समझबैत अछि।

निष्कर्ष

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘आडम्बर’ मैथिली सामाजिक कथा-साहित्यक एहन संग्रह अछि जकरा केन्द्रमे सार्वजनिक सदाचारक दावा आ वास्तविक आचरणक विरोध अछि। श्राद्धक आडम्बर सँ आरम्भ भेल कथा-यात्रा पारिवारिक असमानता, जाति, लोकतन्त्र, रेल-व्यवस्था, बेगार, कविक जीवन, धार्मिक विश्वास आ धन-नैतिकता धरि पहुँचैत अछि। बीस कथाक आवर्ती सूत्र लोकजीवनक सामान्य दृश्यसँ गम्भीर सामाजिक प्रश्न उठेबाक क्षमता अछि। एहि अर्थमे शीर्षक केवल पहिल कथा नहि, सम्पूर्ण संग्रहक नैतिक व्याकरण बनि उठैत अछि।

कृतिक सर्वाधिक सशक्त उपलब्धि लोकबोलीक सहज संवाद, सामान्य पात्रक सामाजिक अनुभव आ विडम्बनाक पहचान अछि। ‘लाश’क मौन मृत्यु-दृश्य, ‘बेगार’क कानून आ जीवन बीचक दूरी, ‘कविक जिनगी’क डिबिया-उपमा तथा ‘जानि कऽ बेसाहब’क धन-पुण्यक अन्तिम बहस संग्रहक भिन्न-भिन्न रचनात्मक दिशाक प्रमाण अछि। सीमामे उपदेशात्मकता, अन्तिम नैतिक निर्णयक अधिक स्पष्टता, समाजनीतिक तर्कक दीर्घता आ स्त्री-अनुभवक अपेक्षाकृत सीमित आत्मस्वर शामिल अछि। एहि कमजोरीक स्वीकारोक्ति ओकर सामाजिक प्रतिबद्धता घटबैत नहि; उलटे एकर कलात्मक स्थिति अधिक सटीक बनबैत अछि।

बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलना ई निष्कर्ष पुष्ट करैत अछि जे नैतिक कथ्य होयब मात्र बाल-साहित्य होयबाक मानदण्ड नहि अछि। ‘आडम्बर’ मूलतः प्रौढ़ सामाजिक कथा-संग्रह अछि, जकर चुनिन्दा प्रसंग किशोर नागरिक-शिक्षामे पुनर्पाठ योग्य भऽ सकैत अछि; लेखकक ‘स्वर्ण कमल’ सन सूचीबद्ध बाल-उपन्यास अलग विधागत अध्ययन चाहैत अछि। एहि स्पष्ट विधा-भेदक संग ‘आडम्बर’केँ मैथिली लोकजीवन, सामाजिक व्यंग्य आ संवादमूलक कथा-परम्पराक महत्वपूर्ण पाठक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

दोसर खण्ड

समाज, स्त्री-अस्मिता आ उपन्यास

गुदड़ीक लाल · अनठिया कुकुर · सुजाता · सुकन्या · परिवार

अध्याय ३

गुदड़ीक लाल

सामन्ती वर्चस्व, स्त्री-अस्मिता, शिक्षा आ न्याय-संघर्ष

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘गुदड़ीक लाल’ सामाजिक यथार्थ आ सुधारवादी आकांक्षाक संगमपर ठाढ़ मैथिली उपन्यास थिक। स्वाधीनतापूर्वक ग्रामीण परिवेशमे रखल एकर कथा भूमिहीन मजदूरक शोषण, जमीन्दारी-प्रभुत्व, पुलिस-प्रशासनक वर्गीय पक्षधरता, स्त्रीक देह आ मान-प्रतिष्ठापर अधिकार, शिक्षाक सामाजिक उपयोग, नव पीढ़ीक आत्मपहिचान आ न्यायिक हस्तक्षेपक प्रश्न उठबैत अछि। मटरू आ ओकर बेटी सुगिया एहि संघर्षक नैतिक केन्द्रमे छथि; ठाकुर जालिम सिंह आ ओकर सत्तासम्बन्धी प्रभाव सामाजिक प्रतिरोधक परीक्षा लैत अछि। कथाक उत्तरार्धमे सुरेश्वरक पहचान आ न्यायालयीय प्रकरण एहि निजी पीड़ा कैं सार्वजनिक न्याय आ सामाजिक दायित्वक प्रश्न बना दैत अछि। प्रस्तुत विवेचनमे बाइस परिच्छेदक क्रमिक पाठ, पात्रक अन्तर्द्वन्द्व, उपन्यासक समय-स्थान, भाषिक प्रविधि, स्त्री-जीवन, वर्ग-संरचना, ग्रामीण शिक्षाक राजनीति आ मैथिली सामाजिक उपन्यासक परम्परासँ तुलना सम्मिलित अछि। कृतिक उपलब्धिक संग ओकर सुधारवादी सुखान्तक सरलीकरण, पात्रसभक आदर्शीकरण आ संस्थागत न्यायसँ जुड़ल सम्भावित सीमाक सेहो परीक्षण कयल गेल अछि।

मैथिली उपन्यास; गुदड़ीक लाल; नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’; सुगिया; मटरू; जमीन्दारी; शिक्षा; स्त्री-अस्मिता; ग्रामीण समाज; सामाजिक न्याय।

प्रस्तावना : शीर्षकक विडम्बना आ सामाजिक प्रश्न

‘गुदड़ीक लाल’ हिन्दी-मैथिली भाषिक संसारमे प्रचलित ओहि मुहावराक रचनात्मक उपयोग थिक जाहिमे गरीबीक बाहरी आवरण भीतर छिपल मानवीय प्रतिभा आ गरिमाकैं ढाँपि नहि सकैत। शीर्षक पहिने एकटा असमानताक संकेत दैत अछि : ककरो मूल्य ओकर

धन-सम्पत्ति, कुल, भू-स्वामित्व आ बाहरी प्रतिष्ठासँ नापल जाइत अछि, मुदा कथा ओहि मापदण्डकेँ प्रश्नांकित करैत अछि। उपन्यासक अन्त धरि शीर्षकक अर्थ सामाजिक पहिचान आ नैतिक स्वीकृतिक संघर्षसँ भरि उठैत अछि।

ई कृति बाल-उपन्यास नहि, सामाजिक उपन्यास थिक। एकर मूल प्रकाशकीय प्रस्तुति ‘मैथिली उपन्यास’ कहैत अछि; कथामे यौन-शोषणक संकेत, अनिच्छित सम्बन्ध, वर्ग-आधारित अपमान, राजनीतिक-सामन्ती दमन आ न्यायालयीय निर्णय सन प्रौढ़ सामाजिक प्रश्न अछि। एकरा बाल-साहित्यक कसौटीपर रखनाइ विधागत भ्रम उत्पन्न करत। हँ, शिक्षाक प्रश्न आ नव पीढ़ीक चरित्रक कारण ई उपन्यास बाल-अधिकार आ शिक्षाक समाजशास्त्र सँ सम्बन्धित शोधमे सेहो उपयोगी अछि।

लेखक अपन भूमिकामे शोषणक ऐतिहासिक वातावरण, मटरूक संघर्ष, सुगियाक जीवन-परिस्थिति आ सामाजिक परिवर्तनक विश्वास स्पष्ट करैत छथि। मुदा लेखकक घोषित उद्देश्य केँ उपन्यासक अन्तिम अर्थ नहि मानल जा सकैत अछि। साहित्यिक आलोचना पूछैत अछि जे कथाक प्रसंगसभ एहि उद्देश्यकेँ कतेक कलात्मक विश्वसनीयता दैत अछि, आ कतय कथाकारक प्रत्यक्ष सामाजिक आशा चरित्रक स्वाभाविक गतिसँ आगू निकलि जाइत अछि।

कृतिक कालभूमि आ कथा-विधान

‘गुदड़ीक लाल’क लेखक नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’ छथि। प्रकाशकीय पृष्ठपर गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, दरभंगाक नाम अंकित अछि आ सहयोग-राशि १५० रुपया लिखल अछि। लेखकक वक्तव्यक अन्तमे विजयादशमी, २००८क तिथि भेटैत अछि। अतः २००८ केँ लेखकीय वक्तव्यक प्रमाणित तिथि कहि सकैत छी; उपलब्ध प्रारम्भिक पृष्ठमे पृथक् प्रकाशन-संवत् स्पष्टतासँ उल्लिखित नहि अछि। कथाक अन्तिम मुद्रित पृष्ठ १४० अछि; एतय पृष्ठ-सन्दर्भ मूल मुद्रित अंकक अनुसार देल गेल अछि।

कथाक आरम्भिक समय लेखक स्पष्ट करैत छथि।

> “समय आजादी सँ पूर्वक छल।” (मूल पाठ, पृ. १)

एहि वाक्यसँ उपन्यासक ऐतिहासिक वातावरण निश्चित होइत अछि, मुदा कथा-स्थल आ पात्रसभक सन्दर्भमे लेखकक अपन कथन सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। ओ लिखैत छथि जे कृतिमे पात्र, काल आ स्थान कल्पनात्मक विन्यासक अन्तर्गत अछि। एहि कारण रामगढ़ अथवा राजकीय घटनासभकेँ अभिलेखीय इतिहास मानि नहि पढ़बाक चाही; ई ऐतिहासिक संरचनासँ प्रेरित काल्पनिक समाजक आख्यान थिक। कथाक सामाजिक सत्यक परीक्षण ओकर कल्पनात्मक रचनाक भीतर करबाक चाही।

मूल कृति बाइस क्रमांकित परिच्छेदमे विकसित होइत अछि। आरम्भमे भूमिहीनता आ सत्ताक असमानता स्थापित होइत अछि; मध्यभाग सुगियाक अस्तित्व आ अपन जीवनक शर्त तय करबाक संघर्षक विस्तार करैत अछि; उत्तरार्ध शिक्षा, पीढ़ीगत उत्थान, सार्वजनिक मतभेद आ न्यायिक निष्कर्ष धरि पहुँचैत अछि।

मैथिली सामाजिक उपन्यासक परम्परामे कृतिक स्थान

आधुनिक मैथिली उपन्यासक विकासमे सामाजिक रूढ़ि, वैवाहिक संस्था, नारीक स्थिति आ स्थानीय जीवनक यथार्थ लगातार महत्त्वपूर्ण विषय रहल अछि। हरिमोहन झाक ‘कन्यादान’ (१९३३) समाजक वैवाहिक प्रथापर व्यंग्यात्मक प्रहार करैत अछि; ‘द्विरागमन’ (१९४३) ओहि परिवेशमे नारी-जीवन आ शिक्षासँ जुड़ल प्रश्न उठबैत अछि। यात्रीक ‘पारो’ (१९४६) स्त्रीक अनुभव आ पितृसत्तात्मक संरचनाक अधिक तीक्ष्ण चित्र प्रस्तुत करैत अछि। एहि कृतिसभसँ ‘गुदड़ीक लाल’क सम्बन्ध वंशपरम्परागत अनुकरणक नहि, विषयगत संवादक अछि।

प्रारम्भिक मैथिली उपन्यासपर कथाकार अशोकक विचारानुसार समाज-सुधारक आग्रह आ समकालीन जीवनक यथार्थचित्रण दुनू महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति रहल अछि। ‘गुदड़ीक लाल’ एहि दू प्रवृतिक संयुक्त रूप थिक। एतय वर्गीय विषमता आ जमीन्दारी दमन वास्तविकताक धरातल प्रस्तुत करैत अछि, मुदा कथाक अन्त समाज सुधारि सकबाक

आशाक दिशामे बढ़ैत अछि। एही द्वन्द्वसँ एकर शिल्पक मुख्य गुण आ सीमा दुनू उत्पन्न होइत अछि।

हिन्दीक 'गोदान' (१९३६) सँ तुलना करैत काल कृषि-आधारित शोषण, कर्ज, सम्मान आ मजदूर-किसानक विवशताक समान प्रश्न सोझाँ अबैत अछि। मुदा 'गोदान'क संरचना श्रमजीवीक लगातार क्षयकेँ बेसी कठोर रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि; 'गुदड़ीक लाल' नैतिक-जागरण आ कानूनी हस्तक्षेपमे अधिक आशा रखैत अछि। ई तुलना कथात्मक प्रवृतिक अछि, प्रत्यक्ष प्रभाव अथवा स्रोत-संबन्धक दावा नहि।

फणीश्वरनाथ रेणुक 'मैला आँचल' (१९५४) सँ सेहो ग्रामीण सत्तासम्बन्ध, स्थानीय बोली आ स्वाधीनताक राजनीतिक वातावरणक स्तरपर संवाद सम्भव अछि। तथापि रेणुक बहुकेन्द्रीय अञ्चल-रचना आ 'गुदड़ीक लाल'क मटरू–सुगिया-केन्द्रित नैतिक संघर्षक संरचना अलग अछि।

कथानकक समग्र विन्यास : गामसँ अदालत धरि

रामगढ़ नामक ग्राम-परिवेशसँ उपन्यास शुरू होइत अछि। भूमिकेँ किछु घराना अपन अधिकारमे रखने अछि; भूमिहीन श्रमिक अपन जीविकाक लेल मजदूरी करैत अछि। गामक विद्यालय, जमीन्दारक हवेली, कचहरी, पुलिस-प्रशासन, बाजार आ बाहरक नगर कथामे अलग-अलग संस्थागत शक्ति धारण करैत अछि। मटरूक श्रम आ सुगियाक जीवन सामाजिक श्रेणीबद्धताक दुष्परिणाम भुगतैत अछि।

शासन-व्यवस्था आ सामन्ती प्रभाव एक-दोसरकेँ सहारा देबाक प्रवृत्ति रखैत अछि। ठाकुर जालिम सिंहक व्यवहारक कारण व्यक्तिगत असमानता सार्वजनिक अन्याय बनैत अछि। सुगियाक जीवनक निर्णयपर ओकर अपन स्वायत्तता कतेक बचल अछि—ई प्रश्न उपन्यासक सभसँ गहिर नैतिक समस्या थिक। कथानक अनेक मोड़पर सामर्थ्यहीन परिवारक असुरक्षा, जमीनक प्रश्न आ सम्मानक सामाजिक अर्थ उपस्थित करैत अछि।

आगाँक प्रसंगमे शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नतिक साधन नहि रहैत अछि। सुरेश्वरक विकाससँ पारिवारिक स्मृति आ सामाजिक निषेधक बीच नव सम्बन्ध स्थापित होइत अछि। अन्तिम भागमे निजी अपराध, सम्मान, सम्पत्तिगत अधिकार आ सार्वजनिक निर्णय न्यायालयीय विमर्शक विषय बनैत अछि। एहि प्रवाहमे 'गुदड़ीक लाल'क कथा सामाजिक अन्यायसँ न्याय-सम्भावनाक यात्रा बनैत अछि; मुदा न्याय भेटि गेलाक बाद सेहो अनुभवक घाव स्वतः समाप्त भऽ जाइत अछि कि नहि, ई प्रश्न आलोचनात्मक रूपेँ बचल रहैत अछि।

बाइसू परिच्छेदक पृथक पाठविश्लेषण

पहिल परिच्छेद : रामगढ़क आर्थिक संरचना आ कृतिक मूल द्वन्द्व

पहिल परिच्छेद कथाक काल, ग्राम-स्थान आ उत्पादन-सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। भूमि किछु जमीन्दारक नियन्त्रणमे अछि; खेत जोतनिहार श्रमिक स्वयं भूमिक स्वामी नहि। विद्यालयक चर्चा एहि सामाजिक असमानताक ठीक लग राखल गेल अछि। ई सन्निकटता आकस्मिक नहि देखाइत : एक दिस शिक्षा उन्नतिक सम्भावना अछि, दोसर दिस ज्ञान आ संसाधनपर सम्पन्न वर्गक नियन्त्रण अछि। आरम्भक संरचना निजी त्रासदीसँ पहिने सामूहिक शोषणकेँ स्थान दैत अछि।

एहि परिच्छेदक महत्त्व 'समय आजादी सँ पूर्वक छल' सन उद्घाटन-वाक्यसँ बढ़ैत अछि (पृ. १)। स्वाधीनतापूर्वक समय एकटा ऐतिहासिक सूचक अछि, मुदा गामक शोषण केवल औपनिवेशिक शासनक प्रत्यक्ष फल नहि; घरेलू सामन्ती सम्बन्ध ओकर स्वतंत्र स्रोत सेहो अछि। ई भेद सम्पूर्ण उपन्यास पढ़बाक मूल कसौटी थिक।

दोसर परिच्छेद : श्रम, आश्रय आ भयक दैनिकता

आरम्भिक घटनाक विस्तारमे श्रमिकक दिनचर्या, जीविकाक विवशता आ हवेलीक प्रभाव लगातार सोझाँ अबैत अछि। शोषण केवल वेतनक अल्पतामे नहि; श्रमिकक बोलबाक अधिकार, चलबाक स्वतन्त्रता आ अपन घर-परिवारक रक्षाक असमर्थतामे सेहो प्रकट होइत अछि। मटरूक संकट एहि वातावरणमे व्यक्तिगत बनैत अछि।

लेखक लोकव्यवहारक संवादक माध्यमसँ ई देखबैत छथि जे श्रमिक अधिकारक भाषा तुरन्त नहि गढ़ि पबैत अछि। ओकरा पहिने अपन परिवार बचेबाक उपाय खोजय पड़ैत अछि। एतय कथा वर्गीय संरचनाक घातक प्रभाव भावनात्मक धरातलपर उतारैत अछि।

तेसर परिच्छेद : परिवारक असुरक्षा आ सामन्ती हस्तक्षेप

मटरूक पारिवारिक परिस्थिति आ सुगियाक जीवनपर पड़ैत बाहरी दबाव एतय कथाक मूल सामाजिक प्रश्न बनि उठैत अछि। निर्धनता केवल अभाव नहि, दोसराक इच्छाक सोझाँ असुरक्षित होएबाक अवस्था अछि। गरीबक बेटीपर सम्पन्न लोकक दृष्टि आ अधिकार-जकाँ व्यवहार सामाजिक सम्बन्धक नैतिक विकृति उद्घाटित करैत अछि।

एहि खण्डक अध्ययनमे 'संरक्षण' आ 'नियन्त्रण'क भेद आवश्यक अछि। जमीन्दार पक्ष जे आश्रय अथवा कृपा कहि सकैत अछि, निर्बल परिवार ओकरा भय, बाध्यता आ प्रतिष्ठाक जोखिमक रूपमे अनुभव करैत अछि।

चारिम परिच्छेद : कचहरी, दरोगा आ विधिक असमानता

चारिम परिच्छेदमे पुलिस आ दरोगाक भूमिका संघर्षक संस्थागत विस्तार करैत अछि। अधिकारक कार्यालय गरीबक शिकायत सुनबाक निरपेक्ष स्थान नहि रहि जाइत; ओतय पद, पहुँच आ पक्षधरता न्याय-प्रक्रिया कैं प्रभावित करैत अछि। दरोगाक सम्मुख मटरूक उपस्थिति न्याय माँगबाक अधिकार आ वास्तवमे न्याय उपलब्ध होबाक दूरी देखबैत अछि।

एहि खण्डमे कथाकारक सामाजिक दृष्टि अधिक ठोस भऽ उठैत अछि। केवल दुष्ट व्यक्ति हटला सँ व्यवस्था नहि बदलत; जखन धरि अधिकारक संस्था सबल पक्षक दबावसँ स्वतन्त्र नहि होयत, पीड़ितक स्वर असुरक्षित रहत।

पाँचम परिच्छेद : दमनक सीमा आ प्रतिरोधक तैयारी

सामन्ती सत्ता आ प्रशासनक बीच परस्पर संवादक घटनासभसँ मटरूक व्यक्तिगत संकट सामाजिक आलोचनाक रूप लैत अछि। केकर बात सुनल जायत, केकर गवाही

विश्वसनीय मानल जायत आ केकर प्रतिष्ठा पहिनहि सँ स्वीकारल गेल अछि—ई प्रश्न उपन्यासक न्याय-बोधकेँ परिभाषित करैत अछि।

एहि भागमे भयक भीतर प्रतिरोधक इच्छा सेहो विकसित होइत अछि। ई प्रतिरोध घोषणाक रूपमे सदिखन नहि देखाइत; कखनो परिजनकेँ सुरक्षित रखबाक योजना, कखनो उचित व्यक्तिसँ सहयोग माँगब आ कखनो अन्यायक कारण स्पष्ट करबाक प्रयत्न रूपेँ सोझाँ अबैत अछि।

छठम परिच्छेद : सुगियाक चेतना आ नैतिक सहमतिपर प्रश्न

छठम परिच्छेद सुगियाक आन्तरिक असुरक्षा आ ओकर परिस्थिति-बोधकेँ केन्द्रीय स्थान दैत अछि। ओ अपन चारूकात बनल शक्ति-सन्तुलन बुझबाक प्रयत्न करैत अछि। ओकर सोझाँ केवल प्रेम अथवा विवाहक सामान्य विकल्प नहि, सामाजिक बहिष्कार, पिताक असहायता आ भविष्यक जीवन-यापनक कठोर प्रश्न अछि।

एहि भागपर नारीवादी पाठ आवश्यक अछि। जे निर्णय बाहरी दृष्टिसँ स्वीकृति प्रतीत हो, ओ भय आ अभावमे लेल गेल बाध्य निर्णय सेहो भऽ सकैत अछि। सुगियाक स्थिति कैँ 'समर्पण' कहि महिमामण्डित कयनाइ एकर मानवीय जटिलता कम करैत।

सातम परिच्छेद : सत्ता-संवाद आ आर्थिक दावेदारी

एहि परिच्छेदमे ठाकुर जालिम सिंहक प्रभाव आ सुगियाक सम्बन्धसँ उठैत अधिकार-प्रश्न स्पष्ट आकार लैत अछि। धन, जमीन आ सामाजिक प्रतिष्ठाक बलपर ककरो जीवनक निर्णय करबाक प्रवृत्ति विरोधक केन्द्र बनैत अछि। सुगिया केवल सहायता प्राप्त करबाक पात्र नहि रहि, अपन भविष्यक शर्तक विषयमे संवाद करबाक स्थिति खोजैत अछि।

कथाक अर्थ एतय सम्पत्तिक मात्र हस्तान्तरण नहि। अधिकारक नैतिक स्रोत की—उपकार, दान कि न्याय? ई भेद खुलैत अछि। जँ सम्पन्न व्यक्ति दान दैत छथि तँ शक्ति हुनक हाथेमे रहि सकैत अछि; जँ निर्बलक अधिकार मानल जाइत अछि तँ सम्बन्धक मूल आधार बदलैत अछि।

आठम परिच्छेद : परिवर्तनक योजना आ अविश्वासक दीर्घ छाया

अधिकारक सम्भावित मान्यता सुगियाक आश्वस्ति तुरन्त स्थापित नहि करैत अछि। विगत अनुभवक कारण ओ अभिभावकत्व, उदारता आ राजनीतिक प्रस्तावकेँ सावधानीसँ देखैत अछि। कथाकार संवादक लम्बा क्रम उपयोग करैत छथि; ताहिसँ निर्णयक सामाजिक भार स्पष्ट होइत अछि।

एहि स्तरपर उपन्यास 'उद्धारक' पुरुषक विचारक सीमा सेहो खोलैत अछि। समाज सुधारबाक इच्छा मूल्यवान अछि, मुदा सुधारक पहल जँ पीड़ित व्यक्तिक स्वतन्त्रता केँ न सुनय तँ न्याय फेर एकतरफा दान बनि सकैत अछि।

नवम परिच्छेद : व्यक्ति-सम्बन्धक राजनीतिक अर्थ

व्यक्तिगत भेट, आश्वासन आ अधिकार सम्बन्धी बातचित कथाक राजनीतिक स्वरूपकेँ गहिर करैत अछि। सुगियाक परिस्थिति दुष्ट-भलमानुसक साधारण विभाजनमे नहि अँटैत। एकहि व्यक्ति वा परिवारमे सहायताक सम्भावना आ वर्चस्वक स्मृति संग-संग रहि सकैत अछि।

यही कारण एतय पात्रक कथनक अपेक्षा ओकर व्यवहार अधिक महत्त्वपूर्ण अछि। न्यायपूर्ण व्यवहारक कसौटी स्थायी जिम्मेदारी अछि, क्षणिक दया नहि।

दशम परिच्छेद : सामाजिक प्रतिष्ठाक नव संघर्ष

सुगियाक जीवनक सम्बन्धमे सम्मान आ सार्वजनिक मान्यताक प्रश्न समक्ष अबैत अछि। गाम-समाजमे निजी सम्बन्ध केवल निजी नहि रहैत; ओकरा जाति-कुल, स्त्रीक 'चरित्र', धन आ परिवारक इज्जतिक मापदण्डसँ देखल जाइत अछि।

एहि खण्डमे कथाक मुख्य आलोचना एहि सामूहिक दृष्टिपर अछि। समाज अपराधीक प्रभावकेँ सहि सकैत अछि, मुदा पीड़ित स्त्रीसँ निरन्तर आत्म-प्रमाण माँगैत अछि। एहन दोसर दण्डक अनुभूति कथाक स्त्री-विमर्शक महत्त्वपूर्ण पक्ष थिक।

एगारहम परिच्छेद : नव पीढ़ी आ शिक्षाक सम्भावना

कथा आगाँ बढ़ैत नव पीढ़ी, शिक्षित व्यक्तिसभ आ सामाजिक बदलावक विचारकेँ प्रमुखता दैत अछि। अजय, विजय, रामेश्वर आ अन्य सहयोगी-संवादी पात्र केवल कथानक आगाँ बढ़ेबाक साधन नहि; ओ समाजक भीतर एकरूपता नहि होएबाक प्रमाण छथि। सम्पन्न परिवेशमे सेहो अन्यायक विरोध सम्भव अछि।

एहि परिच्छेदक महत्त्व व्यक्तिगत करुणाक सीमासँ बाहर निकलि सामूहिक विवेक बनबाक सम्भावनामे अछि। मुदा उपन्यासक भरोसा प्रायः किछु नेक व्यक्तिपर केन्द्रित रहैत अछि; व्यापक संस्था आ संगठित श्रमिक आन्दोलनक चित्र अधिक विकसित होइत तँ परिवर्तनक सामाजिक आधार मजबूत होइत।

बारहम परिच्छेद : सम्बन्ध, छल आ वैकल्पिक नैतिकता

संघर्षक मध्यपर्वमे पारिवारिक आ सामाजिक सम्बन्धक पुनर्समीक्षा होइत अछि। बाहरी मान-प्रतिष्ठा आ भीतरी नैतिक आचरणक अन्तर पात्रसभक संवाद सँ उद्घाटित होइत अछि। जे सभ्य कहबैत अछि से सदिखन न्यायप्रिय नहि; जे निर्धन अछि से नैतिक निर्णयमे हीन नहि।

एहि खण्ड केँ शीर्षकक आरम्भिक अर्थसँ जोड़ि पढ़ब उपयोगी अछि। गुदड़ी बाहरी वंचनाक संकेत अछि; 'लाल' भीतरक ओ मूल्य थिक जकर पहचान समाजक प्रभुत्वशाली दृष्टि करबामे असमर्थ होइत अछि।

तेरहम परिच्छेद : श्रमसँ सामाजिक दायित्व धरि

गामक आर्थिक संकट, श्रम आ जीवन-निर्वाह सम्बन्धी प्रश्न बदलैत परिस्थितिमे नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। सम्पन्न वर्गक किछु व्यक्तिमे सुधारक इच्छाक संकेत अछि, मुदा एकटा व्यक्तिक सदिच्छा सैकड़ों आश्रितक संरचनागत विवशताक विकल्प नहि। कथाकार एतय उदार सुधारक आ अधिकार-आधारित परिवर्तनक बीच तनाव उत्पन्न करैत छथि।

आलोचनात्मक रूपेँ देखल जाए तँ श्रमिकक अपन संगठन अथवा सामूहिक प्रतिरोधक सक्रिय उपस्थिति सीमित रहैत अछि। तथापि सामाजिक गरिमा कैँ जन्माधिकारक बदला कर्म आ मानवीय व्यवहारसँ जोड़बाक प्रयत्न उपन्यासक सकारात्मक उपलब्धि अछि।

चौदहम परिच्छेद : परवरिश, शिक्षाक अवसर आ वर्ग-गतिशीलता

एहि चरणमे बालकक लालन-पालन, अध्ययन आ भविष्य निर्माणक प्रश्न केन्द्रमे अबैत अछि। सुरेश्वरक जीवनसँ शिक्षा सामाजिक अवरोध पार करबाक वास्तविक सम्भावना बनैत अछि। ज्ञानक उपलब्धि केवल अक्षरज्ञान नहि; भाषा, आत्मविश्वास आ सार्वजनिक संस्थाक बीच अपन स्थान बनयबाक प्रक्रिया थिक।

मुदा शिक्षाक सफलता लेल आश्रय आ संसाधन सेहो आवश्यक अछि। उपन्यास अनायास ई दिखबैत अछि जे केवल प्रतिभा पर्याप्त नहि—विद्यालय, आर्थिक सहायता, परिवारक श्रम आ अवसरक उपलब्धता ओकर विकास निर्धारित करैत अछि। एतय 'गुदड़ीक लाल'क मुहावरा संरचनागत अर्थ ग्रहण करैत अछि।

पन्द्रहम परिच्छेद : सन्तानक भविष्य आ मातृत्वक अधिकार

सुगियाक मातृत्वक माध्यमसँ कथाक केन्द्र बदले लगैत अछि। ओकर पहिने भोगल गेल अपमान ओहिठाम समाप्त नहि होइत; पुत्रक भविष्य, शिक्षा आ सामाजिक पहचानक चिन्ता बनि ओकर जीवनमे पुनः उपस्थित होइत अछि।

मातृत्व कैँ केवल त्यागक महिमामण्डनसँ पढ़ल जाए तँ सुगियाक स्वतंत्र स्त्रीत्व ओझराएत। अधिक गहन पाठ कहैत अछि जे पुत्रक भविष्यसँ जुड़ल ओकर आग्रह अपन जीवनपर दीर्घकालिक अधिकारक दावा सेहो अछि—ओ अपन अनुभवक हिंसा अगिला पीढ़ीपर नहि दोहराओल चाहैत अछि।

सोलहम परिच्छेद : सुरेश्वरक शैक्षिक यात्रा आ आत्मपरिचय

सुरेश्वरक प्रसंग सामाजिक गतिशीलताक कथाकेँ ठोस मानवीय रूप दैत अछि। गामक अभावसँ बाहरक शैक्षिक वातावरणक अनुभव एकटा एहन पीढ़ी तैयार करैत अछि जे जन्मसँ निर्धारित सामाजिक सीमा स्वीकार करबाक लेल बाध्य नहि रहय चाहैत।

एहि पात्रक माध्यमसँ उपन्यासक आशावाद अधिक स्पष्ट अछि। मुदा सफल शिक्षित पुत्रक कथा सँ समस्त मजदूरवर्गक उन्नतिक निष्कर्ष निकालब जल्दबाजी होयत। अपवादात्मक प्रतिभाक सफलता समाजक असमानता केँ अपने आप समाप्त नहि करैत; ओ ओकरा अधिक प्रत्यक्ष बना सकैत अछि।

सत्रहम परिच्छेद : अभिजन-सम्बन्धक परीक्षण

कथाक पछिला चरणमे पहचान, सामाजिक स्वीकार्यता आ पारिवारिक सम्बन्धक प्रश्न फेर तीक्ष्ण होइत अछि। सुरेश्वरक शिक्षित व्यक्तित्व सम्पन्न घरानाक दृष्टिमे परिवर्तन उत्पन्न करैत अछि। एहि परिवर्तनक भीतर मानवीय स्वीकार्यता कतेक अछि आ सफलताक प्रति आकर्षण कतेक—ई प्रश्न अनिवार्य अछि।

जँ निर्धन व्यक्ति शिक्षित आ सफल भेलाक बाद मात्र सम्मान योग्य मानल जाए तँ सामाजिक भेदभावक मूल विचार अपरिवर्तित रहि सकैत अछि। उपन्यासक सुधारवादी आशाकेँ एहि कसौटीपर परखब ओकर सभसँ उपयोगी आलोचनात्मक पाठ अछि।

अठारहम परिच्छेद : गाम-परिवार आ सामाजिक स्मृति

पुरान सम्बन्धक स्मृति, भूमि आ परिवारक दायित्व नव परिवेशमे पुनः अर्थ पबैत अछि। बीतल अन्याय केवल घटना नहि रहैत; ओ वर्तमान निर्णयक आधार बनैत अछि। सुगिया आ ओकर सन्तानक जीवनमे मान-अपमानक विरासत एही तरहें उपस्थित अछि।

एहि खण्डक भावनात्मक शक्ति स्मृतिक अधूरापनमे अछि। विस्थापन हो अथवा उन्नति, गामक सम्बन्ध आ मायक जीवनक अनुभवक हिसाब सहज समाप्त नहि होइत।

उन्नीसम परिच्छेद : नैतिक निर्णयक सार्वजनिक स्वर

व्यक्तिगत मतभेद सामाजिक विचार-विमर्शमे परिणत होइत अछि। सम्पत्ति, सम्बन्ध आ प्रतिष्ठापर दावा कतेक न्यायोचित अछि—एहि प्रश्नक उत्तर केवल पारिवारिक मुखियाक इच्छासँ नहि तय भऽ सकैत।

लघु संक्रमणात्मक एहि परिच्छेदक भूमिका अन्तिम संघर्षक विचारात्मक धरातल बनब अछि। जे चीज पहिले चुप्पी आ भयक विषय छल, आब ओकरा सार्वजनिक विमर्शमे राखबाक सम्भावना उत्पन्न होइत अछि।

बीसम परिच्छेद : कानूनी रणनीति आ सामन्ती असहजता

कथाक अन्तिम राजनीतिक-न्यायिक चरणमे ठाकुर-पक्षक प्रतिष्ठा, जमीन्दारी स्मृति आ नव अधिकार-बोध आमने-सामने अबैत अछि। पुरान पद्धतिसँ संचालित लोकक लेल सार्वजनिक सवाल अपने आपमे चुनौती थिक।

एहि परिच्छेदमे कथाक संघर्ष दैहिक बलसँ हटि वाणी, दस्तावेज, विधिक तर्क आ नैतिक उत्तरदायित्वक दिशामे बढ़ैत अछि। ई परिवर्तन उपन्यासक संरचनात्मक उपलब्धि अछि।

एक्कीसम परिच्छेद : कुलाभिमान, न्याय आ सामाजिक साक्षात्कार

जालिम सिंह, सुगिया, सुरेश्वर आ परिजनसँ जुड़ल प्रश्न नव तीव्रता प्राप्त करैत अछि। समाजक ऊँच-नीच, सन्तानक वैधता आ परिवारक प्रतिष्ठाक भाषामे छिपल हिंसा सोझाँ अबैत अछि। पात्रसभ सामाजिक स्वीकार्यताक निर्णायक प्रश्न पर पहुँचैत छथि।

एहि परिच्छेदक आलोचनात्मक मूल्य एहि बातमे अछि जे न्याय केवल दोषी कैँ पराजित करब नहि, बल्कि पीड़ितकैँ अपन नाम आ सम्बन्धक संग स्वीकार करब बनैत अछि। तथापि मनुष्यक गरिमा कैँ वैवाहिक अथवा वंशगत स्वीकृतिसँ जोड़बाक सीमा सेहो एतय देखाइत अछि।

बाइसम परिच्छेद : अदालत, पुनर्स्वीकृति आ शीर्षकक पूर्णार्थ

अन्तिम परिच्छेद न्यायालयीय सुनुवाईसँ कथाक निष्कर्ष विकसित करैत अछि। जालिम सिंहसँ जुड़ल घटनाक सामाजिक आ नैतिक परिणामपर निर्णय अबैत अछि; सुगियाक अपमान आ सम्बन्धकेँ केवल निजी भेद मानि दबाओल सम्भव नहि रहैत। ठाकुरक पूर्व परिचय, सुगियाक संघर्ष आ सुरेश्वरक व्यक्तित्व एकहि कथात्मक बिन्दुपर आ मिलैत अछि।

अन्तिम प्रसंगमे सुगियाक स्वीकृति आ परिवारक नवीकरणक माध्यमसँ लेखक सामाजिक न्यायक आशावादी रूप प्रस्तुत करैत छथि। मुद्रित पृष्ठ १३२ सँ कानूनी कार्यवाहीक विस्तार आ पृष्ठ १३८–१४० मे परिवार आ समाजक प्रतिक्रियासँ कथा समापन दिस बढ़ैत अछि। कथाक अन्तिम पृष्ठपर एहि बातक पछतावा व्यक्त होइत अछि जे वास्तविक मानवीय मूल्यकेँ पहिने चिन्हल नहि गेल। एही बोधसँ शीर्षकक नैतिक अर्थ खुलैत अछि।

मुदा एतय एकटा गम्भीर प्रश्न बचैत अछि : अदालतक निर्णय आ परिवारक स्वीकार्यता सुगियाक पूर्व पीड़ाकेँ केहन रूपमे सम्बोधित करैत अछि? जखन कथाक न्याय व्यक्तिगत पुनर्मिलनपर केन्द्रित होइत अछि तखन संरचनागत शोषणक विरुद्ध व्यापक परिवर्तनक प्रश्न अधूरा रहि जाइत अछि। ई सीमा पुस्तकक मानवतावादी उपलब्धिक संग-संग देखबाक चाही।

मटरू : श्रमिक-अस्तित्व, पितृत्व आ प्रतिरोध

मटरू उपन्यासक सामाजिक यथार्थक पहिल ठोस आधार छथि। हुनक श्रम समाजक उत्पादक व्यवस्था चलबैत अछि, मुदा भूमि आ अधिकार हुनक हाथमे नहि। एहन आर्थिक स्थिति हुनक पारिवारिक निर्णयकेँ सेहो सीमित करैत अछि। ओ बेटीकेँ सुरक्षा देबाक आकांक्षा रखैत छथि, मुदा सामन्ती शक्तिक सोझाँ हुनक सामर्थ्य संकटग्रस्त होइत अछि।

मटरूक चरित्रक नैतिक गरिमा एहि बातमे नहि जे ओ सर्वशक्तिमान नायक बनि जाइत छथि। ओकरा विपरीत, निर्बल होएबाक बावजूद ओ सम्बन्ध, श्रम आ आत्मसम्मानक अर्थ बचाबय चाहैत छथि। साहित्यिक रूपेँ ई महत्त्वपूर्ण अछि : अन्यायक वर्णन तखने प्रभावशाली होइत अछि जखन पीड़ितक व्यक्तित्व केवल दुःखक पात्र नहि, अपन सोच-विवेक राखनिहार मनुष्य बनैत अछि।

तथापि मटरूक संघर्षकेँ लेखक किछु अवसरपर व्यक्तिगत सहायतापर निर्भर करबैत छथि। संगठित श्रमिक प्रतिरोधक लम्बा सामाजिक प्रक्रिया सशक्त रूपेँ विकसित नहि भेल अछि। एहि कारण कृति श्रमिक आन्दोलनक महाकाव्य नहि, वंचित परिवारक नैतिक संघर्षक उपन्यास अधिक अछि।

सुगिया : देहक स्वामित्व, गरिमा आ निर्णयक सीमा

सुगिया 'गुदड़ीक लाल'क सर्वाधिक जटिल आ नैतिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण पात्र अछि। लेखकक प्रारम्भिक वक्तव्य स्वयं ओकर जीवनकेँ सामाजिक शोषणक केन्द्रमे राखैत अछि। ओहि वक्तव्यक अनुसार सुगिया सामाजिक दृष्टिसँ अपमानजनक परिणतिक शिकार होइत अछि आ अनुकूल विकल्पक अभावमे अपन सम्बन्धक निर्णय करैत अछि। एहि कथनकेँ निर्विवाद सहमतिक प्रमाण मानब उचित नहि। असमान सत्ता-सम्बन्धमे सहमति कतेक स्वतंत्र छल—एहि प्रश्नक बिना सुगियाक गहिर पाठ सम्भव नहि।

उपन्यास ओहि समाजकेँ उद्घाटित करैत अछि जतय पुरुषक हिंसापर मौन रहबाक प्रवृत्ति अछि, मुदा स्त्रीक जीवनी पर स्थायी कलंक राखल जाइत अछि। सुगियाक पीड़ा सामाजिक दुहराव झेलैत अछि : पहिल पीड़ा असमान सम्बन्धक, दोसर पीड़ा लोकदृष्टिक। शिक्षा आ नव पीढ़ीक सहायता एहि कलंककेँ चुनौती दैत अछि।

मुदा सुगियाक गरिमा कैँ मात्र मातृत्व, विवाह अथवा अन्तिम पारिवारिक स्वीकृतिसँ सिद्ध करब पर्याप्त नहि। ओ स्वयं एकटा स्वतंत्र व्यक्ति अछि, जकर आत्मबोध ओकर

मातृत्वसँ पैघ अछि। एहन नारीवादी पाठ कृतिक मानवीय सम्भावना कैं आओर गहिर करैत अछि, यद्यपि कथाकार एकर सम्पूर्ण विकास नहि कयलनि।

ठाकुर जालिम सिंह : कुल, सत्ता आ अपराधक वैधता

ठाकुर जालिम सिंह केवल एकटा विरोधी व्यक्ति नहि, सामन्ती सम्बन्धक प्रतिनिधि छथि। हुनक प्रतिष्ठा जमीन, कुल, पहुँच आ भयपर टिकैत अछि। उपन्यास देखबैत अछि जे सामाजिक असमानताक वास्तविक शक्ति ओहि क्षण प्रकट होइत अछि जखन सम्पन्न वर्ग अपन इच्छा कैं नियम जकाँ चलबैत अछि।

जालिम सिंहक चरित्रमे सत्ता आ अंतरात्माक संघर्षक सम्भावना अछि। कथा अन्तमे परिवर्तन आ स्वीकार्यताक दिशा खोलैत अछि, मुदा एहि बदलावक विश्वसनीयता ओकर क्रमिक नैतिक आत्मालोचनपर निर्भर करैत अछि। पाठकक दृष्टिसँ केवल अन्तिम उदार व्यवहार पहिल अन्यायक उत्तरदायित्व मिटा नहि सकैत।

सामन्ती प्रतिष्ठाक आलोचना कथा भीतर बारम्बार उद्घाटित होइत अछि, मुदा न्यायिक परिणतिक बाद ओकर व्यापक संस्थागत ढाँचा केहन रूपेँ बदलत—एहि प्रश्नक उत्तर अपेक्षाकृत संक्षिप्त अछि।

सुरेश्वर आ नव पीढ़ी : सामाजिक गतिशीलताक द्वैध

सुरेश्वरक जीवनक माध्यमसँ उपन्यासक शीर्षक भविष्य-दिशामे खुलैत अछि। पिछड़ल सामाजिक परिस्थिति भीतर पसरल प्रतिभा जखन शिक्षाक अवसर पबैत अछि, तखन ओ पुरान अवरोधक सीमा पार करबाक सामर्थ्य प्राप्त करैत अछि। ई नैतिक आशावाद कृतिक महत्त्वपूर्ण ऊर्जा अछि।

मुदा वर्गीय गतिशीलताक एहि अनुभवमे द्वैध छैक। एक ओर शिक्षासँ अपन योग्यता सिद्ध कएनिहार पात्र समाजक जाति-कुल आधारित निर्णयकेँ निरर्थक बना दैत अछि। दोसर ओर यदि समाज ओहि व्यक्तिक सम्मान ओकर सफलता, पद अथवा प्रतिष्ठित सम्बन्धक

बाद करैत अछि तँ ओहि समाजक मूल पूर्वाग्रह एखन शेष रहैत अछि। सुगिया-सुरेश्वरक संयुक्त पाठ ई अन्तर स्पष्ट करैत अछि।

उपन्यासक शिक्षाविषयक आग्रह नैतिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा शैक्षिक संस्थाक प्रवेश, लागत, भाषा आ वर्गीय संसाधनक सामाजिक विश्लेषण अधिक गहिर होइत तँ कथाक यथार्थवाद आओर सुदृढ़ भऽ सकैत छल।

सहायक पात्र : अजय, विजय, रामेश्वर, शारदा आ न्यायिक संसार

मुख्य त्रिकोणक अतिरिक्त अनेक पात्र कथा कैं बहुपक्षीय बनबैत अछि। अजय आ विजय सन युवा, रामेश्वर, शारदा बाबू, दरोगा, विद्यालयक व्यक्तिसभ आ न्यायालयसँ जुड़ल अधिकारी सामाजिक सम्बन्धक अलग-अलग स्तर खोलैत छथि। ओ लोकनि सम्पन्न वर्गक भीतर असहमति, शिक्षित नैतिकता, प्रशासनिक पक्षधरता आ सुधारक सम्भावनाक विभिन्न स्वर प्रस्तुत करैत छथि।

एहि पात्रसमूहक आधारपर ई कहल जा सकैत अछि जे उपन्यास समाजकैं एकसमान दुष्ट अथवा एकसमान भल नहि मानैत। शोषक वर्गक भीतर सेहो सुधारक मनुष्य भऽ सकैत अछि, आ न्याय माँगबाक संस्था स्वयं अन्यायपूर्ण भऽ सकैत अछि। पात्र-विन्यासक ई गतिशीलता कृतिक आलोचनात्मक महत्त्व बढ़बैत अछि।

मुदा किछु सहायक पात्र दीर्घ संवादमे विचारक प्रतिनिधि अधिक बनि जाइत छथि। व्यक्तिगत भाषा, स्मृति आ अनिश्चितताक विस्तार होइत तँ ओ सभ आओर पूर्ण मनुष्य-जकाँ देखाइत।

कथाशिल्प : समय, दीर्घ संवाद आ नैतिक प्रयोजन

'गुदड़ीक लाल' एकटा क्रमिक, घटनाप्रधान कथा अछि। आरम्भमे सामाजिक संरचना, तकर बाद पारिवारिक संकट, फेर व्यक्तिसम्बन्धक बदलैत स्वरूप, शिक्षाक माध्यमसँ पीढ़ीगत परिवर्तन आ अन्तमे न्यायालयीय परिणति—ई क्रम उपन्यासकैं व्यापक समय-

विस्तार दैत अछि। कथा आरम्भक समय स्वाधीनतापूर्वक अछि, मुदा एकर अन्तक न्यायिक व्यवस्था आगाँक ऐतिहासिक परिवर्तित सन्दर्भक दिशामे बढ़ैत अछि। एहि समय-संक्रमणक अन्तर्गत घटनासभक क्रम बुझब अत्यन्त आवश्यक अछि।

लेखक किछु ठाम प्रत्यक्ष विवरणक बदला दीर्घ संवादक सहारा लैत छथि। सुगिया आ ठाकुर-पक्षक संवादमे दान, भूमि, अधिकार आ अपन भविष्यक प्रश्न उपस्थित होइत अछि। एहि संवादसभक लाभ ई जे पात्रक वैचारिक रुख स्पष्ट होइत अछि। मुदा कमी ई जे कखनो-कखनो पात्र स्वतः बोलनिहार व्यक्ति सँ बेसी लेखकक समाज-सुधारक विचारक प्रवक्ता देखाइत अछि।

न्यायालयीय भाग कथाक आरम्भिक हिंसक सत्ता-व्यवहारक उल्टा रूप प्रस्तुत करैत अछि : पहिने बल आ भय निर्णयक स्रोत छल, अन्तमे तर्क आ सार्वजनिक विधिक प्रक्रियाक सम्भावना बनैत अछि। ई संरचनात्मक प्रतिलोम उपन्यासक उल्लेखनीय शिल्पगत उपलब्धि अछि।

भाषा आ ग्राम्य यथार्थ

उपन्यासक भाषा मुख्यतः व्यवहारक मैथिली अछि। संवादमे 'हमरा', 'तोरा', 'अहाँ', 'ककरो', 'बजलाह', 'सौंसे', 'गप' सन लोकव्यवहारक संरचना पात्रक सामाजिक सम्बन्ध सूचित करैत अछि। ग्रामीण पदावली, खेती-मजदूरी, हवेली, देहरी, कचहरी आ स्कूलक शब्द-संसार सामाजिक यथार्थ बनबैत अछि।

भाषा-कौशलक सर्वाधिक प्रभाव ओतय अछि जतय पात्रक बोलब ओकर सामाजिक स्थानकेँ स्वतः उद्घाटित करैत अछि। एकहि वाक्यमे भय, विनय, विरोध आ आत्मसम्मानक स्तर बदलि सकैत अछि। किछु स्थानपर दीर्घ व्याख्या आ पुनरुक्ति कथाक गति रोकैत अछि; ई शिल्पगत सीमा अछि, भाषाक लोकधर्मी मूल्यक खण्डन नहि।

सम्पादनक दृष्टिसँ लम्बा संवादकेँ अधिक संयत करब आ घटना द्वारा स्पष्ट भऽ गेल तथ्यक पुनर्वर्णन घटायब उपन्यासक प्रभाव बढ़ा सकैत छल। किन्तु भाषाक विशिष्ट मैथिली चरित्र ओकर प्रमुख उपलब्धि छी।

नारीवाद आ सामाजिक न्याय : सहमति, विवाह आ सामाजिक क्षमा

कथाक सर्वाधिक कठिन प्रश्न सुगियाक प्रति व्यवहार अछि। स्त्रीक देहपर पुरुषक शक्ति आ ओकर प्रतिष्ठापर समाजक नियन्त्रण परस्पर जुड़ल अछि। एकरे कारण पीड़ित स्त्रीक सोझाँ 'सम्मानजनक' विकल्प सेहो बाध्यकारी भऽ सकैत अछि। साहित्यिक नैतिकताक कसौटीपर देखल जाए तँ विवाह अथवा परिवारक अन्तिम मान्यता न्यायिक प्रक्रिया आ पुरान हिंसाक हिसाबक स्वयंसिद्ध विकल्प नहि।

उपन्यास जखन सुगियाक विरोध आ दुखकेँ शब्द दैत अछि तखन ओ पितृसत्तात्मक रुढ़िक विरुद्ध जाय पड़ैत अछि। मुदा जखन अन्तिम समाधान सामाजिक स्वीकृति मे केन्द्रित होइत अछि, तखन पितृसत्ताक बाहर पूर्ण स्वायत्त जीवनक सम्भावना अधिक विस्तार नहि पबैत। एहि द्वैतकेँ कृतिक ऐतिहासिक सामाजिक सुधारवादक सीमा मानल जा सकैत अछि।

कथाकारक मानवीय उद्देश्य महत्त्वपूर्ण अछि : स्त्रीकेँ अपमानक स्थायी कारागारमे नहि छोड़ल जाए। मुदा आधुनिक पाठकक सोझाँ प्रश्न रहैत अछि जे गरिमा समाज द्वारा प्रदान कयल मान्यता थिक कि मनुष्यक आरम्भिक अविच्छिन्न अधिकार? उपन्यास एहि बहसक लेल समृद्ध पाठ्यभूमि दैत अछि।

भूमिहीनता, जमीन्दारी आ संस्थागत शोषण

आरम्भिक ग्राम-परिस्थिति भूमिकेँ शक्ति-स्रोतक रूपमे स्थापित करैत अछि। मजदूर खेत जोतैत अछि, मुदा भूमि स्वामित्व ओकर नहि। एहि विभाजनसँ आर्थिक निर्भरता निर्माण होइत अछि; निर्भरता पुनः राजनीतिक भय आ सामाजिक अधीनताक आधार बनैत

अछि। हवेलीक प्रभाव पुलिसक व्यवहार धरि पहुँचनाइ एहि सत्ता-सम्बन्धक संस्थागत रूप अछि।

बीसम शताब्दीक बिहारमे जमीनक स्वामित्व आ जमीन्दारी उन्मूलन महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक प्रश्न रहल। बिहार भूमि सुधार अधिनियम, १९५०क अभिलेख एहि परिवर्तनक कानूनी पृष्ठभूमि स्पष्ट करैत अछि। मुदा उपन्यासक काल्पनिक घटनाकेँ एहि कानूनक किछु विशिष्ट प्रभावक प्रत्यक्ष प्रमाण कहब उचित नहि। कानून ऐतिहासिक तुलनात्मक सन्दर्भ थिक, कथानकक अभिलेख नहि।

उपन्यासक अन्तिम सुधारवादी निष्कर्षकी एहन समस्या प्रस्तुत करैत अछि : जमीन्दारी शोषणक शिकार केवल मटरू-परिवार नहि; ग्रामक अनेको मजदूर अछि। एहन परिस्थितिमे एक परिवारक पुनर्प्रतिष्ठा महत्त्वपूर्ण होइतहुँ सम्पूर्ण वर्गीय न्यायक समतुल्य नहि। ई अन्तर कृतिक आलोचनात्मक मूल्यांकनमे निर्णायक अछि।

शिक्षा : करुणाक दान नहि, अवसरक अधिकार

उपन्यासक आरम्भमे विद्यालयक उपस्थिति आ उत्तरार्धमे शिक्षित नव पीढ़ीक सामाजिक प्रभाव एकटा दीर्घ प्रतीकात्मक रेखा बनबैत अछि। पहिल चरणमे शिक्षा सम्पन्न वर्गक संसाधनक लग पड़ैत अछि; पछिला चरणमे वही शिक्षा जन्म-निर्धारित असमानताक प्रतिकारक साधन बनैत अछि।

'गुदड़ीक लाल' शीर्षक एकर परिणाम मात्र नहि, एकर आधार सेहो अछि : गरीबी प्रतिभाक अनुपस्थितिक प्रमाण नहि। मुदा ई विचार तखन पूर्ण सामाजिक सिद्धान्त बनत जखन प्रतिभाक पहिचान लेल सबकेँ समान साधन भेटत। ओहि अर्थमे शिक्षा केँ व्यक्तिगतरूपेँ प्रदान कयल कृपासँ आगू बढ़ि सामूहिक अधिकारक रूपमे सोचेबाक आवश्यकता अछि।

मटरू आ सुगियाक अनुभव एहि आधुनिक शिक्षात्मक आदर्शकेँ मानवीय गहिराइ दैत अछि। सामाजिक बदलाव केवल उत्कृष्ट विद्यार्थी तैयार करब नहि, तकर परिवार आ समान वर्गक अन्य लोकक सम्मान सुनिश्चित करब सेहो अछि।

न्यायालयीय उपसंहार : विधिक न्याय आ सामाजिक पुनर्स्थापना

अन्तिम परिच्छेदमे न्यायालयीय प्रसंग कथा केँ सार्वजनिक निर्णायकता दैत अछि। आरम्भमे जमीन्दार आ पुलिसक सम्मुख निर्बलक स्वर अबरुद्ध छल; अन्तमे अदालतक सम्मुख सामाजिक प्रतिष्ठा आ निजी सम्बन्धक विवाद तर्कक विषय बनैत अछि। एहि क्रममे कथाकार न्याय-व्यवस्थासँ आशावादी आशा व्यक्त करैत छथि।

अन्तिम भागमे एकटा महत्त्वपूर्ण वाक्य न्यायिक मर्यादाक केन्द्र व्यक्त करैत अछि।

> “हम तँ कानून सँ बान्हल छी।” (मूल पाठ, पृ. १३६)

एहि वाक्यक महत्त्व केवल अदालती औपचारिकता नहि। न्यायाधीशक व्यक्तिगत सदिच्छा आ विधिसम्मत निर्णयक बीच भेद प्रकट होइत अछि। अदालतक प्रक्रिया व्यक्तिक अनुराग, क्रोध अथवा कुलप्रतिष्ठाक वर्चस्वसँ अलग सार्वजनिक कसौटी प्रस्तुत करबाक दावा करैत अछि।

फेरो ई स्वीकारणीय अछि जे विधिक विजय आ सामाजिक न्याय एकार्थक नहि। सामाजिक पुनर्प्रतिष्ठा, स्त्रीक स्वायत्तता, श्रमिकक भूमि-अधिकार आ संस्थागत दमनक दण्डकेँ केवल एक निर्णय पूर्ण रूपेँ हल नहि कऽ सकैत। एहि बिन्दुपर कृतिक आशावादी समापन पाठकक स्वतंत्र आलोचनात्मक विवेककेँ आमन्त्रित करैत अछि।

शीर्षकक अन्तिम अर्थ आ कृतिक नैतिक उपलब्धि

मुद्रित अन्तिम पृष्ठपर उपन्यास ‘गुदड़ीक लाल’ केँ चिन्हबाक सामाजिक असमर्थताक दुःखक संग समाप्त होइत अछि। एहि प्रकार शीर्षक केवल प्रतिभाशाली निर्धन बालकक

मुहावरा नहि रहि जाइत; मानवीय गरिमाक देरिसँ होइत स्वीकृति, समाजक पूर्वाग्रह आ पछतावाक रूपक बनैत अछि।

कथाक अन्तिम अभिप्राय ई अछि जे जाति-कुल आ सम्पत्तिक अभिमान मनुष्यक असल मूल्यकेँ ढाँपि दैत अछि। जे लोक अपन सामनेक साधारण जीवने भीतर विकसित मानवीय प्रतिभा नहि देखैत, ओ वास्तवमे स्वयं अपन नैतिक दृष्टि खोबि रहल होइत अछि।

ई उपन्यासक प्रमुख उपलब्धि अछि जे ओ शोषणक कथा केँ केवल करुणामय निरीक्षण तक सीमित नहि रखैत। सुगिया आ सुरेश्वरक जीवनकेँ अन्तिम मान्यताक प्रश्नसँ जोड़ि लेखक समाजसँ कहल चाहैत छथि जे जन्मक आधारपर बनल मानदण्ड परिवर्तनशील अछि।

प्रमुख रस, भाव-संरचना आ पाठकीय अनुभव

करुण रस उपन्यासक प्रमुख भाव-शक्ति अछि। मटरूक असहायता, सुगियाक अपमान आ पारिवारिक असुरक्षा पाठकमे करुणा उत्पन्न करैत अछि। एहि करुणाक संग रौद्र आ वीर भावक सामाजिक रूप जुड़ैत अछि—अन्यायक प्रति रोष आ ओकर विरोधक इच्छा।

अन्तिम चरणमे अदालती प्रतीक्षा, सामाजिक स्वीकृति आ पुनर्मिलन शान्त भावक दिशा बनबैत अछि। मुदा ई शान्ति सम्पूर्ण त्रासदी मेटा दैत अछि कि नहि, एहि प्रश्नक उत्तर पाठकक संवेदना पर निर्भर रहैत अछि। कृतिक भावात्मक प्रभाव एतय सबसँ रोचक बनैत अछि।

अन्यायपर आधारित कथा पढ़ैत समय केवल भावुक भऽ जाइनाइ पर्याप्त नहि। कृति पाठकसँ व्यवस्थाक चरित्र बुझबाक आग्रह करैत अछि। एहि अर्थमे करुणा एकटा नैतिक आरम्भ थिक, अन्तिम निष्कर्ष नहि।

‘कन्यादान’, ‘पारो’ आ ‘गोदान’ : तुलनात्मक पाठ

हरिमोहन झाक ‘कन्यादान’मे स्त्रीक विवाहपर पारिवारिक-सामाजिक नियन्त्रण व्यंग्यक माध्यमसँ उद्घाटित अछि। ‘गुदड़ीक लाल’मे स्त्रीक जीवनक प्रश्नक स्वर अधिक सीधे करुण-नाटकीय अछि। दुनू कृति विवाह आ समाजक नैतिक मापदण्डपर आलोचनात्मक दृष्टि राखैत अछि; मुदा एकर शैलीगत आधार अलग अछि।

यात्रीक ‘पारो’ स्त्रीक अनुभवक अपन आवाज बनबाक दिशामे मैथिली उपन्यासक महत्त्वपूर्ण पड़ाव मानल जाइत अछि। सुगियाक प्रसंग पढ़ैत समय एतय तुलना उपयोगी अछि : स्त्रीक स्वतन्त्र इच्छा की विवाहक सामाजिक संस्थासँ अलग कल्पना कयल जा सकैत अछि? कथाक परिणाम ओकरा कतेक स्वतंत्र उत्तर देबय दैत अछि? एहि प्रश्नपर ‘पारो’क स्त्री-केंद्रित पाठ आ ‘गुदड़ीक लाल’क सुधारवादी समाधानकेँ समान नहि मानि सकैत छी।

प्रेमचन्दक ‘गोदान’मे किसानक संघर्ष आर्थिक संरचनासँ एतेक गहन बान्हल अछि जे व्यक्तिगत भलमनसाहत ओकर समाधान नहि। ‘गुदड़ीक लाल’मे ओही प्रकारक कृषक-मजदूर शोषणक प्रारम्भिक चित्र अछि, मुदा कथा मानवीय सदिच्छा, शिक्षा आ न्यायिक हस्तक्षेपक सफलतापर बेसी भरोसा करैत अछि। ई अन्तर दुनू कृतिक सौन्दर्यशास्त्रीय दिशा स्पष्ट करैत अछि।

तुलनात्मक अध्ययनक ई निष्कर्ष नहि जे एक कृति दोसरासँ प्रेरित अथवा ओकर प्रत्यक्ष अनुगामी अछि। साम्य सामाजिक प्रश्नक अछि, स्रोत-सम्बन्धक नहि।

आलोचनात्मक सीमा : सुधारवादी संकल्प आ कलात्मक विश्वसनीयता

कृतिक सबसँ पैघ सीमा ओकर नैतिक उद्देश्यक असाधारण स्पष्टता अछि। अनेक दृश्य एहन अछि जतय पात्रक संवादसँ लेखकक सामाजिक प्रस्ताव प्रत्यक्ष होइत अछि। ई स्पष्टता पाठककेँ विचार बुझबामे सहायता करैत अछि, मुदा कलात्मक अस्पष्टता आ स्वतंत्र अर्थनिर्माणक क्षेत्र कम करैत अछि।

दोसर सीमा संरचनागत शोषण आ व्यक्तिगत परिणतिक अनुपातक अछि। गामक अन्य मजदूरसभक समस्या कथाक आरम्भमे उपस्थित होइत अछि; मुदा समापन मुख्यतः सुगिया आ ओकर सम्बन्धित परिवारक न्यायपर केन्द्रित रहैत अछि। निजी विजय महत्त्वपूर्ण अछि, तथापि सामूहिक मुक्ति व्यापक प्रश्न बनल रहैत अछि।

तेसर सीमा स्त्री-अनुभवक अन्तिम अर्थनिर्णयमे अछि। सुगियाक पीड़ा आ संघर्ष मार्मिक अछि, मुदा न्यायकेँ परिवारक पुनर्स्थापनासँ बहुत निकट जोड़ल गेल अछि। स्वतंत्र जीवन, सामाजिक संरक्षण आ बिना विवाहक गरिमाक सम्भावना अधिक खुलल रहितय तँ स्त्री-विमर्शक स्वर आओर व्यापक होइत।

चारिम सीमा पात्रसभक अन्तिम परिवर्तनक मनोवैज्ञानिक गति अछि। प्रबल वर्गीय अभिमानसँ नैतिक स्वीकार्यता धरि पहुँचबाक क्रम सघन अन्तर्द्वन्द्व माँगैत अछि। कथाकारक आशावाद किछु ठाम ई संक्रमण शीघ्र बना दैत अछि।

एहि सीमासभक चर्चा कृतिक मानवतावादी उद्देश्यक अवमूल्यन नहि। उलटा, ई स्पष्ट करैत अछि जे उपन्यास कोन स्तरपर सफल अछि आ कोन स्तरपर आगाँक मैथिली सामाजिक उपन्यास अधिक जटिल रचनात्मक सम्भावना खोलि सकैत अछि।

निष्कर्ष : असमानताक परदा हटब आ मानवीय मूल्यक पहिचान

'गुदड़ीक लाल' मैथिली सामाजिक उपन्यासक ओहि परम्परामे रखल जाएबाक योग्य अछि जे स्थानीय सामाजिक व्यवहारक भीतर लुकाएल असमानता पर प्रश्न उठबैत अछि। स्वाधीनतापूर्वक ग्रामीण परिवेशक ई कथा मटरूक श्रमसँ शुरू होइत सुगियाक पीड़ा, अधिकार-संघर्ष, सुरेश्वरक शिक्षा आ अन्तमे सार्वजनिक न्यायिक बहसधरि पहुँचैत अछि। एकर रचनात्मक शक्ति भावप्रधान कथा आ स्पष्ट सामाजिक सरोकारक संयोगमे अछि।

सुगीयाक संघर्ष देखबैत अछि जे आर्थिक निर्भरता स्त्रीक स्वतन्त्रताकेँ कतेक सीमित करैत अछि; सुरेश्वरक कथा देखबैत अछि जे शिक्षा सामाजिक निषेधक विरुद्ध कतेक

महत्त्वपूर्ण साधन बनि सकैत अछि; आ जालिम सिंहक चित्रण देखबैत अछि जे कुल-प्रतिष्ठा नैतिक पात्रताक गारंटी नहि।

कृतिक अन्तिम बोध विशेष अर्थपूर्ण अछि। समाज जकरा गुदड़ी समझि अवहेलित करैत अछि, ओकर भीतरक असल मूल्यक पहिचान देरिसँ करैत अछि। मुदा कृतिक मूल्य केवल एकटा प्रतिभाशाली व्यक्तिक खोज नहि; ई ओहि शोषणकारी परिस्थितिक आलोचना अछि जकर कारण अनेको प्रतिभा, आत्मसम्मान आ न्यायबोध पहिचानसँ वंचित रहैत अछि।

एहि कारण ‘गुदड़ीक लाल’ कैं एकटा आशावादी सुधारवादी सामाजिक उपन्यासक रूपमे पढ़ब अधिक युक्तिसंगत अछि। यथार्थवादक कठोर कसौटीपर ओकर किछु समाधान सरलीकृत अवश्य अछि, मुदा मानवीय गरिमा, मातृभाषामे सामाजिक प्रश्नक अभिव्यक्ति आ शिक्षा द्वारा प्रतिष्ठाक पुनर्निर्माणक विषयमे ओकर योगदान साहित्यिक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि।

प्राथमिक स्रोत

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’। गुदड़ीक लाल (मैथिली उपन्यास)। गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, दरभंगा। उपलब्ध मूल संस्करण; कथाक मुद्रित पृष्ठ १–१४०; लेखकीय वक्तव्य : विजयादशमी, २००८।

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’। लेखकक वक्तव्य, ‘गुदड़ीक लाल’क प्रारम्भिक पृष्ठ। कृतिक घोषित सामाजिक उद्देश्य, कल्पनात्मक पात्र-संरचना आ निर्माण-परिस्थितिक प्राथमिक साक्ष्य।

मैथिली उपन्यासक इतिहास आ तुलनात्मक स्रोत

झा, हरिमोहन। कन्यादान। प्रथम प्रकाशन १९३३। आधुनिक संस्करण-सूचना : राजकमल प्रकाशन समूह, कन्यादान–द्विरागमन, ISBN 9788119028078।

झा, हरिमोहन। द्विरागमन। प्रकाशन १९४३; विवरण : देवशंकर नवीन, ‘हरिमोहन झा की व्यंग्य-दृष्टि’, गद्यकोश।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग/सीईसी। मैथिली साहित्यक सामाजिक चेतना सम्बन्धी अध्ययन-मॉड्यूल।

कथाकार अशोकक साक्षात्कार, ‘A Journey Through Maithili Literature With Kathakar Ashok’, Outlook India, २०२३।

Premchand and the Moral Economy of Peasantry in Colonial North India, Modern Asian Studies, Cambridge University Press; संगहि भारतीय यथार्थवादी उपन्यासक विवेचन : ‘Modernity, Catastrophe, and Realism in the Postcolonial Indian Novel’। ;

भारत सरकार, India Code। The Bihar Land Reforms Act, 1950 (Bihar Act 30 of 1950)।

‘The storm still gathers: Remembering Vaidyanath Mishra, aka Nagarjun, the people’s poet’, Scroll, २०२५; ‘पारो’क स्त्री-संवेदना सम्बन्धी आधुनिक विवेचन।

विदेह : मैथिली गद्य आ पोथी सूची। नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क रचनासूचीमे ‘गुदरीक लाल’क उल्लेख। ;

अध्याय ४

अनठिया कुकुर

ग्राम–नगर सम्बन्ध, वर्गीय नैतिकता आ सामाजिक पुनर्निर्माण

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘अनठिया कुकुर’ मिथिलाक गाम आ नगरक बीच बदलैत सम्बन्ध, आर्थिक विषमता, नैतिक दायित्व, स्त्री–पुरुष सम्बन्ध, न्यायिक प्रक्रिया आ ग्रामोद्धारक आकांक्षाकेँ एक संग कथा-वस्तुमे रूपान्तरित करैत अछि। दिल्लीसँ ग्रामक्षेत्र धरि आवागमन करैत प्रेम आ मालतीक अनुभव उपन्यासक केन्द्रीय सूत्र अछि; विदुरक प्रसंग एहि आदर्शवादी सूत्रक भीतर विश्वास, अवसरवाद आ संस्थागत न्यायक समस्या उठबैत अछि। पाठक एगारह खण्डमे परिवर्तित कथा-केन्द्र भेटैत अछि—कखनो ग्रामजीवनक सामाजिक संरचना, कखनो पारिवारिक अंतरंगता, कखनो मुकदमा आ आर्थिक व्यवहार, आ कखनो युवा पात्रक प्रेम आ विवाह। प्रस्तुत आलेख एहि बहुसूत्रताकेँ उपन्यासक शक्ति आ सीमा दुनू रूपमे परखैत अछि। विदेहक पोथी-सूचीमे ‘अनठिया कुकुर’क विधा ‘उपन्यास’ आ ‘स्वर्ण कमल’क विधा ‘बाल उपन्यास’ रूपमे निर्दिष्ट अछि। तेँ बाल-साहित्यक इतिहाससँ एकर तुलना प्रासंगिक अछि, मुदा एकरा स्वयं बाल-उपन्यास घोषित करब उचित नहि।

कृतिक विधा आ रचनात्मक आधार

‘अनठिया कुकुर’क बाह्य आवरण, आरम्भिक ‘दू शब्द’, कथाक मुद्रित क्रम तथा अन्तिम पृष्ठ एकटा सुसंगठित दीर्घ आख्यानक संकेत दैत अछि। उपलब्ध मुद्रित प्रतिमे कथाक पृष्ठ १ सँ २४५ धरि क्रम उपस्थित अछि आ कथाविन्यास एगारह क्रमांकित खण्डमे विभक्त अछि। पुस्तकक आरम्भिक वक्तव्यपर लेखक नन्द कुमार मिश्रक नाम आ १४ जनवरी २०११क तिथि अंकित अछि। एहि तिथिकेँ लेखकक वक्तव्यक तिथि मानल गेल अछि, प्रकाशनक निश्चित वर्ष नहि; प्रकाशन-वर्षक स्वतंत्र घोषणा एहि प्रतिमे स्पष्ट रूपसँ

पुष्ट नहि होइत अछि। मुद्रित प्रकाशक-विवरणमे 'गोसाईंजी बैद्यनाथ स्मृति मंच' आ 'दरभंगा'क उल्लेख भेटैत अछि।

एहि निबन्धक प्राथमिक आधार मूल मुद्रित पाठक क्रम, खण्ड-विभाजन, प्रमुख प्रसंग, पात्रगत सम्बन्ध आ लेखकक आरम्भिक वक्तव्य अछि। अध्ययनमे दृश्य घटनाक पुनर्कथन आ आलोचनात्मक अर्थनिर्णय अलग राखबाक प्रयास अछि।

कृति विधागत रूपेँ सामाजिक उपन्यास अछि। लेखकक 'दू शब्द'मे ग्राम आ शहरक लोकक बीच मनोवृत्तिक दूरी, शहरी आर्थिक आकर्षण, ग्रामक पिछड़ापन, जातिवाद तथा साम्प्रदायिकताक तनाव आ सामाजिक सुधारक आवश्यकता विशेष रूपसँ उठाओल गेल अछि। एहि दृष्टिकोणसँ पाठक कथाजगतकेँ लेखकक नैतिक-सामाजिक प्रस्तावनाक रूपमे सेहो पढ़ि सकैत अछि। मुदा आलोचनाकेँ प्रस्तावना आ वास्तविक कथा-विधानक बीच अन्तर जँचबाक चाही: लेखक जे परिवर्तनक आकांक्षा व्यक्त करैत छथि, कथा ओकर कलात्मक रूप कतेक निर्वाह करैत अछि, ई मूल प्रश्न अछि।

कथासार : नगर सँ गाम आ पुनः गाम सँ समाज दिस

कथा आरम्भमे रातिक यात्रा, दिल्लीसँ राजनगर दिस प्रस्थान, प्रेम आ मालतीक संगतिक जीवन तथा घरेलू वस्तु-व्यवस्थाक चित्रसँ खुलैत अछि (मुद्रित पृ. १ सँ आगाँ)। एतय रेलगाड़ी, स्टेशन, प्रतीक्षा, परिचित लोक आ घरक सहज संवाद उपन्यासक भौगोलिक दिशा निश्चित करैत अछि। कथाक भावनात्मक केन्द्र केवल पति–पत्नी नहि, हुनका माध्यमसँ खुलैत व्यापक ग्राम-समाज अछि। नगरक सुविधा आ ग्रामक कठिन परिस्थितिक बीच लेखक एकर बाद पुनःपुनः तुलना ठाढ़ करैत छथि।

धनकाहीक सामाजिक परिवेशमे शिक्षा, जातिगत प्रतिष्ठा, श्रम, किसान, स्थानीय पुरोहित, सम्पन्न परिवार आ वंचित जनक अनेक स्थिति सोझाँ अबैत अछि। प्रेमक दृष्टि ग्रामीण संसाधनक उपयोग, व्यावहारिक सहयोग आ सामुदायिक प्रतिष्ठापर टिकल अछि। विदुरक संग मित्रता प्रारम्भमे आशा आ विश्वास जनबैत अछि, मुदा समयक संग आर्थिक

व्यवहार आ भूमि–सम्बन्धी विवाद एहि विश्वासपर प्रश्न लगबैत अछि। प्रेमक प्रति सहानुभूति रचबाक लेल कथाकार अनेक विरोधी स्थितिक संचय करैत छथि।

आगाँ न्यायालयी प्रक्रिया, अभियोग, शपथपत्र, साक्ष्य आ कार्यालयी व्यवहार कथाक टकरावकेँ तीव्र करैत अछि। एहिसँ उपन्यास निजी नैतिकतासँ बाहर संस्थागत नैतिकताक प्रश्न धरि बढ़ैत अछि। दोसर दिस किसानक खेत, ग्रामीण श्रमिकक असुरक्षा, दबंगई, चोरी आ आरोप–प्रत्यारोप कथाकेँ जनजीवनक तात्कालिकता दैत अछि। पछिला खण्डसभमे शहरक शिक्षित युवा पात्र, प्रेम आ विवाहपर विचार, बनारसक धार्मिक अनुभव आ पुनः मूल परिवारक प्रसंग कथानककेँ विस्तृत परिधि प्रदान करैत अछि। अन्तमे घर-गामक दैनन्दिन समस्यासँ जुड़ल स्नेह आ ग्रामसुधारक आशा प्रमुख बनैत अछि (पृ. २४४–२४५)।

मुद्रित एगारह खण्डक पृथक पाठविश्लेषण

प्रथम खण्ड : यात्रासँ सामाजिक मानचित्र धरि

प्रथम खण्डक आरम्भ यात्रा-प्रसंगसँ कएल गेल अछि। प्रेम आ मालतीक संगति, स्टेशनक आवागमन, पारिवारिक संवाद, घर-गृहस्थीक व्यावहारिक जरूरत आ सम्बन्धक सहज लय आरम्भिक कथाभूमि तैयार करैत अछि। कथाकार पहिने अनुभवक मूर्त वातावरण बनबैत छथि, तकर बाद धीरे-धीरे स्थानीय सामाजिक समस्या कथामे प्रवेश करैत अछि। एहि संरचनासँ शहरक चलायमान समय आ गामक ठहरल अनुभवक बीच अन्तर उत्पन्न होइत अछि।

मणिकान्त आ सुलेखाक उपस्थिति तथा प्रेमक सामाजिक सहयोगक इच्छा एहि खण्डमे वैयक्तिक स्नेहक विस्तार देखबैत अछि। नायकक व्यवहारमे परोपकारक आकांक्षा प्रखर अछि; तथापि एहि प्रवृत्तिक संग एक जोखिम सेहो जुड़ल अछि—कथा कखनो पात्रक जटिलता छोड़ि ओहि पात्रक नैतिक गुणक घोषणा करऽ लगैत अछि। एखन धरि ई आदर्शवादी पद्धति पाठककेँ आकर्षित करैत अछि, मुदा आगाँ निरन्तर दोहरायलापर कलात्मक तनाव घटा सकैत अछि।

खण्डक अन्तमे संवादक माध्यमसँ ग्राम-सेवाक आवश्यकता आ शिक्षा-संस्कारक विषय सोझाँ अबैत अछि। आरम्भ एकटा निजी यात्रा छल, मुदा समापन सामूहिक प्रश्नक उद्घाटन करैत अछि; इएह ई खण्डक महत्त्वपूर्ण कथात्मक उपलब्धि अछि।

द्वितीय खण्ड : धनकाही, शिक्षा आ सामाजिक असमानता

धनकाही गामक परिचयमे गरीब खेतिहर आ मजदूरक संसाधनाभाव, आवागमनक कठिनाई, विद्यालयी संरचना आ शिक्षक श्रीमत चौधरीक सामाजिक स्थानक चित्र उभरैत अछि। पत्नी सुनीताक उल्लेख घरेलू संसारकेँ शिक्षा आ जनजीवनसँ जोड़ैत अछि। ई खण्ड ग्रामीण विपन्नताकेँ केवल भावुक दृश्य नहि बनबैत, ओकर आर्थिक आधारक संकेत सेहो दैत अछि।

गामक बच्चा, पढ़ाइ, साधन आ अवसरक सम्बन्ध एतय अधिक प्रत्यक्ष अछि। एहि कारण ई अंशक विषय बाल-कल्याणसँ जुड़ैत अछि; मुदा बाल-जीवनक अनुभव, बालक दृष्टिबिन्दु अथवा बच्चाक स्वतन्त्र मनोजगत कथा-विन्यासक केन्द्र नहि बनैत अछि। बाल-साहित्य आ बाल-विषयक सामाजिक उपन्यासक बीच ई सूक्ष्म किन्तु आवश्यक भेद एतहि समझल जा सकैत अछि।

प्रेमक परिवार आ विद्यालयी परिवेशक अन्तरक सहारे लेखक शिक्षा, रोजी-रोटी आ ग्रामीण पिछड़ेपनक परस्पर सम्बन्ध रेखांकित करैत छथि। ई भाग उपन्यासकेँ सामाजिक भूगोल प्रदान करैत अछि, यद्यपि अनेक पात्रक प्रवेश सीमित व्याख्यात्मक विस्तार बनि रहल अछि।

तृतीय खण्ड : व्यवसाय, मित्रता आ विश्वासक आरम्भ

प्रेमक शहरी व्यवसाय, कर्मी आ कार्यालयी व्यवस्था एहि खण्डक आरम्भिक आश्रय अछि। गामक गरीब परिवारसँ जुड़ल विदुरक आगमन कथा-विन्यासमे वर्गीय दूरीकेँ व्यक्तिगत सम्बन्धमे बदलैत अछि। परिचय, आतिथ्य, साथ भोजन आ सम्मानक व्यवहारसँ लोकक बीच भरोसाक सम्भावना उपस्थित होइत अछि।

प्रेम आ विदुरक सम्बन्धकेँ केवल मालिक–आश्रितक समीकरणमे सीमित करब कठिन अछि; कथाकार एकरा मित्रताक आदर्शमे रूपान्तरित करबाक चेष्टा करैत छथि। मुदा आर्थिक शक्ति आ सामाजिक प्रतिष्ठाक असमानता शुरूएसँ ओहि मित्रताकेँ जटिल बनबैत अछि। जे सम्बन्धकेँ पात्र सभ स्वाभाविक उदारता मानैत छथि, पाठक तकर भीतर निर्भरता आ अधिकारक अन्तर सेहो देख सकैत अछि।

एहि खण्डक विशेषता एतय अछि जे आगाँक विवादक बीज सादर स्वागत आ विश्वासक वातावरणमे पड़ैत अछि। घटना-विकासक दृष्टिसँ ई अत्यन्त उपयोगी संक्रमण अछि; कथाक दीर्घकालीन तनाव एहि आरम्भिक आत्मीयतासँ बढ़ैत अछि।

चतुर्थ खण्ड : पुरोहित, प्रतिष्ठा आ सामाजिक मध्यस्थता

पंडित कपिलेश्वर ठाकुरक परिचय द्वारा कथा धार्मिक प्रतिष्ठा, यजमानी, जातिगत व्यवहार आ ग्रामीण प्रभुत्वक अन्तरंग वृत्तमे प्रवेश करैत अछि। पात्रक विनम्रता आ परोपकारी व्यवहारक उल्लेख ओकरा एकरेखीय खलपात्र बनबासँ रोकैत अछि; ताहि संग पंडित–यजमान सम्बन्ध सामाजिक शक्ति-संरचनाक सूक्ष्म संकेत सेहो दैत अछि।

गामक धार्मिक आ आर्थिक सम्बन्ध अलग-अलग कोठरीमे नहि रहैत अछि। जँ कियो पुरोहितक मार्फत निर्णय, आवागमन वा सामाजिक विश्वास स्थापित करैत अछि, तँ ओकर पाछाँ एकटा स्वीकृत परम्परा सक्रिय रहैत अछि। लेखक प्रचलित मर्यादाक भितरहि मनुष्यता आ सहयोगक मूल्य खोजैत छथि; मुदा रूढ़ि पर प्रत्यक्ष आलोचनाक स्थान सीमित अछि।

एहि खण्डमे संवादक विवेचनात्मक प्रकृति बहुत स्पष्ट अछि। पात्र काज करैत-करैत विचार व्यक्त करैत छथि; कखनो विचार घटनाकेँ गतिमान बनबैत अछि, कखनो घटना केवल विचारक उदाहरण भऽ रहि जाइत अछि। एहि दोसर स्थिति सँ कलात्मक घनत्व किछु शिथिल होइत अछि।

पंचम खण्ड : ग्रामीण–शहरी वातावरण आ अर्थनीति

एहि छोट खण्डक आरम्भमे गाम आ शहरक वातावरणक अन्तरपर केन्द्रित कथाकारक टिप्पणी अछि। शहरक सुविधा, गामक अभाव, सामूहिकता, रोजगारी, सेवा आ नागरिक व्यवहारक बीच तुलना खुलि कए अबैत अछि। समाजक नैतिक मूल्यांकनक संग भौतिक संसाधनक जिज्ञासा एतय जुड़ैत अछि।

प्रेमक कर्जा देबाक प्रसंग, बैंकसँ धन आनबाक योजना तथा ग्रामसुधारक आर्थिक आधार एहि अंशकेँ विशेष महत्त्व दैत अछि। सहायता केवल उपदेश बनि नहि रहय; ओकर लेल वित्तीय साधन, समय, ब्याज आ व्यवस्थापन आवश्यक अछि—ई समझ एहि प्रसंगसँ स्पष्ट होइत अछि। मुदा पूँजी जुटाबय आ देयता वहन करबाक वास्तविक जोखिम कथामे जतेक विस्तार चाही ततेक नहि पबैत अछि।

ई खण्ड समग्र रचनाक कार्यक्रमात्मक अन्तःस्वरकेँ अत्यन्त स्पष्ट करैत अछि। आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे समाज-सुधारक इच्छा कतेक वास्तविक संस्थागत तन्त्र बनि पबैत अछि आ कतेक नायकक उदारतापर निर्भर रहि जाइत अछि।

षष्ठ खण्ड : विदुरक प्रसंग आ विधिक संघर्ष

प्रेमक विरुद्ध दायर कएल गेल आरोप आ अदालतसँ सम्बन्धित कागज-विचार एहि खण्डक मुख्य तनाव अछि। विदुरक संग पूर्वक आत्मीयता स्मरण होइत रहैत अछि; तकर तुलना वर्तमान संदेह आ विरोधसँ भेला पर 'विश्वासघात'क बोध बलवती होइत अछि। सरकारी डेराक स्वामित्व, नोटिस, मुकदमा आ कागजात कथाकेँ परिवारक सीमासँ बाहर सार्वजनिक संस्थाक बीच लऽ जाइत अछि।

गांगुली बाबूक रूपमे सहानुभूतिपूर्ण परामर्श आ विधिक समझदारीक एक वैकल्पिक पात्र उपस्थित अछि। ई पात्र एकतरफा दुष्ट-संसारक विरुद्ध सामाजिक भरोसाक सम्भावना जोगबैत अछि। तथापि मुकदमाक अनेक व्यावहारिक बारीकी बयानक रूपमे आयल अछि; एहिसँ विधिक वातावरण बनैत अछि, मुदा पाठककेँ दस्तावेजी विवरण आ कथात्मक रोमांचक बीच संतुलनक प्रश्न उठय लगैत अछि।

लेखकक एक विशेष आग्रह न्यायिक सत्यक जीत पर अछि। समूचा प्रकरण नायकक नैतिक प्रतिष्ठाकेँ संकटमे राखैत अछि, मुदा विरोधी पक्षक तर्कक स्वायत्तता अपेक्षाकृत कम अछि। उपन्यासक सामाजिक दृष्टि एतय सबल अछि, मनोवैज्ञानिक बहुपक्षीयता सीमित।

सप्तम खण्ड : किसानक खेत आ ग्राम्य हिंसाक संकेत

भोला बाबू, फेकू राउत आ कृषि-सम्बद्ध प्रसंग एहि खण्डक माध्यमसँ ग्रामसमाजक श्रम-सम्बन्धक एक अलग संसार खोलैत अछि। चरैत पशु, फसलक क्षति, खेतक रखवाली, दबंग व्यक्तिक व्यवहार, क्षमायाचना तथा भयक वातावरण ई देखबैत अछि जे भूमि केवल उत्पादनक साधन नहि, प्रतिष्ठा आ टकरावक केन्द्र सेहो अछि।

शारीरिक हिंसा आ दबंगईक संकेतक बावजूद कथाकार समाधानक लेल व्यक्तिगत विवेक, धार्मिक भरोसा आ व्यवहारगत सुधारपर अधिक जोर दैत छथि। एतय किसानक राजनीतिक संगठन वा सामूहिक प्रतिरोधक कल्पना अपेक्षाकृत क्षीण अछि। श्रमिकक अपना स्वरकेँ जेतेक स्वतन्त्रता भेटितैक, पाठकक वर्गीय समझ ओतेक गहीर भऽ सकित छल।

पंचम खण्डक आर्थिक प्रस्ताव आ सप्तम खण्डक कृषि-अनुभवकेँ एकसंग पढ़ला पर उपन्यासक केन्द्रीय कठिनाई प्रकट होइत अछि : सदिच्छासँ विकासक प्रारम्भ सम्भव अछि, मुदा शक्ति-सन्तुलन बदले बिना न्याय सुनिश्चित नहि होइत अछि।

अष्टम खण्ड : आरोप, दफ्तर आ प्रमाणक राजनीति

कम्पनीक सामग्री, लेखा, जाँच आ कागजक माध्यमसँ प्रेमपर संकट गहीर होइत देखाओल गेल अछि। 'मि. खन्ना'सँ जुड़ल कार्यालयी प्रसंगमे अभियोग आ प्रतिवादक प्रक्रिया कथानककेँ यथार्थक एक नव स्तर पर लऽ जाइत अछि। प्रेमकेँ अपन बेगुनाही सिद्ध करबाक लेल प्रशासकीय भाषासँ जूझऽ पड़ैत अछि।

दफ्तरी कागजक सत्ता आ वैयक्तिक सत्यक बीच अन्तर एतय विशेष उल्लेखनीय अछि। कागज जँ तथ्यक साक्ष्य अछि तँ ओकर दुरुपयोग सम्भव अछि; एहेन दुविधा

आधुनिक संस्थागत जीवनक केन्द्रीय समस्या छी। एहि कारण ई खण्ड ग्राम–नगरक साधारण तुलना सँ आगाँ बढ़ि आधुनिक कार्यालयी सत्ताक आलोचनामे परिणत होइत अछि।

मुदा नायकक निर्दोषतापर कथाकारक तीव्र आस्था कखनो नाटकीय अनिश्चितताकेँ अल्प करैत अछि। पाठक घटनाक अन्तिम निष्कर्ष सँ बेसी एतय प्रक्रिया, अपमान आ मानसिक चोटक सूक्ष्म वर्णन देखऽ चाहैत अछि।

नवम खण्ड : शिक्षित युवा, स्त्रीक इच्छा आ विवाह

कथा-केन्द्रमे नायक, कामिनी आ मि. दरबालाक प्रसंग आवैत अछि। रेल-यात्रा, पुस्तक, पढ़ाइ-लिखाइ, पेशागत सम्भावना आ आपसी संवादसँ शिक्षित शहरी समाजक भिन्न लय उपस्थित होइत अछि। कामिनीक बौद्धिक आकांक्षा तथा विवाहक प्रश्न एकटा महत्वपूर्ण स्त्री-विषयक उपकथा रचैत अछि।

एहि अंशमे प्रेमकेँ केवल भावुक आकर्षण नहि, अधिकार, सहमति, मर्यादा आ भविष्यक चयनक प्रश्नक रूपमे देखबाक अवसर अछि। कामिनी अपन इच्छा व्यक्त करैत छथि; तथापि कथाक वर्णन-व्यवस्था कतेको ठाम पुरुष पात्रक नैतिक विचारक वर्चस्व कायम रखैत अछि। स्त्रीक मानसिक द्वन्द्व जँ ओकर अपन दृष्टिसँ अधिक विस्तार पबैत, तँ उपकथा अधिक बहुआयामी होइत।

मुख्य ग्रामोद्धार-कथा सँ ई प्रेम-विषयक शाखा दूर जाइत प्रतीत होइत अछि, मुदा एकर सामाजिक उपयोग अछि : शिक्षा आ शहरी पेशा संग पारिवारिक मर्यादाक टकराव उपन्यासक मूल नैतिक बहसकेँ दोसर पीढ़ी धरि विस्तृत करैत अछि।

दशम खण्ड : परिवार, उत्सव आ निजी सम्बन्धक परीक्षा

कामिनीक जन्मदिन, आगन्तुकक मिलन आ मि. दरबालाक स्वास्थ्य-चिन्ता एहि भागक आरम्भमे घरेलू जीवनक मानवीय रङ्ग प्रदान करैत अछि। उत्सवक वातावरण एकाएक

रोग आ चिन्तासँ बदलैत अछि। एहन परिवर्तन उपन्यासमे निजी जीवनक अस्थिरता आ पारस्परिक देखभालक मूल्यकेँ सोझाँ अनैत अछि।

सम्बन्धक सतही प्रसन्नता, अन्तर्निहित आशंका, गुरु–शिष्य अथवा पीढ़ीगत अधिकार आ दाम्पत्य निर्णयक कठिनाईक बीच व्यक्ति स्वयं अपन नैतिक जिम्मेदारी चुनैत अछि। एहि खण्डक संवादसभ बारम्बार आदर्श स्थापित करबाक चेष्टा करैत अछि; मुदा पात्रक मौन, संकोच अथवा आत्म-विरोधक विस्तार किछु आओर रहित तँ अनुभूति अधिक विश्वसनीय बनित।

नवम आ दशम खण्डकेँ संयुक्त रूपसँ पढ़ला पर देखल जा सकैत अछि जे लेखकक सामाजिक नैतिकता खाली सार्वजनिक जीवन धरि सीमित नहि; विवाह आ परिवार ओकर दोसर परीक्षण-भूमि अछि।

एकादश खण्ड : तीर्थ-अनुभव सँ पुनरागमन धरि

अन्तिम खण्ड बनारस, विश्वनाथ-मन्दिर, धर्म-विश्वास, प्रवास आ असहाय व्यक्तिक प्रति सहानुभूतिक प्रसंगसँ आरम्भ होइत अछि। ई धार्मिक भौगोलिकता उपन्यासक ग्राम-सीमा केँ व्यापक भारतीय सांस्कृतिक स्थलसँ जोड़ैत अछि। कष्टमे पड़ल मनुष्यक सहायता करबाक मूल्य लेखकक प्रारम्भिक मानवीय आग्रहसँ मेल खाइत अछि।

आखिरी पृष्ठसभमे प्रेम–मालती, विदुर, मणिकान्त, सुलेखा, आ पारिवारिक सम्बन्धक सूत्र पुनः एकत्र होइत अछि। नगरक व्यापार आ गामक आर्थिक सहयोगक बीच सन्तुलन बनबैत ग्रामसुधारक अभिलाषा अखन जीवित अछि। अन्त पूर्ण राजनीतिक परिवर्तनक दावा नहि करैत; ओ प्रतिदिनक व्यवहार, विश्वास आ सहायता सँ उत्पन्न आशापर टिकैत अछि।

अन्तक ई पुनरागमन अर्थपूर्ण अछि : आरम्भक यात्रा जतय गाम दिस छल, अन्तक यात्रा गामक प्रति दायित्वक पुनर्पुष्टि बनैत अछि। तथापि जटिल सामाजिक असमानता नैतिक सदिच्छासँ कतेक मिट सकैत अछि, ई प्रश्न खुलल रहैत अछि।

सामाजिक आलोचनाक प्रमुख प्रतिमान

गाम–शहर : द्वैध नहि, परस्पर निर्भरता

आरम्भिक वक्तव्य शहरक सम्पन्नता आ ग्रामक वंचनाक तीख विपर्यास रखैत अछि। मुदा कथामे प्रेमक व्यवसाय नगरमे अछि आ सुधारक लक्ष्य गाममे; आर्थिक साधन एक ठाम अर्जित होइत अछि, सामाजिक उपयोग दोसर ठाम चाहल जाइत अछि। तेँ गाम आ शहर दुश्मन संसार नहि, परस्पर निर्भर आर्थिक तन्त्रक दू छोर छथि। एहि तथ्यसँ उपन्यासक घोषित नैतिक द्वैत अधिक जटिल बनि जाइत अछि। शहरकेँ केवल लोभक केन्द्र मानब आ गामकेँ केवल पवित्र सामूहिकता मानब—दुनू अत्युक्ति होएत; पाठक स्वयं एहि दू अवधारणाक बीच तनावक साक्षी बनैत अछि।

प्रेमक यात्रासभ केवल स्थानान्तरण नहि, सामाजिक चेतनाक आवागमन छथि। रेल-स्टेशन, होटल, दफ्तर, खेत आ आँगन एकरे कथाक्षेत्रक भिन्न-भिन्न मंच छथि। एहि दृश्य-परिवर्तनसँ लेखक आधुनिक मिथिलाक विस्थापन, प्रवासी आजीविका आ ग्रामक अधूरा सुविधासभक चित्र तैयार करैत छथि।

वर्गीय दायित्व, दान आ संरचनात्मक परिवर्तन

प्रेमक परोपकार अत्यन्त सदिच्छापूर्ण अछि। तथापि आर्थिक समर्थक हाथसँ सहायता पाबि रहल पात्रक स्थिति लेखकक आदर्शवादक आलोचनात्मक परीक्षण माँगैत अछि। जँ गांवक परिवर्तन एक समर्थ नायकक ऋण, सेवा, उपदेश अथवा नैतिक प्रेरणापर निर्भर अछि, तँ ग्रामवासीक स्वाधीन सामाजिक शक्ति कतेक विकसित होइत अछि? एहि उपन्यासक वर्गीय प्रश्न एतहि स्थित अछि।

ग्राम-विकासमे कर्जाक भूमिका, किसानक जोखिम, फसलक सुरक्षा, विद्यालयक उपलब्धता आ न्यायिक पहुँच परस्पर गाँथल प्रश्न छथि। एहि कारण सुधार केवल व्यक्तिगत पुण्यक फल नहि भऽ सकैत; सामूहिक निर्णय, पारदर्शी वित्त, न्यायिक सुरक्षा

आ स्थानीय संस्थागत जवाबदेहीक जरूरत अछि। एहि मापदण्डपर लेखकक कल्पना प्रेरक होइतो किछु ठाम अपूर्ण देखाइत अछि।

जाति, धर्म आ सामाजिक पदानुक्रम

लेखकीय वक्तव्य जातिगत विद्वेष आ साम्प्रदायिक संकीर्णताक प्रतिरोधक स्पष्ट आकांक्षा दैत अछि। उपन्यासमे पुरोहित, सम्पन्न ग्रामीण, शिक्षक आ कृषकक सह-अस्तित्व समाजक पदानुक्रमक झलक उपस्थित करैत अछि। मुदा जातिक अनुभव पीड़ित पात्रक अपना स्मृति, भाषा आ संघर्षक रूपमे व्यापक स्थान नहि पबैत अछि। सामाजिक सद्भावक उपदेश आ जातिव्यवस्थाक शक्ति-विश्लेषण एक वस्तु नहि। एहि अन्तरक स्वीकारसँ कृतिक मानवीय अभिप्राय छोट नहि होइत, बल्कि ओकर ऐतिहासिक सीमाक पहचान होइत अछि।

न्यायपालिका आ दस्तावेजी सत्य

मुकदमा, नोटिस, शपथपत्र, दफ्तरक सामान, अभियोग आ प्रमाण सम्बन्धी प्रसंग आधुनिक सामाजिक यथार्थक महत्त्वपूर्ण पक्ष छथि। आर्थिक शक्तिक असमानता केवल खेतमे नहि, अदालत आ कार्यालयमे सेहो निर्णायक भऽ सकैत अछि। प्रेम पर लगल आरोपक प्रसंगमे उपन्यास व्यक्तिगत प्रतिष्ठाक टूटन आ संस्थाक निष्पक्षताक प्रश्न उठबैत अछि। तथापि अदालतक कथा प्रक्रियागत जटिलता सँ परिचित करैत काल कखनो अत्यधिक व्याख्यात्मक बनि जाइत अछि।

स्त्री-पात्र : सहचरितासँ स्वायत्तताक संघर्ष

मालती घरेलू संसार, सामाजिक सहायताक व्यवहार आ प्रेमक मानसिक बलक महत्त्वपूर्ण केन्द्र अछि। सुलेखा आ सुनीता परिवारक भीतर अपन सम्बन्ध-सम्पदा लऽ अबैत छथि। कामिनीक प्रसंग शिक्षा, पेशागत पहचान आ वैवाहिक चयनक प्रश्न जोड़ैत अछि। एहि व्यापक उपस्थिति बावजूद अधिकांश निर्णायक सार्वजनिक योजना पुरुष पात्रक नियन्त्रणमे रहैत अछि; ई उपन्यासक लैंगिक सीमा अछि।

विशेषत: कामिनीक प्रसंग देखबैत अछि जे शिक्षित स्त्रीक आकांक्षा केवल विवाहक वस्तु नहि, अपन इच्छा आ भविष्यक दावेदार अछि। तथापि ओकर स्वायत्तताकेँ कथावाचक जतेक अवकाश दैत छथि, ताहिसँ बेसी अवकाशक संभावना बनल रहैत अछि। पितृसत्तात्मक सम्बन्धक आलोचना उपन्यासक भीतर सँ सम्भव अछि; एकरा बाह्य सिद्धान्त थोपबाक आवश्यकता नहि।

कथन-शिल्प, संवाद, भाषा आ शीर्षक-प्रतीक

बहुकेंद्रीय कथाविन्यासक शक्ति आ कठिनाई

दीर्घ आख्यानक पहिल उपलब्धि एकर बहुविस्तृत कथा-समाज अछि। प्रेम–मालतीक केन्द्र सँ विदुर, मणिकान्त–सुलेखा, ग्राम-पुरोहित, किसान, कार्यालयी जन, नायक–कामिनी आ तीर्थयात्रीक वृत्त धरि बढ़ैत कथा अलग-अलग सामाजिक ठाम जोड़ैत अछि। मुदा एक पात्रसँ दोसर पात्रक जीवनमे संक्रमण सभ ठाम समशक्तिशाली नहि। किछु उपकथा मुख्य विकास-रूपरेखा सँ दूर जा कए स्वतन्त्र नैतिक उपन्यास जकाँ लागैत अछि।

क्रमांकित खण्ड समग्र पाठकेँ पाठकीय विराम दैत अछि। कतहु खण्डक अन्त तत्कालिक भावनात्मक निष्कर्ष बनैत अछि, कतहु नवी कथा बिना पर्याप्त पूर्वसंकेतक उभरैत अछि। एहि संरचनाक सफल पक्ष जीवनक व्यापक दृश्य अछि, असफल पक्ष ढीलापन आ कथागत पुनरावृत्ति।

संवाद-प्रधान गद्य : जीवन्त बोली वा प्रवचन?

संवादसभ पात्रक पारस्परिक समीपता स्थापित करैत अछि। प्रश्नोत्तर, सम्बोधन, क्षमायाचना, सलाह आ आश्वासन मार्फत पाठक ग्रामीण आ शहरी व्यवहारक अनेक रङ्ग पबैत अछि। मुदा कएक स्थानपर संवाद व्यक्तिक स्वभाव सँ बेसी लेखकक नैतिक मतक वाहक होइत अछि। एहेन स्थिति मे पात्रक आवाज एक-दोसरासँ पर्याप्त पृथक नहि रहि पबैत। ई बात विशेषत: प्रेमक समाज-सुधार सम्बन्धी भाषण आ किछु विवाद-निराकरण प्रसंगपर लागू होइत अछि।

नैतिक विचारकेँ कथा-बिन्दु बनयबाक उपन्यासक अपन परम्परा अछि। मुदा उपन्यासक कलात्मकता त्यखन बढ़ैत अछि जखन विचार पात्रक कर्म, असफलता, संकोच अथवा गलत निर्णयसँ स्वत: उत्पन्न हो। ‘अनठिया कुकुर’मे सफल प्रसंग ओ छथि जतय आर्थिक निर्णयक वास्तविक परिणाम देखाइत अछि; अपेक्षाकृत कमजोर प्रसंग ओ छथि जतय कथानक परिणाम कहबाक बदला अभिप्रेत सदाचार समझाबऽ लगैत अछि।

भाषिक स्तर आ सम्पादन-संभावना

पाठमे बोलचालक मैथिली, सामाजिक सम्बोधन, कार्यालयी शब्दावली, रेल–दफ्तर सम्बन्धी आधुनिक पद आ धार्मिक शब्दभण्डार एक संग उपस्थित अछि। एतयसँ कृतिक सामाजिक संसारक विविधता बढ़ैत अछि। संगहि एहन बहुभाषिक शब्दावलीक एकसमान वर्तनी आ विराम-चिह्न पाठक-सुगमताक लेल आवश्यक अछि। भविष्यक समालोचित संस्करणमे पात्रनाम, संवाद-चिह्न, प्रसंग-विभाजन आ तकनीकी पदक रूपक सम्पादकीय एकरूपता उपयोगी रहत।

भाषाक जीवन्तता ओकर स्थानीय लहजासँ बनैत अछि। सम्पादनक लक्ष्य एहि लहजाकेँ हिन्दी अथवा कोनो बाह्य मानकीकरणमे विलीन करब नहि, बल्कि लेखकक अपन मुहावरा आ पात्रगत स्वरकेँ स्पष्ट रूपमे पाठक धरि पहुँचायब होयबाक चाही।

‘अनठिया कुकुर’ शीर्षकक अर्थ-संभावना

शीर्षकमे ‘कुकुर’क बिम्ब सामाजिक व्यवहारक रूपक बनि सकैत अछि। लेखकक आरम्भिक वक्तव्य शहरक आकर्षण, स्वार्थक लपेट, ग्राम-सम्बन्धक क्षरण आ अवसरवादक चिंता व्यक्त करैत अछि; कथा मे सेहो विश्वासभंग, लूट, छल आ सार्वजनिक प्रतिष्ठाक संकट उपस्थित अछि। एहि प्रसंगसभक आलोकमे शीर्षककेँ समाजक अनियन्त्रित स्वार्थक व्यंग्यात्मक चिह्नक रूपमे पढ़ब सम्भव अछि।

मुदा एकरे एकमात्र निश्चित व्युत्पत्ति अथवा कथाभितरक कोनो एक पात्रक नामकरण मानि लेब अनुचित होएत। शीर्षकक रूपकात्मक शक्ति एहि कारणो महत्त्वपूर्ण अछि जे कृति सरल पशु-कथा नहि, मानवीय सम्बन्धक नैतिक संघर्ष प्रस्तुत करैत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक परम्परामे तुलनात्मक स्थिति

बालक उपस्थिति, विद्यालयक चर्चा वा शैक्षिक सुधारक उद्देश्य मात्रसँ कृति बाल-साहित्य नहि बनैत अछि। बाल-साहित्यक पाठक-समुदाय, कथात्मक दृष्टिबिन्दु, भाषिक गति, कल्पनाशीलता, आयु-अनुरूप जटिलता तथा अनुभवक केन्द्रकेँ पृथक देखबाक आवश्यकता अछि। 'अनठिया कुकुर'मे दीर्घ मुकदमा, व्यावसायिक ऋण, भूमि-विवाद, दाम्पत्य आ वयस्क प्रेमक जटिलता मुख्य कथात्मक तत्त्व छथि। एहि कारण एकर प्राथमिक पाठक-वर्ग वयस्क सामाजिक उपन्यासक पाठक छथि।

विदेहक 'शिशु उत्सव' संग्रह-व्यवस्थासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली बाल-साहित्य एकमात्र नीतिकथा तक सीमित नहि। ओतय शिशुगीत, बाल-कविता, विहनि कथा, चित्रकथा, बाल-उपन्यास, नाटक, विज्ञानक लोकप्रिय प्रस्तुति आ अनुवादित चित्रात्मक पोथीक भिन्न-भिन्न विधानक सूची उपलब्ध अछि। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिलीमे बालक लेल रचनाक भिन्न परम्परा डिजिटल स्तरपर परस्पर तुलनीय रूपेँ संकलित कएल जा रहल अछि।

विदेहक सूचीमे प्रीति ठाकुरक अनूदित 'छोट आ पैघ'क पहिल संस्करण २००२ तथा 'माल-जाल आ जानवर दिस देखू'क पहिल संस्करण २००३ उल्लिखित अछि। 'गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा' (२००८), 'मैथिली चित्रकथा' (२००९), 'मिथिलाक लोकदेवता' (२०१०) आ 'विद्यापतिक पुरुष परीक्षा' (२०१२)क सूची चित्रकथा, लोकस्मृति आ शास्त्रीय कथाक बाल-रूपान्तरणक क्रमक निदर्शन दैत अछि। ई काल-चिह्न सम्बन्धित सूची-प्रविष्टिक छथि; एकर आधारपर समूचा मैथिली बाल-साहित्यक प्रथमत्व वा सम्पूर्ण कालक्रम निर्धारित नहि कएल जा सकैत अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘नै धाड़ैए’ आ जगदानन्द झा ‘मनु’क ‘चोनहा’ कैं विदेह बाल-उपन्यासक रूपमे चिन्हित करैत अछि; नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘स्वर्ण कमल’ सेहो स्पष्टतः बाल-उपन्यासक रूपमे अंकित अछि। एकरे उलट ‘अनठिया कुकुर’ सामान्य उपन्यासक वर्गमे अछि। एतय सभसँ विश्वसनीय तुलनात्मक तथ्य विषयक समानता नहि, ग्रन्थ-सूचीमे स्पष्ट विधागत विभाजन अछि। ‘स्वर्ण कमल’ सँ रचनाकारक बाल-पाठकक प्रति रुचि प्रमाणित होइत अछि; ‘अनठिया कुकुर’ सँ ओही लेखकक वयस्क सामाजिक आख्यानक विस्तार।

नीता झाक ‘बिलाइ मौसी’ बाल-लघुकथा-संग्रह, मुन्नाजीक ‘तीन टा बाल नाटक’ तथा प्रीति ठाकुरक चित्रकथा-अभियान बाल-पाठकक लेल विधागत विविधता दर्शबैत अछि। एहि उदाहरणसभक विशिष्ट कथा-चरित्र अथवा भाषिक गुणवत्तापर एतय निश्चित निर्णय नहि देल जाइत अछि, कारण तुलना लेल प्रकाशित ग्रन्थ-सूची साक्ष्य अछि, ओहि समस्त मूल पोथीक पंक्तिवार तुलनात्मक पाठ नहि। तथापि परम्पराक वर्णनक लेल एहि विधागत तथ्यक उपयोग वैध अछि।

बाल-साहित्यक इतिहास लिखबाक समय लोकखिस्सा, मौखिक संस्कार, शिशुगीत, विद्यालयी साहित्य, बाल-उपन्यास आ डिजिटल चित्रकथाकैं एकरे रेखीय विकासक रूपमे देखब पर्याप्त नहि। एहि सभ विधाक पाठक-आयु, पाठ-संस्कृति, वितरण आ कलात्मक अपेक्षा अलग छथि। ‘अनठिया कुकुर’क ग्रामीण शिक्षाक आग्रह बालक सामाजिक परिस्थितिसँ संवाद स्थापित करैत अछि; मुदा विधागत आधारपर ई बाल-साहित्यक इतिहासक मुख्य वस्तु नहि, ओकर पड़ोसी सामाजिक गद्यक अध्ययन-वस्तु अछि।

रचनाकारक अन्य कृतिसभक सापेक्ष स्थिति

विदेहक पोथी-सूचीमे ‘गामघर’ कथा-संग्रह, ‘सुजाता’, ‘गुदरीक लाल’, ‘सुकन्या’ उपन्यास, ‘आडम्बर’ कथा-संग्रह, ‘दिल्लीक पार्क’ शब्द-चित्र, ‘परिवार’ संस्मरणात्मक उपन्यास आ ‘स्वर्ण कमल’ बाल-उपन्यास रूपमे उल्लिखित अछि। एहि सूचीसँ रचनाकारक गद्य-विधागत विस्तृति ज्ञात होइत अछि। ‘अनठिया कुकुर’क शहरी–ग्रामीण

आवागमन, परिवार, रोजगार आ नैतिक संघर्षक रुचिकेँ एहि व्यापक रचनाकार-परिप्रेक्ष्यमे रखब उपयोगी अछि।

मुदा पोथीक शीर्षकसँ मात्र विषयक समानता वा प्रभावक सिद्धान्त सिद्ध नहि होइत। उदाहरणार्थ 'गामघर' शीर्षक ग्राम्य विषयक सङ्केत दैत अछि, मुदा मूल कथा पढ़ने बिना ओकर पात्रक स्वभाव आ 'अनठिया कुकुर'क संग ठोस साम्य घोषित नहि कएल जा सकैत अछि। आलोचनामे अनुमानक ई सीमा स्वीकार करब आवश्यक अछि। एहि शोध-निबन्धक निष्कर्ष 'अनठिया कुकुर'क प्रत्यक्ष मुद्रित पाठपर अधिक, लेखकक आन कृतिसँ तुलनाक सन्दर्भमे विदेहक सत्यापित ग्रन्थ-सूचीपर आधारित अछि।

आलोचनात्मक मूल्यांकन : उपलब्धि आ सीमा

कृतिक पहिल उपलब्धि कथाकारक व्यापक सामाजिक चिन्ता अछि। प्रेम आ मालतीक परिवारक निजी जीवन समस्त कथा नहि; ओकर विस्तार गरीब किसान, शिक्षक, पुरोहित, शहरी कर्मचारी, अभियुक्त, वकील–न्यायालय, शिक्षित युवती आ धार्मिक तीर्थयात्री धरि अछि। एहि सामाजिक विस्तारमे मैथिल जीवनक आर्थिक आ नैतिक प्रश्न परस्पर सम्बन्धित बनैत अछि।

दोसर उपलब्धि ग्रामसुधारक प्रश्नकेँ केवल भावुक संवेदनासँ आगाँ आर्थिक लेन-देन, रोजगार, कर्ज, भूमिक विवाद आ न्यायिक सुरक्षासँ जोड़ब अछि। एहि कारण उपन्यासक यथार्थदृष्टि अनेक ठाम ठोस होइत अछि। तेसर उपलब्धि संवादक सहज प्रवाह अछि, जे पात्रसभक परस्पर घनिष्ठता आ विश्वासक टूटन पाठककेँ अनुभव करबैत अछि।

कृतिक महत्त्वपूर्ण सीमा नैतिक आदर्शवादक आवृत्ति अछि। प्रेमक सदाशयता कखनो अतेक निर्णायक होइत अछि जे दोसर पात्रक प्रेरणा आ असमंजसक स्वतंत्र गहराइ कम भऽ जाइत अछि। खल-वृत्तिक पात्रक मानस जँ अपेक्षाकृत अधिक खुलित, तँ सामाजिक संघर्ष नाटकीय विरोधाभाससँ समृद्ध होइत।

दोसर सीमा कथाकेन्द्रक असमानता अछि। मुख्य ग्राम–नगर धुरी सँ पृथक युवा-प्रेमक शाखा अपन मूल्य राखितो कथा-विन्यासमे अपेक्षित संगति माँगैत अछि। तेसर सीमा स्त्री-पात्रक सीमित निर्णायक स्थान अछि। मालती आ कामिनी महत्त्वपूर्ण छथि, मुदा बहुत रास सामाजिक परिणाम पुरुषक प्रस्ताव आ निर्णयक आसपास संगठित रहैत अछि। चारिम सीमा सामाजिक संरचनाक समाधानमे व्यक्तिगत उदारता पर अत्यधिक भरोसा अछि।

एहि सभ आलोचनाक बादो 'अनठिया कुकुर' कैं केवल उपदेशात्मक गद्य कहि खारिज करब अन्याय होएत। एहि पोथीक लोकजीवन, भाषिक परिवेश, परिवारक सम्बन्ध, आधुनिक दफ्तरक संकट आ ग्रामोद्धारक ईमानदार इच्छा मैथिली सामाजिक उपन्यासक चर्चामे विशिष्ट प्रश्न उपस्थित करैत अछि। साहित्यिक मूल्यांकनक काम एहि सामाजिक अभिलाषाक सम्मान करैत ओकर कलात्मक निर्वाहक कठोर परीक्षण करब छी।

निष्कर्ष

'अनठिया कुकुर' एकटा सामाजिक उत्तरदायित्व केन्द्रित मैथिली उपन्यास अछि, जकर कथात्मक प्रेरणा गाम–शहरक दूरीकैं मानवीय सहयोगसँ पाटबाक विश्वासमे स्थित अछि। प्रेम–मालतीक जीवन, विदुरक संग सम्बन्धक विचलन, किसानक असुरक्षा, कागजी न्याय आ युवापीढ़ीक भावनात्मक संघर्ष उपन्यासक अलग-अलग बहस नहि; सभ मिलि प्रश्न करैत अछि जे आधुनिक समाजमे भरोसा, मर्यादा, धन आ न्यायक सम्बन्ध केहन हो।

ई कृति बहुत किछु व्यक्तिक नैतिक सुधरसँ प्राप्त करबाक आशामे लिखल गेल प्रतीत होइत अछि। सामाजिक दृष्टिसँ ई आशा महत्त्वपूर्ण अछि; साहित्यिक दृष्टिसँ इएह एकर सीमा सेहो बनि जाइत अछि, जखन जटिल संरचनात्मक परिस्थिति सहज सद्भावक निष्कर्षमे बदलि जाइत अछि। उपन्यासक वास्तविक योगदान एहि विरोधाभासक संग पढ़लापर बेसी स्पष्ट होइत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक विकासक सन्दर्भमे एकर स्थान सीधा बाल-उपन्यासक नहि, बल्कि ओहि वयस्क सामाजिक साहित्यक अछि जे शिक्षाक अवसर आ बालक भविष्यक परिस्थिति पर गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि। लेखकक 'स्वर्ण कमल'क विधागत पृथक

पहचान एकरा आरो स्पष्ट करैत अछि। एहेन भेद राखि कए कएल गेल अध्ययन साहित्येतिहास आ पाठालोचन दुनू लेल अधिक विश्वसनीय होइत अछि।

अध्याय ५

सुजाता

नारी-अस्मिता, सामाजिक नियन्त्रण आ प्रशासनिक नैतिकता

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘सुजाता’ एकटा एहन लघु उपन्यास अछि जाहिमे नायिकाक निजी जीवन आ सामाजिक-प्रशासनिक जीवन परस्पर जुड़ल अछि। कथाक आरम्भ पारिवारिक विवाह-व्यवस्था, मध्य विधवापन, पुनर्विवाहक प्रश्न आ जीविकोपार्जन, आ उत्तरार्द्ध कार्यालयी अनियमितता, महिला-कर्मचारीक शोषण आ प्रतिरोधक प्रसंगसँ बनैत अछि। एहि शोध-निबन्धमे कथाक तेरह क्रमाङ्कित अंश अलग-अलग पढ़ल गेल अछि; पात्र-रचना, कथावाचकक नैतिक स्थिति, मिथिलाक सामाजिक मनोविज्ञान, भाषिक रूढ़ि, दृश्यात्मकता, कथोपकथन आ उपसंहारक मूल्यांकन कएल गेल अछि। मैथिली बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलना करैत ई स्पष्ट कएल गेल अछि जे ‘सुजाता’ स्वयं बाल-उपन्यास नहि, मुदा एकर पाठसँ शिक्षा, कर्तृत्व, लैङ्गिक समानता आ संस्थागत न्याय सन विषयपर किशोर-पाठकक अनुकूलनक सम्भावना अलगसँ खुलैत अछि। लेख केवल मूल पोथीक मुद्रित पाठ आ विदेहक निर्दिष्ट साहित्यिक अभिलेख-सामग्रीपर आधारित सन्दर्भ देइत अछि।

पोथीक परिचय आ विधागत स्थिति

‘सुजाता’क शीर्षक-पृष्ठपर एकरा स्पष्ट रूपसँ “मैथिली उपन्यास” कहल गेल अछि। लेखक नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’ छथि; प्रकाशकक नाम श्रीमती अमल देवी, भीखनपुर, भागलपुर देल अछि। समर्पण-पृष्ठ पर श्री अमरेश चन्द्र मिश्रक नाम अछि। डॉ. अमरनाथक हस्ताक्षरित भूमिकापर ७ जनवरी २००६ केर तिथि छपल अछि। उपलब्ध मूल प्रतिमे निश्चित प्रथम प्रकाशन-वर्ष अलगसँ पुष्ट नहि भऽ सकल अछि; तेँ भूमिकाक तिथिकेँ प्रकाशन-वर्ष मानि लेब पाठ-समालोचनाक दृष्टिसँ उचित नहि। मूल आख्यान मुद्रित पृष्ठ १ सँ ८० धरि चलैत अछि आ क्रमाङ्कित तेरह अंशमे विभाजित अछि।

विधाक प्रश्न एहि आलोचनाक आधार अछि। एकर पात्र सभ मुख्यतः वयस्क छथि, आ विवाह, दहेज-जकाँ आर्थिक विनिमयक सामाजिक दबाव, यौन-नैतिकतासँ जुड़ल सामाजिक दृष्टि, विधवाक पुनर्विवाह, रोजी-रोटी, कर्मचारी-राजनीति, कदाचार आ उच्चाधिकार-कर्मचारी सम्बन्धक प्रसंग मूल कथाक केन्द्र अछि। बाल-उपन्यासमे अपेक्षित बाल-दृष्टि, बाल-पात्रक नेतृत्व, बाल-मनक अनुरूप कथाविस्तार आ आयु-सापेक्ष कथन-शैली एतय केन्द्रीय रचनात्मक सिद्धान्त नहि बनैत। लेखकक 'स्वर्ण कमल'केँ विदेहक बाल-साहित्य सूचीमे 'बाल उपन्यास' आ 'सुजाता'केँ गद्य-सूचीमे 'उपन्यास' कहि अलग-अलग वर्गीकृत कएल गेल अछि। ई वर्गीकरण स्वयं प्रमाणक रूपमे महत्त्वपूर्ण अछि।

भूमिका लेखकक काव्यात्मक अभिरुचि आ समाज-सुधारवादी दृष्टिक चर्चा करैत अछि। लेखक अपन आरम्भिक निवेदनमे कथाकेँ सत्य घटनापर आधारित कहि पात्र आ स्थानक नाम काल्पनिक बतबैत छथि। ई उपन्यासक भीतर लेखकक आत्मप्रतिपादन अछि; स्वतंत्र ऐतिहासिक सत्यापनक प्रमाण नहि। समीक्षकक लेल महत्त्वपूर्ण बात ई थिक जे लेखक कथा आरम्भ होएबासँ पहिनहिं ओकरा नैतिक संघर्षक दस्तावेजक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। एहि कारण पाठकक सहानुभूति पहिनहिं सुजाताक पक्षमे व्यवस्थित होए लगैत अछि।

आलोचनात्मक समस्या आ प्रमुख प्रतिपाद्य

एकटा मूल प्रश्न उठैत अछि : की 'सुजाता'क सामाजिक चेतना कलात्मक उपन्यास-रूप पबैत अछि, अथवा कखनो-कखनो लेखकक सुधारवादी उद्देश्य पात्र आ घटनाक जटिलतापर भारी पड़ि जाइत अछि? एहि प्रश्नक उत्तर द्विमुखी अछि। नायिकाक जीवनक प्रसंग—शिक्षा, विवाह, पति-वियोग, पुनर्विवाहक विकल्प, आर्थिक निर्भरता समाप्त करबाक प्रयास आ नौकरीमे अधिकार-चेतना—अपन क्रमिक विकाससँ सामाजिक यथार्थक जीवित रूप बनबैत अछि। मुदा पात्रक नैतिक विभाजन, खल-पात्रक बारम्बार नकारात्मक चित्रण, उपदेशात्मक संवाद आ अन्तमे प्रशासकीय उपायसँ समस्याक तेजीमे समाधान—एहि सबमे कथा किछु सरलीकृत सेहो भऽ जाइत अछि।

एहि अध्ययनमे तीन स्तर एक-दोसरासँ अलग राखल गेल अछि : पहिल, पोथीमे साफ-साफ वर्णित घटना अथवा वाक्य; दोसर, ओहि पाठसँ निकलैत आलोचनात्मक व्याख्या; तेसर, मैथिली बाल-साहित्यक क्षेत्रमे विदेहक सूची आ शोध-लेखसँ प्राप्त तुलनात्मक तथ्य। कथा-वर्णनकेँ स्वतन्त्र इतिहास, आ सन्दर्भ-सूचीमे कृति-नामक उपस्थिति मात्रकेँ सम्पूर्ण कृतिक कथानकक प्रमाण मानल नहि गेल अछि। मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठाङ्ककक सहायतासँ प्रसंगक परीक्षण सम्भव अछि।

समग्र कथा-विकास : निजी दुःखसँ सार्वजनिक प्रतिरोध धरि

कथा रामकान्तक पारिवारिक संसार आ हुनक बेटा पंकजक विवाहक प्रसंगसँ आरम्भ होइत अछि। शिक्षा प्राप्त करैत पंकज सरकारी नौकरी पबैत छथि। दोसर दिस उमाकान्तक परिवारमे जनमल सुजाता निर्धनताक बीच पढ़ाइ, घरक दायित्व आ सामाजिक सम्मानक अभ्यास करैत छथि। विवाहक प्रस्ताव आ आर्थिक हैसियतपर विमर्शक मध्य दुनूक विवाह सम्पन्न होइत अछि। आरम्भिक दाम्पत्य जीवन एक प्रकारक आशावादी मध्यवर्गीय स्वप्न रूपमे प्रस्तुत अछि; यात्राक दृश्य आ परस्पर स्नेह एहि स्थितिक विस्तार करैत अछि।

उपन्यासक पहिल पैघ मोड़ पंकजक अकाल मृत्युसँ अबैत अछि। सुजाताक जीवन एकाएक संकटमे पड़ैत अछि। सास-ससुर, माय-बाप, समाजक विधवा-सम्बन्धी पूर्वाग्रह, अपमानक आशङ्का आ आर्थिक चिन्ता—सभ एकसाथ उपस्थित होइत अछि। सुजाता अपन इच्छा आ अधिकारक प्रश्न उठबैत छथि, मुदा हुनक निर्णय एकरेखीय नहि अछि : पारिवारिक दबाव, सामाजिक बदनामी, आत्मसम्मान आ जीवनक व्यवहारिक जरूरत एक-दोसरासँ टकराइत अछि। पति-वियोगक अनुभव अन्ततः हुनका आत्मनिर्भरता दिस धकेलैत अछि।

आगाँ सरकारी कार्यालयक परिसर दोसर प्रमुख कथास्थल बनैत अछि। पंकजक सेवासँ जुड़ल प्रावधानक आधारपर सुजाताकेँ नौकरीक अवसर भेटैत अछि। नव कर्मचारीक रूपमे ओ अफसरशाहीक व्यवहार, कागजी प्रक्रिया, कर्मचारीक जाल आ अनुचित आचरणसँ सामना करैत छथि। कलावती, सुनीता, नेता कहल जाएवाला पात्र, कार्मिक पदाधिकारी आ

उच्चाधिकारीक प्रसंगसँ कथा निजी जीवनक संकटकेँ संस्थागत अन्यायक प्रश्नमे रूपान्तरित करैत अछि। अन्तिम चरणमे व्यक्तिगत साहस, सामूहिक सहयोग आ प्रशासनिक हस्तक्षेपक सहायतासँ परिवर्तनक सम्भावना रेखाङ्कित होइत अछि।

तेरह क्रमाङ्कित अंशक पृथक पाठविश्लेषण

अंश १ : परिवार, पुरुष-उत्तराधिकार आ विवाहक तैयारी

फागुनक परिवेश, गामक ध्वनि आ घरक गतिविधिसँ कथा आरम्भ होइत अछि। ऋतुक चित्तरंग वर्णन पाठकेँ भावात्मक सहजता दैत अछि। रामकान्तक मध्यमवर्गीय परिवार, हुनक बेटा पंकजक अध्ययन आ नौकरीक उपलब्धि, आ बेटाक विवाहक चिन्ता—एहि सबसँ सामाजिक जीवनक ओ संरचना बनैत अछि जाहिमे विवाह केवल दू व्यक्तिक निजी सम्बन्ध नहि, पारिवारिक प्रतिष्ठा आ भविष्यक योजना सेहो अछि।

पंकजक पढ़ाइ, नौकरी आ आयक चर्चा बारम्बार भौतिक सुरक्षा आ विवाह-बाजारक सम्बन्ध प्रकट करैत अछि। बेर-बेर “नीक” रोजगार, परिवारक योग्यता आ गृहस्थ जीवनक सन्तुलनक चर्चा एहि वर्गीय मानसिकताकेँ स्पष्ट करैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ध्यान देबाक बात ई अछि जे विवाहक शुरुआत पुरुषक उपलब्धिसँ परिभाषित होइत अछि; नायिका एखन कथामे उपस्थित नहि। ई विलम्ब बादमे सुजाताक केन्द्रीयताकेँ अधिक अर्थपूर्ण बनबैत अछि।

अंश २ : सुजाताक बाल्य, श्रम आ शिक्षा

एहि अंशमे सुजाताक परिवार आ संस्कार परिचित कराओल गेल अछि। उमाकान्तक घरक आर्थिक अभाव, खेती-पथारी आ सीमित साधन कथा-संरचनाक मूल आधार अछि। सुजाता अपन बाल्यसँ अध्ययनशील, सुशील आ घरक काजमे निपुण रूपमे प्रस्तुत छथि। औपचारिक शिक्षा आ घरेलू श्रमक दोहरा दायित्व स्त्रीक सामाजिक निर्माणक महत्त्वपूर्ण सूचक अछि।

लेखक एक दिस बेटीक पढ़ाइकेँ उपलब्धि मानैत छथि; दोसर दिस ओकर आदर्श चरित्रक प्रमाण घर-परिवारक सेवा, धर्मभावना आ सामाजिक स्वीकृतिमे सेहो खोजैत छथि। एतय सशक्तीकरण आ परम्परागत स्त्री-आदर्शक द्वन्द्व देखब आवश्यक अछि। सुजाताक योग्यताकेँ केवल "गुणी कन्या"क सूचीमे सीमित नहि पढ़ि ओकरा विवाह-बाजारक अपेक्षासँ बाहर अपन ज्ञान-कर्मक स्वतन्त्र आधार मानल जा सकैत अछि।

अंश ३ : विवाहक अर्थशास्त्र, बातचीत आ वर्ग-संस्कृति

पंकजक विवाह लेल चलैत बातचीत घरक आर्थिक सीमासँ जुड़ैत अछि। बरियात, साधन, खर्च, आदर्श विवाह आ व्यवहारिक प्रतिष्ठाक बीच विचारक आवागमन देखाइत अछि। रामकान्त बाहरी आडम्बरक विरुद्ध आदर्शक बात करैत छथि, मुदा पारिवारिक प्रतिष्ठा, लोक-लाज आ आन पक्षक चिन्ता सामाजिक व्यवहारकेँ जटिल बनबैत अछि।

एहि अंशक वास्तविक उपलब्धि विवाहकेँ प्रेमक निष्कलुष घटना मानबाक बदला श्रेणी, सम्पत्ति, पारिवारिक आत्मसम्मान आ लोकमतक क्षेत्रक रूपमे देखेनाइ अछि। मुदा पात्र सभक संवाद कखनो सभामे भाषण सन होए लगैत अछि; एहि प्रसंगमे कथोपकथनक स्वाभाविकता घटैत अछि। आधुनिक समालोचनाक दृष्टिसँ ई विवाहक वस्तुकरण-विरोधी स्वरक संग उपदेशात्मक शिल्पक एकटा सम्मिलित उदाहरण अछि।

अंश ४ : विवाहानन्तर यात्रा, प्रेम आ आसन्न वियोग

विवाहक बाद पंकज आ सुजाताक चतुर्थी, यात्रा, भेंट आ प्रेम-स्नेहक प्रसंग पाठकेँ निजी जीवनक निकट अनैत अछि। दृश्यात्मक परिवेश आ दाम्पत्यक अपनापन सुजाताकेँ केवल सामाजिक प्रश्नक प्रतीक नहि रहि अनुभवशील मनुष्य बनबाक अवसर दैत अछि। विवाहक धूमधाम आ बाह्य प्रबन्धक पाछाँ दाम्पत्यक निजी अनिश्चितता सेहो उपस्थित अछि।

यात्रा-संवेग, सौन्दर्य-वर्णन आ प्रेमक आदर्शीकरणक उद्देश्य सम्भवतः आगामी दुःखक घनत्व बढ़ेबाक अछि। तथापि पात्रक निजी बातचीतक मनोवैज्ञानिक गहराइ किछु सीमित

अछि; प्रेमक भाव वर्णनकर्ताक टिप्पणीसँ अधिक स्थापित होइत अछि, स्वयं पात्रक सूक्ष्म अन्तर्द्वन्द्वसँ कम। ई अंश उपन्यासक भाव-भूमिकासँ कथाक संकट-भूमि दिस सेतु अछि।

अंश ५ : गृहस्थ जीवनक अन्तरङ्गता आ भङ्गुर सुख

विवाहक बाद नव-दाम्पत्यक गृहस्थ दिनचर्या, पंकजक कार्यालय, सुजाताक घर-प्रबन्ध आ परस्पर देखभालक चित्रण होइत अछि। कथक छोट-छोट व्यवहारिक सूचना दैत छथि; एहि कारण सुखक अनुभूति भावात्मक घोषणाक बदला दिनचर्याक क्रियामे सेहो व्यक्त होइत अछि।

कथानकक दृष्टिसँ एहि अंशक संक्षिप्तता महत्त्वपूर्ण अछि। ई सुख स्थिर होएबासँ पहिने टूटबाक आशङ्का पैदा करैत अछि। सुजाताक व्यक्तित्वमे सेवा, स्नेह आ जिम्मेवारीक बहुलता अछि; मुदा अपन इच्छा-विचारक स्वतन्त्र विस्तार एखन सीमित अछि। आगामी अंशमे विधवापन एहि असन्तुलनकेँ प्रश्नांकित करैत अछि।

अंश ६ : पंकजक मृत्यु, शोक आ असुरक्षाक संस्थागत रूप

पंकजक आकस्मिक मृत्युसँ कथा निर्णायक मोड़ लैत अछि। घुमबाक प्रसंगक बाद मृत्यु-समाचार, परिवारक शोक, सुजाताक असहाय अवस्था आ जीवन-निर्वाहक चिन्ता एकसाथ प्रस्तुत होइत अछि। लेखक दुःखकेँ केवल करुण दृश्य नहि बनबैत छथि; पति-आश्रित सामाजिक व्यवस्थामे नारीक सुरक्षा कतेक नाजुक अछि, ई सेहो देखबैत छथि।

एहि अंशमे सुजाताक भविष्य सम्बन्धी सलाह, माय-बाबूक समर्थन, सास-ससुरक प्रतिक्रिया आ लोकक हस्तक्षेप अलग-अलग नैतिक स्थिति खोलैत अछि। किछु पात्र धार्मिक चर्चा आ सामाजिक रूढ़ि द्वारा विधवाक जीवन-सीमाकेँ स्वाभाविक बनबैत छथि। आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे विधवाक मनक निज कष्ट आ समाजक ओकर जीवनपर नियन्त्रणमे कोन आवाज अधिक बलशाली होइत अछि। सुजाताक आवाज आरम्भमे दबैत अछि, मुदा एहि दबावसँ आगाँ प्रतिरोधक जरूरत जन्म लैत अछि।

अंश ७ : विधवा-पुनर्विवाह, स्त्री-अधिकार आ समाजक दोहरा मापदण्ड

कथावाचक एतय समाजक पुरुषप्रधान स्वरूपपर प्रत्यक्ष टिप्पणी करैत छथि। विधुर पुरुषक पुनर्विवाह सामाजिक रूपसँ सामान्य मानल जाइत अछि, मुदा विधवाक पुनर्विवाहक विकल्प निन्दा, कुल-प्रतिष्ठा आ सामाजिक दण्डक आशङ्कासँ घेरल जाइत अछि। एहि तुलना द्वारा कथक लैङ्गिक न्यायक प्रश्नकेँ उपन्यासक मूल बहस बनबैत छथि।

एहि अंशक शक्ति सार्वजनिक तर्कक स्पष्टतामे अछि। कमजोर पक्ष ई अछि जे कथावाचकक निश्चयात्मक न्याय-वाक्य कखनो पात्र सभक अन्तर्मनक बहुस्तरीयता कम करैत अछि। तैयो, आर्थिक आ भावनात्मक असुरक्षाकेँ समाजक नैतिक दबावसँ जोड़ि देखेनाइ मैथिली सामाजिक उपन्यासक सुधारवादी परम्परामे महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप अछि।

अंश ८ : पुनर्विवाहक प्रस्ताव, नातेदारीक राजनीति आ निर्णयक स्वायत्तता

लुत्ती झाक हस्तक्षेप, घरेलू सम्बन्धक तनाव, नरेश आ रमेशक प्रसंग तथा परिवार सभक बीच चलैत बातचीत एहि अंशकेँ संवादप्रधान बनबैत अछि। विवाह-संस्थाक भीतर स्त्रीक भविष्यक निर्णय के करए—एहि प्रश्नपर पात्र सभक अलग-अलग हित टकराइत अछि। स्नेहक भाषा, प्रतिष्ठाक भय, स्वार्थ, सामाजिक लोकमत आ दयाक आवरण एक-दोसरामे घुलैत अछि।

एतय नायिकाक अधिकारकेँ "ककरो द्वारा अपनाओल जाएब" मात्र मानब एकटा खतरा अछि। उपन्यास एहि खतरासँ मुक्त होबाक कोशिश करैत अछि, कारण सुजाताक असहमति आ अपन निर्णयक आवश्यकता उभरैत अछि। मुदा पुरुष मध्यस्थक भूमिका अपेक्षाकृत विस्तृत अछि। कथा नारी-स्वाधीनताक पक्षमे अछि, तथापि स्वाधीनताक सामाजिक स्वीकार्यता एखन पारिवारिक पुरुष-समर्थनपर आश्रित देखाइत अछि।

अंश ९ : नौकरीमे प्रवेश आ श्वेत-वस्त्रक सामाजिक अर्थ

सुजाता पंकजक मृत्युक बाद कार्यालयी प्रक्रियासँ नौकरी प्राप्त करैत छथि। पहिल दिन उज्जर/धवल वस्त्रमे कार्यालय पहुँचबाक दृश्य निजी शोकक सार्वजनिक उपस्थिति बनैत

अछि। एहि अंशमे पत्नी आ विधवाक भूमिकासँ कर्मचारीक भूमिकामे बदलाव होइत अछि। सामाजिक पहिचानक केन्द्र घरसँ कार्यालय दिस स्थानान्तरित होइत अछि।

रोजगार एतय केवल कमाइ नहि, अपन दैनन्दिन जीवनक निर्णय लेबाक क्षमता, परिचय, सार्वजनिक व्यवहार आ भविष्यक आशा अछि। मुदा नौकरीक अधिकारपर अधिकारी-कर्मचारी सभक प्रतिक्रिया स्पष्ट करैत अछि जे महिलाक सार्वजनिक उपस्थिति अपने-आप सुरक्षित स्थान नहि बनबैत। एहि अवस्थामे सुजाताक अनुभवक दोसर संघर्ष आरम्भ होइत अछि।

अंश १० : कलावतीक प्रसंग आ सहयोगक अनौपचारिक आधार

सुजाता कार्यालयक कलावतीसँ परिचित होइत छथि। ई सम्बन्ध प्रशासनिक प्रक्रियाक बीच महिला-सहयोगक सम्भावना खोलैत अछि। कार्यालयमे कागज-पत्र, सहकर्मी, सहायता-व्यवस्था आ कर्मचारिक समस्या रहस्यात्मक बाधा नहि, सामाजिक संरचनाक ठोस रूपमे प्रस्तुत होइत अछि।

उपन्यासक पूर्वार्द्धमे जीवन-निर्णयक केन्द्र परिवार छल; आब भरोसाक सम्बन्ध सहकर्मीक बीच खोजल जाइत अछि। सुजाता अपन संकटकेँ व्यक्तिगत नियति मात्र नहि मानि साझा परिस्थितिक प्रश्न बनबैत छथि। एहि अंशक महत्त्व कथानकमे चमत्कार नहि, सामूहिकताक सम्भावना पैदा करब अछि।

अंश ११ : कर्मचारी-राजनीति, अनुचित मांग आ साहसक रणनीति

सुजाता अराजक सत्ताक विरुद्ध प्रत्यक्ष शारीरिक बल नहि, तर्क, प्रमाण, सहकर्मीक सलाह आ उचित अधिकारिक प्रक्रिया खोजैत छथि।

आलोचनात्मक रूपसँ एहि अंशकेँ संस्थागत नैतिकताक लघु कथा पढ़ल जा सकैत अछि। कथा देखबैत अछि जे अन्यायक प्रतिरोधमे व्यक्तिगत सदिच्छा आवश्यक अछि, मुदा पर्याप्त नहि; दस्तावेज, कर्मचारीक भरोसा आ पदसोपानक ज्ञान सेहो जरूरी अछि। तथापि भ्रष्ट पात्रसभक मनोविज्ञान अधिक जटिल बनल रहित तँ कथा अधिक प्रभावकारी होइत।

अंश १२ : उच्चाधिकारीसँ सम्पर्क आ सत्ता-सम्बन्धक पुनर्व्यवस्था

सुजाता वरिष्ठ कार्मिक पदाधिकारीक विषयमे पता लगा कार्यालयी अन्यायक समस्या उच्च स्तर धरि पहुँचाबबाक यत्न करैत छथि। एहि अंशमे नायिकाक व्यक्तिगत साहस प्रशासनिक संवादमे बदलैत अछि। अधिकारीक मानवीय संवेदनशीलता, कार्यालयक कर्मचारीक दबाव आ दुर्व्यवहारक कारणक बीच पथ बनाओल जाइत अछि।

एतय कथा अपन समाधानक साधनकेँ न्यायप्रिय वरिष्ठ अधिकारीक नैतिक विवेकमे केंद्रित करैत अछि। ई आशावाद मानवीय दृष्टिसँ स्वागतयोग्य अछि, मुदा संस्थागत सुधारक यथार्थवादी अध्ययनमे प्रश्न उठैत अछि—की न्याय केवल "नीक बड़ा साहेब" पर आश्रित रहत? लिखित शिकायत, निष्पक्ष जाँच, अधिकार-सुरक्षा आ दण्ड-प्रक्रियाक स्पष्टता कथाकेँ अधिक विश्वसनीय बनबित।

अंश १३ : सुनीता, पर्दाफाश, सामूहिक प्रतिरोध आ उपसंहार

अन्तिम आ सभसँ विस्तृत अंशमे सुनीताक प्रसंग नारी-असुरक्षाक दोसर कथा अनैत अछि। सुजाता ओहि दुःखक साक्षी बनैत छथि आ अपन अनुभवक आधारपर सहायता करबाक संकल्प लैत छथि।

कलावती, सुनीता, कमला, कार्मिक पदाधिकारी आ अन्य कर्मचारीक भागीदारीक क्रममे समस्या एकटा महिला बनाम एकटा पुरुषक सीमा पार कऽ सार्वजनिक दायित्वक रूप लैत अछि। उपसंहारमे अधिकारीक समर्थन आ अनुचित कर्मचारीक स्थानान्तरण-सम्बन्धी निर्णयसँ नैतिक विजयक बोध उपस्थित अछि। मुदा आलोचनात्मक स्तरपर ई निष्कर्ष राखब जरूरी अछि जे स्थानान्तरण अपने-आप शोषणक अन्तिम न्याय नहि; एकर संग जवाबदेही आ भविष्यक निवारणक प्रश्न बचल रहैत अछि।

अन्तिम अंशक विस्तार एहि बातक साहित्यिक प्रमाण अछि जे कथाक वास्तविक केन्द्र केवल विधवा-पुनर्विवाह नहि रहैत; नारीक सार्वजनिक कर्तृत्व, कार्यस्थलक सुरक्षा आ भ्रष्टाचार-विरोध मुख्य रचनात्मक आशय बनि जाइत अछि। कथाक समाप्ति आशावादी

अछि, मुदा ओकर भीतर न्यायप्रणालीक अपूर्णताक संकेत सेहो पाठक ग्रहण कऽ सकैत अछि।

नायिका आ सहायक पात्रक समाजशास्त्रीय अध्ययन

सुजाता : आदर्श स्त्रीक छविसँ स्वनिर्णायक नागरिक धरि

सुजाताक गठन लेखक पहिने सदाचार, शिक्षा, घरेलू दक्षता आ सौन्दर्यक सामाजिक प्रतिमानसँ करैत छथि। एहि प्रक्रियामे "नीक कन्या"क परम्परागत धारणाकेँ चुनौती देबाक बदला कथक आरम्भमे ओहि मूल्यक सहारा लैत छथि। कथाक बादक भागमे नौकरी करब, अपमानक प्रतिकार करब, दूसर महिलाक पक्षमे ठाढ़ होएब आ अधिकारीसँ बात करबाक साहस हुनक पहिचान बदलबैत अछि। एहि परिवर्तनमे नायिकाक मानवता व्यक्तिगत सहिष्णुतासँ सार्वजनिक न्याय-चेतना धरि पहुँचैत अछि।

तथापि सुजाताक अन्तरङ्ग मनोदशा सर्वत्र समान गहराइमे नहि खुलैत। हुनक नैतिक निर्णय प्रायः आदर्शक रूपमे घोषित अछि; संदेह, आत्मविरोध, भयक शारीरिक अनुभूति आ आन्तरिक असमञ्जस लेल अधिक स्थान रहित तँ चरित्र साहित्यिक रूपसँ अधिक बहुमुखी बनित। ई आलोचना नायिकाक साहसकेँ कम नहि करैत, बल्कि उपन्यासक उपलब्धि आ सीमा दुनूकेँ अलग करैत अछि।

पंकज, रामकान्त आ माय-बाबू : स्नेह आ पितृसत्तात्मक व्यवस्था

पंकजक नौकरी आ विवाह पारिवारिक प्रतिष्ठाक सूत्र बनैत अछि। कथामे हुनक अकाल मृत्यु भावात्मक प्रेरक आ कथात्मक विभाजन-रेखा अछि। रामकान्त सहित वयस्क पुरुष सभक व्यवहार एकसमान नहि; किछु पात्र स्नेह, सहायता आ नैतिक जिम्मेवारी प्रकट करैत छथि। मुदा स्त्रीक जीवन-निर्णयपर पुरुष सभक विचार, अनुमति आ सामाजिक प्रतिष्ठाक असर निरन्तर बनल रहैत अछि। एहि विरोधाभासक अध्ययनसँ बुझाइत अछि जे "नीक पुरुष"क उपस्थिति पितृसत्ताक संरचनाकेँ स्वतः समाप्त नहि करैत।

लुत्ती झा, नरेश, रमेश : हित, रूढ़ि आ मध्यस्थता

लुत्ती झा घरेलू राजनीति आ हित-संघर्षक महत्त्वपूर्ण आवाज छथि; हुनक व्यवहारमे नातेदारी, सामाजिक भय आ व्यक्तिगत स्वार्थक जटिलता देखाइत अछि। नरेश आ रमेशक प्रसंग पुनर्विवाहक सम्भावना आ सामाजिक समर्थन-बाधाक कएक स्तरसँ पाठककेँ परिचित करैत अछि। मुदा लेखक किछु व्यक्तिकेँ नीक-बेजायक द्वैतमे रखैत छथि; खल-आचरणक सामाजिक उत्पत्ति, अन्तर्विरोध आ परिवर्तनक सम्भावना यदि विकसित होइत तँ चरित्रसमूह अधिक ठोस बनित।

कलावती आ सुनीता : महिला-एकजुटताक विस्तार

नायिकाक व्यक्तिगत कथासँ सामाजिक उपन्यास बनबाक निर्णायक सूत्र कलावती आ सुनीताक सम्बन्ध अछि। एहि स्त्री-पात्र सभक संकट अलग-अलग भेलो साझा सत्ता-संरचनासँ सम्बन्धित अछि। सुजाता जे सहायता दैत छथि, से परोपकार मात्र नहि—दुःखक साझा पहचान आ सामूहिक प्रतिरोधक आरम्भ अछि। मुदा एहि पात्र सभक स्वतन्त्र चेतना आ जीवनक विस्तृत इतिहास नायिकाक समान विकसित नहि; ओ सभ प्रायः मुख्य कथानकक नैतिक उद्देश्य स्पष्ट करबाक उपकरण बनि जाइत छथि।

कथा-शिल्प, समय, परिवेश आ भाषाक विवेचन

कालक्रम आ तेरह भागक संरचना

कथा व्यापक रूपसँ रैखिक अछि : बचपन-शिक्षा, विवाह, मृत्यु, सामाजिक संकट, नौकरी, संस्थागत संघर्ष आ समाधान। तेरह अंशक सङ्ख्या लेखकक पाठ-विभाजनक उपकरण अछि; ई अंश पारम्परिक अध्यायक शीर्षकवाला स्वायत्त इकाई नहि, बल्कि घटनाक मोड़पर टिकैत छोट प्रसंग-संगठन छथि। अंश ५ अपेक्षाकृत संक्षिप्त आ अंश १३ विशेष विस्तृत अछि। एहि असमानतामे कथाक भाव-दिशा स्पष्ट छैक : विवाहक सुखक तुलनामे अन्यायक प्रतिकार लेल अधिक कथास्थान सुरक्षित अछि।

ग्राम, घर, तीर्थ-यात्रा आ कार्यालय

गामक खेती, घरक गृहस्थ व्यवस्था, विवाह-स्थलक उत्सव, यात्राक दृश्य आ शहरक कार्यालय—ई स्थानसभ मात्र पृष्ठभूमि नहि, कथाक मूल्यव्यवस्थाक परिचायक छथि। गाममे परिवार आ लोकमत, विवाहमे प्रतिष्ठा, यात्रामे निजी आकांक्षा आ कार्यालयमे पद-सत्ता प्रधान छैक। सुजाताक यात्रा एहि स्थान सभक सीमा पार करैत अछि। आरम्भिक गामक चित्रण संवेदनात्मक अछि; कार्यालयक भाग अधिक संवाद, आशङ्का आ योजनापर आधारित अछि। दृश्यसँ विचार दिस ई परिवर्तन उपन्यासक कथनगत विशेषता सेहो अछि आ शिल्पगत असन्तुलन सेहो।

कथावाचकक हस्तक्षेप आ नीतिवाक्य

तृतीय पुरुष कथावाचक प्रायः सर्वज्ञ दृष्टि अपनबैत छथि। ओ व्यक्तिक व्यवहारक मात्र उल्लेख नहि, ओकर नैतिक मूल्याङ्कन सेहो तुरन्त करैत छथि। पुरुषप्रधान समाजक आलोचना, आदर्श विवाहक पक्षधरता आ कार्यालयी सदाचारक व्याख्या एहि हस्तक्षेपक प्रमुख उदाहरण अछि। सामाजिक परिवर्तनक दृष्टिसँ ई कथन पाठककेँ स्पष्ट मूल्य-दिशा दैत अछि; साहित्यिक बहुअर्थक दृष्टिसँ कखनो पाठकक स्वतन्त्र निर्णयक अवकाश कम करैत अछि।

मैथिली संवादक सघनता आ सम्पादकीय प्रश्न

पोथीमे बोलचालक मैथिली, ग्राम्य-मध्यवर्गीय शब्दसंसार, सम्बोधन-प्रणाली आ संवादक सहज विन्यास समृद्ध अछि। “बजलथि”, “मुदा”, “कतेक”, “ओकरा”, “हमरा” जेकाँ लोकप्रचलित क्रिया-रूप आ सम्बन्धसूचक शब्द पाठककेँ भाषिक परिवेशमे स्थिर करैत अछि। मुदा उपदेशप्रधान प्रसंगमे पात्र अलग-अलग सामाजिक स्थिति रखितो एके शैलीमे लम्बा नैतिक तर्क देबय लगैत छथि। पाठ-संस्करणक भविष्यक सम्पादकीय कार्यमे विरामचिह्न, मुद्रण-दोष, संवाद-विभाजन आ वाक्य-सम्पादन उपयोगी होएत; मूल शब्द-रूपक असावधान मानकीकरण नहि।

नारीवादी, वर्गीय आ संस्थागत पाठ

उपन्यासक नारीवादी मूल्यांकनकेँ केवल "सुजाता साहसी छथि" धरि सीमित नहि करबाक चाही। तीन टा अलग सत्ता पहिचान योग्य अछि : विवाह आ विधवापनपर पारिवारिक नियन्त्रण; आर्थिक साधनपर पुरुषक परम्परागत वर्चस्व; आ कार्यालयमे पदाधिकारक अनुचित प्रयोग। सुजाताक यात्रा पहिल दुनू क्षेत्रमे वैयक्तिक निर्णयक अधिकार आ तेसर क्षेत्रमे नागरिक-नैतिक अधिकारक माँग करैत अछि।

ई न्याय-दृष्टि सर्वथा आधुनिक नारी-स्वायत्तताक अन्तिम प्रतिमान नहि। सुजाताक "आदर्श" व्यवहारकेँ आरम्भमे घरेलू सेवा, मर्यादा आ शालीनता द्वारा प्रमाणित करबाक जरूरत देखाइत अछि। एहि सापेक्ष आदर्शीकरणसँ ई प्रश्न उठैत अछि जे किएक सम्माननीय नारी होएबाक पूर्वशर्त सदैव सेवाभाव, शुचिता आ सामाजिक स्वीकृति बनए? सुजाताक अधिकार हुनक नैतिक श्रेष्ठताक पुरस्कार नहि, बल्कि मनुष्य होएबाक अधिकार अछि। ई व्याख्यात्मक अन्तर पाठकेँ अधिक दूर धरि खोलैत अछि।

वर्गीय स्तरपर सुजाताक संघर्ष साधनहीन परिवारसँ सरकारी नौकरीक स्थिरता धरि पहुँचैत अछि। शिक्षा, सरकारी नियुक्ति आ कागजी साक्षरता सामाजिक गतिशीलताक साधन बनैत अछि; मुदा भर्ती, पदस्थापन, सहकर्मी-जाल आ अधिकारक दुरुपयोग आर्थिक असमानताकेँ नब रूपमे उपस्थित करैत अछि। उपन्यास गरीब आ मध्यमवर्गीय परिवारक व्यवहारिक विवशताकेँ रेखाङ्कित करैत अछि, मुदा श्रम-संस्था आ स्त्री-कर्मचारीक स्वतन्त्र संगठनक विस्तृत संरचना विकसित नहि करैत।

संस्थागत न्यायक प्रश्नपर अन्तिम निर्णय विशेष ध्यान माँगैत अछि। सकारात्मक अन्त पाठककेँ विश्वास दैत अछि जे सही साक्ष्य आ साहससँ अन्यायकेँ चुनौती देल जा सकैत अछि। तथापि न्यायकेँ कोनो एकटा उच्चाधिकारीक सदिच्छापर निर्भर बनब संस्थाक अपारदर्शिता दूर नहि करैत। शिकायत-प्रक्रिया, प्रताड़ित महिलाक सुरक्षा, दोषीपर जवाबदेही आ सामूहिक नियन्त्रणक प्रश्न एतय कृति-परे आलोचनाक विषय बनैत अछि।

एहि सीमा सहित ‘सुजाता’ प्रशासनिक नैतिकताक प्रश्न उठेबाक कारण उल्लेखनीय अछि।

भाषिक उदाहरण आ पाठार्थ

नीचाँ देल गेल संक्षिप्त पाठांश मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठाङ्कसँ मिलैत अछि। उद्धरणकेँ प्रमाणक सीमामे राखल गेल अछि; दीर्घ, अस्पष्ट अथवा द्व्यर्थ पाठांशकेँ अनिवार्यतः उद्धृत नहि कएल गेल अछि। एकर पाठार्थ उद्धरणसँ पृथक आलोचनात्मक व्याख्या थिक।

मूल पाठांश	मुद्रित पृष्ठ	समीक्षात्मक संकेत
“फागुन मास बित रहल छल।”	१	ऋतुवर्णनद्वारा ग्रामीण भावभूमिक स्थापना।
“सुजाता घरक काज मे सेहो निपुण छलथि।”	६	शिक्षाक संग घरेलू श्रमकेँ नारी-गुण मानबाक आरम्भिक आदर्श।
“हमर समाज पुरुष प्रधान अछि।”	२९	कथकक प्रत्यक्ष सामाजिक-लैङ्गिक आलोचना।
“सुजाता धवल वस्त्र धारण कयने कार्यालय पहुँचलथि।”	४४	विधवापनक दृश्य-चिह्नसँ सार्वजनिक कर्मक्षेत्रमे नब प्रवेश।
“आफिस मे एकदिन सुजाताक भेंट सुनीता सँ भेल।”	६६	महिला-सहभागिता आ संस्थागत अन्यायक नब प्रसंगक आरम्भ।

उद्धरणक साक्ष्य-प्रकृति पर विशेष ध्यान अपेक्षित अछि। ऊपरक पाठांश कृति-विशेषक शब्द-साक्ष्य छथि; एहि सँ कथाक समस्त सामाजिक दावाक ऐतिहासिक सत्यता अपने-

आप सिद्ध नहि होइत। मुद्रित पृष्ठ २९क एक पाँती पूरा कथक-चेतनाक संकेतक बनैत अछि, मुदा ओहि पृष्ठक पूर्वापर तर्ककेँ संग पढ़लापर एकर वास्तविक उपयोगिता स्पष्ट होइत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक ऐतिहासिक विकासक सन्दर्भमे तुलनात्मक स्थिति

बाल-साहित्यक इतिहास लिखबामे कृति केँ केवल “सरल भाषा” वा “नीति-संदेश”क आधारपर बाल-साहित्य मानब भ्रामक अछि। पाठक-वर्गक आयु, बाल-पात्रक स्वतन्त्र कर्तृत्व, कथात्मक जिज्ञासा, चित्रक उपयोग, वाचिकता, पाठकक मनोवैज्ञानिक क्षमता आ बाल-जीवनक अनुभव—सभ कसौटी महत्त्वपूर्ण छथि। ‘सुजाता’मे बाल्य-शिक्षाक अंश अवश्य अछि, मुदा पाठकक निर्णायक सम्बन्ध वयस्क स्त्रीक कानूनी-सामाजिक अधिकार आ कार्यालयक शक्तिसँ बनैत अछि। तेँ एकरा बाल-उपन्यासक इतिहासमे सीधे शामिल करबाक बदला वयस्क सामाजिक उपन्यासक संग राखि बाल-साहित्यक निकटवर्ती विचार-वस्तुक स्रोत मानब अधिक उचित अछि।

विदेहक शिशु-बाल-किशोर साहित्य अभिलेख मैथिली बाल-सृजनक व्यापक विधात्मक परिवेश देखबैत अछि : बालगीत, बालकविता, लोककथा, बाल-उपन्यास, चित्रकथा, अनुवाद, विज्ञान-विषयक रचना आ समकालीन किशोर-कथा। उपलब्ध सूचीमे जगदानन्द झा “मनु”क ‘चोनहा’, जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘नै धाड़ैए’, नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘स्वर्ण कमल’, प्रीति ठाकुरक ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’, देवांशु वत्सक ‘नताशा’ आ डॉ. रमानन्द झा ‘रमण’क अनूदित चित्रशृंखला ‘राजू आ टाकाक गाछ’ सन कृति-नाम स्पष्ट अंकित छथि। ई सूची साहित्यिक प्रवाहक दस्तावेज अछि; मुदा कृति-नामक सूची मात्रसँ एकटा पूर्ण, वर्षवार प्रकाशन-इतिहास निर्धारित नहि कएल जा सकैत।

बाल-साहित्यक विकासकेँ कम-स-कम चारि प्रवृत्तिक रूपमे बुझल जा सकैत अछि : लोककथा आ वाचिक परम्परासँ प्राप्त कथामूल; बालगीत आ आदर्श-शिक्षाक पाठ; चित्रकथा, अनुवाद आ बाल-उपन्यासक माध्यमसँ भाषा-अभ्यास तथा सामाजिक जिज्ञासा; आ वर्तमान डिजिटल माध्यममे क्विज, ऑडियो-दृश्य, विषयविशेष कथा आ किशोर-विमर्श।

विदेहक अभिलेख एहि सह-अस्तित्वक साक्षी अछि। एहि प्रवृत्ति सभकेँ कठोर कालानुक्रमिक “पहिल-दोसर-तेसर” चरण मानब उचित नहि, कारण कतेक रूप समान समयमे सक्रिय रहल अछि।

एक्कहि लेखकक दू विधागत क्षितिज : ‘स्वर्ण कमल’ आ ‘सुजाता’

विदेह ‘स्वर्ण कमल’केँ नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क बाल-उपन्यास कहैत अछि, जबकि ‘सुजाता’क मूल शीर्षक-पृष्ठ आ विदेह गद्य-सूची दुनू एकरा साधारण मैथिली उपन्यासक रूपमे चिह्नित करैत अछि। एहि तथ्यसँ लेखकक रचनात्मक विस्तारक सूचना भेटैत अछि। मुदा ‘स्वर्ण कमल’क पूर्ण पाठक पृथक परीक्षण बिना ओकर कथानक, चरित्र आ अन्तिम मूल्य-निर्णयक विस्तारसँ दावा कएल नहि जा सकैत। एतय तुलनाक कसौटी विधागत अछि : ‘सुजाता’मे वयस्क नायिकाक कर्तृत्व सामाजिक-प्रशासनिक प्रतिरोध बनैत अछि; बाल-उपन्यासमे एहि प्रश्नक पाठकीय रूप बाल-अनुभव, जिज्ञासा आ निर्णय क्षमताक अनुरूप बदलब आवश्यक हएत।

चित्रकथा, लोकआख्यान आ समकालीन बाल-उपन्यास

विदेह-सूचीमे प्रीति ठाकुरक मूल चित्रकथा-प्रयासक २००८–२००९ केर संकेत आ अनुवादित चित्रकथा-परम्पराक बहुतेक प्रविष्टि उपलब्ध अछि। जगदानन्द झा “मनु” आ जगदीश प्रसाद मण्डल जेकाँ लेखकक बाल-उपन्यास, आ आधुनिक डिजिटल प्रकाशनक किशोर-कथा सूची एक्कहि कृतिकेँ अनेक पाठक-स्तरमे अलग माध्यमसँ प्रस्तुत करबाक प्रवृत्ति सूचित करैत अछि। एहि पृष्ठभूमिमे ‘सुजाता’क शिक्षा-आत्मसम्मानक प्रतिपाद्य किशोर साहित्यक विषय बनि सकैत अछि, मुदा वर्तमान कथा-कथनमे विधवापनक सामाजिक अपमान आ दफ्तरक जटिल शक्ति-संरचना बाल-केन्द्रित कथा-शिल्प नहि बनल अछि।

बाल-पाठक लेल रूपान्तरित पाठक सम्भावना आ सावधानी

जँ कखनो 'सुजाता'क किशोर-पाठ्य रूपान्तर बने, तँ मुख्य शिक्षाप्रद तत्व होएत : कन्याक शिक्षा; विधवा-सम्बन्धी पूर्वाग्रहक आलोचना; स्वावलम्बन; महिलाक संगठित सहयोग; आ शिकायत, प्रमाण तथा न्यायप्रक्रियाक महत्त्व। मुदा रूपान्तरक लेल बाल-दृष्टि, आयु-सापेक्ष संवेदनशीलता, पात्रक एजेंसी, जटिल कार्यस्थल प्रसंगक सुबोध प्रस्तुति आ हिंसा/उत्पीड़नक गैर-सनसनीखेज कथन आवश्यक होएत। मूल उपन्यासपर "बाल-साहित्य"क छाप लगाएब आ विचारपूर्वक बाल-अनुकूल पुनर्लेखन करब—दुनू अलग काज अछि।

विदेह अङ्क ४४७मे प्रकाशित 'मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र' बाल-पाठकक औचित्य, रस, लोकाधार आ बाल-कर्तृत्वक तुलनात्मक मापदण्ड प्रस्तुत करैत अछि। ओहि मापदण्डकेँ अपन सीमाक भीतर उपयोग करैत 'सुजाता'क विशेषता अधिक स्पष्ट होइत अछि : एतय बाल-कर्तृत्वक बदला वयस्क नारीक नागरिक-कर्तृत्व केन्द्रमे अछि। ई भेद स्वीकार करब कृतिक महत्त्व कम करब नहि, बल्कि विधाक इतिहासकेँ अधिक शुद्ध बनायब अछि।

कृतिक उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ सीमा

प्रमुख उपलब्धि ई थिक जे उपन्यास नारीक आर्थिक निर्भरताकेँ केवल भावनात्मक करुणाक विषय नहि मानैत। शिक्षा, सरकारी सेवा, कार्यस्थलक जोखिम आ सामूहिक प्रतिरोध—ई सभ जोड़ि सामाजिक अन्यायक ठोस संरचना उपस्थित करैत अछि। दोसर, सुजाताक कथा घरेलू चौखटिसँ सार्वजनिक कार्यालय धरि फैलैत अछि; एहि विस्तारमे सामाजिक यथार्थक बहुस्तरीयता अछि। तेसर, मैथिली संवाद आ परिवार-केन्द्रित लोकभाषा कृतिक सांस्कृतिक विशिष्टता सुदृढ़ करैत अछि।

मुख्य सीमा चारि अछि। पहिल, आदर्श नायिका आ नकारात्मक पात्रक स्पष्ट नैतिक विभाजन चरित्रक जटिलताकेँ सीमित करैत अछि। दोसर, कथावाचकक टिप्पणी कखनो

घटना आ संवादसँ निकलि सकनिहार अर्थ पहिले घोषित कऽ दैत अछि। तेसर, नारीक स्वाधीनता बतबैत कथा बीच-बीचमे हुनक सम्मानकेँ परम्परागत शालीनताक कसौटीपर प्रमाणित करैत अछि। चारिम, प्रशासनिक सुधारक परिणाम उच्चाधिकारीक सदिच्छापर बहुत जल्दी केन्द्रित भऽ जाइत अछि। तदपि एहि सीमा सभसँ कृतिक सामाजिक विमर्श अप्रासङ्गिक नहि होइत; ई आलोचनात्मक पुनर्पाठक आधार उपलब्ध करबैत अछि।

वस्तुतः 'सुजाता'क बहस एकटा ऐतिहासिक संक्रमणक बहस अछि : स्त्रीक अधिकारकेँ समाज केवल "सहानुभूति"क विषय मानत कि अपन नागरिक व्यवस्था आ सामाजिक संस्थाकेँ बदलबाक सिद्धान्त? कथामे सुजाताक साहस एहि प्रश्नक पहिल उत्तर दैत अछि। आजुक दृष्टिसँ पाठक दोसर उत्तर सेहो खोजत—सुरक्षित शिकायत-प्रणाली, दण्डात्मक जवाबदेही, महिला-सहयोगक स्थायी संरचना आ समान अवसरक संस्थागत व्यवस्था।

निष्कर्ष

'सुजाता'केँ मात्र विधवा-पुनर्विवाहक कथा कहल गेल तँ ओकर उत्तरार्द्धक व्यापक सामाजिक आशय छूटि जाएत; मात्र भ्रष्टाचार-विरोधी कथा कहल गेल तँ आरम्भिक शिक्षा, विवाह-व्यवस्था आ विधवापनक अनुभव गौण भऽ जाएत। कृतिक सर्जनात्मक एकता एहि दुनू धारामे अछि—निजी दुःखसँ जन्मल आत्मनिर्णय सार्वजनिक न्याय-चेतनामे परिणत होइत अछि। सुजाता प्रारम्भमे समाजक मान्य "आदर्श नारी" छथि, मुदा अन्तमे ओ केवल सहनशीलता नहि, प्रतिरोध आ सहयोगक सक्रिय क्षमता अर्जित करैत छथि।

उपन्यास सामाजिक यथार्थ, सुधारवादी वक्तव्य आ नारीक नागरिक अस्मिताक संगम अछि। एकर कलात्मकता सर्वत्र समान रूपसँ परिपक्व नहि—नाटकीय द्वन्द्व, मनोवैज्ञानिक परत आ संस्थागत जटिलता कतेक ठाम विस्तार चाहैत अछि—तथापि मैथिली गद्यक अध्ययनमे ई कृति स्त्रीक सामाजिक स्थानसँ कार्यस्थलक नैतिकता धरि फैलिएल महत्त्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित करैत अछि। बाल-साहित्यक इतिहाससँ एकर सम्बन्ध प्रत्यक्ष विधागत सदस्यताक नहि, बल्कि शिक्षा, आत्मसम्मान, समानता आ सामाजिक

उत्तरदायित्व जेकाँ विचारक तुलनात्मक सीमारेखाक अछि। एहि स्पष्ट सीमारेखाक संग कएल पाठन कृतिक वास्तविक साहित्यिक मूल्यकेँ अधिक यथार्थ रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

अध्याय ६

सुकन्या

विधवा-पुनर्विवाह, स्त्री-अस्मिता आ सामाजिक परिवर्तन

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क मैथिली उपन्यासक विस्तृत पाठाधारित आलोचनात्मक अध्ययन

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘सुकन्या’ (२०१९) मैथिली सामाजिक उपन्यासक एहन रचना अछि जे विधवा-पुनर्विवाह केँ केवल व्यक्तिगत सुख अथवा कुटुम्बक आयोजनक प्रश्न नहि, बल्कि सामाजिक मान्यता, नारीक गरिमा, निर्णयक स्वतन्त्रता आ सामुदायिक न्यायसँ जोड़ैत अछि। कथा रतनक वैधव्य आ ओकर जीवनमे पुनः साहचर्यक सम्भावनासँ आरम्भ होइत अछि; सुकन्याक वैधव्य, शिक्षा आ सामाजिक अपमानक अनुभव एहि सम्भावना केँ अधिक व्यापक अर्थ दैत अछि। कमलेशक सहायक भूमिका, अभिभावकसभक नैतिक द्वन्द्व, रिंकी–निर्मलक प्रसंग, रघुवंश बाबू द्वारा रूढ़िक प्रतिरोध, तथा सेवकराम–विशाल–सुमनसँ सम्बद्ध परवर्ती घटना कथा केँ व्यक्तिगत परिचयसँ सामुदायिक आन्दोलन धरि विस्तारित करैत अछि। एहि अध्ययनमे कृतिक मूल मुद्रित पृष्ठक आधारपर कथाविकास, संरचनाक लाभ-सीमा, नारीवादी सम्भावना, संवादक स्वाभाविकता, आदर्शवादी समाधान आ सामाजिक यथार्थक बीच तनावक पड़ताल कयल गेल अछि। ‘कन्यादान’ आ ‘पारो’ सँ विषयगत तुलना द्वारा मैथिली उपन्यासमे स्त्री-जीवन सम्बन्धी विमर्शक निरन्तरता आ परिवर्तनक संकेत स्थापित कयल गेल अछि।

ग्रन्थ-परिचय आ अध्ययनक परिधि

‘सुकन्या’क शीर्षक-पृष्ठ पर कृति केँ ‘मैथिली उपन्यास’ कहल गेल अछि। लेखक नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’ छथि; प्रकाशक गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, दरभंगा; प्रकाशन-वर्ष २०१९ आ अंकित मूल्य एक सय पचास टाका अछि। पुस्तकक आरम्भमे श्रीफूलचन्द्र मिश्र ‘रमण’क ‘अपन दुइ शब्द’ आ लेखकक ‘लेखकीय’ अछि। मुख्य कथा

मुद्रित पृष्ठ १ सँ ९० धरि फैलल अछि। ई परिचय पुस्तकक अपन प्रकाशकीय आ आरम्भिक सामग्रीपर आधारित अछि।

प्रस्तावनाकार श्रीफूलचन्द्र मिश्र 'रमण' कृतिक केन्द्रीय विषय विधवा-पुनर्विवाह कैं रेखांकित करैत छथि। लेखक सेहो अपन वक्तव्यमे विवाहक बदलैत सामाजिक स्थितिक चर्चा करैत छथि : बेमेल विवाह, विधवा जीवनक असुरक्षा, परिवारक प्रतिरोध आ पुनः घर बसयबाक चाह। एहि दूनू आरम्भिक वक्तव्यक कारण पाठक पहिनहि बुझि सकैत अछि जे उपन्यासक कथानकक भीतर निहित सामाजिक-सुधारक अभिप्राय आकस्मिक नहि अछि।

एहि अध्ययनमे घटनाक्रम, संवाद, पात्रक निर्णय आ कथात्मक परिणतिक विश्लेषण कयल गेल अछि। लेखकक अभिप्राय आ रचनाक वास्तविक उपलब्धि कैं पृथक मानि पढ़ल गेल अछि : लेखक जे कहय चाहैत छथि, कथा सदा ठीक ओतबे सिद्ध करैत अछि, एहन मानि लेब आलोचना नहि होयत। तें जतय आदर्शवादी समाधान सामाजिक विषमताक जटिलता कैं सरल बनबैत अछि, ओतय ओकर आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक अछि।

मूल समस्या : विधवा-पुनर्विवाहक सामाजिक अर्थ

एहि उपन्यासक प्रश्न ई नहि जे वैधव्यक पश्चात् फेर विवाह सम्भव अछि वा नहि। मूल प्रश्न ई अछि जे समाज स्त्री आ पुरुषक वैधव्य कैं समान मानदण्डसँ किएक नहि परखैत अछि। पुरुषक दोसर विवाहक पक्षमे परिवार सहज तर्क देबय लगैत अछि; स्त्रीक प्रसंगमे लोकलाज, जाति, प्रतिष्ठा, सन्तानक भविष्य आ कथित मर्यादाक अधिक कठोर कसौटी सक्रिय भऽ उठैत अछि। उपन्यास एहि असमानता कैं अनेक पात्रक वार्तालाप आ सामाजिक घटनामे दृश्यात्मक बनबैत अछि।

रतन पहिने पत्नी सुनीताक निधनक बाद बच्चासभक पालन-पोषण, व्यवसाय आ स्मृतिक भार सँ गुजरैत छथि। फेर विवाहक प्रस्ताव सुनिते हुनक भीतर दुविधा उठैत अछि। सुकन्याक प्रसंग एहि विमर्शमे नारीक अपना अनुभव जोड़ैत अछि। ओकर शैक्षिक प्रतिभा,

अपमानजनक आरोपक सामना, सहायताक स्वीकार आ स्वाभिमानी आचरण देखबैत अछि जे जीवनक नवनिर्माण पुरुषक निर्णय-मात्रपर निर्भर नहि रहबाक चाही।

कृतिक सामाजिक चिन्ता हिन्दू विवाह-व्यवहार, ग्रामीण पञ्चायत, अफवाह, सामाजिक प्रतिष्ठा आ विधवाक सुरक्षा सम्बन्धी प्रश्नसँ जुड़ल अछि। कथा बारम्बार ई भेद स्पष्ट करबाक चेष्टा करैत अछि जे सार्वजनिक लोकमत नैतिक सत्यक एकमात्र स्रोत नहि; सामाजिक परम्परा जखन मानवीय गरिमा कैं चोट पहुँचबैत अछि, तखन ओकर विरोध उचित ठहरैत अछि।

कथाक विन्यास : परिवार, कॉलेज, नगर आ ग्रामक अन्तरसम्बन्ध

कथाक आरम्भ सार्वजनिक उद्यानमे रतनक एकान्त चिन्तनसँ होइत अछि। रंगीन फूल-पात आ उद्यानक प्रसन्न बाहरी संसारक बरक्स ओकर वैयक्तिक रिक्तता प्रस्तुत भेल अछि। ई विरोध उपन्यासक भावभूमि बनबैत अछि : बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा व्यक्तिक भीतर अधूरापन अछि। आरम्भमे प्राकृतिक दृश्य बहुत दीर्घ नहि अछि, तथापि ओकर भूमिका मात्र सजावट नहि; ओ रतनक मनोदशाक प्रतीकात्मक पृष्ठभूमि उपलब्ध करबैत अछि।

रतनक परिवारक पुरुष-अभिभावक, पञ्चायतक प्रतिष्ठित व्यक्ति, कॉलेजक छात्र आ शिक्षक, बैंकक कर्मचारी तथा ग्रामक अनेक नागरिक कथाक सामाजिक जगत रचैत छथि। एकसंग एतेक सामाजिक संस्थाक उपस्थिति निजी विवाहक प्रश्न कैं व्यापक सार्वजनिक सरोकार बनबैत अछि। मुदा एहि विस्तारक परिणामस्वरूप किछु पात्र जीवनीगत गहराइ प्राप्त नहि कऽ पबैत छथि; ओ प्रायः विचारधारात्मक पक्ष प्रस्तुत करबाक माध्यम बनैत छथि।

उपन्यासमे रतन–सुकन्या आ रिंकी–निर्मल सम्बन्धी दू प्रमुख प्रवाह, तथा कमलेश आ परवर्ती पात्रसभक प्रसंग समांतर रूपसँ चलैत अछि। एहि बहुपात्रीय विन्यासक लाभ सामाजिक प्रश्नक अनेक रूप देखब होइत अछि; सीमा ई जे मूल नायिका सुकन्याक

अन्तर्मनक सतत कथात्मक उपस्थिति कतेको अवसरपर दोसर प्रसंगक कारण कम भऽ जाइत अछि।

क्रमिक पाठविश्लेषण : आरम्भसँ अन्तिम परिणति धरि

उपन्यासक मुख्य कथामे १, २, ३, ४, ५, ६, ८, ९ आ १० संख्या स्पष्ट अंकित अछि। मुद्रित पृष्ठ ४५ सँ ६४क प्रसंगसभक बीच पृथक ‘७’ शीर्षक स्पष्ट रूपमे चिन्हित नहि होइत अछि; तें क्रमिक विवेचनमे ओहि मध्यवर्ती सामग्री कें अलग ‘सातम कथात्मक चरण’ कहि पहचानल गेल अछि, स्वतंत्र अंकित अध्यायक दावा कयने बिना। ई पाठ-विभाजनक तथ्य शिल्पगत अध्ययनमे उल्लेखनीय अछि।

पहिल खण्ड : रतनक एकान्त आ पञ्चायतक प्रश्न

पहिल खण्डक केन्द्रीय दृश्य रतनक एकान्त चिन्तन अछि। पत्नी सुनीताक मृत्युक तीन वर्ष बाद सेहो ओ स्मृतिसँ बँधल छथि। बच्चासभक पालन-पोषणक व्यावहारिक आवश्यकता एक दिशामे अछि; समाजक कहबाक भय आ पूर्व सम्बन्धक सम्मान दोसर दिशामे। लेखक रतनक मनमे दोसर विवाहक सम्भावना तुरन्त स्थापित नहि करैत छथि; पहिले एकटा उद्विग्न व्यक्तिक असन्तुलित सामाजिक-सांसारिक स्थिति प्रस्तुत करैत छथि।

अमिरकान्तजीक घर आ ग्रामीण सामाजिक व्यवहारसँ सम्बन्धित चर्चा मे पञ्चायतक निर्णयाधिकार उठैत अछि। समाजक प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा कहल गेल बात लोकक परामर्श तऽ भऽ सकैत अछि, मुदा ओ मानवीय स्वतन्त्रताक अन्तिम न्यायाधीश नहि। एहि द्वन्द्वमे कृतिक सुधारवादी तेवर पहिल बेर स्पष्ट होइत अछि।

> “अपने कोन आधार पर ई पंचैती कयल अछि?” (मूल मुद्रित पृष्ठ 3)

ई छोट प्रश्न उपन्यासक नैतिक बीज अछि। कृति पञ्चायतक समग्र अस्तित्वक विरोध नहि, बल्कि बिना वैध नैतिक आधारक हस्तक्षेपक आलोचना करैत अछि। तथापि पहिल

खण्डमे विरोधी पक्षक मनोवैज्ञानिक तर्क विस्तारसँ नहि उभरैत; एहि कारण संघर्ष आरम्भे सँ सुधारक बनाम रूढ़िवादीक विभाजनमे ढलय लगैत अछि।

दोसर खण्ड : परम्परा, अभिभावक आ पुनर्विवाहक वैधता

दोसर खण्डमे रतनक पुनर्विवाह सम्बन्धी चर्चाक सामाजिक स्वरूप अधिक प्रत्यक्ष भऽ जाइत अछि। सुनीताक बाद परिवारक व्यवस्था, बेटासभक भविष्य आ बुजुर्गक परामर्श एक-दोसरसँ जोड़ल जाइत अछि। विवाह कैं एकमात्र प्रेम-प्रसंग नहि, परिवारक बहुस्तरीय उत्तरदायित्वक निर्णयक रूपमे राखल गेल अछि।

धार्मिक नियति आ मानवीय निर्णयक बीच संवाद रोचक अछि। जन्म, मृत्यु आ विवाहपर नियतिक प्रभावक परम्परागत धारणा कथामे उपस्थित अछि, मुदा पात्रसभ एकसंग व्यवहारिक निर्णय सेहो लैत छथि। एहि दोहरी धारणासँ ग्रामीण समाजक मानसिकता बनैत अछि : अतीतपर भरोसा आ वर्तमानमे परिवर्तनक प्रयत्न।

सुकन्याक वैयक्तिक परिचय आ वैधव्यक सङ्केत एहिमे जुड़ैत अछि। स्त्रीक सामाजिक संकट ओहि पुरुष-समस्याक समकक्ष रखल जाइत अछि जे पहिने सँ कथाक केन्द्रमे छल। एहि संरचनासँ उपन्यास समानुभूतिक भूमि तैयार करैत अछि; ई प्रश्न उठैत अछि जे पुरुषक पुनर्विवाह जँ सम्भव मानल जाइत अछि, तँ स्त्रीक लेल समान संभावना किएक नहि?

तेसर खण्ड : सुकन्याक स्वर आ आत्मपरिचय

तेसर खण्डमे रामदयालजीक मार्फत रतन आ सुकन्याक प्रत्यक्ष परिचयक प्रसंग निर्णायक अछि। रतन अनजान व्यक्तिक रूपमे अपन नाम तुरन्त नहि बतबैत छथि; बातचीतक माध्यमसँ विश्वासक वातावरण निर्मित करैत छथि। सुकन्याक विधवा जीवन, ओकर शिक्षा आ बालक सम्बन्धी जानकारी घटनाक मूल सहानुभूतिपरक आधार बनैत अछि।

सुकन्या स्वयंकेँ केवल अभागिनी अथवा दयाक पात्रक रूपमे प्रस्तुत नहि करैत अछि। ओकर बौद्धिकता, बातचीतक निर्भीकता आ परिस्थिति बुझबाक क्षमता ओकरा सक्रिय पात्र बनबैत अछि। जे स्त्री समाजक कठोर दृष्टिक सामना करैत अछि, ओहि स्त्रीक मुख सँ अनुभव सुनब लेखकीय उपदेशसँ अधिक प्रभावकारी होइत अछि।

एहि खण्डक सीमा ई अछि जे सुकन्याक सम्पूर्ण जीवन-प्रवाह बहुत शीघ्र पुरुष नायकक सम्भावित साहचर्यक सन्दर्भमे पढ़ल जाय लगैत अछि। आत्मनिर्भरता आ विवाहक प्रश्नक बीच अधिक लम्बा स्वायत्त अन्तराल होइत तँ नायिकाक व्यक्तित्व आओर सघन होइत।

चारिम खण्ड : कॉलेज, अपमान आ सहायताक नैतिकता

चारिम खण्ड कॉलेजक घटनासँ सामाजिक अन्तर्विरोध कैँ नव स्तरपर पहुँचबैत अछि। रंजन नामक सम्पन्न आ उद्दण्ड छात्रक दुर्व्यवहार, सुकन्याक ऊपर आरोप, कमलेशक हस्तक्षेप आ शिक्षक–प्रशासनक निर्णयक श्रृंखला ई देखबैत अछि जे स्त्रीक मान-सम्मानक प्रश्न केवल घर वा विवाहक मर्यादामे सीमित नहि अछि।

कमलेशक भूमिका सहयोगी मित्रक अछि। ओ अन्यायपूर्ण आरोपक विरोध करैत अछि आ तथ्य सोझाँ अनबाक चेष्टा करैत अछि। कृतिक एहि खण्डमे शिक्षण-संस्थान स्वयं न्याय-अन्यायक संघर्षस्थल बनि जाइत अछि। यदि कॉलेजक सामाजिक प्रतिष्ठा शक्तिशालीक पक्षमे झुकि जाए, तँ सत्यक रक्षा लेल विद्यार्थीक साहस आवश्यक भऽ सकैत अछि।

> "हम मानव थिकहुँ आ मानवताक रक्षा करब कर्तव्य अछि।" (मूल मुद्रित पृष्ठ 26)

एहि वाक्यमे मानवीय नैतिकताक आधार जाति, पद वा दैहिक आकर्षण नहि, साझा मनुष्यता अछि। मुदा लेखकक प्रतिपक्षी छात्रक चित्रण अपेक्षाकृत सरल अछि; आर्थिक विशेषाधिकार आ हिंसक अधिकारबोधक सामाजिक कारण आओर विकसित होइत तँ रचनाक यथार्थवाद अधिक गहिर होइत।

पाँचम खण्ड : साहचर्य, विवाहक प्रस्ताव आ सहमतिक प्रश्न

पाँचम खण्डमे रतन आ सुकन्याक पुनर्मिलन, विचार-विनिमय आ विवाहक प्रस्ताव स्पष्ट रूपसँ कथानकक केन्द्र बनैत अछि। रतन अपन परिवारक अवस्था, समयक दूरी आ समाजक विरोधक सम्भावना बुझैत छथि। सुकन्या सेहो सजग अछि जे पुनर्विवाहक निर्णय केवल सहानुभूतिसँ नहि, भविष्यक यथार्थ परिस्थितिक सम्यक् विचारसँ लेब आवश्यक अछि।

प्रेम आ सहायता, करुणा आ समानता, आश्रय आ स्वतंत्र निर्णयक बीच ई कृति एकटा महत्त्वपूर्ण द्वन्द्व उपस्थित करैत अछि। सुकन्याक लिये पुनर्विवाहक प्रश्न ओहि प्रकारक नहि जेना अविवाहित युवतीक विवाह : ओकर संतान, अतीतक अनुभव आ सामाजिक छवि सभ निर्णयमे हस्तक्षेप करैत अछि।

लेखक पात्रसभकेँ प्रायः स्पष्ट नैतिक पक्ष चुनबाक दिशा मे आगाँ बढ़बैत छथि। एहि कारण कथाक भावनात्मक ताप प्रबल अछि, तथापि निर्णयक जटिल आर्थिक आ कानूनी पक्षक सम्यक् विस्तार अपेक्षाकृत कम अछि। ई आदर्शवादी सामाजिक उपन्यासक संरचनात्मक प्रवृत्ति थिक।

छठम खण्डक पूर्वार्ध : रिंकी–निर्मल प्रसंग आ स्वतन्त्र चयन

छठम खण्डमे कृति रिंकी आ निर्मलक सम्बन्धक माध्यमसँ अपन केन्द्रीय प्रश्न पुनः अलग परिप्रेक्ष्यमे उपस्थित करैत अछि। बैंकक कामकाजी संसार, परिवारक बुजुर्गक परामर्श, सन्तानक भविष्य आ विवाहसम्बन्धी प्रस्ताव कथामे नव वातावरण रचैत अछि। रतनक जीवनसँ जुड़ल परामर्श आब दोसर गृहस्थक जीवनमे परिवर्तन सम्भव बनयबाक माध्यम बनैत अछि।

रिंकीक पात्र विशेष महत्त्व रखैत अछि। ओ कार्यालयमे कार्यरत, आत्मसम्मानयुक्त आ अपन सामाजिक प्रतिष्ठाप्रति सजग स्त्रीक रूपमे उपस्थित अछि। निर्मलक आकर्षणक प्रसंगमे निर्णयक प्रश्न व्यक्तिगत भावनाक अतिरिक्त परिवार, विवाहक पूर्वबन्धन आ समाजक धारणा तक पहुँचैत अछि।

एहि खण्डक उपलब्धि ई जे व्यक्तिगत सम्बन्धसम्बन्धी निर्णय कैं एकहि घरक समस्या नहि रखि समानान्तर अनुभवक रूपमे देखाओल गेल अछि। एकर सीमा ई जे उपन्यास कैं मूल सुकन्या–रतन कथासूत्रसँ किछु समय हटि बृहत्तर सामाजिक उदाहरण देब पड़ैत अछि।

सातम कथात्मक चरण : सामाजिक बन्धनसँ सार्वजनिक प्रतिरोध धरि

मध्यवर्ती कथा रिंकीक नैतिक अनिश्चितता, निर्मलक परिवारक सहमति आ रघुवंश बाबूक सामाजिक रूढ़िक विरोधक माध्यमसँ विस्तारित होइत अछि। विवाह निजी इच्छा होएबाक बावजूद सामाजिक प्रतिष्ठाक नामपर दण्डात्मक दबाव केना उत्पन्न करैत अछि, एहि पर कथाक बहस तीक्ष्ण होइत अछि।

> “सामाजिक बन्धन, आर किछु नहि।” (मूल मुद्रित पृष्ठ 54)

एहि लघु संवादक शक्ति एहि बातमे अछि जे ‘बंधन’ कैं मानवीय प्रकृतिक नियम नहि, समाजक द्वारा निर्मित आ समयसापेक्ष संस्था मानल गेल अछि। निजी निर्णयक विरुद्ध जनमत तैयार होइत अछि; आरोप, आर्थिक दण्ड, पञ्चायतक धमकी आ सुधारक प्रतिवादक बीच संघर्ष सार्वजनिक होइत अछि।

रघुवंश बाबूक तर्क अछि जे समाजक नियमक प्रतिष्ठा तभी सुसंगत होइत अछि जखन ओ मानवीय हितक रक्षा करय। एहि अर्थमे उपन्यास सामूहिक आन्दोलनक सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि। मुदा सार्वजनिक विरोधक परिणति अपेक्षाकृत शीघ्र बदलैत अछि; बहुसंख्य सामाजिक संस्थामे एहन परिवर्तनक दीर्घकालिक कष्ट-कठिनाईक अधिक चित्रण सम्भव छल।

आठम खण्ड : रतनक रोग, जीवनक क्षणभंगुरता आ परिवारक पुनर्विचार

आठम खण्डमे रतन सेवामुक्तिक बाद घरक भीतर अधिक समय बितबैत छथि। बच्चासभक अपन जीवन अछि, मुदा पिता भीतर सँ अकेलापन अनुभव करैत छथि। रतनक अस्वस्थता जीवनक सीमितताक बोध करबैत अछि। डॉक्टरक परामर्श, परिवारक व्यस्तता आ स्मृतिसँ भिजल मानसिक अवस्था प्रेमक प्रश्न कैं फेर नब अर्थ दैत अछि।

एहि खण्डमे एकटा महत्त्वपूर्ण परिवर्तन अछि : पुनर्विवाह केवल युवा दैहिक आकर्षणक विषय नहि; वृद्धावस्थाक निकट असुरक्षा, सहचरक अभाव आ भावनात्मक देखभालक आवश्यकता सेहो बनैत अछि। लेखक विवाहक मूल प्रश्न कैं जीवनक विविध अवस्थामे पुनः उपस्थित करैत छथि।

परवर्ती प्रसंगमे सुमन आ विशालक सम्बन्ध तथा अपन परिवारक स्वीकृतिक प्रश्न जुड़ैत अछि। नव पीढ़ीक प्रेम आ पुरान पीढ़ीक लाज-प्रतिष्ठाक डरक बीच समानताक कारण मूल कथाविषय फेर दोहराएल जाइत अछि। तुलना उपयोगी अछि, मुदा घटना-विस्तारक दृष्टिसँ कथा कहियो-कहियो बहुत अधिक उदाहरण एकत्र करैत प्रतीत होइत अछि।

नवम खण्ड : सेवकराम, वर्ग आ विवाहक आर्थिक हिंसा

नवम खण्ड चन्द्रपुरक सेवकरामक जीवनक माध्यमसँ उपन्यासक सामाजिक आयाम कैं विवाहक व्यक्तिगत प्रश्नसँ वर्गीय शोषण धरि लऽ जाइत अछि। खेतिहर, मजदूर, धनाढ्य परिवार, ब्याज, श्रमक अवमूल्यन आ ग्रामक शक्तिसम्बन्धी प्रसंग उपन्यासक सामाजिक आलोचनामे नव तीव्रता उत्पन्न करैत अछि।

सेवकराम सन पात्रक जीवन देखबैत अछि जे समाजक मर्यादाक नियम सभ वर्गपर समान बोझ नहि दैत अछि। आर्थिक रूपसँ निर्बल व्यक्तिक विकल्प सीमित रहैत अछि; प्रभावशाली लोक सम्पत्ति आ प्रतिष्ठाक सहारे व्यवहार निर्धारित करैत अछि। एहि स्तरपर 'सुकन्या'क विधवा-विवाह सम्बन्धी विमर्श आर्थिक असमानताक सामाजिक भूमि प्राप्त करैत अछि।

सुमन–विशालक सम्बन्ध आ परिवारक विरोधक प्रसंग ई संकेत करैत अछि जे नूतन पीढ़ी सामाजिक विभाजनक विरुद्ध अपन भावनात्मक निष्ठा स्थापित करबाक प्रयत्न करैत अछि। तथापि संघर्षक समाधानमे बाहरी हस्तक्षेपक भूमिका अधिक होइछ; पात्रक स्वयं संजोएल राजनैतिक क्षमता अधिक देखाओल जा सकैत छल।

दशम खण्ड : सुकन्याक स्वतन्त्र कर्म आ अन्तिम पुनर्स्थापना

अन्तिम खण्डमे सुकन्याक यात्रा, रेलयात्रिणी चमेलीसँ परिचय, सामाजिक सहायता आ सेवकरामक परिवारसँ जुड़ल घटनासभ एकत्र होइत अछि। सुकन्या आब केवल अपन वैधव्यक पीड़ा भोगयवाली स्त्री नहि, बल्कि दोसरक संकटमे सहायता करबाक सामर्थ्य राखयवाली सामाजिक कार्यकर्त्रीक रूपमे देखल जाइत अछि।

चमेली आ सामाजिक कल्याणक कार्यसँ सम्बन्धित प्रसंग उपन्यासक नारी-पात्रसभ कैं आपसी सहायताक नब संसार दैत अछि। स्त्रीक सुरक्षा केवल पुरुषक उदारतापर आश्रित नहि; स्त्री-स्त्रीक सहकार, जनजागरण आ संस्थागत हस्तक्षेप सेहो सम्भव अछि। ई बिन्दु कृतिक नारीवादी अर्थक लेल विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

अन्ततः सेवकरामक प्रकरणमे प्रभावशाली लोकक हस्तक्षेप, प्रशासनक सक्रियता आ ग्रामीण सार्वजनिक सहमतिक परिवर्तनक बाद रतन आ सुकन्याक पुनर्विवाहक स्थिति बनैत अछि। रामदयालजीक स्नेह, पारिवारिक स्वीकार आ पुरान दू परिवारक नब गठनक दृश्य कथाक समाधान प्रस्तुत करैत अछि।

अन्तिम परिणति एकटा आत्मीय आशा दैत अछि; मुदा समाजव्यापी रूढ़ि-परिवर्तनक तुलना मे व्यक्तिगत सफल विवाहक संकेत अधिक सघन अछि। पाठकक मनमे ई प्रश्न बचि रहैत अछि जे एहन सहायता-विहीन विधवा अथवा आर्थिक रूपसँ निर्बल व्यक्ति केना अपन अधिकार प्राप्त करत? ई असमाप्त प्रश्न कृतिक साहित्यिक प्रासंगिकता समाप्त नहि करैत, बल्कि ओकर आलोचनात्मक अर्थ कैं व्यापक बनबैत अछि।

मुख्य पात्रसभक मनोवैज्ञानिक आ सामाजिक विवेचन

सुकन्या : करुणाक पात्रसँ कर्मशील व्यक्तित्व

उपन्यासक शीर्षक सुकन्या कैं केन्द्रीयता दैत अछि। ओकर जीवनमे वैधव्यक कष्ट, सामाजिक दृष्टिक अविश्वास, शिक्षाक साहस, छात्रजीवनक संघर्ष, दोस्तीक विश्वसनीयता, मातृत्वक उत्तरदायित्व आ परवर्ती सामाजिक सेवाक पक्ष जुड़ैत अछि। एतय नायिका

केवल विवाहयोग्य स्त्रीक रूपमे पूर्ण नहि होइत; ओ अपन जीवनमे दूसराक जीवन सुधारबाक क्षमता सेहो अर्जित करैत अछि।

सुकन्याक स्वतन्त्रताक रूप कथा भीतर समान गति सँ विकसित नहि होइत अछि। कतहु ओ अपन स्पष्ट वाणीमे प्रतिरोध करैत अछि, कतहु रतन, कमलेश वा अन्य सहायक व्यक्तिक नैतिक आश्वासनपर निर्भर रहैत अछि। ई निर्भरता समकालीन सामाजिक स्थितिक यथार्थ पक्ष सेहो भऽ सकैत अछि; तथापि कृतिक स्त्री-मुक्तिक आदर्शसँ ओकर आलोचनात्मक दूरी मापब आवश्यक अछि।

शीर्षकक नायिका कैं अन्तिम रूपमे 'पत्नी'क पहचानक संग स्वीकार कयल जाइत अछि; प्रश्न ई अछि जे ओकर सामाजिक कार्य आ शिक्षित व्यक्तित्वक स्वतन्त्र अस्तित्व विवाहक बादो सुरक्षित रहत कि नहि। उपन्यास एहि भविष्यक प्रश्नक विस्तार नहि करैत अछि। ई चुप्पी एगो अर्थपूर्ण आलोचनात्मक रिक्ति अछि।

रतन : स्मृति, उत्तरदायित्व आ पुनःसाहचर्यक आकांक्षा

रतनक जीवन प्रारम्भिक वैधव्यक कारण शोक आ कर्तव्यक तनावमे अछि। बचपनसँ व्यक्तिक परिवारक परिधि भीतर रहल पुरुषक लेल पुत्रसभक भावनात्मक आवश्यकता पूर्ण केलाक बाद स्वकीय एकान्तक स्वीकार कठिन अछि। ओ अपन मृत पत्नी सुनीताक स्मृति कैं सम्मान दैत छथि; दोसर विवाह कैं अतीतक नकार मानबाक भय हुनका बारम्बार रोकैत अछि।

रतन मे सहानुभूतिसँ प्रेरित आदर्शवाद अछि। ओ सुकन्याक शिक्षा, प्रतिभा आ परिस्थिति सँ प्रभावित होइत छथि। मुदा हुनक परामर्श सुनबाक प्रवृत्ति, समाजसँ असहमत होइतहुँ सार्वजनिक विवाद टारबाक चाह आ कतेको स्थगित निर्णय हुनका सर्वशक्तिमान नायक नहि बनबैत। एहि मानवीय दुविधाक कारण रतनक चरित्र औपन्यासिक ऊर्जा प्राप्त करैत अछि।

सुनीता : अनुपस्थित रहितहुँ सक्रिय स्मृति

मृत पत्नी सुनीता आरम्भिक घटनासभमे सशरीर उपस्थित नहि छथि, मुदा रतनक स्मृतिमे हुनक प्रभाव स्थायी अछि। सुनीता अतीतक भावात्मक विश्वासक प्रतिनिधित्व करैत छथि। रतनक नब सम्बन्धक सम्भावना पुरान सम्बन्धक निष्ठाक प्रश्न उठबैत अछि। एहि अर्थमे अनुपस्थित पात्र सेहो कथानकक नैतिक संरचनामे सक्रिय अछि।

कमलेश, रंजन आ शिक्षक-व्यवस्था

कमलेश सुकन्याक संकटमे साथी, प्रतिरोधकर्ता आ न्यायोन्मुख युवा चेतनाक स्वर अछि। रंजनक दुर्व्यवहार सामाजिक विशेषाधिकारक दुरुपयोग देखबैत अछि। कॉलेजक प्राचार्य आ शिक्षकवर्गक हस्तक्षेपसँ शिक्षा-व्यवस्थाक उत्तरदायित्वक प्रश्न उपस्थित होइत अछि। कमलेशक चरित्र सहयोगक आदर्श बनैत अछि; रंजनक चरित्र किछु अधिक नकारात्मक सरलीकरणक शिकार अछि।

रिंकी आ निर्मल : कामकाजी मध्यवर्गक दुविधा

रिंकीक कार्यालयक परिचय, ओकर परिवार आ निर्मलक भावनात्मक आग्रह शहरी-मध्यवर्गीय सामाजिक परिसर प्रस्तुत करैत अछि। एहिमे स्त्री नौकरी करैत अछि, किन्तु विवाहक निर्णयपर पारिवारिक अपेक्षा आ सामाजिक प्रतिष्ठाक नियन्त्रण कायम अछि। रिंकीक व्यक्तिगत आकांक्षा आ सामुदायिक मानदण्डक संघर्ष उपन्यासक नव पीढ़ीक समस्या देखबैत अछि।

रघुवंश बाबू आ सामाजिक पंचायत

रघुवंश बाबू रूढ़िक समक्ष सार्वजनिक तर्क प्रस्तुत करबाक भूमिका निर्वाह करैत छथि। ओ ई स्थापित करय चाहैत छथि जे समाजक सुधार भीतरहिसँ सम्भव अछि। पञ्चायतक अन्यायी निर्देशक विरोधमे हुनक हस्तक्षेप नागरिक साहसक महत्त्व उजागर करैत अछि। मुदा त्वरित सामूहिक सहमति आदर्शवादी समाधानक लक्षण अछि।

सेवकराम, विशाल, सुमन आ चमेली

एहि परवर्ती पात्रसभक माध्यमसँ कथा पुनर्विवाहक निजी प्रश्न छोड़ि गरीबक जीवन, शिक्षा, प्रेम, सार्वजनिक सम्मान आ सामाजिक सहयोगक व्यापक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। सेवकराम वर्गीय शोषणक अनुभवी पात्र छथि; विशाल–सुमन नव पीढ़ीक भावनात्मक पक्षक प्रतिनिधि; चमेली नारीक आपसी सम्बन्ध आ सहायताक सम्भावनाक वाहक अछि। एहि पात्रसभक स्वतन्त्र कथात्मक विस्तार सीमित अछि, मुदा सामूहिक प्रभावमे ओ सुधारक उपन्यासक सामाजिक फलक बढ़बैत अछि।

नारी-दृष्टि, वैधव्य आ स्वतन्त्र इच्छाक अधिकार

'सुकन्या'क नारी-विमर्शक केन्द्र विधवा कैँ पुनः दाम्पत्य-जीवन स्वीकार करबाक नैतिक आ सामाजिक अधिकार देब अछि। परम्परागत समाजमे वैधव्य कैँ स्त्रीक पहिचानक स्थायी निषेधक रूपमे देखल जाइत रहल अछि। कृति एहि निषेधक विरुद्ध स्त्रीक शिक्षित जीवन, सामाजिक उपयोगिता आ प्रेमसँ जुड़ल पुनर्स्थापनाक दावा उपस्थित करैत अछि।

एहि दृष्टिकोणक दू स्तर अछि। पहिल, स्त्रीपर थोपाल गेल लोकलाज आ विवाह-निषेधक प्रत्यक्ष विरोध। दोसर, समाजक भीतर मानवीय समर्थनक नब सम्बन्ध बनयबाक प्रयत्न। सुकन्याक शिक्षा, कमलेशक मित्रता, रिंकीक कार्यालयजीवन आ चमेलीक सहयोगी भूमिका एही दोसर स्तरक सामग्री अछि।

मुदा यदि स्त्रीक गरिमा कैँ केवल पुनर्विवाह प्राप्त कयलाक सफलता सँ नापल जाए, तँ अविवाहित, एकल अथवा विवाह नहि करय चाहयवाली स्त्रीक वैध जीवनक प्रश्न अनदेखल रहि जाइत अछि। उपन्यास स्वयं एहन समस्त विकल्पक विस्तृत विवेचना नहि करैत अछि। एहि कारण एकरा स्त्री-अधिकारक सम्पूर्ण दर्शन नहि, सुधारवादी संक्रमणक एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव मानब अधिक सुसंगत अछि।

रतनक नैतिक उदारता महत्त्वपूर्ण होइतहुँ स्त्रीक मुक्ति कैँ 'उदार पुरुष भेटब' धरि सीमित कयल जाए तँ संरचनात्मक परिवर्तन अधूरा रहि जाइत अछि। एहि प्रश्नक सन्दर्भमे

उपन्यासक उत्तरार्धमे सार्वजनिक संगठन, पंचायतक विरोध आ प्रशासनिक हस्तक्षेपक चित्रण विशेष मूल्यवान अछि।

पितृसत्ता, लोकमत आ सुधारक आदर्शवाद

उपन्यास लोकलाजक भाषा कैं बारम्बार प्रश्नांकित करैत अछि। "लोक की कहत" सन शंका वैयक्तिक निर्णयपर समाजक अप्रत्यक्ष शासन स्थापित करैत अछि। ग्रामीण प्रतिष्ठा-व्यवस्थामे विवाह केवल दू व्यक्तिक सम्बन्ध नहि, कुलक मान-अपमान आ जातीय स्थिति सँ जोड़ल जायब स्वाभाविक मानल जाइत अछि। लेखक एहि स्वाभाविक मानल गेल तर्क पर संशय उत्पन्न करैत छथि।

कृतिक सुधारवादी चेतना रघुवंश बाबू, कमलेश, रामदयालजी आ सुकन्याक आचरणमे अलग-अलग रूप धारण करैत अछि। ई पात्र परम्पराक सर्वथा उन्मूलनक दावा नहि करैत छथि; ओ परम्परामे मानवीय मूल्यक पुनर्स्थापना चाहैत छथि। तें कृति विद्रोही राजनीतिक घोषणापत्र नहि, बल्कि समाज भीतरसँ बदलावक नैतिक उपन्यास अछि।

एहि रचनाशैलीक शक्ति पाठकक भावनात्मक सहभागिता अछि। सामाजिक परिवर्तन व्यक्तिगत उदारता, सार्वजनिक सहमति आ न्यायसंगत व्यवहारसँ सम्भव देखाओल जाइत अछि। सीमा ई अछि जे सत्ता आ सामाजिक विभाजनक दीर्घकालिक विरोध कतहु शीघ्र समाप्त भऽ जाइत अछि। जमीनी स्तरपर गहीर रूपमे जड़ जमौने असमानता नायकक भाषण वा एकाधिक शुभचिन्तकक हस्तक्षेपसँ सर्वदा नहि बदलैत।

कथा-शिल्प : बहुसूत्रता, संयोग आ समाधान

प्रसंगविस्तार 'सुकन्या'क प्रमुख शिल्पगत विशेषता अछि। रतनक निजी स्मृति, सुकन्याक कॉलेजजीवन, रिंकी–निर्मलक विवाह-विवाद, ग्रामपंचायतक सार्वजनिक संघर्ष, सेवकरामक वर्गीय संकट आ अन्तिम सामाजिक सहायता सभ एकहि सुधारवादी धुरीसँ जोड़ल गेल अछि। विषयगत एकसूत्रता मजबूत अछि, किन्तु घटनाक सूत्र-कौशल बराबर सफल नहि।

अनेक पात्रक अप्रत्याशित परिचय आ अनुकूल समयपर सामाजिक सहायताक प्राप्ति कथामे संयोगक भूमिका बढ़बैत अछि। उपन्यासक दार्शनिक लक्ष्य अर्थात् मानवीय शुभेच्छाक विजयक लेल ई संयोग उपयोगी अछि, मुदा मनोवैज्ञानिक यथार्थवादक दृष्टिसँ संयोगक अतिरिक्त प्रयोग स्वाभाविकता कम करैत अछि।

वर्णनकर्ताक स्वर अनेक अवसरपर मूल्यनिर्णय प्रस्तुत करैत अछि। पाठक केँ सामाजिक कुरीतिक अनिष्ट आ उदार व्यक्तिक श्रेष्ठता स्पष्ट कहि देल जाइत अछि। ई शिल्प उपदेशात्मक गद्यक निकट अछि। जबकि सुकन्या, रिंकी आ रतनक कतेको प्रत्यक्ष संवाद एहन अछि जाहिमे नैतिक द्वन्द्व स्वयं क्रिया-वाणी सँ खुलि पड़ैत अछि। ई संवादप्रधान स्थान कृतिक अधिक जीवन्त अंश अछि।

अन्तिम अध्यायमे अनेक पक्ष एकसंग निष्पत्तिक दिस बढ़ैत अछि। कुल-परिवारक सहमति, पुलिस-प्रशासनक हस्तक्षेप, जनमतक परिवर्तन आ पुनर्विवाहक सफलता कथा केँ सकारात्मक परिणति दैत अछि; तथापि एहि सभक बीच अधिक समयान्तर आ आन्तरिक अनिश्चितता होइत तँ कथानकक परिणाम अधिक अर्जित आ विश्वसनीय लागित।

भाषा, संवाद आ स्थानिक अनुभव

लेखकक मैथिली गद्य संवादक सहज प्रवाहपर आधारित अछि। “की”, “किएक”, “एहन”, “अहाँ”, “बाबूजी”, “बजलाह” सन प्रयोग पात्रक सामाजिक आत्मीयता स्थापित करैत अछि। घरेलू भाषासँ आरम्भ भऽ कृति कॉलेजक संस्थागत भाषा, बैंकक व्यावसायिक शब्दावली आ ग्रामसभाक सामुदायिक रजिस्टर धरि पहुँचैत अछि। एहि बहुस्तरीय भाषिक व्यवहारसँ सामाजिक परिवेशक विस्तार अनुभव होइत अछि।

तथापि अलग-अलग पात्रक संवाद सदा पूर्णतः पृथक भाषिक व्यक्तित्व रचि नहि पबैत अछि। सुधारवादी पात्रसभक वाणी कएक स्थानपर लेखकक सार्वजनिक विचार व्यक्त करबाक माध्यम बनि जाइत अछि। जँ प्रत्येक पात्रक उमेर, शिक्षा, सामाजिक वर्ग आ

भौगोलिक अनुभवक अन्तर भाषा भीतर अधिक उभरितय, तँ व्यक्तित्व अधिक विश्वसनीय बनितय।

कथामे उद्यान, कॉलेज, गाम, नगर, बैंक, रेलयात्रा आ विवाहक पारिवारिक स्थल विविध सामाजिक जगत बनबैत अछि। मुदा वर्णनक मुख्य प्रयोजन कथाविकास अछि; मिथिलाक प्रकृति, स्थानीय ध्वनि, बोलीक सूक्ष्म विभेद, कृषि-जीवनक तपशील आ क्षेत्रविशिष्ट रूपकक गहन विस्तार अपेक्षाकृत कम अछि। एहि कारण कृति विषयदृष्टिसँ मैथिली समाजमे गाड़ल अछि, मुदा आँचलिक दृश्यात्मकताक स्तरपर आओर समृद्धि सम्भव छल।

मैथिली उपन्यासक इतिहासमे 'सुकन्या' : तुलनात्मक विवेचन

'कन्यादान' सँ तुलना : स्त्री-शिक्षा आ विवाह-संस्था

हरिमोहन झाक 'कन्यादान' (पुस्तकाकार प्रकाशन १९३३) मैथिली उपन्यासक सामाजिक आलोचनामे स्त्री-शिक्षा, बेमेल विवाह आ परम्परा-विरोधक उल्लेखनीय पाठ मानल जाइत अछि। 'सुकन्या'क संग ओकर साम्य विवाह-संस्थाक भीतर स्त्रीक स्थितिक प्रश्न अछि। मुदा 'कन्यादान'क हास्य-व्यंग्यक प्रखरता आ 'सुकन्या'क करुणा-प्रधान, समाधानोन्मुख शैली अलग अछि। एकठाम विवाह पूर्व किशोरीक शिक्षा आ बेमेल गठजोड़क प्रश्न प्रधान अछि; दोसर ठाम विवाहोत्तर स्त्रीक जीवनकेँ फेर अवसर देबाक प्रश्न। एहि अर्थमे विषयगत निरन्तरता अछि, शिल्पगत एकरूपता नहि।

'पारो' सँ तुलना : स्त्रीक पीड़ा आ सामाजिक संरचना

बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (नागार्जुन)क 'पारो' (१९४६) बेमेल विवाह आ स्त्रीपर थोपाल सामाजिक व्यवस्थाक त्रासदीक आलोचनात्मक उदाहरण अछि। 'पारो'मे स्त्रीक जीवनपर नियन्त्रणक विनाशकारी पक्ष कठोर रूपेँ उभरैत अछि; 'सुकन्या'मे लेखक परिवर्तनक सम्भावना आ मानवीय सहायताक आशावादी दृश्य प्रस्तुत करैत छथि। एहि कारण दुनू कृति नारीक अनुभवक भिन्न कथात्मक परिणतिक प्रतिनिधित्व करैत अछि। 'पारो'क मूल

पाठक बिना सूक्ष्म संवाद-स्तरीय समानता घोषित करब उचित नहि; एतय तुलनाक आधार व्यापक विषयगत सादृश्य मात्र अछि।

लेखकक ‘गुदड़ीक लाल’ आ ‘स्वर्ण-कमल’ सँ अन्तःकृतिक सन्दर्भ

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क अन्य कृति ‘गुदड़ीक लाल’मे निम्नवर्गीय जीवन, सामाजिक अन्याय आ सम्मानक प्रश्न प्रमुख रूपेँ उभरैत अछि। ‘सुकन्या’मे एहि प्रकारक नैतिक सरोकार विवाह-संस्था, नारीक स्थिति आ सामाजिक प्रतिष्ठाक विमर्श बनि जाइत अछि। ‘स्वर्ण-कमल’ बाल-आख्यानक साहस, मार्गदर्शन आ नैतिक विजयक क्षेत्रमे अलग विधागत प्रयोग अछि। एहि तीनू कृतिक बीच स्पष्ट विधागत अन्तर राखि लेखकक सामाजिक न्यायप्रति रुचिक पुनरावृत्ति चिन्हित कयल जा सकैत अछि। ई तुलनात्मक टिप्पणी पात्र अथवा कथानकक प्रत्यक्ष अन्तःपाठीय निर्भरता सिद्ध नहि करैत अछि।

सुधारवादी उपन्यासक परम्परा आ उत्तरवर्ती सन्दर्भ

मैथिली उपन्यासक विकासमे सामाजिक रूढ़ि, स्त्री-शिक्षा, विवाह, जाति, शोषण आ बदलैत सामुदायिक जीवनक प्रश्न अलग-अलग समयमे उठैत रहल अछि। ‘सुकन्या’क विशिष्टता ई जे ओ इक्कीसम शताब्दीक कामकाजी मध्यवर्ग आ स्थानीय पारिवारिक संस्कारक सह-अस्तित्व देखबैत अछि। बैंकक कार्यालय आ सार्वजनिक पञ्चायत एकहि उपन्यासमे आबि स्त्रीक चुनावपर पुरान आ नव दबावक संयुक्त दृश्य रचैत अछि।

उपन्यास ऐतिहासिक परम्परासँ सम्पर्क राखैत अछि, मुदा सभ समकालीन नारीवादी बहसक व्यवस्थित उत्तर नहि दैत अछि। स्त्रीक स्वतन्त्रता आ विवाहक सामाजिक स्वीकृतिक मध्य तनाव एकरा अध्ययनयोग्य बनबैत अछि।

कृतिक प्रमुख साहित्यिक उपलब्धिसभ

प्रथम, विधवा-पुनर्विवाहक सामाजिक असमानता केँ निजी आ सामूहिक अनुभवक माध्यमसँ उपस्थित करब उपन्यासक केन्द्रीय उपलब्धि अछि। केवल कथोपदेश नहि, रतन

आ सुकन्याक दुविधा, रिंकी–निर्मलक विवाद आ ग्रामपंचायतक दबाव एही समस्या कैं बहुस्तरीय बनबैत अछि।

द्वितीय, शिक्षा आ स्वाभिमानक महत्त्व नायिकाक संघर्षमे देखाओल गेल अछि। सुकन्याक कॉलेजक जीवन आ अन्यायपूर्ण आरोपक प्रतिरोधक प्रसंग स्त्रीक व्यक्तित्व कैं पुनर्विवाहक प्रस्तावसँ अलग मानवीय आधार प्रदान करैत अछि।

तृतीय, मानवीय सहकारक आदर्श कथाक भीतर अनेक स्तरपर उपस्थित अछि। शिक्षक, सहपाठी, बुजुर्ग, परिवार आ प्रशासन समान नैतिक दिशामे सक्रिय भऽ सकैत अछि। एहि कारण कृति आशाक सामाजिक कल्पना प्रस्तुत करैत अछि।

चतुर्थ, आधुनिक कार्यालय आ पारम्परिक ग्रामक समांतर संरचना समकालीन परिवर्तनक द्वैध गति देखबैत अछि। रोजगार अथवा शिक्षा अपनेआप सामाजिक कुरीति समाप्त नहि करैत; कतेको उच्चशिक्षित पात्र सेहो लोकमतक दबावसँ ग्रस्त अछि।

पञ्चम, अन्तिम प्रसंगमे नायिकाक दूसराक सहायता करबाक क्षमता ओकरा केवल दुःख झेलयवाली नारीक सीमित प्रतिमासँ बाहर निकालैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा आ अपूर्ण सम्भावना

कृतिक मुख्य सीमा नैतिक पक्षसभक अपेक्षाकृत स्पष्ट विभाजन अछि। उदार पात्र जल्दहि न्यायसंगत तर्क प्रस्तुत करैत छथि आ रूढ़िवादी पक्ष कएक बेर विरोधक प्रतिनिधि मात्र बनि रहैत अछि। वास्तविक समाजमे व्यक्तिक स्वार्थ, भय, आर्थिक विवशता आ सामूहिक सम्मानक धारणा अधिक परस्परविरोधी होइत अछि।

दोसरी सीमा कथासूत्रक अतिविस्तार अछि। सुकन्याक आत्मपरिवर्तनक गम्भीर मनोवैज्ञानिक अनुसरणक बीच विभिन्न सामाजिक उदाहरण अबैत अछि। ई उपन्यास कैं व्यापक बनबैत अछि, मुदा शीर्षक-पात्रक अन्तर्मनक निरन्तरता किछु कम करैत अछि।

तेसरी सीमा समाधानक तीव्रता अछि। जटिल सामाजिक संस्थासँ जुड़ल समस्या अनेक स्थानपर विवेकशील व्यक्ति अथवा जनमतक एकाएक परिवर्तनसँ निपटि जाइत अछि।

साहित्यिक आशावाद जरूरी अछि, मुदा संघर्षक दीर्घता देखाओल जाए तँ कथाक सामाजिक विश्वसनीयता बढ़ैत अछि।

चारिम सीमा ई जे पुनर्विवाहक सफलता कैँ नारी-मुक्तिक अन्तिम चिह्न मानबाक जोखिम अछि। शिक्षा, आर्थिक सुरक्षा, सम्पत्तिक अधिकार, वैवाहिक सहमति आ विवाहक बाद निर्णयक स्वायत्तता पर अधिक विस्तृत विमर्श कृति कैँ अधिक समकालीन नारीवादी गहराइ दैत।

पाँचम, भाषिक सम्पादनक दृष्टिसँ कतिपय संवादक पुनरावृत्ति, लम्बा आशय-वर्णन आ पात्रसभक एकसमान सुधारवादी वाणी कैँ चुस्त करबाक सम्भावना अछि। तथापि एहि टिप्पणीक अर्थ रचनाक मैथिली बोलचाल हटेनाइ नहि; उलटे ओकर स्थानीय विशेषता अधिक सुरक्षित करब अछि।

छठम, क्रमांकनक एकटा सम्पादकीय विसंगति ध्यानाकर्षक अछि : मुद्रित कथापाठमे ६क पश्चात ८ शीर्षक अबैत अछि। आगामी प्रकाशनमे एहि खण्ड-विभाजनक पुनः परीक्षण उपयोगी होयत। ई पाठ-सम्पादकीय प्रश्न अछि, कथानकक स्वतः दोष नहि।

उपसंहार : सुकन्याक पुनर्विवाहसँ आगाँ

'सुकन्या' कैँ केवल सुखान्त विवाहक कथा मानि पढ़ब ओकर व्यापक आशयक संकुचन होयत। मूल प्रश्न अछि व्यक्ति अपन जीवनक निर्णायक चुनाव पर कतेक अधिकार रखैत अछि, आ समाज ओहि अधिकारक मित्र बनैत अछि कि बाधक। रतनक वैधव्य आ सुकन्याक अनुभव मिलि ई प्रश्न स्त्री-पुरुष दूनू लेल प्रासंगिक करैत अछि, मुदा सामाजिक जोखिम स्त्रीपर बेसी पड़ैत अछि; कृति एही असमानता कैँ प्रत्यक्ष करैत अछि।

कथाक बल ओकरा केन्द्रमे उपस्थित मानवीय विश्वास, शैक्षिक साहस, व्यक्तिगत करुणा, सार्वजनिक सहकार आ पुनः परिवार रचबाक आशापर अछि। एकर सीमा आदर्शवादी समाधान, खल-विरोधक सरलीकरण आ कथानकक अनेकार्थी विस्तारमे अछि।

तथापि उपन्यास मैथिली सामाजिक कथासाहित्यमे वैधव्यक बाद सम्मानजनक नव जीवनक सम्भावना कैँ एकटा समर्थ नैतिक विषय बनबैत अछि।

आलोचनात्मक निष्कर्ष ई जे सुकन्याक उपलब्धि केवल रतनसँ पुनर्विवाह नहि, बल्कि एहन स्त्रीक रूपमे मान्यता प्राप्त केनाइ अछि जे शिक्षा, सहमति, अनुभव आ सेवा द्वारा अपन सामाजिक स्थान नव रूपमे अर्जित करैत अछि। ओकर जीवनक प्रश्न पाठकक समक्ष एतय समाप्त नहि होइत; ओ आगाँ ई सेहो पूछैत अछि जे समाज प्रत्येक स्त्री कैँ, विवाह करू अथवा नहि करू, समान गरिमा आ स्वतन्त्र जीवनक अवसर केना देत। एहि खुलल प्रश्नमे उपन्यासक स्थायी प्रासंगिकता सुरक्षित अछि।

अध्याय ७

परिवार

संयुक्त परिवारक स्मृति, विघटन आ पुनर्निर्माण

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘परिवार’क विस्तृत साहित्यिक आलोचना, पृथक पाठविश्लेषण आ मैथिली बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक विवेचन

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘परिवार’ (२०२१) अपन प्रकाशकीय परिचयमे संस्मरणात्मक उपन्यास अछि। एकर कथा-केन्द्र नरेन्द्र नामक एहन पात्र छथि जे संयुक्त परिवारक विघटन, शिक्षा-संस्थानक अनुभव, उत्तराधिकार आ स्वार्थक संघर्ष, संगीत-नाट्यक सहायतासँ सामाजिक सम्पर्क, प्रेम-विवाहक प्रश्न आ गामक सार्वजनिक जीवनक पुनर्रचनाकेँ आपसँ जोड़ैत छथि। एहि आलेखक मुख्य प्रतिपादन ई अछि जे उपन्यासमे ‘परिवार’ केवल रक्तसम्बन्धक संस्था नहि, प्रत्युत देखभाल, सहभागिता, स्मृति, आर्थिक विवेक आ सामाजिक उत्तरदायित्वसँ बनैत नैतिक समुदाय थिक। तथापि रचनाक आदर्शवादी समाधान, नायकक सर्वसमाधानकारी उपस्थिति, महिला-पात्रक सीमित स्वायत्तता आ आर्थिक-सत्तात्मक जटिलताक अपेक्षाकृत सहज निराकरण आलोचनाक विषय बनैत अछि। मुद्रित पाठक आरम्भ, मध्य आ अन्तक पृथक विश्लेषणक संग परिशिष्टक वंशावली-सामग्रीकेँ सामाजिक-स्मृति रूपेँ पढ़ल गेल अछि। विदेहक पोथी-सूची, गद्य-सूची आ शिशु-उत्सव अभिलेखक आधारपर मैथिली बाल-साहित्यक चित्रकथा, बाल-उपन्यास आ डिजिटल प्रसारक सांकेतिक विकास-रेखा बनाओल गेल अछि; मुदा ‘परिवार’केँ बाल-उपन्यास घोषित नहि कएल गेल अछि।

प्रस्तावना : परिवार शीर्षकक अर्थ-क्षेत्र

‘परिवार’ शब्द एकहि बेर मे रहबाक भौतिक व्यवस्था, नातेदारीक सम्बन्ध, परस्पर श्रम-वितरण, सम्पत्तिक साझा प्रबन्ध आ भावनात्मक आश्रयकेँ सूचित करैत अछि। संयुक्त

परिवार पर साहित्य लिखैत काल लेखककेँ ई सभ स्तर एक संग पकड़य पड़ैत छनि। नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’ एहि कठिनाइकेँ नरेन्द्रक जीवनानुभव आ गामक अनेक प्रसंगक सहारे कथात्मक रूप दैत छथि। कथा अपन आरम्भमे एकटा सेवानिवृत्त व्यक्तिक गाम-प्रत्यावर्तनसँ आगाँ बढ़ैत अछि; बादमे ओकर अतीतक पारिवारिक अनुशासन, शैक्षिक यात्रा, वैमनस्य आ समाज-सेवा क्रमशः खुलैत जाइत अछि। अन्तमे परिवारक अर्थ फेर केवल वंशपरम्परा धरि सीमित नहि रहैत अछि।

एहि अध्ययनमे पोथीकेँ सामाजिक आदर्शक प्रत्यक्ष प्रतिलिपि मानि प्रशंसा करब पर्याप्त नहि होयत। कथाकार जे समाधान प्रस्तुत करैत छथि तकर शिल्पगत विश्वसनीयता, पाठकीय प्रभाव आ विचारधारात्मक परिणाम सेहो जाँचब आवश्यक अछि। ‘परिवार’क सर्वोत्तम पक्ष ओकर निकट-सम्बन्धसभकेँ गामक सार्वजनिक क्रियाकलापसँ जोड़बाक संकल्प अछि; ओकर मुख्य सीमा ई जे संघर्षक बहुत रास कारककेँ नरेन्द्रक व्यक्तिगत विवेकक भरोसापर शान्त करबाक प्रवृत्ति रहैत अछि।

कृतिपरिचय आ संस्मरणात्मक स्वरूप

आधार-पाठ ‘परिवार’क प्रथम संस्करण (२०२१) अछि। प्रकाशकक नाम गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, जिला दरभंगा छपल अछि; मुद्रक प्रिंटवेल, टावर, दरभंगा देल गेल अछि आ सहयोग राशि १०० टाका अंकित अछि। मुखपृष्ठ आ भीतरक शीर्षक दूनू पर उपशीर्षक ‘संस्मरणात्मक उपन्यास’ स्पष्ट अछि। एहि विधागत नामकरणक संग लेखकक ‘दू शब्द’ आ मुरलीधर झाक ‘भूमिका’ पढ़ला पर रचनाक निज अभिप्रायक दू अलग स्तर भेटैत अछि: लेखक वास्तविक अनुभूतिक दाबी करैत छथि, भूमिका उपन्यासक सामाजिक आदर्श आ चरित्र-व्यवहारकेँ रेखांकित करैत अछि।

साक्ष्यक तीन स्तर राखल गेल अछि: प्रथम, स्वयं मुद्रित पुस्तकक कथ्य आ पाठ; द्वितीय, पोथीक पूर्वपीठिका, लेखक-वचन आ अन्तक वंशावली; तृतीय, विदेहपर उपलब्ध पुस्तक-सूची आ बाल-साहित्यक अभिलेख। उद्धरणक पृष्ठ-संख्या मूल मुद्रित पृष्ठक अछि। जतेक शब्द-समूहक अक्षर-विन्यास स्पष्ट रूपसँ मिलैत अछि, केवल ततेककेँ उद्धरण-चिह्नमे

राखल गेल अछि; शेष विवेचन पाठ-सार आ व्याख्या रूपमे प्रस्तुत अछि। विदेहक सूचीमे दर्ज अन्य कृतिक सन्दर्भ मुख्यत: विधा, शीर्षक आ अभिलेखीय उपस्थिति धरि सीमित अछि; ओकर अप्रत्यक्ष पाठकेँ प्रत्यक्ष पढ़ल घोषित नहि कएल गेल अछि।

भूमिका आ 'दू शब्द' : उपन्यासक आत्मघोषणा

मुरलीधर झा लिखित 'भूमिका' उपन्यासकेँ नरेन्द्रक जीवन-संघर्षक उदाहरण मानैत अछि। ओ बाल्यावस्थाक अभाव, शिक्षा-अर्जन, गुरुजीसँ सम्बन्ध, प्रेम-प्रसंग, गामक आयोजन आ सामाजिक हितमे कर्मक क्रमकेँ रेखांकित करैत छथि। भूमिका अपन पाठककेँ पहिनहि संकेत दैत अछि जे नरेन्द्र केवल भोगल दुखक कथावाचक नहि, परिस्थिति बदलबाक चेष्टामे सक्रिय पात्र छथि। एहि पूर्वभूमिकाक प्रशंसात्मक मूल्यांकन आ उपन्यासक स्वतन्त्र कलात्मक उपलब्धिक बीच भेद राखब जरूरी अछि; भूमिका आलोचनाक निष्कर्षक विकल्प नहि थिक।

लेखकक 'दू शब्द'मे विधागत दाबी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। ओ कथा-सामग्रीकेँ अनुभवसँ जोड़ैत छथि, मुदा पात्र आ स्थान बदलल गेल होयबाक सूचना सेहो दैत छथि। ई अन्तर स्मृतिलेखन आ कथा-रचनाक सीमा पर स्थित अछि।

> "'परिवार' पोथी एकटा संस्मरणात्मक उपन्यास थिक, जे विशुद्ध सत्य घटना पर आधारित अछि।" (मुद्रित पृ. 7)

'विशुद्ध सत्य घटना' कहबाक दाबी आ 'काल्पनिक' नामकरणक सहअस्तित्व वास्तवमे रचनाक रचनाशास्त्रीय तनाव अछि। ई पाठकसँ दस्तावेजक जकाँ विश्वास माँगैत अछि, मुदा पात्रक संवाद, संयोग आ घटनाक चयन उपन्यासक रचनात्मक स्वतन्त्रताक अन्तर्गत रहैत अछि। आलोचनाक लेल तर्कसंगत स्थिति ई थिक जे पुस्तकमे कएल सत्य-दाबी लेखकक आत्मघोषणा अछि; प्रत्येक घटना स्वतन्त्र रूपेँ प्रमाणित इतिहास नहि। लेखकक एहि सावधानीकेँ रहस्यमयता अथवा असत्यक आरोप बना देब उचित नहि होयत।

‘दू शब्द’मे नरेन्द्रक स्नेह, संयुक्त परिवारक आदर्श, परस्पर विरोधक सामाजिक उपयोग आ युवापीढ़ीक उत्साहपर बल देल गेल अछि। एहि दृष्टिसँ उपन्यासकेँ केवल करुण पारिवारिक कथा मानब अधूरा होएत; ई स्वैच्छिक सामाजिक आचारक एकटा कल्पनात्मक प्रस्ताव सेहो अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : कथा-प्रवेश आ गाम-प्रत्यावर्तन

मूल कथाक आरम्भ नरेन्द्रक सेवानिवृत्तिक बाद गाम अयलासँ होइत अछि। आधुनिक नौकरी-जीवनक बाद गामक सामाजिक सम्बन्धमे पुनः प्रवेश एकटा कथात्मक चौखट बनैत अछि। नरेन्द्रक स्वागत, लोकक संग हुनक पुरान परिचय आ परिवारसँ जुड़ल द्वन्द्वक संकेत कथाकेँ वर्तमान क्षणसँ पाछाँ स्मृतिक समयमे लऽ जाइत अछि। पाठक पहिनहि जानि जाइत अछि जे नायकक मूल्यांकन केवल कुल-नाम वा आर्थिक स्थितिसँ नहि, ओकर सार्वजनिक उपयोगितासँ सेहो कएल जा रहल अछि।

> “आइ नरेन्द्र सेवानिवृत्त भऽ कऽ गाम आयल छथि।” (मुद्रित पृ. 9)

ई सरल उद्घाटन सघन कथात्मक फल दैत अछि। ‘आइ’ तत्काल वर्तमानक बोध करबैत अछि; ‘सेवानिवृत्त’ दीर्घ बीतल समयक अनुमान उत्पन्न करैत अछि; ‘गाम’ स्मृतिक स्थायी स्थल बनैत अछि। एहि तीन शब्द-समूहमे कथा अपन समय-संरचनाक आधार राखि दैत अछि। क्रमिक जीवन-वृत्तान्तक बदला कथाकार पहिने अनुभवसंपन्न वयस्क नरेन्द्रकेँ सोझाँ अनैत छथि। अतीतक संघर्ष तखन वर्तमानक सम्मान आ योगदानसँ तुलना करबाक अवसर पबैत अछि।

आरम्भिक खण्डमे स्वार्थ, सम्पत्तिक प्रतिस्पर्धा आ नरेन्द्रक अपेक्षाकृत समन्वयवादी दृष्टि आमने-सामने अबैत अछि। जँ ई विरोध ‘नीक’ आ ‘खराब’ व्यक्तिक सरल विभाजनमे परिणत होइत अछि तँ चरित्र-जटिलता घटैत अछि; तथापि गामक अन्तर्विरोधकेँ आरम्भे स्पष्ट करब उपन्यासक नैतिक धुरी निर्धारित करैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : बाल्यावस्था, शिक्षा आ आश्रयक राजनीति

नरेन्द्रक पूर्वजीवनक वर्णनमे आर्थिक अभाव, परिवारक आश्रयदाता आ शिक्षा-अर्जनक अवसर महत्त्वपूर्ण छथि। नीलाम्बर बाबू तथा श्वेताम्बर बाबूक नामसँ जुड़ल प्रसंगसमूह घरक भीतर अधिकार, अनुशासन आ संरक्षणक असमान वितरण दिस संकेत करैत अछि। बचपनक परिप्रेक्ष्य अपनहि कारण पाठककेँ मार्मिक लगैत अछि: बच्चा परिवारक सम्पत्ति-विवादक सक्रिय निर्माता नहि, मुदा ओकर परिणामक पहिल भुक्तभोगी भऽ सकैत अछि।

शिक्षाक प्रति नरेन्द्रक आग्रह उपन्यासक आशावादी पक्ष अछि। शिक्षणकेँ केवल परीक्षा-उत्तीर्णताक साधन नहि, व्यक्तित्वक निर्माण आ समाजमे बराबरीक उपस्थिति पाबयक मार्ग रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। एतऽ बाल्यावस्थाक स्मृति आ बाल-साहित्यक स्वभावमे अन्तर करब जरूरी अछि: कथा बालजीवनकेँ चित्रित करैत अछि, मुदा ओकर दीर्घ वैचारिक संवाद, सम्बन्ध-जाल आ पूर्वापर जीवन-व्याख्या मुख्यतः वयस्क पाठककेँ सम्बोधित करैत अछि।

अभावसँ उबरबाक प्रसंगक दोसर पाठ सेहो सम्भव अछि। सफल व्यक्तिक संघर्ष-जीवनी प्रायः सामाजिक संरचनामे रहित असमानताकेँ व्यक्तिगत प्रतिभा आ परिश्रमक कहानीमे बदलि दैत अछि। नरेन्द्रक सफलता प्रशंसनीय होइतहुँ प्रश्न बचल रहैत अछि: ओहि गामक एहन कतेक बालक छथि जिनका समान आश्रय, मार्गदर्शन वा अवसर नहि भेटैत छनि? उपन्यासक नैतिक व्यापकता एहन अनुत्तरित सामाजिक प्रश्नक आलोकमे बेसी स्पष्ट होइत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : भाईसभक सम्बन्ध आ संयुक्त परिवारक संकट

कथाक मध्यवर्ती हिस्सामे संयुक्त परिवारक भीतर सम्पत्ति, आमद-खर्च, निर्णयाधिकार आ आपसी विश्वासक प्रश्न उभरैत अछि। पारिवारिक ऐक्य केवल भावुक भावना नहि, व्यवहारिक व्यवस्थाक विषय बनैत अछि। परिवारक मुखिया के होएत, के ककर उत्तरदायी होएत, श्रम वा साधनक बँटवारा कोना होएत, आ विवादक समय कोन नियम मानल जाएत

—एहन प्रश्नक प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष उपस्थिति उपन्यासक सामाजिक जीवन्तता बढ़बैत अछि।

नरेन्द्र द्वारा निजी स्वार्थक बदला सामूहिक सम्हारपर देल गेल बल रचनाक केन्द्रीय प्रेरणा अछि। कथाकार संघर्षक जड़ एहन व्यवहारमे देखैत छथि जतऽ व्यक्ति अपन तात्कालिक हितकेँ परिवारक दीर्घकालीन हितसँ ऊपर राखि दैत अछि। मुदा आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे सम्पत्तिक वास्तविक असमानता, देखभालक अदृश्य श्रम, स्त्रीक उत्तराधिकार आ पीढ़ीगत अपेक्षाक भिन्नता सभकेँ केवल स्वार्थवृत्तिसँ समझल जा सकैत अछि कि नहि। उपन्यासक समाधान-प्रधान दृष्टि एहि जटिलताकेँ कतेको बेर सहज बनबैत अछि।

कथा-योजनाक प्रभावी विशेषता ई अछि जे पारिवारिक विवादक प्रतिक्रिया गामक व्यवहारपर पड़ैत अछि। घरक भीतरक कटुता, समूहक विघटन आ समाजक साझा संसाधनक ह्रास एक-दोसरासँ जुड़ल देखाएल अछि। एहि अर्थमे उपन्यास 'गृह-कथा' आ 'समाज-कथा' बीचक सीमाकेँ पार करैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : विवादसँ सहयोग दिस, संस्कृति एक माध्यम

नरेन्द्र आ हुनक संग जुड़ल पात्र सांस्कृतिक गतिविधिक माध्यमसँ आपसी दूरी घटेबाक प्रयास करैत छथि। नाटक, संगीत आ सामूहिक आयोजनक प्रसंग कथाकेँ घरक भीतरी कोठरीसँ निकालि सार्वजनिक स्थलपर अनैत अछि। नाटकक अभ्यासक माध्यमसँ विरोधी पक्षक लोक सेहो एक मंचपर अबैत छथि; सांस्कृतिक श्रम आपसी बातचीतक अवसर निर्माण करैत अछि।

एहि खण्डमे नाट्य-मंचनक रचनात्मक अर्थ एकरे लेल महत्त्वपूर्ण अछि जे समाजक 'भूमिका' परस्पर बदलबाक सम्भावना नाटकमे प्रत्यक्ष होइत अछि। व्यक्ति जखन दोसर पात्रक भाषा बाजैत अछि, दर्शकक प्रतिक्रियासँ गुजरैत अछि, तखन अपन सीमित स्वार्थसँ बाहर निकलि सकैत अछि—रचना एहि सम्भावनाक पक्ष लैत अछि। तथापि मंचनक पश्चात्

विरोध तुरन्त समाप्त भऽ जाएत, ई आवश्यक नहि। कथा जखन सहमतिपर तेजी सँ पहुँचैत अछि, यथार्थक कठोरता किछु कम भऽ जाइत अछि।

> “हम सभ जे किछु करऽ चाहैत छी से ककरा लेल, अही समाजक लेल ने।” (मुद्रित पृ. 16)

एहि संवादमे उपन्यासक सामाजिक उद्देश्य संक्षेपमे उद्घाटित अछि। ‘हम सभ’ सामूहिक कर्ताकेँ, ‘ककरा लेल’ उत्तरदायित्वक प्रश्नकेँ आ ‘समाज’ परिवारसँ बाहर व्यापक मानव-सम्बन्धकेँ उपस्थित करैत अछि। ई वाक्य नरेन्द्रक चरित्रक नैतिक आत्मपरिचय सेहो अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : शंकर, दीपाली आ सम्बन्धक नूतन धरातल

गुरुजीक परिवारसँ जुड़ल शंकर आ दीपालीक प्रसंग नूतन पीढ़ीक भावना आ सामाजिक नियन्त्रणक बीचक वार्तालाप प्रस्तुत करैत अछि। संगीतक प्रशिक्षण, परस्पर आकर्षण, विवाहक सम्भावना आ उचित सामाजिक स्वीकृतिक खोज एहि उपकथाकेँ मुख्य परिवार-विमर्शसँ जोड़ैत अछि। प्रेम एतऽ केवल निजी रोमांच नहि; ई वयस्क निर्णय, गुरु-शिष्य सम्बन्धक मर्यादा, अभिभावकक आशंका आ संस्थागत प्रतिष्ठाक प्रश्नक संग आबैत अछि।

शंकरक संगीत-शिक्षा आ दीपालीक नृत्य-साधना रूपक स्तरपर सेहो पढ़ल जा सकैत अछि। नरेन्द्रक आरम्भिक शिक्षा-यात्रा जेना अवसरक माध्यम बनैत अछि, तहिना कला नव पीढ़ीकेँ परम्परागत आजीविका-बोधसँ बाहर अपन भविष्य सोचबाक अवकाश दैत अछि। एहि बिन्दुपर उपन्यास परिवारक संरक्षक दृष्टि आ युवाक स्वायत्त अभिलाषाक बीच एकटा समझौता खोजैत अछि।

कथाकार प्रेम-विवाहकेँ एकदम असम्भव वा स्वतः अनुचित नहि मानैत छथि; मुदा निर्णयकेँ मुख्यतः बुजुर्ग मध्यस्थताक सहायतासँ वैधता भेटैत अछि। ई परम्परा आ आधुनिकताक समन्वयक एकटा मॉडल थिक। प्रश्न तथापि शेष रहैत अछि जे शंकर आ

दीपाली अपन भविष्य-सम्बन्धी निर्णयमे कतेक प्रत्यक्ष अधिकार राखैत छथि। परिवारक सहमति कथामे सुखद परिणाम दैत अछि, मुदा ओकरा स्त्री-पुरुषक समान एजेंसीक पूर्ण प्रमाण मानब जल्दबाजी होयत।

पृथक पाठविश्लेषण : शैक्षिक पेशा, रोजगार आ गतिशीलता

शंकरक विश्वविद्यालयीय संगीत-शिक्षणसँ जुड़ल प्रसंगमे परीक्षा, रोजगार, नियुक्ति आ पेशागत योग्यता पर बातचीत अछि। संगीतकेँ केवल मनोरंजन मानयवला दृष्टिक विरुद्ध ई खण्ड ओकर संस्थागत महत्त्व उभारैत अछि। गुरुजीक आशंका आ नरेन्द्रक उत्साहक बीच भिन्न जीवनानुभव स्पष्ट होइत अछि। कला, अध्यापन आ विवाह—तीनू एकहि जीवन-परियोजनाक भाग बनैत अछि।

> “श्रीमान्! हम एहन गारंटी तँ नहि दऽ सकैत छी। तखन हम प्रयास अवश्य करब।” (मुद्रित पृ. 57)

एहि उत्तरक महत्त्व ई अछि जे नायक अपन सीमाकेँ स्वीकृति दैत छथि। रचनाक आन बहुत ठाम नरेन्द्रक निर्णय चमत्कारिक रूपेँ सफल होइत बुझाइत अछि; एतऽ ‘गारंटी’ नहि देबाक संकोच चरित्रकेँ वास्तविक नैतिक विनम्रता प्रदान करैत अछि। एहन क्षण कथा-नायककेँ सर्वशक्तिमान सुधारकक रूढ़ प्रतिमासँ किछु बाहर निकालैत अछि।

पृथक पाठविश्लेषण : नवा रामायण, सार्वजनिक स्मृति आ ग्रामीण संस्था

उत्तरार्द्धमे गामक सांस्कृतिक पुनरुज्जीवनक प्रयास अधिक ठोस रूप लैत अछि। विद्यापति-स्मृति पर्व, सामूहिक आयोजन, सार्वजनिक चर्चा आ ‘नवा रामायण’ सन परियोजनाक उल्लेख गामक सामाजिक ऊर्जाकेँ संगठित करबाक आकांक्षा प्रकट करैत अछि। कथा शिल्पगत रूपेँ रोचक मोड़ एतऽ लैत अछि: घरक कलह सुलझाबयवला व्यक्ति सामुदायिक कार्यक्रमक समन्वयक बनि उभरैत अछि।

सांस्कृतिक कार्यक्रमकेँ उपन्यासमात्र धार्मिक कर्मकाण्ड नहिओं बनबैत अछि; ओकर भीतर आयोजन-समिति, व्यय, जनसम्पर्क, सहयोग, मंच आ सार्वजनिक अनुमोदनक प्रश्न उपस्थित अछि। एहि कारण कथा सांस्कृतिक प्रबन्धनक एकटा लघु समाजशास्त्र रचैत अछि। विशेष महत्त्व एहि बातक अछि जे कार्यक्रमपर उत्साह आ विरोध दूनू अछि: सार्वजनिक जीवनमे सर्वसम्मति स्वतः उपलब्ध नहि होइत अछि।

एहि प्रसंगक आलोचनात्मक पक्ष ई जे लोककल्याणक उद्देश्यक नामपर संस्थागत नियमकेँ कखन बदलब, कखन स्वीकृत प्रक्रिया अपनाएब—एहन प्रश्न उठैत अछि। नरेन्द्रक व्यवहारक मूल्यांकन केवल परिणामसँ नहि, प्रक्रियाक पारदर्शितासँ सेहो होयबाक चाही। पुस्तक ई प्रश्न उपस्थित करबाक पर्याप्त कथा-सामग्री दैत अछि, भले ओकर अन्तिम स्वर सामंजस्यवादी रहय।

पृथक पाठविश्लेषण : उपसंहार आ ‘परिवार’क विस्तार

अन्तिम अंशमे नरेन्द्रक जीवनक उत्तरकाल, अपन सन्तानक जीवन, भाय-बहिनक अलग-अलग परिवार आ सामाजिक जुड़ाव एक संग सोझाँ अबैत अछि। कथा आरम्भक संयुक्त परिवारक क्षति आ अन्तक व्यापक भावात्मक सम्पर्कमे एक प्रकारक वृत्ताकार सम्बन्ध बनबैत अछि। परिवार आब एके घरमे रहबाक बाध्यता नहि; दूर-दूर रहिकय परस्पर सहयोग, सम्पर्क आ प्रसन्नताक सम्भावना अछि।

> “तखन नरेन्द्रक परिवार ‘परिवार’ सनक लागत छलन्हि।” (मुद्रित पृ. 76)

उपन्यासक अन्तिम मूल्य-वाक्यकेँ शीर्षकक पुनर्पाठ मानल जा सकैत अछि। पहिल ‘परिवार’ वास्तविक जीवनी-संबन्धक जटिल समूह अछि; दोसर ‘परिवार’ एकटा अपेक्षित नैतिक गुणवत्ता—स्नेह, सम्मान, संवाद आ पारस्परिकता—क नाम बनि जाइत अछि। शब्दक एहि पुनरावृत्तिमे किताबक सम्पूर्ण अर्थ-यात्रा समेटल अछि। तथापि वाक्य पाठककेँ निष्कर्ष सुनबैत बेसी अछि, खुलल प्रश्नक अवकाश कम दैत अछि। एकर प्रभावी संक्षिप्तता आ उपदेशात्मक निश्चितता दूनूकेँ साथे देखबाक चाही।

कथा-संरचना : स्मृति, वर्तमान आ पुनरावलोकन

'परिवार' रैखिक ऐतिहासिक वृत्तान्तक रूपमे नहि, संस्मरणात्मक उपन्यासक रूपमे चलैत अछि। वर्तमानक सेवानिवृत्त नरेन्द्रक गाम-प्रत्यावर्तन प्रारम्भिक आधार अछि; तकर बाद पुरान कठिनाइ, आश्रयदाताक छवि, शिक्षा, घरेलू असहमति, कला-सम्बन्ध आ समाजमे प्रतिष्ठा—अनेक समय-स्तरक पुनर्संयोजन होइत अछि। ई योजना स्मृतिक सामान्य प्रवाहसँ मेल खाइत अछि, जतऽ किछु व्यक्तिक स्मरण कोनो घटना-क्रमकेँ तीव्र करैत अछि।

तथापि स्मृतिपरक विधानक एकटा चुनौती अछि। बहुत प्रसंगक संवाद पूरा-का-पूरा पुनर्निर्मित रूपेँ उपस्थित अछि, जकरा दशको बादक अक्षरशः स्मृति मानब कठिन होयत। ई उपन्यासक दोष नहि, विधागत सीमा अछि—संस्मरणात्मक सत्य आ कलात्मक पुनर्रचना बीच दूरी पर सावधानी राखब जरूरी अछि। लेखक द्वारा पात्र-स्थानक रूपान्तरणक स्वीकारोक्ति एहि मिश्रित स्वरूपकेँ पूर्वहि चिह्नित करैत अछि।

कथाक घटना-समूहमध्ये नैतिक निरन्तरता नरेन्द्रक चरित्र प्रदान करैत अछि; परिपक्व नायकक उपस्थितिसँ विभिन्न प्रसंग जुड़ैत अछि। एहि संरचनाक लाभ कथात्मक केन्द्रक स्थिरता; हानि अन्य पात्रक स्वतन्त्र जटिलताक कतेको बेर पाछाँ पड़ि जाएब।

पात्र-निर्माण : नरेन्द्रक आदर्शवाद आ ओकर सीमा

नरेन्द्रक व्यक्तित्व शिक्षा, आत्मसंयम, सांस्कृतिक रुचि, परोपकार आ सम्बन्ध-बचावक प्रयाससँ बनैत अछि। पारिवारिक जीवनमे अपन हितसँ बेसी सामूहिक मंगल चाहबाक प्रवृत्ति हुनक नैतिक पहचान अछि। कथा हुनका 'आदर्श' बनबैत अछि, मुदा एहन आदर्श पात्रक मूल्यांकन ओकर विरोधी पात्रसँ भेल जटिल संवादपर निर्भर करैत अछि। जतेक संघर्षक कारण सहज रूपेँ 'स्वार्थ' कहि देल जाइत अछि, ततेक पाठककेँ दोसर पक्षक आर्थिक वा भावात्मक तर्क सुनबाक अवसर घटैत अछि।

नीलाम्बर बाबू, श्वेताम्बर बाबू, गुरुजी, शंकर, दीपाली, सुमन आ अन्य सम्बद्ध पात्र केवल नायकक जीवनीक सजावट नहि छथि; सभ परिवार, शिक्षा, उत्तराधिकार वा सामाजिक प्रतिष्ठाक अलग पक्ष प्रतिनिधित्व करैत छथि। मुदा प्रतिनिधित्व आ व्यक्तित्वमे अन्तर अछि। कथाकार कखनो-कखनो चरित्रकेँ मुद्दाक वाहक बना दैत छथि; ओहि समय मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता अपेक्षाकृत अल्प होइत अछि। सुमन सन विरोधी स्वरतक उपस्थितिसँ कथामे द्वन्द्व बनेल रहैत अछि, मुदा ओकर तर्कक सम्पूर्ण परिस्थितिकेँ नरेन्द्रक आदर्शवादक बराबर विस्तार नहि भेटैत अछि।

भाषा, संवाद आ शैलीक विवेचन

पोथीक प्रमुख भाषा सहज, संवादप्रधान मैथिली अछि। कथनमे गाँवक बोलचाल, आदरसूचक सम्बोधन, पारिवारिक नातेदारीक शब्दावली आ सार्वजनिक आयोजनसँ जुड़ल आधुनिक पदावली एक संग चलैत अछि। एहि मिश्रणसँ गामक आधुनिक जीवनक भाषिक रूप उपस्थित होइत अछि। विद्यालय, विभाग, परीक्षा, संगीत, कार्यालय आ समिति सन शब्द-क्षेत्रक प्रयोग रचनाकेँ एकांगी लोक-चित्र बनबाक सँ बचबैत अछि।

कथोपकथन पात्रसभक मतभेद केँ प्रत्यक्ष करैत अछि। प्रश्न-उत्तरक आवृत्ति नरेन्द्रक तर्कवादी ढंगक अङ्ग अछि; ओ अरूकेँ बुझबैत छथि, आपत्ति सुनैत छथि आ नैतिक निष्कर्ष दिस वार्ता मोड़ैत छथि। किछु ठाम संवाद मंचीय गति उत्पन्न करैत अछि, विशेषतः गुरुजी आ शंकरक सम्बन्ध आ गाँवक कार्यक्रमक विचार-विमर्शमे। मुदा बारम्बार दीर्घ तर्कपूर्ण भाषणक कारण कथात्मक दृश्य निबन्ध-जकाँ बनि जाइत अछि। एहि शिल्पगत असन्तुलनकेँ उपन्यासक शिक्षापरक इच्छासँ जोड़िकय बुझल जा सकैत अछि।

रचना ‘कहबाक’ शक्ति पर भरोसा करैत अछि; मौन, संकेत, लघु दृश्य वा वस्तुगत वर्णनक स्वतन्त्र उपस्थिति अपेक्षाकृत कम अछि। पाठककेँ मूल्य-निर्णयक दिशा प्रायः स्पष्ट करा देल जाइत अछि। एहि कारण कथ्य सुलभ होइत अछि, मुदा साहित्यिक बहुअर्थकता किछु सिमटैत अछि।

स्त्री-पात्र, परिवार आ लैंगिक दृष्टि

परिवारक स्मृति प्राय: पिता, काका, भाय, गुरुजी आ सामाजिक नेतृत्वक माध्यमसँ संगठित होइत अछि। महिला-पात्रक भूमिका स्नेह, संस्कार, प्रेम, वैवाहिक निर्णय आ घरेलू निरन्तरतासँ जुड़ल रूपमे सोझाँ अबैत अछि। दीपालीक नृत्य-साधना स्त्रीक रचनात्मक योग्यता दर्शबैत अछि; ओ केवल विवाहक पात्र नहि, कलामे सक्रिय व्यक्तित्व सेहो छथि। तथापि हुनक निर्णयक स्वतन्त्र शर्त, व्यावसायिक उपलब्धिक बाधा आ भविष्यक योजना पर आर विस्तार सम्भव छल।

संयुक्त परिवारमे भोजन, देखभाल, वृद्धक सेवा, बच्चाक पालन आ घरक श्रम प्राय: असमान रूपेँ बाँटल रहैत अछि। उपन्यास जखन साझा परिवारकेँ आदर्श मानैत अछि, तखन ई प्रश्न पूछब आवश्यक अछि जे ‘साझा’ काजक भार ककर कन्धापर पड़ैत अछि। स्त्रीक सम्पत्ति-अधिकार, शिक्षा आ वैवाहिक स्वायत्तताकेँ स्पष्ट सिद्धान्तक रूपमे नहि, बल्कि कथामे उपस्थित संकेतक माध्यमसँ विचारल जा सकैत अछि। एहि दृष्टिसँ ‘परिवार’ नव आलोचनाक लेल उपयुक्त पाठ अछि: एकर पारिवारिक आदर्शक मूल्य महिला-पक्षक दृश्यमान सहभागिताक कसौटीपर सेहो होयबाक चाही।

वर्ग, सम्पत्ति आ ग्रामीण आधुनिकता

नरेन्द्रक आर्थिक अभावक चर्चा, बादक नौकरी-जीवन, भाईसभक शैक्षिक उपलब्धि आ परिवारक सम्पत्ति-व्यवस्थाक द्वन्द्व ग्रामीण समाजक बदलैत सामाजिक गतिशीलताकेँ चिह्नित करैत अछि। शिक्षा आ सरकारी/व्यावसायिक पदक संभावनासँ पुरान कृषिपरक प्रतिष्ठा-मापन बदलबाक संकेत भेटैत अछि। आधुनिकताक आगमन एतऽ गाँव छोडबाक मात्र प्रक्रिया नहि; आधुनिक संस्थानक अनुभवकेँ गाममे पुन: लगानी करबाक परियोजना अछि।

एहि परियोजनाक अन्तर्विरोध ई अछि जे सफल नायकक संस्कार आ सम्पर्क एतेक निर्णायक बनि जाइत अछि जे सामूहिक संस्था-सुधारक प्रश्न हुनक व्यक्तिगत

सदाशयताक पाछाँ छिपि सकैत अछि। सम्पन्न आ वंचित परिवारक संसाधनक अन्तर, स्थानीय सत्ता-संरचना, उत्तराधिकारक नियम आ अवसरक असमान वितरणक अधिक विस्तृत परीक्षण पाठकेँ यथार्थपरक बना सकैत छल। एहि कमीकेँ रचनाक सामाजिक आदर्शवादक सीमा मानल जा सकैत अछि, लेखकक सदुद्देश्यक निषेध नहि।

परिशिष्टक वंशावली : पाठ, दस्तावेज आ ऐतिहासिक सावधानी

मूल कथाक उपरान्त मुद्रित पृष्ठ ७७–८६ पर ग्राम उपरदाहासँ सम्बन्धित अनेक शाखाक वंशावली-आरेख प्रस्तुत अछि। ई सामग्री कथाक सामान्य उपसंहार नहि। वंश-रेखाक माध्यमसँ व्यक्ति, कुल, सम्बन्ध-स्मृति आ पीढ़ीक अनुक्रमक दृश्य-रूप बनैत अछि। उपन्यासक शीर्षक ‘परिवार’केँ ई परिशिष्ट दीर्घ सामाजिक कालक परिप्रेक्ष्य प्रदान करैत अछि; कथा जतय नैतिक सहजीवनक प्रश्न उठबैत अछि, वंशावली रक्त-सम्बन्धक संरचनात्मक स्मृतिपटल प्रस्तुत करैत अछि।

तथापि कथा आ परिशिष्टक ज्ञानमीमांसीय स्तर एक नहि। उपन्यास कल्पित नाम आ घटनाक संयोजन करैत अछि; वंशावली वास्तविक समुदायसँ जुड़ल ऐतिहासिक सूचना होयबाक दावा कऽ सकैत अछि। ओकरा उपयोग करैत काल नाम, पीढ़ी, शाखा आ काल-सूचना स्थानीय दस्तावेज आ जीवित मौखिक परम्परासँ अलग सत्यापन माँगैत अछि। एहि लेखमे वंशावलीकेँ सम्बन्ध-स्मृतिक साहित्यिक-सांस्कृतिक साक्ष्य रूपमे पढ़ल गेल अछि, सम्पूर्ण प्रमाणित वंश-इतिहास रूपमे नहि।

महत्त्वपूर्ण अन्तर ई सेहो अछि जे वंशावली सामान्यतः पुरुष-रेखाक नाम-समूह पर केन्द्रित भऽ सकैत अछि; वैवाहिक आगमन, महिला-श्रम, आत्मीय सम्बन्ध आ दत्तक/पालन-सम्बन्धक बहुतेक सूक्ष्म रूप ओहि रेखाचित्रमे अस्पष्ट रहि सकैत अछि। एहि कमीमे उपन्यासक नैतिक अवधारणा अधिक व्यापक बनैत अछि: जीवित परिवार केवल वंशरेखा नहि, पालन आ पारस्परिक दायित्व सेहो अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक विवेचन

‘परिवार’ स्वयं बाल-साहित्यक श्रेणीमे नहिएँ पड़ैत अछि। विदेहक गद्य आ पोथी-सूचीमे एकरा संस्मरणात्मक उपन्यास कहल गेल अछि, जखन कि लेखकक ‘स्वर्ण कमल’ स्पष्ट रूपेँ ‘बाल उपन्यास’ आ शिशु-उत्सवक सूचीमे दर्ज अछि। एहिसँ लेखकक गद्यक भीतर वयस्क-उन्मुख संस्मरणात्मक कृति आ बाल-पाठक-उन्मुख रचनाक अलग विधागत स्थिति देखाइत अछि। बाल-साहित्यक इतिहासमे ‘परिवार’क चर्चा एहि सीमा कैँ सुस्पष्ट कएल बिना करब विधागत भ्रान्ति होयत।

विदेहक बाल-साहित्य अभिलेख मैथिलीमे बाल-पाठकक लेल अनेक रूपक उपस्थिति देखबैत अछि: बाल-गीत, बाल-कविता, बाल-कथा, नाटक, सचित्र कथा, चित्रशृंखला, अनुवाद, विज्ञानक बतकही आ बाल-उपन्यास। प्रीति ठाकुरक ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ (सूचीमे २००८), ‘मैथिली चित्रकथा’ (२००९), ‘मिथिलाक लोकदेवता’ (२०१०) तथा ‘विद्यापतिक पुरुष परीक्षा’ (२०१२) बाल-पाठकक लेल कथात्मक-सांस्कृतिक सम्पदाक रूपान्तरणक एकटा अभिलेखीय क्रम दैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक ‘बाल मण्डली/किशोर जगत’ (२००९) आ ‘तरहरिमे परीलोक’ (२०२२) सन कृति बाल-किशोर पाठक-वर्गकैँ अलग पहचान देबाक दृष्टान्त छथि।

विदेहक एहि सूचीमे जगदानन्द झा ‘मनु’क ‘चोनहा’, जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘तरेगन’ आ ‘नै धाड़ैए’, नीता झाक ‘बिलाइ मौसी’, योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क ‘हमर गाम’, मुन्नाजीक ‘तीन टा बाल नाटक’, सुजीत कुमार झाक ‘कोइली घूरि आउ’ आ नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘स्वर्ण कमल’ सन शीर्षक भिन्न विधाक साक्ष्य रूपेँ दर्ज छथि। एतऽ केवल सूचीमे स्पष्ट लिखल विधा आ शीर्षकक तुलना कएल जा रहल अछि; एहि सभ पोथीक कथानक-वस्तु वा शिल्पपर असत्यापित निर्णय नहि देल जा रहल अछि।

ऐतिहासिक निष्कर्ष एहि सीमित प्रमाणसँ एतबे बनैत अछि जे उपलब्ध डिजिटल अभिलेख बाल-साहित्यक विविध विधा आ लेखकीय प्रवृत्तिक विकास-रेखा देखबैत अछि; ई कोनो सम्पूर्ण युग-इतिहासक विकल्प नहि। प्रकाशन-वर्षक उल्लेख सेहो विदेहक देल

अभिलेखीय प्रविष्टिक सूचना अछि, स्वयं मूल पोथीक प्रत्येक संस्करणक स्वतन्त्र परीक्षण नहि।

बाल-पाठक आ 'परिवार' : सम्बन्ध आ भिन्नता

'परिवार'मे बालकक अनुभव, शिक्षा, अभिभावकक व्यवहार आ संयुक्त परिवारक वातावरण सन तत्त्व अछि, जकरा बाल-अध्ययनक आलोचक रुचिपूर्वक पढ़ि सकैत छथि। तथापि कृतिमे लम्बा सामाजिक तर्क, वयस्क सम्पत्ति-संघर्ष, नौकरी, विवाह-व्यवस्था, संस्थागत निर्णय आ सेवानिवृत्ति धरि पसारल जीवन-समय अछि। कथा-सूत्रक एतेक विस्तार, संवादक दार्शनिकता आ स्मृतिक पुनर्रचनाक कारण ई बालकक लेल विशेष रूपसँ गढ़ल रचना नहि प्रतीत होइत अछि।

'स्वर्ण कमल' सन प्रत्यक्ष बाल-उपन्याससँ ओकरा तुलनीय बनबैत तत्त्व 'नीतिगत शिक्षा' वा 'विकासशील चरित्र' भऽ सकैत अछि; मुदा एहन सामान्य समानता विधागत एकरूपता सिद्ध नहि करैत अछि। बाल-साहित्यक आलोचनामे पाठक-वर्ग, वाक्यक लय, आयुवर्ग-सापेक्ष संघर्ष, बाल-पात्रक दृष्टिकोण, चित्र-विन्यास आ कथात्मक स्वायत्तता देखबाक चाही। 'परिवार'क मूल्य ई अछि जे ई बचपनकेँ प्रौढ़ स्मृतिमे कोना पुनर्निर्मित कएल जाइत अछि तकर उदाहरण दैत अछि। बाल-साहित्यक इतिहासमे एकर स्थान समीपवर्ती सामाजिक-स्मृति पाठक रूपमे अछि, स्वयं बाल-उपन्यासक मूल प्रवाहमे नहि।

साहित्येतिहासक पद्धति : सूची, पाठ आ मूल्याङ्कन बीच अन्तर

विदेहक पोथी, गद्य आ शिशु-उत्सव पृष्ठ आधुनिक मैथिली साहित्यक पाठ-सुलभतामे महत्त्वपूर्ण छथि। अलग-अलग शीर्षक आ विधा एकहि अभिलेखीय स्थलपर देखबाक सुविधा पाठककेँ समकालीन प्रवृत्तिक नक्शा दैत अछि। मुदा पोथी-सूचीक अस्तित्वसँ कोनो कृतिक कलात्मक श्रेष्ठता सिद्ध नहि होइत, आ सूचीमे अनुपस्थिति सँ ओकर ऐतिहासिक महत्त्व समाप्त नहि होइत अछि। साहित्येतिहास लेल सूची प्रारम्भिक

दिशासूचक अछि; आलोचनाक निर्णायक आधार मूल पाठ, संस्करणक विवरण आ समकालीन ग्रहण-साक्ष्य रहबाक चाही।

‘परिवार’क स्थिति एहि पद्धतिक उपयोगी उदाहरण अछि। विदेहक गद्य-सूची स्पष्ट करैत अछि जे एकहि लेखकक ‘गामघर’ कथा-संग्रह, ‘सुजाता’ उपन्यास, ‘गुदरीक लाल’ उपन्यास, ‘सुकन्या’ उपन्यास, ‘स्वर्ण कमल’ बाल-उपन्यास आ ‘परिवार’ संस्मरणात्मक उपन्यास अलग-अलग विधामे अबैत अछि। लेखकक समग्र गद्य-विकासपर अन्तिम निर्णय करबाक लेल एहि सभक स्वतन्त्र पाठ-परीक्षण आवश्यक होएत; तथापि प्रकाशित विधा-विविधताक तथ्य लेखकक रुचिक व्यापकता अवश्य संकेत करैत अछि।

रचनाक उपलब्धि : जकरा बिना साहित्यिक चित्र अधूरा रहत

उपन्यासक पहिल उपलब्धि शीर्षकक सृजनात्मक विस्तार अछि। नरेन्द्रक निजी परिवारसँ आरम्भ कएल कथाकेँ लेखक गामक सार्वजनिक जीवन, शिक्षा, कलात्मक साधना आ सामाजिक उत्तरदायित्व धरि लऽ जाइत छथि। दोसर उपलब्धि संस्मरणात्मक अनुभवकेँ उपन्यासक कथात्मक प्रवाहमे बदलबाक चेष्टा अछि; समयक दूरी नायकक निर्णयक मूल्यांकन लेल अवसर दैत अछि। तेसर उपलब्धि ग्रामीण आधुनिकताक सकारात्मक सम्भावना—पढ़ाइ, रोजगार, कला आ सार्वजनिक सहयोग—केँ एक-दोसराक विरोधी नहि, पूरक रूपेँ देखेबाक दृष्टि अछि।

चारिम उपलब्धि लोकभाषिक संवादक सहजता अछि। मिथिलाक पारिवारिक सम्बोधन, आपसी तकरारक शैली आ समझौता-वार्ताक रूप कृतिमे सान्द्र मानवीय वातावरण बनबैत अछि। पाँचम उपलब्धि अन्तक वंशावलीक माध्यमसँ पाठककेँ दीर्घकालीन नातेदारीक दृश्य-आयाम प्रदान करब अछि। ई परिशिष्ट अपन सीमासहित उपन्यासक सामाजिक अध्ययनमे उपयोगी सामग्री उपलब्ध करबैत अछि।

रचनाक सीमा : एक आलोचनात्मक पुनर्विचार

मुख्य शिल्पगत सीमा नरेन्द्रक प्रायः अविचल नैतिक श्रेष्ठता अछि। एहन पात्र पाठककेँ प्रेरित करैत छथि, मुदा तकर विरोधी विचारक पूर्ण न्याय कठिन भऽ जाइत अछि। दोसर सीमा बारम्बार व्याख्यात्मक कथन अछि, जतऽ पात्रक अनुभवसँ मूल्य सहज रूपेँ उद्भूत होयबाक बदला लेखकक निष्कर्ष स्पष्ट उद्घोषित भऽ जाइत अछि। तेसर सीमा सामाजिक समस्याक व्यक्तिगत समाधानकेँ अत्यधिक महत्त्व देब अछि; सम्पत्ति, श्रम, विधिक अधिकार आ संस्थागत पारदर्शिताक सूक्ष्मता कथामे निरन्तर समान बल नहि पबैत अछि।

चारिम सीमा लैंगिक दृष्टिक असमान गहराई अछि। महिला-पात्र संवेदनात्मक रूपेँ उपस्थित होइतहुँ निर्णयक पूर्ण स्वतन्त्र मंच सर्वत्र नहि पबैत छथि। पाँचम सीमा कथाक अनेक घटना-चक्रक सफलता अत्यधिक सुगम प्रतीत होयबाक सम्भावना अछि। आलोचना एहि कारण रचनाक सामाजिक अभिप्रायक अनादर नहि करैत; उलटे प्रश्न उठबैत अछि जे एहन महत्त्वाकांक्षी आदर्श अधिक विश्वसनीय कलात्मक रूपमे कोना रूपान्तरित होएत।

निष्कर्ष : रक्त-सम्बन्धसँ सामाजिक परस्परता धरि

'परिवार'क मूल साहित्यिक योगदान ई अछि जे ई संयुक्त परिवारक विघटनक दुखकेँ केवल विलापमे सीमित नहि करैत अछि। नरेन्द्रक कथा अलग-अलग पीढ़ी आ सामाजिक संस्थाक बीच नव सम्पर्कक सम्भावना खोजैत अछि। परिवारक मूल्य वंश वा एकहि घरक निवाससँ अधिक अछि; ओहि मूल्यकेँ शिक्षाक अवसर, वृद्धक सम्मान, युवाक प्रतिभा, लोकसंस्कृतिक सामूहिक अभ्यास आ सभक हित सोचबाक नैतिक विवेक परखैत अछि। उपन्यासक अन्तिम 'परिवार' एहन सम्बन्धक नाम अछि जे अलग घर आ अलग रोजगारक बादो आपसी स्नेह आ सहयोग सँ जीवित रहि सकैत अछि।

एकरे संग रचनाक आदर्शवादक सीमा स्पष्ट राखब आवश्यक अछि। समग्र समाजक विवादकेँ केवल सदाशय मध्यस्थता सँ हल करबाक कल्पना सभ ठाम पर्याप्त नहि; वास्तविक सामाजिक न्याय लेल संरचनात्मक असमानता, स्त्रीक एजेंसी, सम्पत्तिक नियम

आ संस्थागत उत्तरदायित्वक ठोस विचार अपेक्षित अछि। एहि द्वन्द्वक कारण ‘परिवार’ सरस सामाजिक उपदेशमात्र नहि, आधुनिक मैथिली परिवारक बदलैत अर्थक एकटा आलोचनीय साहित्यिक दस्तावेज बनैत अछि। बाल-साहित्यक इतिहाससँ एकर सम्बन्ध बाल्य-स्मृति आ नैतिक शिक्षा-जकाँ साझा तत्त्व धरि अछि; विधागत रूपमे ई संस्मरणात्मक उपन्यासक रूपेँ अलग स्थापित अछि।

परिशिष्ट : तुलना-मानचित्र

एहि सारणीमे मात्र उपलब्ध अभिलेखक विधागत सूचना संक्षेपमे अछि; मूल कृतिक कथानकसँ तुलना अनेर नहि गढ़ल गेल अछि।

कृति / लेखक	विदेहमे दर्ज विधा	‘परिवार’सँ तुलनाक वैध स्तर
परिवार — नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’	संस्मरणात्मक उपन्यास	मूल पाठक प्रत्यक्ष कथात्मक आ वैचारिक विश्लेषण
स्वर्ण कमल — नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’	बाल उपन्यास	एके लेखकक अलग पाठक-वर्ग आ विधागत नामकरण
गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा — प्रीति ठाकुर	बाल चित्रकथा	चित्र-सहायता आ बाल-पाठकीय रूपक अभिलेखीय भिन्नता
चोनहा — जगदानन्द झा ‘मनु’	बाल उपन्यास	बाल-उपन्यास रूपक उपस्थिति
तरेगन — जगदीश प्रसाद मण्डल	बाल प्रेरक विहनि-कथा संग्रह	संक्षिप्त प्रेरक कथा आ दीर्घ संस्मरणात्मक आख्यानक विधागत भेद

कृति / लेखक	विदेहमे दर्ज विधा	‘परिवार’सँ तुलनाक वैध स्तर
हमर गाम — योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’	बाल उपन्यास	‘गाम’ शीर्षक-साम्य होइतो पाठक-वर्गक भिन्न श्रेणी
बिलाइ मौसी — नीता झा	बाल लघुकथा संग्रह	बाल-लघुकथा आ प्रौढ़ उपन्यासक आकार-विधा भेद
नताशा — देवांशु वत्स	बाल चित्रशृंखला	दृश्य-कथाक डिजिटल/सचित्र रूपक भिन्नता

तेसर खण्ड

शब्दचित्र, सत्ता आ मिथकीय पुनर्विचार

दिल्लीक पार्क · याचक के नजि · महारानी कैकेयी

अध्याय ८

दिल्लीक पार्क

गाम–शहरक द्वन्द्व, नागरिक संवाद आ शब्दचित्रक शिल्प

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क दिल्लीक पार्क शहरक कोनो एकटा उद्यानक चित्रण मात्र नहि, वरन् प्रवास, सेवाविराम, गामक स्मृति, शहरी सामाजिकता आ बदलैत नागरिक सम्बन्धक बहुस्तरीय संवादात्मक शब्दचित्र अछि। दिल्लीक पार्कक बेंच लेखक लेल एहन लोक-मंच बनि उठैत अछि जतय भिन्न क्षेत्र, भाषा, पेशा आ पीढ़ीक व्यक्ति अपन अनुभवक तुलना करैत छथि। नौ खण्डमे फैलल ई कृति कथानकक रोमांचसँ बेसी प्रश्नोत्तर, प्रसंग-विस्तार आ तर्क-वितर्कक सहारे समाजक आकृति तैयार करैत अछि। एहि अध्ययनमे विधा, कथन-दृष्टि, पात्र-संरचना, गाम–शहर विमर्श, भाषा, प्रवासी चेतना, वर्गीय दृष्टि आ नागरिक नैतिकताक आलोचनात्मक परीक्षण कयल गेल अछि। मैथिली बाल-साहित्यक विदेह-प्रदत्त ग्रन्थसूचीक आधारपर कृतिक विधागत भेदो स्पष्ट कयल गेल अछि : दिल्लीक पार्क बाल-पोथी नहि, यद्यपि पीढ़ीगत अनुभव आ शिक्षात्मक संवादक दृष्टिसँ बाल/किशोर साहित्यक अध्ययनमे एकटा तुलनात्मक पाठ बनि सकैत अछि।

कृति, विधा आ संरचनात्मक विशेषता

दिल्लीक पार्कक शीर्षकपृष्ठ आ प्रकाशकीय विवरण एकरा ‘शब्दचित्र’ कहैत अछि; अंग्रेजी परिचयमे ‘Maithili Literary Sketch’ नाम देल गेल अछि। पुस्तकक प्रथम संस्करण २०१८ ई.क अछि; प्रकाशक गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, दरभंगा अछि। रचनाक भीतर मुद्रित पृष्ठाङ्क ११ सँ ८२ धरि नौ क्रमांकित खण्ड भेटैत अछि। व्यक्तिनाम, खण्डक्रम आ प्रसंगक विवेचन पाठक दृश्यमान प्रकाशकीय आ मुद्रित सामग्रीसँ सापेक्ष राखल गेल अछि। एतय पाठक आशयक सार-वर्णन अछि, मूल वाक्यक उद्धरण नहि।

प्रथम दृष्टिए ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि जे पोथी बाल-उपन्यास नहि। विदेहक पोथी-सूची सेहो दिल्लीक पार्क कैं शब्दचित्र, आ ओही लेखकक स्वर्ण कमल कैं बाल-उपन्यास कहि अलग-अलग वर्गीकृत करैत अछि। एतए बाल-साहित्यक इतिहासक तुलना कृतिक मूल विधा बदलबाक लेल नहि, बदलैत पाठक-वर्ग, भाषिक उत्तराधिकार आ परिवारक कथा-स्थान बुझबाक लेल उपयोगी बनैत अछि।

शब्दचित्रक विधा : घटनासँ बेसी सामाजिक आकृति

शब्दचित्रमे एकमात्र निर्णायक घटना वा उपन्याससदृश कथानकक अपरिहार्य क्रमसँ बेसी चरित्रक बोली, लोक-व्यवहार, परिवेशक प्रभाव आ चिन्ताक विन्यास प्रधान रहैत अछि। दिल्लीक पार्क एहि पद्धतिक स्पष्ट उदाहरण अछि। पार्क अनेक वयस्क, विशेषत: सेवाविरामक बाद समय बितबैत व्यक्तिक भेट-स्थान अछि। एक दिनक बातचीत दोसर दिन नब प्रश्न उपजाबैत अछि; नब आगन्तुक अपन जीवनक अनुभव समाविष्ट करैत अछि; पुरान कथावाचक पुन: प्रश्न उठबैत छथि। एहि आवर्तनसँ समाजक पैघ चित्र बनैत अछि।

शीर्षकमे 'दिल्ली' आधुनिक महानगरक प्रतीक अछि, आ 'पार्क' सार्वजनिक विश्रामक। मुदा रचनामे विश्राम निष्क्रिय नहि; ई चर्चा, विवाद, आलोचना, सहानुभूति, असहमति आ आत्म-समीक्षाक श्रम अछि। पार्क सँ गामक दूरी भौगोलिक होइतहुँ चिन्ताक स्तरपर सतत उपस्थित रहैत अछि। पात्र भोजन, निवास, पेंशन, सन्तानक नौकरी, खेती, भाषिक असुरक्षा, शिक्षण, राजनीति, समाज-सेवा आ बुढ़ापा पर लौटि-लौटि सोचैत छथि। फलस्वरूप ई कृति शहरक दर्शनीय स्थलकैं नहि, महानगरीय जीवनक भीतर जीवित ग्रामीण स्मृतिक मंच बनबैत अछि।

एहि विधाक उपलब्धि आ सीमा दुनू अछि। लेखक भिन्न-भिन्न विचार कैं लघु प्रसंगक भीतर रखि सकैत छथि; मुदा पात्र सभ जखन लगातार लम्बा विश्लेषण देब लगैत छथि तखन कतहु-कतहु व्यक्ति-विशिष्ट बोली दबि जाइत अछि आ लेखकीय विचार प्रधान भऽ उठैत अछि। शब्दचित्रक 'देखल गेल' गुण आ निबन्धक 'समझाओल गेल' गुणक ई संगम रचनाक विशिष्टताओ अछि आ ओकर आलोचनात्मक तनाव सेहो।

रचनात्मक स्थापत्य : नौ खण्डक क्रमिक विस्तार

नौ खण्डमे कथा-विकास रेखीय उतार-चढ़ावसँ नहि, विषय-विस्तारसँ होइत अछि। प्रारम्भिक भेटक आधार बनल गाम आ शहरक तुलना क्रमशः भाषिक पहचान, अवकाशप्राप्त जीवन, आवासक आकांक्षा, रोजगार, परिवारक विघटन, सार्वजनिक विश्वास, सामाजिक उत्तरदायित्व आ राजनीतिक-स्मृतिक बहस धरि पहुँचैत अछि। एहि क्रममे एकटा शिथिल मुदा स्पष्ट बौद्धिक एकता अछि : गाम छोड़ि शहरमे अयल मनुष्य अपन दायित्व आ अपनत्वक पुनर्परिभाषा कोना करय? पार्क एहि प्रश्नक प्रयोगशाला अछि।

नौ खण्डक पृथक पाठविश्लेषण

पहिल खण्ड : श्याम बाबू, विवेक आ 'गाम'क कल्पित वापसी

प्रारम्भमे श्याम बाबू दिल्लीमे पुत्र विवेकक संग रहैत अवकाशप्राप्त व्यक्ति छथि। सेवानिवृत्तिक बाद जीवनक रीति, गाम जएबाक इच्छा, शहरक सुविधा आ गामक स्मृति एकहि घरेलू प्रसंगमे उठैत अछि। दिल्लीक पार्कक नामसँ आरम्भ भेल दृश्य धीरे-धीरे प्रश्नमे बदलैत अछि : अपन गामसँ सम्बन्ध स्नेहक अछि, व्यवहारक अछि अथवा केवल स्मृतिक? लेखक एतय गामकेँ मात्र आदर्श बनाकऽ नहि रखैत छथि; भोजन-प्रबन्ध, सामाजिक दूरी आ बदलल परिस्थितिक व्यावहारिक प्रश्न सेहो उठबैत छथि।

एकटा कुकुरक प्रसंग विशेष अर्थवान अछि। मानव आ पशुक सम्बन्धक तुलना करैत सहचर्य, स्वामित्व, अधिकार आ विश्वास पर प्रश्न उठैत अछि। एहि प्रसंगक तीक्ष्णता एतय अछि जे मनुष्यक स्वार्थपूर्ण सम्बन्ध जखन आलोचनाक विषय बनैत अछि तखन पशुक निष्ठा नैतिक दर्पणक काज करैत अछि। मुदा पशु–मनुष्य तुलना जँ अत्यधिक सामान्यीकृत कयल जाय तखन मनुष्यक सामाजिक सम्बन्धक जटिलता सरल नैतिक द्वैत बनि जाएबाक जोखिमो उपस्थित अछि। एहि कारण प्रथम खण्डकेँ समूच रचनाक वैचारिक बीज मानल जा सकैत अछि।

दोसर खण्ड : खुशवंत सिंहक पंजाबी अनुभूति आ भाषिक सहवास

दोसर खण्डमे खुशवंत सिंहक प्रवेशक संग पार्क एकटा बहुभाषिक भेट-स्थल बनि जाइत अछि। पंजाबीभाषी सेवाविरामप्राप्त व्यक्तिक दृष्टि मैथिलीभाषी कथावाचकक दृष्टिक समानान्तर चलैत अछि। अपन मातृभाषा, आनो भाषाक संग सहवास, दिल्लीक बहुक्षेत्रीय निवास आ भाषिक परिचयक प्रश्न एतय उठैत अछि। लेखक एकहि पात्रक माध्यमसँ बहुभाषिक दिल्लीक आकृति उभारैत छथि : नगर एक भाषा-समुदायक सम्पत्ति नहि, अनेक प्रवासक साझा परिणाम अछि।

ई खण्ड मैथिलीक पाठक लेल महत्त्वपूर्ण एहि अर्थमे अछि जे आत्मभाषाक स्नेह आ परभाषाक सम्मान एक-दोसराक प्रतिपक्ष होयबाक बाध्यता नहि। यद्यपि संवादक किछु मोड़पर सांस्कृतिक अथवा क्षेत्रीय स्वभावपर सामान्य कथन भेटैत अछि; ताहि कथन कैं पात्रक वैयक्तिक अनुभव मानब उचित होयत, समाज-विज्ञानक सिद्ध तथ्य नहि। एहि सीमासँ अवगत रहला पर खण्डक बहुभाषिकता ओकर उपलब्धि बनैत अछि।

तेसर खण्ड : अजय बाबूक प्रशासनिक अनुभव आ सेवाविरामक बादक गाम

भारतीय प्रशासनिक सेवासँ सम्बद्ध अजय बाबूक परिचय पेशागत प्रतिष्ठा आ गामक स्नेहक बीच भिन्नता स्पष्ट करैत अछि। परिवारक सदस्य शहरमे स्थापित छथि, मुदा पूर्वजक गामक स्मृति अबहूँ जीवित अछि। सेवाविरामक बाद घर कत्तय बनाओल जाय, सामाजिक उपयोगिता कोना बचाओल जाय आ पुश्तैनी स्थानक कर्तव्य कोन रूपमे निभाओल जाय—एहि सभ प्रश्नसँ खण्ड विचारप्रधान बनैत अछि।

एतय गाममे वापसी भावुक प्रस्ताव नहि, दायित्व, संसाधन, परिवारक अपेक्षा आ व्यावहारिक कठिनाइक प्रश्न अछि। लेखकक प्रेरक स्वर ग्रामोन्मुख अछि, मुदा उपयुक्त आलोचना ई कहत जे सभ अवकाशप्राप्त व्यक्तिक आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य, जमीनसँ सम्बन्ध आ पारिवारिक परिस्थिति एकसमान नहि होइत अछि। कथोपकथन जखन व्यक्तिगत विकल्पक बहुलता मानि लेत अछि तखन ओकर सामाजिक आग्रह अधिक विश्वसनीय भऽ उठैत अछि।

चारिम खण्ड : खन्ना साहेबक शरीर, भाषा आ आश्रयक अनुभव

खन्ना साहेब पार्कमे अपन सक्रिय उपस्थितिक कारण पाठकक ध्यान खींचैत छथि। पैदल चलब, शारीरिक अभ्यास, हास-परिहास, पंजाबीभाषी वातावरण आ परिवारक संग सम्बन्ध एतय शहरी अवकाशक अलग रूप उपस्थित करैत अछि। खण्ड केवल बुढ़ापक निष्क्रियता नहि देखबैत; सेवा-समाप्तिक बाद अपन शरीर आ समयपर अपन अधिकार बनौने रखबाक इच्छा सेहो देखबैत अछि।

खन्ना साहेबक पुत्रक शिक्षण, उच्च अध्ययन आ पेशागत गतिशीलताक प्रसंग घर-परिवारक सीमासँ महानगरीय प्रतिस्पर्धा धरि पहुँचैत अछि। एहिमे शिक्षा उन्नतिक साधन अछि, मुदा घरमे बड़का-बुजुर्गक स्थान अस्थिर बनि सकैत अछि। एहने अन्तरद्वन्द्वक कारण पात्र मात्र हास्यरंगक व्यक्ति नहि रहि सामाजिक परिवर्तनक संवाहक बनैत छथि। लेखकक एक सीमा ई अछि जे लम्बा वक्तव्य पात्रकेँ विचारक बना दैत अछि; तैओ एहि पात्रसँ पुस्तकक स्वरमे सहजता आ भिन्नता प्रवेश करैत अछि।

पाँचम खण्ड : सुधाकरजी, अध्यापन, अभाव आ सामाजिक असमानता

सुधाकरजीक प्रसंग कथाकेँ वेतन, आर्थिक संघर्ष, शिक्षण-पेशा, सन्तानक अध्ययन आ पारिवारिक दायित्वक कठिन धरातलपर अनैत अछि। अनेक सन्तानक शिक्षा, आवासक आकांक्षा आ सीमित साधनक विवेचन शहरक विकासगाथा पर आवश्यक प्रश्न उपस्थित करैत अछि : सभ व्यक्ति शिक्षाक मूल्य मानैत छथि, मुदा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा धारण करबाक आर्थिक क्षमता सभक समान नहि। एहिमे शिक्षकीय श्रम आ परिवारक भविष्यक बीच परस्पर निर्भरता स्पष्ट अछि।

भूमि, मकान, ऋण अथवा संचयक चर्चा उत्तर-मध्यवर्गीय सुरक्षा-कामनाक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। रचना एतय उपभोगक चमक नहि, जीवन-निर्वाहक गणित देखबैत अछि। किछु प्रसंगमे कथा उपदेशात्मक भऽ उठैत अछि, मुदा सुधाकरजीक जीवनानुभव राजनीतिक नारा नहि, प्रत्यक्ष रोजमर्राक संकट लऽ अनैत अछि। पार्क एतय

केवल अवकाशक स्थल नहि रहि असमान जीवन-स्थितिक तुलनात्मक पाठशाला बनि जाइत अछि।

छठम खण्ड : रमणजीक पीढ़ीगत दृष्टि, निवास आ स्थानीय उत्तरदायित्व

रमणजी शिक्षित आ रोजगार-सापेक्ष जीवनक अनुभव लऽ पार्कमे अबैत छथि। सन्तानक अध्ययन, विदेश अथवा आन नगरमे रोजगार, पारिवारिक विखण्डनक आशंका आ वृद्धावस्थाक सुरक्षा एहि खण्डकेँ प्रभावित करैत अछि। शहरमे जीवन सुविधाजनक लगैत अछि, मुदा परिवारक भौगोलिक विस्थापनसँ आत्मीयताक प्रश्न समाप्त नहि होइत अछि। कथावाचक ग्रामीण समाजक सामूहिक जीवनक स्मृतिक मुकाबला शहरी अनामितासँ करैत छथि।

खण्डक उत्तरार्द्धमे गाममे परिवर्तनक सम्भावना, स्थानीय सेवा आ सामाजिक उत्तरदायित्वक प्रसंग जोर पकड़ैत अछि। प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि : गामसँ दूर रहि अर्जित ज्ञान, पूँजी आ पेशागत कौशल केँ पुनः समाजोपयोगी कोना बनाओल जाय? ई लोकहितमुखी आग्रह कृतिक नैतिक मेरुदण्ड अछि। मुदा गामक भीतरी जातीय, आर्थिक आ लैंगिक विषमता पर पर्याप्त ठोस विवरण नहि देल गेलासँ ग्राम-सुधारक प्रस्ताव किछु व्यापक आ अमूर्त रहि जाइत अछि।

सातम खण्ड : अनाम आगन्तुक, चिकित्सा-सेवा आ विश्वासक संकट

एहि खण्डमे पार्कक एकटा नब आगन्तुकसँ परिचय सामाजिक अविश्वास, परिचयक आवश्यकता आ सेवाक नैतिकता दिस बढ़ैत अछि। आगन्तुकक डॉक्टर-किरण सम्बन्धी परिचयक संग ग्राम-जीवन, रोगीक उपचार, पेशागत सेवा आ पारिवारिक संरचनाक प्रश्न उठैत अछि। विशेष रूपसँ महानगरमे सामाजिक सम्बन्ध आरम्भ करबाक कठिनाई उभरैत अछि : अपरिचित व्यक्तिक प्रति भरोसा करब सहज नहि रहल अछि।

चिकित्सा-सेवा आ गाम वापसीक प्रसंग नागरिक उत्तरदायित्वक ठोस सम्भावना देखबैत अछि। मुदा व्यक्तिगत सदिच्छा सँ सामुदायिक स्वास्थ्यक सम्पूर्ण व्यवस्था बनि

नहि जाइत; ओकरा लेल संस्था, आधारभूत ढाँचा, प्रशिक्षित सहयोगी आ स्थानीय सहभागिता चाही। एहि अन्तरकेँ ध्यानमे राखि पढ़लापर खण्ड समाज-सेवाक सरलीकृत महिमामण्डनसँ आगाँ निकलि व्यवहारिक नीति-प्रश्न उठबैत अछि।

आठम खण्ड : बुधना, मरूख ककाआ ग्रामीण जीवनक बदलैत नैतिक अर्थ

संध्याकालक पार्कक परिवेशमे बुधना नामक व्यक्ति आ मरूख ककाक कथोपकथनसँ गामक बदलैत दृश्य विस्तार पबैत अछि। जमीन, श्रम, खेती, पारिवारिक निर्णय, उधार, रोजगारक आकांक्षा आ गाम छोड़ि देबाक विवशता एहि प्रसंगमे एकसाथ प्रवेश करैत अछि। बुधना गाममे रहबाक पक्षक आदर्शक प्रतिरूप मात्र नहि; हुनक बातक भीतर आर्थिक अस्थिरता, सामाजिक अनुभव आ अपन ठामक प्रति जटिल लगाव अछि।

विशेष महत्त्व एहि खण्डक ‘ककरा लेल गाम?’ प्रकारक मूल प्रश्नमे अछि। गाम की केवल पुश्तैनी घर अछि, अथवा जीविका, सामाजिक न्याय, व्यक्तिगत सम्मान आ सामुदायिक सहयोगक व्यवहारिक जाल? कथावाचक जे आशावादी ग्रामीण भविष्य देखैत छथि, ओकर कसौटी श्रमजीवी लोकक वास्तविक जीवन अछि। आठम खण्ड एहि कारण ग्रामीण जीवनक रोमानी चित्रणकेँ चुनौती दैत अछि; विडम्बना ई जे किछु चर्चा आर्थिक कारकसँ बढ़ि नैतिक शिक्षामे परिणत भऽ जाइत अछि, जकरा अधिक दृश्यात्मक विस्तार चाही छल।

नवम खण्ड : रघुवंश बाबू, सार्वजनिक कार्य आ राजनीतिक स्मृति

नवम खण्ड अन्य सभसँ विस्तृत अछि। रघुवंश बाबूक प्रवेशसँ पार्कक गपशप जन-सेवा, संगठन, स्थानीय राजनीति, सार्वजनिक संसाधन, चुनावक अनुभव आ ऐतिहासिक स्मृतिक दिशामे फैलि जाइत अछि। रचना सेवामुखी व्यक्ति, सार्वजनिक प्रतिष्ठा आ राजनीतिक दावाक बीचक अन्तर जाँचबाक अवसर दैत अछि। दिल्ली नगरक नागरिक समस्यासँ आरम्भ भेल चर्चा संस्थागत व्यवहार तक पहुँचैत अछि। एहि विस्तारसँ पूर्ववर्ती आठ खण्डक अनेक विषय एक बेर पुनः संयोजित भऽ उठैत अछि।

एहि खण्डमे बीसम शताब्दीक घटनाक संकेत आ विशेषतः १९८४ सँ सम्बद्ध राजनीतिक-सामाजिक स्मृतिक चर्चा उपस्थित अछि। एहन विवरणकेँ साहित्यिक पात्रक स्मृति आ दृष्टिकोण मानि पढ़ब चाही; स्वतन्त्र ऐतिहासिक साक्ष्य मानबाक लेल अलग समकालीन दस्तावेज आवश्यक होयत। पुस्तकक नैतिक रुचि सार्वजनिक हित, नागरिक सहभागिता आ शोषणविरोधी आग्रहमे अछि, मुदा ऐतिहासिक व्यक्तिक मूल्याङ्कन कतहु एकतरफा होयबाक आशंका सेहो बनैत अछि।

लम्बा नवम खण्डक एकटा रचनात्मक उपलब्धि ई अछि जे सार्वजनिक पार्क निजी संवादसँ विस्तृत राजनीतिक समुदाय धरि पहुँचैत अछि। समान रूपसँ एकटा शिल्पगत प्रश्न सेहो अछि : बहसक आकार एतेक बढ़ि जाइत अछि जे दृश्य, चरित्र, स्थानक भौतिक अनुभूति पाछाँ छुटि सकैत अछि। तथापि अन्तिम मुद्रित पृष्ठपर रघुवंश बाबूक संग संवादक समाप्ति आ लेखकक दिल्ली-प्रवासक अनुभवक पुनर्स्मरण समूच पुस्तकक वृत्तकेँ समेटैत अछि।

पात्रयोजना आ कथावाचकक स्थिति

श्याम बाबू, खुशवंत सिंह, अजय बाबू, खन्ना साहेब, सुधाकरजी, रमणजी, डॉक्टर किरण, बुधना आ रघुवंश बाबू—ई नाम सभ मात्र पृथक व्यक्ति नहि, सामाजिक अनुभवक प्रतिनिधि दृष्टिकोण बनि उभरैत छथि। पात्रसँ-पात्रक संक्रमणमे अलग भाषिक, पेशागत, वर्गीय आ पीढ़ीगत अवस्थान सभ भेटैत अछि। एही संयोजनसँ लेखक दिल्लीक भीतरी भिन्नताकेँ उजागर करैत छथि।

कथावाचक सामान्यतः जिज्ञासु सहयात्री छथि। ओ पात्रसँ प्रश्न करैत छथि, विचारक आग्रह रखैत छथि, विरोध करैत छथि, फेर सहमत वा असहमत भऽ अगिला प्रसंगपर जाइत छथि। ई संवाद-रचना पाठककेँ निष्क्रिय दर्शक बनबाक बजाय विचारमे शामिल करैत अछि। मुदा कथावाचक अनेक ठाम निर्णायक नैतिक स्थान ग्रहण करैत छथि; परिणामस्वरूप असहमत पात्र अपन पक्षक पूरा जटिलता उजागर नहि करि पबैत छथि।

एहि पुस्तकक आलोचनात्मक पाठमे लेखकक मत आ पात्रक सामाजिक स्थिति कैं सदिखन अलग-अलग पहिचानब आवश्यक अछि।

भाषा, बोली आ संवादक लय

पोथीक प्रमुख भाषिक शक्ति संवादप्रधान मैथिली अछि। देहाती अनुभवक स्मृतिसँ बनल वाक्यरचना, प्रश्नवाचकता, बोलचालक प्रत्युत्तर, हास्य आ दैनिक जीवनक शब्द-संसार रचनाकैं जीवित करैत अछि। दिल्लीक विविधभाषिक सन्दर्भक कारण पंजाबी, हिन्दी, अंग्रेजी आ प्रशासनिक-पेशागत शब्दावलीक छाप स्वाभाविक रूपसँ देखाइत अछि। ई मिश्रण बिना विचारक 'भाषिक अशुद्धि' नहि, महानगरीय सार्वजनिक भाषिक जीवनक संकेत अछि।

परस्पर प्रश्नक पुनरावृत्ति पाठकैं श्रवणीय बनबैत अछि; पुस्तककैं एक-एक दृश्य रूपमे वाचन, नाट्यपाठ अथवा श्रव्य प्रस्तुति लेल उपयोगी ठहराओल जा सकैत अछि। मुदा लम्बा एकालाप संवादक स्वाभाविक गतिकैं बाधित करैत अछि। पात्रक वय, पेशा आ क्षेत्रक अनुसार विशेष शब्द, भावभंगिमा आ लहजाक अन्तर आओर मुखर रहित तऽ शब्दचित्रक कलात्मक प्रभाव बढ़ित। उपदेशात्मक निष्कर्षक स्थानपर कतहु अधिक सूक्ष्म विडम्बना आ मौनक प्रयोग सम्भव छल।

गाम–शहर सम्बन्ध : स्मृति, सुविधा आ असमान अवसर

दिल्लीक पार्कक मूल द्वन्द्व गाम आ शहरक सरल विरोध नहि। गाम आत्मीयता, परम्परा, अपनापन आ स्मृतिक संकेत अछि; शहर रोजी, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, गतिशीलता आ अनेक भाषाक सहवासक सम्भावना दैत अछि। एकटा स्थलमे सहज सम्बन्ध अछि मुदा अवसर सीमित; दोसर स्थलमे अवसर पैघ अछि मुदा सम्बन्ध अनाम वा औपचारिक भऽ सकैत अछि। लेखक एहि द्वन्द्वमे गामक पक्षमे सहानुभूति रखैत छथि, तथापि कथा-कथनक भीतर आर्थिक कारणक महत्त्व बारम्बार प्रकट होइत अछि।

एहि कृतिक उत्कृष्ट सामाजिक प्रश्न ई अछि जे प्रवासक बाद मनुष्य अपन गामक प्रति कर्तव्यक कल्पना कोन रूपमे करैत अछि। केवल नियमित लौटब पर्याप्त नहि, गाममे शिक्षा, स्वास्थ्य, जल, आजीविका, सार्वजनिक व्यवहार आ सहकारक संरचना कोना बदलय? सभ अवकाशप्राप्त व्यक्ति एकहि उपायक अनुसरण नहि कऽ सकैत छथि। एहि कारण कृतिक मूल्य ओकर निश्चित समाधानमे कम, विविध जीवन-संसारक प्रश्नकेँ सार्वजनिक बहस बनाबैमे अधिक अछि।

एक महत्त्वपूर्ण अनुपस्थिति सेहो देखाइत अछि। गामक स्त्री-श्रम, भूमिहीन परिवार, अलग जाति-वर्गक अनुभव, कामकाजी महिलाक दृष्टि आ शहरी श्रमिक महिलाक आवाज अपेक्षाकृत कम केन्द्रित अछि। परिवार आ सन्तानक उदाहरण अनेक अछि, मुदा महिला-पात्र सभक स्वतन्त्र अनुभव बराबर स्थान नहि पबैत अछि। एहि सीमा पर विचार कयने बिना 'गाम'क एकीकृत सामूहिक छवि स्वीकार कयब अतिशयोक्ति होयत।

नागरिक सार्वजनिकता : उद्यानक अर्थ आ सीमित लोकतन्त्र

पार्कक सार्वजनिक स्थानक रूपमे अर्थ विशेष ध्यान देबाक योग्य अछि। एतय नौकरीक पदक्रम तत्काल निर्णायक नहि; सेवानिवृत्त कर्मचारी, शिक्षक, डॉक्टर, प्रशासकीय सेवासँ जुड़ल लोक आ दोसरो पृष्ठभूमिक व्यक्ति एकहि बेंचपर बातचित करि सकैत छथि। ई वाचिक सार्वजनिकता नागरिक समाजक सूक्ष्म रूपक अछि। परिचितक दायरा बढब, भिन्न मत सुनब आ अनजान व्यक्तिक संग विश्वास बनायब एहि स्थानक सांस्कृतिक उपलब्धि अछि।

मुदा समान स्थानमे बसलासँ समान संसाधन स्वतः नहि बनि जाइत। समाजमे जे आवाज पहिनेसँ प्रभावशाली अछि से पार्कक बहसमे सेहो अधिक सुनाइ देत। दिल्लीक पार्कमे प्रौढ़ शिक्षित पुरुषक वर्चस्व एहि सन्दर्भमे विचारणीय अछि। एहि तथ्यसँ रचनाक महत्त्व कम नहि होइत; बरु ई प्रश्न उठैत अछि जे पार्कक चुप रहनिहार लोक—कामकाजी स्त्री, परिचारक, बेचैनीसँ गुजरैत नवयुवक, प्रवासी मजदूर—कत्तय छथि? ई आलोचनात्मक रिक्ति आगाँक मैथिली शहरी लेखन लेल नब सम्भावना देखबैत अछि।

बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक विवेचन : विधागत भेद आ पाठकीय सेतु

दिल्लीक पार्क कैँ बाल-साहित्यक इतिहासमे प्रत्यक्ष बाल-पोथी घोषित करब अनुचित होयत। प्रथम, पुस्तक स्वयं शब्दचित्र कहैत अछि। दोसर, ओकर लम्बा सामाजिक-राजनीतिक संवाद मुख्यतः प्रौढ़ पाठककेँ सम्बोधित अछि। तेसर, कथाक केन्द्रमे बालचरित्रक अनुभवक स्वतन्त्र विकास नहि, अपितु बड़का पीढ़ीक स्मृति आ नागरिक बहस अछि। ताहि लेल तुलनाक उचित आधार विधा, संवादक शिक्षात्मक उपयोग आ गाम–शहरक बदलैत सामाजिक ज्ञान अछि—बाल साहित्यक कैननमे स्वतः समावेश नहि।

विदेहक ‘शिशु उत्सव’ पोथी-सूचीमे बाल-काव्य, बाल-चित्रकथा, लोककथा, कौमिक्स, बाल-उपन्यास, विज्ञान-कथा, अनूदित सचित्र कथा आ किशोर साहित्यक अनेक पृथक धारा एकहि स्थानपर सूचीबद्ध छथि। प्रीति ठाकुरक गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा (२००८), मैथिली चित्रकथा (२००९), मिथिलाक लोकदेवता (२०१०), विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (२०१२) तथा हुनक अनूदित चित्रकथा शृंखलाक पुस्तक-विवरण दृश्याधारित आ भाषान्तरणाधारित बाल-पाठकक एक विकास-रेखा सूचित करैत अछि। ई प्रकाशन-वर्ष सभ विदेहक सूचीमे उल्लिखित वर्ष छथि; समूच मैथिली बाल-साहित्यक आरम्भ अथवा प्रथमत्वक स्वतन्त्र इतिहासक प्रमाण नहि।

तहिना विदेह-सूचीमे जगदानन्द झा ‘मनु’क चोनहा, जगदीश प्रसाद मण्डलक तरेगन आ नै धाड़ैए, नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क स्वर्ण कमल, मुन्नाजीक तीन टा बाल नाटक आ खुरलुच्ची, योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क हमर गाम तथा पिरामिडक देशमे, आ गजेन्द्र ठाकुरक अनेक बाल/किशोर उपन्यास उल्लिखित छथि। ई ग्रन्थनाम शिशु, बाल आ किशोर पाठक लेल भाषिक संसाधनक विस्तार देखबैत अछि। मुदा मात्र ग्रन्थसूची पढ़िकऽ एतय ओहि पुस्तक सभक कथानक, पात्रक विकास वा सौन्दर्यगत श्रेष्ठताक निर्णय नहि कयल गेल अछि।

स्वर्ण कमल आ दिल्लीक पार्क एकहि लेखकक सूचीमे भिन्न विधाक उदाहरण छथि। पहिल पोथी विदेहक बाल-साहित्य कोनामे बाल-उपन्यास रूपमे अंकित अछि; दोसर

विदेहक पोथी-विभागमे शब्दचित्र रूपमे। एहि वर्गीकरणक आलोचनात्मक अर्थ अछि जे नन्दक लेखनक पाठक-क्षेत्र केवल एक वयवर्ग वा विधा धरि सीमित नहि। दिल्लीक पार्कमे भाषिक जीवट, सहचर्य, पारिवारिक जिम्मेदारी आ गामक प्रश्न किशोर पाठक लेल चयनित परिचर्चाक विषय बनि सकैत अछि; मुदा समूच कृतिक बाल-उपयुक्तता स्वतः सिद्ध नहि। आयुवर्गसापेक्ष रूपान्तर करबा काल सामाजिक बहसक जटिलता बनौने राखब आ अनुभवक विविधता बढ़ायब आवश्यक होयत।

तुलनात्मक इतिहासक एकटा दोसर महत्त्वपूर्ण पक्ष माध्यमक परिवर्तन अछि। बालकथा आ बाल-चित्रपुस्तक बालक दृश्य-श्रव्य ग्रहणक ध्यान रखैत अछि; दिल्लीक पार्क श्रवणीय नागरिक संवादक लम्बा प्रवाह बनबैत अछि। ई अन्तर स्पष्ट करैत अछि जे बाल-साहित्यक इतिहास केवल पोथीक संख्या नहि, पाठकक आयु, चित्रक भूमिका, भाषाक सरलता, आवाजक विविधता आ सहभागिताक पद्धतिक इतिहास सेहो अछि। एहि कसौटी पर दिल्लीक पार्क बाल-साहित्यक प्रतिद्वन्द्वी नहि, प्रौढ़ पाठकक सामाजिक संवाद पर आधारित एकटा तुलनात्मक सीमा-पाठ अछि।

सौन्दर्यगत उपलब्धि आ आलोचनात्मक आपत्ति

कृतिक प्रमुख उपलब्धि पहिल—दिल्लीक शहरी अनुभवकेँ मिथिलाक गाम-स्मृतिसँ जोड़ि देब; दोसर—सार्वजनिक पार्ककेँ बहुभाषिक लोकसंवादक जीवित स्थल बनायब; तेसर—सेवाविरामक बादक जीवनकेँ निष्क्रिय नहि, चिन्तनशील देखब; चारिम—पेशागत भिन्नताक संग व्यक्तिगत अनुभवक अन्तर उजागर करब; पाँचम—सामाजिक दायित्वकेँ निजी सम्पन्नतासँ अलग प्रश्न बनायब। पुस्तकक ऐतिहासिक उपयोगिता एहि सामाजिक अनुभवक अभिलेखी स्वरूपमे सेहो अछि : ई एक विशिष्ट समयक दिल्लीमे प्रवासी मैथिली संवेदनाक कल्पनात्मक साक्ष्य दैत अछि, यद्यपि सांख्यिकीय इतिहासक स्थान नहि लैत अछि।

एहि उपलब्धिक समानान्तर तीन मुख्य आपत्ति उठैत अछि। पहिल, उपदेशात्मक विस्तार अनेक ठाम दृश्य-निर्माण आ नाटकीय संक्षिप्तता केँ कम करैत अछि। दोसर,

पात्रक वैचारिक मत कतहु लेखकक स्थिर निष्कर्षक वाहन बनि जाइत अछि; भिन्न आवाजक वास्तविक टकराहट सीमित रहि जाइत अछि। तेसर, सामाजिक संसारमे प्रौढ़ पुरुषक दृष्टि केन्द्रित अछि; श्रमिक वर्ग, स्त्री अनुभव आ युवा पीढ़ीक प्रत्यक्ष आवाज आओर सघन होइत तऽ सामाजिक चित्र अधिक व्यापक भऽ सकैत छल। ई आपत्ति रचनाकेँ अस्वीकार करबाक तर्क नहि; ओकर कलात्मक सम्भावनाक यथार्थ मूल्याङ्कन अछि।

निष्कर्ष

दिल्लीक पार्क मैथिली शब्दचित्र-विधामे शहरी प्रवासक एकटा महत्त्वपूर्ण संवादात्मक प्रयोग अछि। नौ खण्डक आरम्भ गामक स्मृति आ अवकाशप्राप्त व्यक्तिक दैनिक जीवनसँ होइत अछि, आ अन्त नागरिक संस्था, सामाजिक नैतिकता आ राजनीतिक स्मृति धरि पहुँचैत अछि। ई विस्तार पुस्तकक सामाजिक आकांक्षा स्पष्ट करैत अछि। तकर सर्वोत्तम पृष्ठ सभमे पार्कक सामान्य बातचीत लोकसमाजक गम्भीर प्रश्न बनि उठैत अछि; कम सफल अंशमे विचार-विस्तार दृश्यात्मक कलाकेँ आच्छादित करैत अछि।

कृतिक स्थायी योगदान कोनो एक गाम-समर्थक निष्कर्षमे नहि, बल्कि एहि प्रश्नक पुनरावृत्तिमे अछि जे आधुनिक नगरमे रहैत मनुष्य अपन भाषा, अपन गाम, अपन परिवार आ व्यापक समाजक प्रति जिम्मेदारी कोना समझय। बाल-साहित्यक ग्रन्थसूची सँ एकर तुलना स्पष्ट करैत अछि जे मैथिली गद्यक अलग-अलग पाठकीय संसारमे एकहि सामाजिक प्रश्न भिन्न रूप लऽ सकैत अछि। अतः दिल्लीक पार्कक उचित स्थान प्रौढ़ नागरिक संवादक शब्दचित्रमे अछि; ओकर अध्ययन साहित्यिक रूप, सामाजिक सन्दर्भ आ आलोचनात्मक दूरी—तीनूकेँ संग रखि करबाक चाही।

अध्याय ९

याचक के नजि

दृश्य भिक्षावृत्तिसँ अदृश्य याचनाक सत्ता-तन्त्र धरि

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘याचक के नजि’ पहिल दृष्टिमे भिखमँगाक प्रति समाजक उपेक्षापूर्ण दृष्टि सँ आरम्भ होइत अछि, मुदा क्रमशः ओहि नैतिक असमानताकेँ सोझाँ अनैत अछि जाहिमे दृश्यमान भिक्षुककेँ निन्दित कएल जाइत अछि आ पद, सम्पर्क, सिफारिश, कृपा, ठेका अथवा राजनीतिक लाभक याचना प्रतिष्ठाक वस्तु बनि जाइत अछि। २०२२ मे प्रकाशित एहि मैथिली शब्द-चित्रमे नौ क्रमांकित खण्ड अछि। कथा-समय, पात्रक आवागमन आ सुभान भायक सामाजिक अनुभवक विस्तार एकरा स्वतंत्र रेखाचित्र सभक संग्रहक बदला एकटा क्रमविकसित, संवादप्रधान, व्यंग्यात्मक आख्यानक रूप दैत अछि। एहि आलेखक मूल तर्क ई अछि जे पोथीक केन्द्रीय सौन्दर्य ‘याचक’ शब्दक अर्थ-विस्तारमे निहित अछि : भिक्षा मात्र कटोरा लऽ कऽ माँगब नहि, बल्कि संसाधन पर अधिकार रखनिहार संस्थानक आगाँ निरन्तर अनुकम्पा खोजब सेहो सामाजिक याचनाक रूप भऽ सकैत अछि।

आलेखमे पहिने पाठक विधा, शीर्षक, कथा-दृष्टि, पात्र-संरचना, भाषिक रजिस्टर, हास्य-व्यंग्य आ सामाजिक इतिहासक परीक्षण कएल गेल अछि; तकर बाद मुद्रित पृ. १५–११६ मे अवस्थित नौ खण्डक क्रमसँ पृथक पाठविश्लेषण प्रस्तुत अछि। बाल-साहित्यक संग तुलना कृति केँ अनुचित रूपसँ बाल-उपन्यास मानि नहि, बल्कि नन्दक ‘स्वर्ण कमल’ आ विदेह-शिशु-उत्सवमे अभिलेखित बाल/किशोर रचना-परम्पराक शैक्षिक, भाषिक आ पाठकीय भिन्नताक आधारपर कएल गेल अछि। एहि प्रक्रियामे विदेहक पोथी-सूची, शोध-अनुक्रमणिका, लेखक-समग्रपर उपलब्ध आलोचना आ बाल-साहित्यक प्रासंगिक अभिलेख स्रोत बनल अछि।

विषय-प्रवेश : शीर्षकक प्रश्न आ आलोचनाक मूल प्रस्ताव

‘याचक के नञि’क शीर्षक अपन व्याकरणिक बनावटमे प्रश्नात्मक अछि। ओ प्रश्न केवल ई नहि जे के याचक छथि; ईहो जे के नहि छथि। समाजक दृश्यमान भिखारी, निर्धन श्रमिक, बेरोजगार युवक, छोट दुकानदार, अधिकारी, नेता आ सत्ता-पोषित मध्यस्थ—सभक माँग समान रूपसँ देखल नहि जाइत अछि। आर्थिक आवश्यकता, अधिकारसँ वंचना, कृपा-प्राप्ति आ सुविधाक दलालीक बीच फरक करैत लेखक ‘माँगब’ क्रियाक नैतिक वर्गीकरणपर प्रहार करैत छथि। ई अन्तर पोथीक आरम्भिक भिक्षुक-विमर्शसँ अन्तिम मुद्रित पृष्ठपर पाठकक निर्णयकेँ सौंपल गेल प्रश्न धरि संरचनात्मक सूत्र बनि रहैत अछि। [१, मुद्रित पृ. १५–२५, १०८–११६]

एहि कृतिक साहित्यिक महत्त्व परखबाक समय एकटा बुनियादी सावधानी आवश्यक अछि। शीर्षकक देवनागरी रूप ‘नञि’ अछि; रोमन प्रकाशकीय रूप ‘Yachak ke Nai’। रोमन ‘Nai’ केँ बिना मूल लिपि देखनहि ‘नव’ अर्थमे पढ़ि लेल जाए तँ पोथीक नकारात्मक-प्रश्नात्मक व्यंजना नष्ट भऽ जाइत अछि। विदेह पोथी-सूचीमे देवनागरी नाम ‘याचक के नञि’ दर्ज अछि। एहि कारण एहि अध्ययनमे मूल नामक रूपक सम्मान करैत ‘नञि’केँ शीर्षक-चिन्तनक केन्द्र मानल गेल अछि। [१, शीर्षपृष्ठ; २]

कथामे सुभान भाय एक निरन्तर उपस्थित पात्र छथि। हुनक जीवन-सम्पर्क, परिजन, परिचित, रोजगार आ संस्थागत सम्बन्ध क्रमशः खुलैत अछि। एकर संग एकटा कथा-संचालक ‘नायक’क उपस्थिति पाठकेँ स्मरण करबैत रहैत अछि जे ई समाजक शाब्दिक प्रतिलिपि नहि, बल्कि चयनित दृश्य, प्रश्न, वार्तालाप आ दृष्टिकोणसँ निर्मित साहित्यिक प्रस्तुति अछि। ‘शब्द-चित्र’क अर्थ एतऽ स्थिर चित्र नहि, बहुतो दृश्य जोड़ि कऽ सामाजिक रूपरेखा बनब अछि।

प्रकाशन, पाठ-सीमा आ प्रमाण-पद्धति

मूल पोथीक प्रकाशन-विवरणमे नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’ लेखक, गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच (उपरदाहा, जिला दरभंगा) प्रकाशक, प्रथम संस्करण २०२२ आ सहयोग-राशि २०० टाका उल्लिखित अछि। पुस्तकक अन्दर आरम्भिक समर्पण, प्रशंसात्मक भूमिका तथा लेखकक निवेदनक बाद मुख्य रचना मुद्रित पृ. १५ सँ आरम्भ होइत अछि आ पृ. ११६ पर समाप्त होइत अछि। नौ खण्डक पहिल मुद्रित पृष्ठ क्रमशः १५, २६, ४३, ५५, ६२, ७६, ९०, १०२ आ १०८ अछि। [१, आरम्भिक प्रकाशन-पृष्ठ; पृ. १५–११६]

पाठ-साक्ष्यक संदर्भमे एक सीमा घोषित करब आवश्यक अछि। खण्डक आरम्भ-बिन्दु, पात्र, प्रसंग आ कथानक-क्रमक परीक्षण कएल गेल अछि, मुदा प्रत्यक्ष उद्धरणक नामपर अनुमानित पाठ प्रस्तुत नहि अछि।

‘शब्द-चित्र’ पोथीक स्वयं घोषित विधा अछि; भूमिकामे एकर आकार रेखाचित्र, आख्यान आ उपन्यासक सीमा-समीप रखल गेल अछि। आलोचनात्मक अध्ययनमे लेखक अथवा भूमिकाकारक वर्गीकरणकेँ अन्तिम आदेश नहि, पाठक संरचनाक संग जाँचबाक प्रस्ताव मानल गेल अछि। ई निर्णय एहि कारण महत्वपूर्ण अछि जे नौ खण्ड स्वयं-संपूर्ण स्वतंत्र रेखाचित्र नहि, एकटा मुख्य सामाजिक संसारक क्रमिक विस्तार देखबैत अछि। [१, भूमिका : मुद्रित पृ. ५–१२; मुख्य पाठ : पृ. १५–११६]

विधागत स्वरूप : शब्द-चित्र, कथात्मक रेखाचित्र आ लघु-उपन्यासक सीमा

शब्द-चित्रमे भाषा ककरो व्यक्तिक बाह्य रूपरेखा भर नहि खींचैत; ओ व्यक्तिक चाल-ढाल, समाजमे ओकर स्थान, ओकर कहब-करबक अन्तर आ ओकरा घेरने सम्बन्ध-व्यवस्थाकेँ सेहो प्रकट करैत अछि। सामान्य रेखाचित्रमे एक पात्र अथवा क्षण-विशेष केन्द्रमे रहि सकैत अछि; मुदा एहि पोथीमे पात्रक जीवनक कारण-परिणामक कड़ी, सामाजिक संस्थानक हस्तक्षेप आ आवर्ती संवाद मिलि कऽ कथा-जगत निर्मित करैत अछि। एहि दृष्टिसँ एकरा ‘आख्यानात्मक शब्द-चित्र’ कहब अधिक सार्थक अछि।

कथाकार बारम्बार पात्रक कथनसँ वर्णन दिस, आ वर्णनसँ नूतन संवाद दिस मुड़ैत छथि। एहि आवृत्तिमे कथाक समय सदैव एके गति सँ नहि बहैत अछि : कखनो पूर्वक घटना जीवन-इतिहासक रूपमे जुड़ैत अछि, कखनो वर्तमानक भेटघाँट तुरन्त राजनीतिक प्रसंगमे परिवर्तित भऽ जाइत अछि। खण्डक अंकन पाठकेँ चरण-परिवर्तनक अनुभव दैत अछि, मुदा एक प्रकरण दोसरक पात्र-संसारमे प्रवेश करैत रहैत अछि। एहि कारण 'नौ अलग कथा' मानब मूल रचनाक अन्तरसम्बन्ध भंग करब होएत।

ई विधागत प्रयोगक सीमा सेहो अछि। घटनाक सघनता बढ़लापर किछु पात्र संक्षिप्त रूपमे केवल उदाहरण बनि उपस्थित होइत छथि; लेखकक सामाजिक घोषणा कखनो-कखनो दृश्यक स्वाभाविक बहावपर भारी पड़ैत अछि। फेरो लघु-उपन्यासक पूर्ण संरचनात्मक अनुशासन एहि कृतिसँ माँगब उचित नहि; शब्द-चित्रक चयनशीलता लेखककेँ सामाजिक जीवनक अलग-अलग कोण एक मुख्य विषयक चारूकात रखने रहबाक अवसर दैत अछि। एहि दोलनकेँ कमजोरी मात्र मानबाक बदला कृतिक रचनात्मक चुनौतीक रूपमे देखबाक चाही।

नौ खण्डक मूल-रचनाविन्यासित पृथक विश्लेषण

पहिल खण्ड : भिखारीक दृश्य आ सम्मानक असमानता

पहिल खण्डक आरम्भमे सामाजिक दृष्टिक कठोरता चिन्हित होइत अछि : भिक्षुक समाजक हेय-दृष्टिक पात्र अछि, जखनकि ओकरा सँ बहुत उच्च सामाजिक स्थानवाला व्यक्ति सेहो अपन आवश्यकताक पूर्त्ति लेल आनक आगाँ निर्भर रहैत अछि। धार्मिक उच्चारण, भीखक सांस्कृतिक प्रतिष्ठा, आर्थिक विवशता आ सामाजिक उदासीनता—ई सभ एके विमर्शमे आबैत अछि। कथा-संचालक मात्र करुणा नहि माँगैत; ओ पाठककेँ शब्दक अर्थ बदलि कऽ देखबाक आग्रह करैत छथि।

एतऽ लेखक नैतिक विरोधाभास रचैत छथि। आम भिखारीक कटोरा देखाइत अछि; सत्ता अथवा पदक निकट याचना करनिहारक 'कटोरा' प्रतिष्ठा, परिचय आ संस्तुतिक भीतर

लुकायल रहैत अछि। याचना आ श्रमक भिन्नता, दान आ अधिकारक अन्तर तथा आश्रितता आ स्वाभिमानक सम्बन्ध पहिल खण्डमे प्रस्तावना रूपमे उपस्थित अछि। एहि सामाजिक प्रश्नक उत्तर कोनो तत्काल नीतिपाठ नहि; पाठक स्वयं भावी प्रसंग सभमे एकर परीक्षण करथि, ई रचनाक योजना अछि।

शिल्पतः पहिल खण्ड अवधारणात्मक आरम्भसँ चरित्र-आधारित अनुभव दिस बढ़ैत अछि। एकर बल विवादास्पद प्रश्न उठेबामे अछि; सीमा ई जे आरम्भिक प्रतिपादन कखनो उपदेशात्मक लगि सकैत अछि। तथापि ई आरम्भ पोथीक शीर्षक आ अन्तिम प्रश्नक बीच मूल सूत्र स्थापित करैत अछि।

दोसर खण्ड : सुभान भायक जीवन-जगत आ जीविकाक संघर्ष

दोसरा खण्डमे सुभान भाय कथाक जीवन्त केन्द्र बनि उभरैत छथि। हुनक सामान्यता—न घर-घरमे प्रभाव, न स्थायी सम्पन्नता, न अधिकारिक सुरक्षा—ओहि अर्थमे असाधारण अछि जे लेखक एकटा कथित 'बड़का आदमी'क बदला साधारण जीविकानिष्ठ व्यक्तिक अनुभव सँ समाजक बड़का प्रश्न तक पहुँचैत छथि। फूल-पाती, घरक काम, छोट रोजगारी, परिवारक जिम्मेवारी आ परिचित लोकक सलाह आदि संकेत हुनक जीवनकेँ वस्तुनिष्ठ धरातल दैत अछि। [१, पृ. २६–४२]

संवादक बहुलता एतऽ सामाजिक वर्गक भिन्न दृष्टि प्रकट करैत अछि। सुभान भाय स्वयं सहायता, परिश्रम आ सम्भावनाक तौल करैत छथि; आन पात्र तत्काल रोजगार, परिचय, लाभ वा सामाजिक उन्नतिक उपाय सुझबैत छथि। ई अन्तर लेखकक दृष्टिमे बेरोजगारीक मात्र आर्थिक नहि, सांस्कृतिक संकट होयबाक प्रमाण बनैत अछि : रोजगारक अभाव केवल आय घटबैत नहि, सामाजिक सम्मानक मानक सेहो बदलैत अछि।

एहि खण्डक कलात्मक प्रभाव जीवनक छोट विवरण सभसँ बनैत अछि। उपदेश जँ बहुतो ठाउँ उपस्थित अछि तँ ई विवरण ओकरा जमीनी प्रमाण प्रदान करैत अछि। ईहो देखाइत अछि जे सुभान भायक अनुभव केवल व्यक्तिगत संघर्ष नहि; साधनहीनता आ अवसरक असमान वितरणक फल सेहो अछि।

तेसर खण्ड : परिचय, पहिचान आ मध्यस्थताक भाषा

तेसर खण्डमे कथानक सामाजिक परिचय-सम्पर्कक बहसकेँ अधिक स्पष्ट करैत अछि। नायकक प्रश्नोत्तरक बीच व्यक्तिक नाम, काम, स्वरूप, ठिकाना आ भरोसाक प्रश्न उठैत अछि; सहायताक इच्छुक लोक अपन वास्तविक परिचय छिपबैत अथवा आंशिक रूपमे प्रस्तुत करैत दिखाई पड़ैत छथि। [१, पृ. ४३–५४]

एहि स्तरपर 'याचक' केवल भिखारीक आर्थिक पहचान नहि रहि कऽ सामाजिक सम्पर्क बनाबयवाला व्यक्तिक व्यवहारमे प्रवेश करैत अछि। कोनो काम बिना सिफारिश सम्भव अछि कि नहि; लोकक कहब आ करबमे कतेक दूरी अछि; सहायता करनिहार व्यक्ति सचमुच जिम्मेवारी लैत छथि कि सामाजिक अवसरक लाभ उठबैत छथि—ई प्रश्न कथा-गतिकेँ आगाँ धकेलैत अछि।

कला-दृष्टिसँ तेसर खण्डक विशेषता संवादक तनाव अछि। बातक तत्काल उत्तर प्रायः समस्या नहि सुलझबैत; नूतन शंका उत्पन्न करैत अछि। एहि अनिश्चिततासँ कथानकक वास्तविकता बढ़ैत अछि। मुदा एकहि बिन्दुपर लगातार प्रतिप्रश्नक प्रयोग पाठकेँ दोहरावक अनुभव सेहो दऽ सकैत अछि।

चारिम खण्ड : सुलेमानक श्रम, विश्वास आ जीवनोपाय

चारिम खण्डक आरम्भ विश्वास, गोपनीयता आ दोसराक उपकारक प्रश्नसँ होइत अछि। एतऽ सुलेमान नामक पात्रक छोट व्यवसाय, साइकिल मरम्मतिक काम आ आन लोकसँ व्यवहारक प्रसंग उल्लेखनीय अछि। गरीब श्रमजीवीक दिनचर्या केन्द्रीय घटनासँ असम्बद्ध रंगत नहि; ओ सामाजिक प्रतिष्ठाक वैकल्पिक मापदण्ड उपस्थित करैत अछि। [१, पृ. ५५–६१]

कथामे भिखमंगा समुदायक संग श्रमक सम्भावनाक चर्चा सेहो एहि खण्डकेँ नैतिक रूपसँ सघन बनबैत अछि। 'दान'क तात्कालिक समाधानक बदला श्रम-सहभागिता, सुरक्षित जीवनोपाय आ सामाजिक भरोसा अधिक टिकाउ प्रश्न बनि सोझाँ अबैत अछि। लेखक जतऽ एहन सम्भावना देखैत छथि, ओतहि एकटा सीमा सेहो प्रकट होइत अछि :

भिक्षावृत्तिक प्रत्येक अनुभवकेँ सहजहि कृषि अथवा निजी उद्यममे बदलल जा सकैत अछि, एहन निष्कर्ष पाठ प्रमाणित नहि करैत। स्वास्थ्य, आयु, जमीन, पूँजी आ सामाजिक भेदभावक शर्त सभक अलग परीक्षण आवश्यक अछि।

ई खण्ड कृतिक मनुष्यवादी प्रतिबद्धता देखबैत अछि। सुलेमानक श्रम-संस्कृति आ सुभान भायक सामाजिक दृष्टिक समीपता धर्माधारित सरल विरोधक ठाम वास्तविक सहजीवनक परिप्रेक्ष्य प्रदान करैत अछि। ई एकर सशक्त सामाजिक उपलब्धि अछि।

पाँचम खण्ड : छोट दुकानदार, रेल-प्रशासन आ कृपा-तन्त्र

पाँचम खण्डमे दीनू नामक एकटा निम्न आयवर्गीय व्यक्तिक पानक छोट कारोबार आ स्टेशनक वातावरणक प्रसंगसँ सत्ता-सम्बन्धक नूतन क्षेत्र खुलैत अछि। रोज कमाइ पर आश्रित कारोबारक भाग्य निजी योग्यता मात्रसँ नहि, अधिकारिक निरीक्षण, अनुमति, अनौपचारिक निर्देश, दलाली आ स्थानीय प्रभावसँ जुड़ि जाइत अछि। लालबाबू तथा रेल-संस्थानसँ सम्बन्धित व्यक्ति सभक प्रसंग एहि अवरोधकेँ कथात्मक रूप दैत अछि। [१, पृ. ६२–७५]

एहि खण्डक महत्त्व ‘भ्रष्टाचार’ शब्दक सामान्य उच्चारणमे नहि, ओकर रोजमर्रा आर्थिक प्रभावक चित्रणमे अछि। जे व्यक्तिक आय मामूली अछि, तकरा लेल अवसर बन्द होएब केवल एक बेरक आर्थिक घाटा नहि; पूरा परिवारक रोटी, सम्मान आ भविष्यपर असर अछि। शासनक औपचारिक नियम आ प्रथागत दबावक बीच फँसल व्यक्तिक विवशता हीन सामाजिक स्थितिक एकटा आधुनिक प्रतिरूप बनैत अछि।

कलात्मक दृष्टिसँ ई खण्ड पूर्वक दार्शनिक प्रश्नकेँ प्रशासनिक उदाहरणमे बदलैत अछि। कथाक व्यंग्य तखन पैघ होइत अछि जखन जे व्यक्ति परिश्रम कऽ पेट पालैत अछि से अनुमति आ उपकारक याचक बनबाक लेल बाध्य अछि, आ जे पदपर बैसल अछि ओकर कृपा बिकाऊ संसाधन बनि जाइत अछि। फिरो कथाकेँ वास्तविक सरकारी प्रक्रियाक पूर्ण अभिलेख मानब उचित नहि; ओ साहित्यिक पुनर्रचना अछि, जाहिमे संस्थागत आलोचना पात्रक अनुभवसँ कएल जाइत अछि।

छठम खण्ड : परिवार, अपनापन आ रोजगारक अपेक्षा

छठम खण्डमे सुभान भायक पारिवारिक जीवनक विस्तृत रूपक प्रवेश अछि। जमीला बेगम आ परिवारक आन सदस्य सभक उल्लेखसँ कृतिक सामाजिक समस्या घरक भीतरक जरूरत, देखरेख आ स्नेहक प्रश्न बनैत अछि। रोजगारक जानकारी, आवेदन, पात्रता, परीक्षा-व्यवस्था आ अधिकारिक परिचयक चर्चासँ परिवारक भावी सुरक्षाक चिंता जुड़ैत अछि। [१, पृ. ७६–८९]

एहि खण्डमे विशेष रूपसँ देखबा योग्य ई अछि जे एकटा परिवारक आशा कतेक स्तरपर दोसराक निर्णयपर निर्भर रहैत अछि। ई निर्भरता यदि विधिसम्मत अधिकारक भीतर सुरक्षित होय तँ ओ समान नागरिकता होयत; मुदा जँ सिफारिश आ निहित स्वार्थ अनिवार्य मध्यस्थ बनि जाए तँ ओ याचनाक मनोवृत्ति उत्पन्न करैत अछि। लेखकक सामाजिक व्यंग्य एहि सूक्ष्म अन्तरमे काम करैत अछि।

घरक स्त्री पात्र सभक उपस्थिति कथा कैं भावनात्मक धरातल देइत अछि, मुदा एहिठाम आलोचनात्मक प्रश्नोत्तर आवश्यक अछि : हुनका सभक अपन इच्छा, निर्णय आ श्रम कथाकार कतेक सुनबैत छथि, आ कतेक पुरुष पात्रक जीवन-चित्रण लेल पार्श्व बनबैत छथि? एहि पाठमे स्त्री-पात्रक स्वतन्त्र अन्तःस्वरक विस्तार सीमित अछि; सामाजिक यथार्थक आलोचनाक संग ई शिल्पगत कमी सेहो दर्ज होयबाक चाही।

सातम खण्ड : चुनाव, धन आ लोकहितक विस्थापन

सातम खण्ड राजनैतिक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। सुभान भायक सार्वजनिक कार्यक इच्छा, जनप्रतिनिधिसँ सम्पर्क, चुनावी खर्चक माँग आ अनुचित दबावक संकेत स्पष्ट करैत अछि जे लोकतन्त्रक मूल विचार आ ओकर व्यावहारिक उपभोगक बीच दूरी बनल अछि। कथामे विधायक-संबन्धी प्रसंग आ आर्थिक सौदेबाजी मुख्य प्रतिपक्ष रचैत अछि। [१, पृ. ९०–१०१]

एतऽ 'याचक'क स्थान पलटि जाइत अछि। जनप्रतिनिधि नागरिकक सेवक होएबाक चाही, मुदा व्यवस्था एहन बनि सकैत अछि जतऽ नागरिक सेवा पएबाक लेल उन्हीकैं धन,

वोट अथवा निजी अनुरोध लऽ कऽ पहुँचय पड़ैत छनि। राजनीतिक संरक्षणक एहि आलोचनामे लेखकक व्यंग्य जनतांत्रिक संस्थानक सर्वथा निषेध नहि; सेवा आ सुविधा पर निजी स्वामित्वक विरोध अछि।

एहि खण्डक उपलब्धि सामाजिक समस्या कैं अनियन्त्रित भाग्य नहि, निर्णय आ शक्ति-वितरणक फल बतब अछि। तखनहुँ राजनीतिक जीवनक सभ क्रियाकलाप केवल भ्रष्ट सौदा होइत अछि—एहन व्यापक निष्कर्ष कथा कहियो प्रमाणित नहि करैत। लेखकक विशिष्ट चित्रकैं एकटा व्यापक संस्थागत प्रश्नक उदाहरणक रूपमे पढ़ब अधिक संतुलित होएत।

आठम खण्ड : अधिकारीक शक्ति आ नैतिक समझौताक प्रस्ताव

आठम खण्ड अपेक्षाकृत संक्षिप्त अछि, मुदा कथाक नैतिक तीव्रता बढ़बैत अछि। सुभान भाय आ रौनकक बातचीतमे एकटा सरकारी पदस्थ व्यक्तिक प्रभाव, कार्य-सम्पादनक औपचारिक बाट आ निजी लाभक मध्यस्थ उपायपर विमर्श उठैत अछि। रौनकक उत्तर कथाकैं व्यक्तिगत हित आ अनुचित सुविधा-प्राप्तिक बीच नैतिक परीक्षा बना दैत अछि। [१, पृ. १०२–१०७]

अल्प विस्तारक बावजूद एहि खण्डमे कथाकारक व्यंग्यार्थ प्रभावशाली अछि। ‘काम करब’ आ ‘काम कराएब’क बीच जतऽ संस्थागत सीमा टूटैत अछि, ओतहि अनुग्रहक निजी बाजार बनैत अछि। निजी परिचयक माध्यमसँ सेवा पएबाक चाह नागरिकक अधिकारबोधकैं क्रमशः कृपापात्रक मनोवृत्तिमे बदलि सकैत अछि।

एकर सीमा ई जे किछु संवेदनशील सामाजिक प्रसंगमे महिला पात्र विषयवस्तु अथवा अनुरोधक वस्तु बनि रहैत छथि; कथाकारक आलोचनात्मक दूरी सदैव समान स्पष्ट नहि रहैत अछि। एहि कारण लैंगिक नैतिकता पर कठोर पाठकीय जाँच आवश्यक अछि, नहि तँ अधिकारी-विरोधी व्यंग्यक भीतर स्त्रीक स्वायत्तताक प्रश्न दबि सकैत अछि।

नवम खण्ड : रौनक, परिवार आ 'याचक'क अन्तिम उलट-प्रश्न

अन्तिम खण्डमे रौनकक जीवन-संकट, पारिवारिक अपेक्षा, विवाह-सम्बन्धी प्रश्न आ सीमा नामक पात्रसँ जुड़ल प्रसंगक माध्यमसँ नौकरी-केन्द्रित सामाजिक प्रतिष्ठाक जटिलता सोझाँ अबैत अछि। राजनीतिक आ प्रशासनिक सम्पर्कक सन्दर्भ घरेलू जीवनक निर्णय धरि पहुँचैत अछि। परिवारक भीतरक संवाद पाठकेँ देखबैत अछि जे सत्ता-सम्बन्धक दबाव निजी इच्छाक क्षेत्र धरि पहुँचि सकैत अछि। [१, पृ. १०८–११६]

नवम खण्डक सबसँ महत्त्वपूर्ण क्रिया शीर्षकक पुनरागमन अछि। आरम्भमे दृश्य भिक्षुक पर केन्द्रित प्रश्न अन्तमे स्थिति पलटि कऽ पाठकक आगाँ अबैत अछि। साधारण भिक्षुककेँ अपमानित करनिहार सामाजिक मनोवृत्ति आ अधिकार-सम्पन्न पदसँ कृपा माँगयवाला शिक्षित-सम्पन्न संसार—दुनू एकटा नैतिक तुलनामे आबि जाइत अछि। अन्तिम प्रश्न कथाकेँ पूर्ण व्याख्यापत्र नहि बनबैत, पाठकक निर्णयक अपेक्षा करैत अछि।

अन्तिम दृश्यसँ पूरा पोथीक संरचना फेर देखल जा सकैत अछि : पहिल खण्ड व्याख्यात्मक सूत्र दैत अछि, मध्यक खण्ड क्रमशः अलग संस्थानमे 'याचनाक सामाजिक रूप' देखबैत अछि, आ अन्तिम खण्ड नूतन नामकरणक फैसला पाठकपर छोड़ि दैत अछि। रचनाक अन्तिम सौन्दर्य ई खुला व्यंजना अछि। तखनहुँ किछु घटनाक एक-दोसरासँ संक्रमण अपेक्षाकृत आकस्मिक अछि; एहि असमान लयकेँ स्वीकारि कऽ सेहो अन्तिम प्रश्नक वैचारिक प्रभाव अस्वीकार नहि कएल जा सकैत।

पात्र-योजना : सुभान भाय, नायक, रौनक आ सामाजिक संसार

सुभान भाय एहि शब्द-चित्रक संवेदनात्मक केन्द्र छथि। ओ एके बेर सामाजिक दार्शनिक, सामान्य रोजी-रोटी लेल चिन्तित व्यक्ति, पारिवारिक उत्तरदायी आ सामाजिक परिवर्तनक सम्भावना देखनिहार पात्र बनि सोझाँ अबैत छथि। एहि मिश्रित रूपसँ लेखक खाँटी नायकत्वक महिमामण्डनसँ बचैत छथि। सुभान भायक शक्ति हुनक पूर्णता नहि,

सीमित साधनक बावजूद परिस्थिति बुझबाक हुनक प्रयास अछि। सुभान भायक नामक संग ‘भाय’ सम्बोधन अपनत्व आ लोक-भाषाक सहजीविताक सूचक बनैत अछि।

नायकक भूमिका एकटा कथ्य-संचालकक थिक। ओ कथा भीतर प्रश्न करैत, प्रसंग बदलैत, दोसराक स्वर सुनैत, फेर कखनो अपन टिप्पणी जोड़ैत छथि। एहि साक्षी-संरचनाक कारण पाठक घटनाक ऊपरसँ नीतिपरक घोषणा सुनबाक बदला सम्बन्धित लोकक विचार सुनैत अछि। तथापि कथाकारक विचार आ नायकक विचार कतेक एक-दोसरासँ अलग छथि, से सदैव स्पष्ट नहि; एहि अस्पष्टताक कारण किछु राजनीतिक निष्कर्ष पाठक बिना पर्याप्त दूरीक ग्रहण कऽ सकैत छथि।

रौनक आगाँ बढ़ैत सामाजिक श्रेणी, पेशागत सम्भावना आ नैतिक जोखिमक संग जुड़ल पात्र छथि। स्त्री पात्र सभक सहभागिता परिवारक सामाजिक आशंकाकेँ भूमि दैत अछि, मुदा ओहि सबकेँ निर्णय-क्षमता, जीविका आ आकांक्षा विषयक स्वतन्त्र कथा-विस्तार कतेक भेटल, ई महत्त्वपूर्ण प्रश्न थिक। सुलेमान आ दीनू सन पात्र व्यक्ति-चित्रक माध्यमसँ अनौपचारिक अर्थव्यवस्थाक कठिनाइ देखबैत छथि; लालबाबू आ पदाधिकारी-वर्ग सत्ताक वैयक्तिकरणक बिम्ब बनैत छथि।

नामक सामाजिक-सांस्कृतिक वैविध्य उल्लेखनीय अछि। सुभान, सुलेमान, जमीला सन नामक सँग भिन्न समुदाय आ संस्थागत पृष्ठभूमि वला पात्र एके कथा-जगतमे उपस्थित होइत छथि। ई भाषिक-सांस्कृतिक संग-साथ रचनाक ताकत अछि; मुदा सामाजिक सामञ्जस्यक कोनो आदर्शीकृत प्रमाण मानबाक बदला एतऽ ‘साझा असुरक्षा’ आ ‘साझा श्रम’क प्रश्न अधिक दृढ़ अछि।

विषयगत विश्लेषण : भिक्षा, श्रम, अधिकार आ संरक्षण

पोथीकेँ चारि तर्क-स्तरमे बुझल जा सकैत अछि। पहिल स्तर ‘दृश्य भिक्षा’क अछि—जे सामाजिक रूपसँ तिरस्कृत लोक करैत छथि। दोसर ‘जीविकागत अनिवार्यता’क अछि—जतऽ बेरोजगार, दुकानदार अथवा श्रमिक निर्णय-सम्पन्न संस्थाक कृपा पर निर्भर भऽ

जाइत अछि। तेसर 'राजनीतिक संरक्षण'क अछि—जतऽ पहुँच अथवा धनक माध्यमसँ सेवा आ अवसरक वितरण प्रभावित होइत अछि। चारिम 'नैतिक पाखण्ड'क अछि—जतऽ पहिल प्रकारक माँग अपमानजनक, मुदा आन तीन प्रकारक याचना प्रतिष्ठाक चिह्न मानल जा सकैत अछि।

ई श्रेणीकरण पोथीक सामाजिक अंतर्दृष्टिक पुनर्निर्माण अछि; कथाक प्रत्येक घटनाकेँ कोनो सूत्रमे ठूसि देबाक योजना नहि। कथा विशेष अर्थमे महत्त्वपूर्ण तखन होइत अछि जखन ओ दया मात्रसँ दानक व्यवस्था बचाबय नहि चाहैत, बल्कि आजीविका, सामाजिक न्याय, सेवा-प्रवेश आ नागरिक अधिकारक सम्बन्धपर प्रश्न करैत अछि। 'गरीब भिखारी'क प्रतिमा एतऽ नैतिक कमीक संकेत नहि, संरचनात्मक परिस्थिति बुझबाक अवसर बनैत अछि।

सामाजिक अर्थशास्त्रक दृष्टिसँ एहि याचनाक मूल समस्या संसाधनक असमान नियन्त्रण अछि। जखन कम अवसर पर बहुत लोक निर्भर होइत छथि, तखन अवसर बाँटनिहारक मनमानी सामाजिक शक्ति बढ़ैत अछि। अनौपचारिक भुगतान, पहचान, सिफारिश आ राजनीतिक सम्बद्धता अपना-आपमे एकटा अतिरिक्त मुद्रा बनि सकैत अछि। कथा एहि अतिरिक्त मुद्राक नैतिक दुष्परिणाम देखबैत अछि। तखनहुँ एहि आलोचनासँ ई अभिप्राय नहि निकलैत जे प्रत्येक सहायता अन्यायपूर्ण अछि; अधिकारसंगत सहयोग आ कृपाक सौदा बीच अन्तर राखब एकर आवश्यक व्याख्यात्मक शर्त अछि।

भाषाशिल्प : लोकलय, वाक्-व्यंग्य आ पुनरावृत्तिक सौन्दर्य

कृतिक भाषा अपन बुनियादी ऊर्जा लोक-संवादसँ लैत अछि। पात्र सभक प्रश्न, तुरत प्रतिवाद, सम्बोधन आ परिस्थिति-निष्ठ टिप्पणी कथाक गति निर्मित करैत अछि। 'भाय' सन सम्बोधन सामाजिक दूरी कम करैत अछि; रेल, स्टेशन, ऑफिस, ठेका, चुनाव, नौकरी, पान-दोकान आदि जीवनोपयोगी शब्द अनुभवक यथार्थपरक भूगोल बनबैत अछि। एहि भाषिक समावेशसँ मैथिली समकालीन प्रशासनिक आ नागर जीवनक चर्चा करबाक सक्षम साहित्यिक माध्यम बनैत अछि।

एकर प्रमुख अलंकार विरोधाभास अछि : जे असहाय अछि ओ हँसीक पात्र, जे प्रभावशाली अछि ओ प्रशंसनीय; जे श्रम करैत अछि ओकरा पर अविश्वास, जे कृपाक सौदा करैत अछि ओकरा समाजमे सम्मान। शीर्षकक नकारात्मक प्रश्न एहि विरोधाभासक केन्द्रबिन्दु अछि। संवाद-आधारित व्यंग्यक संग करुणाक हलुक प्रवाहो चलैत अछि। कृतिक भावभूमिमे हास्य आ करुणा एक-दोसराकेँ कम नहि करैत; करुणाक सामाजिक कारण उजागर करबाक लेल हास्य प्रश्नक शक्ति प्रदान करैत अछि।

शिल्पक सीमा पुनरावृत्तिमे देखल जा सकैत अछि। कखनो एके प्रश्नक अनेक रूप, एक पात्रक सामाजिक मतक दोहराव आ संस्थागत दोषक उपदेशात्मक घोषणा कथाक संवेग घटबैत अछि। मुदा अनवरत प्रश्नोत्तर एहि कृतिक स्वाभाविक बोलीक हिस्सा सेहो अछि। सम्पादन-प्रक्रियामे अनावश्यक दोहराव घटा देल जाए तँ कथाक बौद्धिक तीव्रता आर पैघ भऽ सकैत छल; तथापि ओहि दोहरावमे लोकविवादक वास्तविक लय सेहो संरक्षित अछि।

नैतिक आलोचना : साहित्यिक उपलब्धि आ प्रश्नांकित पक्ष

कृतिक सबसँ बड़ी उपलब्धि सामाजिक नैतिकताक दोहरा मानदण्ड देखेबामे अछि। पात्रक परिचय-सम्पर्कक माध्यमसँ कथाकार ई स्थापित करैत छथि जे असमान शक्ति-सम्बन्ध सभक बीच 'माँगब' स्वयं वर्ग-चिह्नित क्रिया बनि जाइत अछि। निर्धनक माँग अस्वीकार्य, मुदा शक्तिशालीक माँग अनदेखल; एहि तुलनामे सामाजिक आलोचनाक धार अछि। फेर लेखक मनुष्यक प्रतिष्ठाक आधार मात्र व्यवसाय वा पदकेँ नहि बनबैत छथि; श्रम आ सामाजिक उत्तरदायित्वकेँ महत्त्व दैत छथि।

तथापि रचना आलोचनासँ मुक्त नहि अछि। पहिल, किछु प्रसंगमे भिक्षावृत्तिक कारणक व्यापकता पर्याप्त नहि खुलैत—अशक्तता, रोग, बाल-असुरक्षा, बुजुर्गक निर्भरता आ राज्यक सामाजिक सुरक्षा नीति सन पक्षक चर्चा सीमित अछि। दोसर, शासन-व्यवस्थाक प्रतिनिधित्व मुख्यतः अवसरवादी पात्रक अनुभवसँ होइत अछि; सकारात्मक अथवा अधिकार-आधारित अपवाद कम मिलैत अछि। तेसर, स्त्री-पात्रक आवाज प्रायः पुरुष-

पात्रक संघर्षक आस-पास घूमैत अछि। चारिम, राजनीतिक प्रसंगक व्यंग्य कखनो व्यक्ति-नैतिकतापर अधिक आ संरचनात्मक विश्लेषणपर अपेक्षाकृत कम टिकैत अछि।

ई सीमासभ आंतरिक पाठ-परीक्षणक आधारपर कही जाइत अछि, नहि कि लेखकक सामाजिक प्रतिबद्धताकेँ अस्वीकार करबाक लेल। सामाजिक साहित्यक वास्तविक मूल्यांकनमे दृष्टिक नैतिक ईमानदारीक संग वस्तु-स्थितिक जटिलताकेँ प्रस्तुत करबाक क्षमता सेहो देखल जाइत अछि। एहि कसौटीपर 'याचक के नजि' प्रश्न उठेबामे अधिक सशक्त, प्रश्नक सर्वांगीण समाधान देबामे जानि-बुझि अथवा शिल्पगत कारणसँ सीमित अछि। एहि असमाप्तता मे एकर आधुनिकता निहित अछि।

मैथिली साहित्यक इतिहासमे स्थान : समानान्तर पाठक-दृष्टि

मैथिली साहित्यक इतिहास लिखैत समय केवल प्रतिष्ठित काव्यविधा अथवा पुरस्कारप्राप्त उपन्यासकेँ केन्द्रमे रखब पर्याप्त नहि। सामान्य जनक रोजी-रोटी, छोट बाजार, रेल-स्टेशन, स्थानीय दलाली, जनप्रतिनिधिक व्यवहार आ पारिवारिक आशाक साहित्यिक रूपान्तरण सेहो आधुनिक मैथिली गद्यक इतिहासक सामग्री अछि। एहि कारण नन्दक शब्द-चित्रक स्थान कथा-विधाक उपशाखा मात्र नहि, सामाजिक इतिहासक साहित्यिक साक्ष्यक रूपमे देखल जा सकैत अछि। साहित्यिक साक्ष्य कहबाक अर्थ दस्तावेजी तथ्यक स्थानापन्न नहि; कथाक मूल्य सामाजिक संवेदनाक विन्यासमे अछि।

विदेहक समानान्तर इतिहास-संबन्धी उपक्रममे उपेक्षित रचनाकार, लोकभाषा, कथा-विधा आ प्रकाशन-प्रणालीक प्रश्न उठल अछि। नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' पर विदेहक आलोचनात्मक समग्र अध्ययन हुनका बहुविधा रचनाकारक रूपमे चिन्हित करैत अछि : सामाजिक उपन्यास, शब्द-चित्र, कथा, काव्य आ बाल-उपन्यास एहि विविधताक अङ्ग छथि। एहि वर्गीकरणक मुख्य उपयोग एहि अध्ययनमे ई बुझब अछि जे 'याचक के नजि' ककरो बाल-उपन्यासक अधूरी छाया नहि, हुनक सामाजिक गद्यक स्वतन्त्र प्रयोग अछि।

एकटा पाठ-सुधार सेहो आवश्यक अछि। रोमन शीर्षक ‘Yachak ke Nai’क आधारपर ‘new petitioner’ सन अर्थ निकालब संदेहास्पद अछि। मूल देवनागरीमे ‘नञि’क उपस्थितिक संग कथाक अन्तिम प्रश्न मिलाउल जाए तँ नकारात्मक-प्रश्नात्मक अर्थ अधिक संगत देखाइत अछि। एहन स्थिति मे ग्रन्थसूची, अनुवाद आ समीक्षाक बीच मूल शीर्षपृष्ठक प्राथमिकता आवश्यक अछि। साहित्यिक इतिहासक शुद्धता केवल बड़का सिद्धान्तसँ नहि, एहन छोट पाठीय निर्णयसँ बनैत अछि।

बाल-साहित्यक इतिहासक तुलनात्मक विवेचन : विधागत सीमा आ साझा सामाजिक सरोकार

पहिने विधागत भिन्नता स्वीकारब

‘याचक के नञि’ शब्द-चित्र थिक; बाल-पाठक लेल विशिष्ट आयु-उपयुक्त रचना होयबाक दावा मूल शीर्षपृष्ठ अथवा उपलब्ध कथात्मक विन्याससँ प्रमाणित नहि होइत अछि। एहि कारण एकरा बाल-साहित्यक सूचीमे सीधे रखब श्रेणी-दोष होएत। मुदा बाल-साहित्यक इतिहाससँ एकर तुलना असंगत सेहो नहि अछि; नन्दक अन्य कृति ‘स्वर्ण कमल’ विदेह शिशु उत्सवक सूचीमे स्पष्टतः ‘बाल उपन्यास’क रूपमे दर्ज अछि। एकहि रचनाकारक सामाजिक शब्द-चित्र आ बाल-उपन्यासक पाठकीय प्रयोजन, कथाक गति, भाषाक घनत्व आ नैतिक प्रस्तुति भिन्न भऽ सकैत अछि।

बाल-कथामे पाठकक उमेर, अनुभव-जगत, दृश्य-संगति, क्रियाशील बाल-पात्र आ प्रश्न पुछबाक अवसर विशिष्ट कसौटी होइत अछि। ‘याचक के नञि’मे प्रौढ़ राजनीति, प्रशासनिक सौदेबाजी, रोजगारीक संघर्ष आ नैतिक पाखण्डक बहुस्तरीय उदाहरण अछि। ई सामग्री किशोर पाठकक सामाजिक बोध लेल सानुकूलित भऽ सकैत अछि, मुदा मूल कृति अपन वर्तमान रूपमे प्राथमिक बाल-पाठक लेल रचल गेल अछि, एहन मानबाक आधार नहि भेटैत।

विदेह अभिलेखमे बाल-साहित्यक विकासक संकेत

विदेहक शिशु उत्सव आ पोथी-अभिलेख आधुनिक मैथिली बाल-साहित्यक बहुविध रूप देखबैत अछि। ओतऽ लोककथा-आधारित संकलन, चित्रकथा, बाल-कविता, बाल-उपन्यास, नाटक, विज्ञान-विषयक पुस्तक आ अनूदित सचित्र साहित्य अलग-अलग रूपमे वर्गीकृत अछि। उपलब्ध सूचीमे प्रीति ठाकुरक २००८ केर ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’, २००९ केर ‘मैथिली चित्रकथा’, २०१० केर ‘मिथिलाक लोकदेवता’ आ २०१२ केर बालरूपान्तरित ‘विद्यापतिक पुरुष परीक्षा’ दर्ज अछि। ई उदाहरण मौखिक परम्परा, चित्र-आधारित पाठ आ सांस्कृतिक आख्यानक बीच सम्बन्ध सूचित करैत अछि।

विदेह शोध-अनुक्रमणिकामे फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’क ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’ (अङ्क ५०, १५ जनवरी २०१०), डॉ. योगानन्द झाक ‘मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा’ (अङ्क ७६, १५ फरवरी २०११) आ दुर्गानन्द मण्डलक ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा’ (अङ्क ११६, १५ अक्टूबर २०१२)क अभिलेख अछि। एहि तीन शीर्षकक क्रमसँ लोकमौखिक सामग्री, संग्रह आ चित्रकथा-समीक्षाक प्रश्न साहित्यिक विमर्शमे उपस्थित देखाइत अछि। एतऽ केवल अभिलेखीय शीर्षक, लेखक, अङ्क आ तिथि प्रमाणित अछि; बिना मूल आलेखक अलग पाठ-परीक्षण हुनकर विशिष्ट तर्क उद्धृत कएल नहि गेल अछि।

पछिला विकासमे बाल-साहित्य केवल नैतिक कथा धरि सीमित नहि रहल अछि। विदेहक सूचीमे जगदीश प्रसाद मण्डलक बाल-उपन्यास आ प्रेरक विहनि कथा, नीता झाक बाल-लघुकथा आ सचित्र वैज्ञानिक-समाजपरक रचना, योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क विज्ञानक बतकही, गजेन्द्र ठाकुरक बाल/किशोर उपन्यास, नाटक आ शिशु-किशोर गतिविधिक उल्लेख उपलब्ध अछि। २०२६ मे प्रकाशित ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’मे अनेक बाल-उपन्यासक रस, औचित्य, लोकगाथा, बाल-कर्मशीलता आ दृश्यात्मक कथनक कसौटीक आधारपर समालोचना कएल गेल अछि। ई कृति-केन्द्रित उदाहरण समकालीन शोधक सम्भावना देखबैत अछि, सम्पूर्ण मैथिली बाल-साहित्यक अन्तिम अथवा निष्कर्षात्मक इतिहास नहि।

'स्वर्ण कमल' आ 'याचक के नञि' : उद्देश्य, पाठक आ शिल्प

नन्दक 'स्वर्ण कमल'क विदेह पुस्तक-सूचीमे बाल-उपन्यासक रूपमे उपस्थिति आ 'याचक के नञि'क शब्द-चित्र-नामकरण एक लेखकक दू पाठकीय जगत चिन्हित करैत अछि। बाल-उपन्यासमे कथा-रोमांच, बालकक जिज्ञासा, पात्रक स्पष्ट क्रिया-प्रेरणा आ भाषा-दृश्यात्मकताक विशेष प्रयोजन होइत अछि। 'याचक के नञि'मे श्रम, सत्ता आ याचनाक जटिल सामाजिक अर्थ-संरचना अधिक महत्त्वपूर्ण अछि; पात्रक प्रश्नोत्तर क्रमशः संस्थागत व्यंग्य बनि जाइत अछि।

समानता कतऽ अछि? दुनू प्रकारक साहित्य सामाजिक संवेदना निर्माण कऽ सकैत अछि। बालकक दृष्टिसँ अन्याय देखब आ प्रौढ़क दृष्टिसँ अन्यायक संस्थागत रूप बुझब—ई दूटा अलग साहित्यिक मार्ग छथि। सामाजिक गरिमा, परिश्रमक सम्मान, कमजोर व्यक्तिक प्रति सहानुभूति आ प्रश्न पूछबाक अधिकार एहि मार्ग सभक साझा मूल्य होय सकैत अछि। मुदा ई साझा मूल्य मात्रक आधारपर विधागत समानता स्थापित नहि होइत।

किशोर पाठ्यक्रम लेल ई शब्द-चित्रक चयनित अंश रूपान्तरित करबाक स्थिति मे वास्तविक बाल-पाठकक अनुभव-संरचना, दृश्य-आधारित प्रस्तुति, आवश्यक शब्दार्थ, स्त्री-पात्रक दृष्टि आ तथ्य-साहित्यक भेद सुनिश्चित करब आवश्यक होएत। मूल पोथीक प्रौढ़ भाषा आ राजनीतिक प्रसंगक आलोचनात्मक कठिनाईकेँ नहि मिटा कऽ, संदर्भक संग प्रस्तुत करब अधिक उत्तरदायी उपाय होएत।

बाल-पाठकक नैतिक शिक्षा आ वयस्क-केन्द्रित उपदेशक अन्तर

शिशु अथवा किशोर साहित्यक समालोचनामे एकटा बुनियादी प्रश्न ई अछि जे बालक स्वयं कथाक अर्थ बनबैत अछि कि वयस्क लेखक ओकरा तैयार उत्तर दैत छथि। 'याचक के नञि' पाठकेँ अन्तिम प्रश्न सँ चुनौती दैत अछि, जे प्रश्नोन्मुख शिक्षाक दृष्टिसँ मूल्यवान अछि। तथापि बहुतो खण्डमे पात्र सभक माध्यमसँ विस्तृत वयस्क नैतिक व्याख्या अबैत अछि; ई बाल-साहित्यक संक्षिप्त, दृश्यात्मक आ बाल-केन्द्रित कथनसँ अलग अछि।

विदेहक २०२६ केर बाल-उपन्यास समीक्षाशास्त्र बाल-कर्तृत्व, लोकगाथाक पुनर्रचना, उचित कथ्य-प्रस्तुति आ सामाजिक वर्जनाक आलोचनाकेँ समीक्षा-चर्चाक अङ्ग बनबैत अछि। एहि दृष्टिसँ नन्दक शब्द-चित्र बाल-साहित्य लेल तात्त्विक तुलना प्रदान करैत अछि : बालककेँ केवल 'गरीबक सहायता कर' नहि, बल्कि 'किएक लोक निर्धन रहैत छथि' सन प्रश्नक दिशा खोलब आवश्यक अछि। एहि विश्लेषणकेँ कृतिक बाल-साहित्यक वर्गीकरण नहि, बाल-साहित्यक नैतिक क्षमता सम्बन्धी तुलनात्मक निष्कर्ष मानल गेल अछि।

रस, व्यंजना आ पाठकीय संलग्नता

करुण रस एहि रचनामे सिधा दीनता देखेबासँ नहि, दीनताक सामाजिक अपमानक अनावरणसँ उपजैत अछि। पाठक जखन समान कृपाभावक दू अलग सामाजिक व्यवहार देखैत छथि तँ करुणा विवेकक रूप लैत अछि। हास्य एतऽ मुख्यतः व्यंग्यात्मक अछि; सामाजिक प्रतिष्ठाक धारणापर प्रश्न कऽ ओ करुणाकेँ तीक्ष्ण करैत अछि। एहि दू भावक संयोजन पोथीक वैचारिक शिल्पक केन्द्र अछि।

व्यंजनाक प्रमुख स्रोत शीर्षकक अनिश्चित सम्बोधन अछि। 'याचक' एक स्थिर सामाजिक श्रेणी नहि रहैत; प्रत्येक नव प्रसंग ओकर अर्थ बदलैत अछि। एहि प्रकार पाठककेँ एक अर्थ देल नहि जाइत, बरु पुरान अर्थक सीमा देखाओल जाइत अछि। भाषिक रूपेँ नकारात्मक प्रश्न कृतिक सभसँ सक्षम प्रतीकात्मक युक्ति अछि।

कथा-पाठक एहि प्रश्नक उत्तर अलग-अलग दि सकैत छथि : एक व्यक्तिक नैतिक कमजोरी? भ्रष्ट संस्था? समाजक प्रतिष्ठा-व्यवस्था? आर्थिक अनिश्चिततासँ जन्मल निर्भरता? साहित्यिक दृष्टिसँ कृतिक मूल्य ई जे सभ प्रश्न एक-दोसरामे फँसल छथि। एतऽ स्पष्ट एकरेखीय नीति-सूत्र परोक्ष सामाजिक द्वन्द्वक स्थान नहि लैत।

निष्कर्ष : देखल भिक्षुक, अनदेखल याचना आ साहित्यक नैतिक दृष्टि

'याचक के नजि'क साहित्यिक उपलब्धि शीर्षकक एकटा प्रश्नकेँ अनेक सामाजिक परिस्थिति मे आजमाइबाक संरचनामे अछि। आरम्भिक भिक्षुक-विमर्श, सुभान भायक

जीविका-संघर्ष, सुलेमानक श्रम, दीनूक लघु कारोबार, रेल-प्रशासनक अनुमति, रोजगारक अस्थिरता, राजनैतिक सौदेबाजी, रौनकक पेशागत प्रश्न आ अन्तिम पारिवारिक जटिलता —ई सभ एकहि सामाजिक प्रश्नक भिन्न रूप छथि : जे व्यक्तिक आवश्यकतापर आनक स्वेच्छाचारक नियन्त्रण अछि, से व्यक्तिक अधिकार कतेक सुरक्षित अछि?

नौ खण्डक स्वतंत्र पाठ-परीक्षणसँ स्पष्ट होइत अछि जे ई मूलतः एकटा विस्तारित, क्रमविकसित शब्द-चित्र अछि—ने बाल-उपन्यास, ने केवल अलग-अलग रेखाचित्रक अनियमित संकलन। ई गद्य अपन लोकलय, सामाजिक व्यंग्य आ पात्रक प्रश्नोत्तरक कारण मूल्यवान अछि; वाक्य-दोहराव, कखनो उपदेशात्मक विस्तार, स्त्री पात्रक सीमित स्वायत्तता आ संस्थागत प्रक्रियाक एकांगी चित्रण एकर आलोचनात्मक सीमा छथि।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहासक तुलनामे एहि कृतिक महत्त्व सीमारेखा स्पष्ट करबामे अछि। नन्दक 'स्वर्ण कमल' सन बालकृतिसँ एकर पाठक-आयु, शिल्प आ सामाजिक विवेचन भिन्न अछि; मुदा कमजोरक गरिमा, प्रश्न करबाक साहस आ श्रमक सम्मान सन मूल्य दुनू साहित्यिक क्षेत्रमे अर्थपूर्ण वार्ता सम्भव करैत अछि। विदेहक अभिलेख साहित्यिक विधा सभक एहि परस्पर सम्बन्धकेँ देखबाक ऐतिहासिक आधार प्रदान करैत अछि।

अन्ततः एहि पोथीक मूल प्रश्नक समाधान कोनो एक श्रेणीक मनुष्यकेँ भिखारी घोषित करब नहि अछि। एकर व्यापक अर्थ समाजक नजरि सुधारब अछि : कमजोरक आग्रह अपमानक कारण किएक बनैत अछि आ प्रभावशालीक कृपायाचना सम्मानक पात्र किएक? एहि असुविधाजनक प्रश्नकेँ जीबैत राखब 'याचक के नञि'क स्थायी साहित्यिक शक्ति अछि।

पाठ-प्रमाण आ संस्करण-संबन्धी टिप्पणी

(ख) नौ खण्डक मुद्रित आरम्भ क्रमश: पृ. १५, २६, ४३, ५५, ६२, ७६, ९०, १०२ आ १०८ अछि। स्वतंत्र पाठविश्लेषणमे भागक समाप्ति अगिला भागक आरम्भसँ ठीक पूर्व मानल गेल अछि।

(ग) शीर्षकक देवनागरी रूप ‘याचक के नञि’ एहि लेखमे अपनाओल गेल अछि। प्रकाशकीय रोमन रूप ‘YACH(A)K KE NAI’ नकारवाचक पदक सुनिश्चित अंग्रेजी अर्थ निर्धारित नहि करैत; प्रसंगानुकूल व्याख्या मूल देवनागरी शीर्षक आ समापनक आधारपर कएल गेल अछि।

तदपि तर्कक संग मुद्रित पृष्ठ-परास जोड़ल अछि जाहिसँ शोधक फेर मूल छपल प्रति सँ पंक्ति-जाँच करि सकथि।

अध्याय १०

महारानी कैकेयी

मिथकक पुनर्पाठ, स्त्री-अभिकर्तृत्व आ नैतिक पुनर्विचार

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘महारानी कैकेयी’ रामायणक परिचित दोषारोपणपर आधारित कैकेयी-छविक प्रतिवाद करैत दस खण्डमे विकसित एक प्रवचनात्मक निबन्ध अछि। एहि कृतिमे कैकेयीकेँ लोभी विमाता अथवा राजवंशक विघटनकर्त्रीक स्थानपर दूरदर्शी राजनीतिक चेतना, मातृस्नेह, त्याग आ लोककल्याणक आकांक्षासँ युक्त पात्रक रूपमे स्थापित करबाक प्रयास कएल गेल अछि। निबन्धक मूल तर्क ई अछि जे रामक वनवास महज प्रतिशोध वा पुत्रमोहक परिणाम नहि, अपितु एक जटिल राष्ट्रीय-सांस्कृतिक संकट, रामक भावी कार्य आ पारिवारिक सहमतिक पृष्ठभूमिमे देखल जाए। एहि अध्ययनमे कृतिक दश उपखण्डक क्रमिक विश्लेषण, लेखकक तर्क-प्रक्रिया, शास्त्रीय आख्यान आ उत्तरवर्ती काव्यक उपयोग, चरित्र-रक्षात्मक भाषिक रणनीति तथा वैकल्पिक पाठक प्रमाण-सीमाक परीक्षण कएल गेल अछि। बाल-साहित्यक तुलनात्मक प्रसंगमे निबन्ध आ बाल-उपन्यासक विधागत अन्तर सुरक्षित राखैत मिथकीय पुनर्कथनक शैक्षिक सम्भावना आ नैतिक सरलीकरणक जोखिमक चर्चा कएल गेल अछि। निष्कर्ष ई जे ई रचना मैथिलीक मिथक-पुनर्विचारक साहसिक, मुदा प्रमाण आ बहुवचनात्मकताक प्रश्नसँ मुक्त नहि, हस्तक्षेपक रूपमे पठनीय अछि।

प्रश्नक स्थापना : खलनायिकासँ विमर्शक केन्द्र धरि

रामक वनवासक कथा सुनिते जनस्मृतिमे कैकेयीक नाम दोषारोपणक प्रतीकक रूपमे उभरैत अछि। अधिकांश सहज पुनर्कथनमे राजनीतिक घटना, धार्मिक विधान आ पारिवारिक विडम्बना एक गोट कारणमे समेटि देल जाइत अछि—कैकेयीक वरदान-माँग। एहि सहज कारण-शृंखलाक भीतर हुनकर व्यक्तित्व, संकट-अनुभव आ सम्भावित विवेक

विलुप्त भऽ जाइत अछि। नन्द कुमार मिश्र एहि आरोप-परम्पराकेँ चुनौती देबासँ अपन तर्क आरम्भ करैत छथि। हुनकर प्रयोजन केवल पात्रक पक्षमे किछु सहानुभूति जुटेनाइ नहि; ओ रामायणक नैतिक वितरणकेँ फेरसँ पढ़बाक आग्रह उपस्थित करैत छथि।

एहि आग्रहक साहित्यिक महत्त्व दू स्तरपर देखाइत अछि। पहिल, लेखक प्रसिद्ध आख्यानक ओहि पात्रपर दृष्टि केन्द्रित करैत छथि जिनका बिना मूल घटनाक्रम असम्भव अछि, मुदा जिनकर भीतरी प्रेरणा प्रायः एकरेखीय अर्थमे ग्रहण कएल जाइत अछि। दोसर, ओ कथानकक कारणकेँ व्यक्तिगत दुर्भावनासँ हटाकऽ राजकीय उत्तराधिकार, सैन्य-सांस्कृतिक संकट, मातृधर्म आ लोकमंगलक जटिल सम्बन्धमे राखय चाहैत छथि। एहि रूपमे ‘महारानी कैकेयी’ कथा सुनएबाक स्थानपर कथा पर विचार करएबला निबन्ध बनैत अछि।

एतय एक सावधानी अनिवार्य अछि। रामायणक कोनो एक रूपकेँ सभ रूपक एकमात्र प्रामाणिक पाठ मानि लेब तुलनात्मक अध्ययनक विरुद्ध होएत। लेखक वाल्मीकि, तुलसी तथा उत्तरवर्ती व्याख्यात्मक काव्य-पाठक सहायतासँ अपन कैकेयी-प्रतिमान गढ़ैत छथि; ताहि कारणेँ हुनकर निष्कर्षकेँ स्वतंत्र ऐतिहासिक तथ्य नहि, पाठक भीतर प्रस्तुत एक वैकल्पिक व्याख्यात्मक प्रस्तावक रूपमे जाँचल जाएबाक चाही। एहि विवेकसँ कृतिक उपलब्धि आ सीमा दुनू स्पष्ट होइत अछि।

कृति, विधा आ मूल संरचना

‘महारानी कैकेयी’क उपलब्ध मुद्रित प्रतिमे नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क नाम लेखकक रूपमे अछि। आरम्भिक प्रकाशकीय जानकारीमे दरभंगा क्षेत्रक प्रकाशन-सहयोग आ मुद्रणक उल्लेख अछि; लेखकक समापन-टिप्पणीक तिथि १७ सितम्बर २००८ भेटैत अछि। ई रचनाक लेखन-अवधिक संकेत देइत अछि, मुदा एहि आधारपर पुस्तकक मुद्रण-वर्ष निश्चित करब उचित नहि। मुख्य पाठक मुद्रित पृष्ठ १ सँ ४८ धरि क्रम भेटैत अछि। एहिसँ अलग प्रारम्भिक आवरण, समर्पण, लेखककीय आ अन्तिम परिचय उपस्थित अछि।

पोथीक विधागत पहचान महत्त्वपूर्ण अछि। एहि कृतिमे सतत घटनाक्रमवला बाल-उपन्यासक विन्यास, स्वतन्त्र नाटकीय अङ्क, अथवा संवाद-प्रधान पूर्ण कथा-रूप नहि अछि। प्रमुखतः लेखक अपन पक्ष प्रतिपादित करैत छथि, प्राचीन पद्यांश आ उत्तरवर्ती काव्य-सन्दर्भ प्रस्तुत करैत छथि, आ ओहि सन्दर्भक आधारपर चरित्रक पुनर्मूल्यांकन करैत छथि। विदेहक पोथी-सूची सेहो एकरा ‘प्रवचनात्मक निबन्ध’ कहैत अछि [सन्दर्भ २]। अतएव एकरा मिथक-आधारित आलोचनात्मक/प्रतिपक्षी गद्य-निबन्ध कहल अधिक यथार्थ अछि।

मूल पाठ दसमे विभक्त अछि। पहिल खण्डमे विमाताक सामाजिक छवि, दोसरमे राजनीतिक दूरदर्शिता, तेसरमे उद्देश्य आ त्याग, चारिममे रणनीति, पाँचम आ छठममे क्रमशः कैकेयी आ रामक पारस्परिक स्नेह, सातममे गुप्त मन्त्रणा, आठममे वरदान, नवममे वनवासक तैयारी, आ दसममे दशरथक मृत्युक कारण प्रस्तुत अछि। ई विन्यास आरोपर प्रतिवादसँ आरम्भ होइत अछि, भावनात्मक सम्बन्धक मार्फत पात्रक समर्थन बढ़बैत अछि, आ अन्तमे नीतिगत-ऐतिहासिक दोषारोपणक पुनर्वितरण करैत अछि।

एहि रचनाक आलोचनात्मक महत्त्वक एक विशेष कारण अछि—लेखकक आरम्भिक वक्तव्यमे अनेक रामायण-रूपक उल्लेख आ श्री उमेशक ‘कैकेयी का अन्तर्द्वन्द्व’सँ संवादक संकेत भेटैत अछि। तथापि ओहि सभ उद्धृत ग्रन्थक अलग-अलग संस्करण, पाठभेद आ ऐतिहासिक मान्यता एहि अध्ययनमे स्वतन्त्र रूपसँ जाँचल नहि गेल अछि। मूल निबन्धमे जे ग्रन्थ-नाम आ प्रसंग उपस्थित अछि, ओतबे आधारपर तर्क-पद्धतिक निरीक्षण कएल गेल अछि।

विमाता-विमर्श : सामाजिक पूर्वग्रहक प्रतिपक्ष

पहिल खण्ड—‘सतमायक स्वरूप’ (मुद्रित पृ. १–६)—क तर्क सीधा समाजशास्त्रीय अछि : विमाता होयब अपने-आपमे कठोरता, अवमानना वा अन्यायक पर्याय नहि। लेखक दैनिक सामाजिक मान्यता आ परम्परागत दोष-रूपकक प्रश्न उठबैत छथि। कैकेयीपर लगाओल दोषकेँ ओ प्रथम दृष्ट्या कुटुम्बक घटना नहि, जनसमाज द्वारा निर्मित रूढ़ छवि

मानि पुछैत छथि। ई आरम्भ पाठकसँ अपन सहज नैतिक निर्णय रोकबाक आग्रह करैत अछि।

एहि खण्डमे 'दोषक पूर्वधारणा' आ 'व्यक्तिक वास्तविक कर्म'क बीच अन्तरक रूपरेखा अछि। कैकेयीकेँ पूर्वनिर्धारित अपराधिनी मानिकऽ जखन पाठक वनवासक प्रसंगमे प्रवेश करैत अछि, तखन हुनकर सभ क्रियाक अर्थ पहिले सँ निश्चित भऽ जाइत अछि। लेखक ओहि पाठकीय सुविधा केँ अस्थिर करैत छथि। एहि परिवर्तनक बल तर्कक कथ्य मात्रमे नहि, कथाक प्रवेशद्वार बदलि देबामे अछि : पहिले जे पात्र न्यायाधीशक कठघरामे छल, से आब अपन विरुद्ध निर्णयक न्यायसंगततापर प्रश्न करबाक अवसर पबैत अछि।

मुदा एहि सामर्थ्यक संग सीमा सेहो अछि। कोनो सामूहिक पूर्वग्रहक निरसनसँ व्यक्तिक प्रत्येक निर्णय स्वतः निर्दोष सिद्ध नहि भऽ जाइत अछि। विमाताकेँ बिना सुनने दोषी मानब अन्याय अछि; मुदा प्रतिकूल तथ्य उपस्थित होएबापर हुनकर क्रियाक आलोचना सेहो सम्भव रहबाक चाही। प्रथम खण्डसँ ही लेखकक बचाव-प्रवृत्ति एतेक बलवान अछि जे पाठककेँ सम्भावित वैकल्पिक अभिप्राय देखबाक कम स्थान भेटैत अछि।

दश उपखण्डक पृथक पाठविश्लेषण

राजनीतिक दूरदर्शिता : उत्तराधिकारसँ व्यापक लोकहित धरि

दोसर खण्ड (मुद्रित पृ. ७–१२) राजकाजक विवेक आ प्रबन्धनकेँ स्त्री-पात्रक पक्षमे आनि ठाढ़ करैत अछि। कैकेयी केवल अन्तःपुरमे सीमित नहि छथि; हुनका दृष्टिमे उत्तराधिकार, सैन्य-सुरक्षा आ सामाजिक संरक्षणक प्रश्न एकसाथ आबैत अछि—एहन लेखकक प्रस्तुति अछि। रामक वनगमनकेँ व्यापक राक्षसी अत्याचार-विरोधी अभियानक तैयारीक रूपमे पढ़ल जाइत अछि। ई विचार जँ तर्कक रूपमे स्वीकार कएल जाए तँ वनवासक दुर्भाग्य एक योजित ऐतिहासिक मोड़क अर्थ धारण करैत अछि।

समालोचनात्मक दृष्टिसँ एहि उपखण्डक मूल कमजोरी प्रमाण-स्तरक मिश्रण अछि। रामायणक कथानकमे उपलब्ध घटना आ लेखक द्वारा ओहि घटनाक पहिने कल्पित

राजनीतिक मंशा, दूनू समान स्तरक साक्ष्य नहि। पाठमे जेतय रावणक अत्याचार वा राजधर्मक प्रसंग अछि, ओतय राजकीय संकटक सन्दर्भ तर्कसंगत भऽ सकैत अछि; मुदा एतएसँ कैकेयी द्वारा पूर्वनियोजित सम्पूर्ण रणनीतिक निश्चितता स्वतः निष्पन्न नहि होइत अछि। एहि भेदकेँ रेखांकित करबाक बदला लेखक कतेको ठाम सम्भावनाकेँ निष्कर्षक स्वर देइत छथि।

उद्देश्य आ त्याग : नायकत्वक नैतिक उलटफेर

तेसर खण्ड (मुद्रित पृ. १३–१६) कैकेयीक मानसिकता आ निर्णयकेँ 'रामक शुभ' आ 'व्यापक समाजक रक्षा'क संग जोड़ैत अछि। एतय त्यागक रूपक विशेष प्रभावी अछि : जे स्त्री अपमानित होएबाक आशंका बुझैत छथि, मुदा लोकमंगल लेल से स्वीकार करैत छथि, से केवल क्रियाकर्त्री नहि, आत्मबलिदानी पात्र बनैत छथि। लेखकक तर्क-विस्तारमे कैकेयी अपन यशक बदला रामक भविष्यक पथ चुनैत छथि।

ई पाठ करुणा उत्पन्न करैत अछि, किन्तु एक आलोचनात्मक प्रश्न उपस्थित करैत अछि : त्यागक सत्यता कथासँ सिद्ध होइत अछि अथवा त्याग पहिने सँ मानि लेल जाए रहल अछि? यदि समस्त विवादास्पद आचरणकेँ परोक्ष परोपकारक साक्ष्य मानि लेल जाए, तँ कथात्मक परीक्षणक स्थान बचैत नहि। निबन्धक प्रेरक शक्ति एहि नायकत्व-उलटफेरमे अछि, आ आलोचनात्मक जोखिम सेहो एतहि अछि।

कैकेयीक रणनीति : साधन आ साध्यक नैतिक जटिलता

चारिम खण्ड (मुद्रित पृ. १७–२१) उद्देश्यक चर्चा सँ अगिला चरण पर जाइत अछि : उद्देश्य धरि पहुँचबाक तरकीब। लेखक संकेत करैत छथि जे रामक राजसिंहासनसँ अलग भेनाइ हुनकर भावी लोकहितकारी संघर्ष लेल आवश्यक बनल। राजकीय पद अथवा पारिवारिक सुविधा सँ परे तपस्वी-जैसन जीवनक उपयोगिताकेँ ओ रणनीतिक तर्कमे बदलैत छथि। एहि खण्डमे कैकेयी अपन निर्णयक परिणाम सहबाक क्षमता रखनिहार राजनीतिक पात्र बनैत छथि।

एहि विवेचनक नैतिक कसौटी दू प्रकारक अछि—मूल्यपरिणाम आ प्रक्रिया। यदि लोकहित उद्देश्य श्रेष्ठ अछि, तखनो निर्णयक प्रक्रिया पारदर्शी छल कि नहि, राम आ दशरथक सम्मति कोन रूपमे प्राप्त छल, प्रजाक सम्मति वा अधिकारक प्रश्न कतय अछि—एहि सभ प्रश्नक उत्तर आवश्यक अछि। लेखक मुख्यत: भविष्यक फलपर बल देइत छथि। परिणामवाद आ कर्तव्यबोधक ई तनाव निबन्धकेँ पढ़बाक एक उपजाऊ आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रदान करैत अछि।

रामक प्रति कैकेयीक स्नेह : मातृत्वक पुनर्परिभाषा

पाँचम खण्ड (मुद्रित पृ. २२–२४) स्नेहक प्रमाण जुटबैत कैकेयीकेँ केवल भरतक पक्षधर माता मानबाक रूढ़िक विरोध करैत अछि। रामक प्रति हुनकर सम्मान आ अपनत्वकेँ लेखक अनेक रामकथात्मक पद्य-प्रसंगक सहायतासँ उभारैत छथि। एहि पाठमे स्त्रीक मातृत्व जैविक पुत्रक सीमासँ बाहर प्रसारित अछि। बहुपत्नी राजपरिवारक भीतरी सम्बन्धकेँ वैर-संघर्षक सीमासँ मुक्त करब एहि उपखण्डक उल्लेखनीय उपलब्धि अछि।

मुदा मातृत्वक प्रतिष्ठा जखन कैकेयीक निर्दोषताक प्रमुख आधार बनैत अछि, तखन स्त्रीक स्वायत्त राजनीतिक इच्छा फेर मातृ-पहिचानक भीतर समा सकैत अछि। कैकेयी एक स्वतंत्र विचारशील स्त्रीक रूपमे जितबा चाहैत छथि, ओतहि विवेचन बारम्बार हुनकर मातृधर्मक पवित्रताक आश्रय लैत अछि। एही द्वन्द्वमे निबन्धक स्त्री-विमर्शात्मक शक्ति आ सीमा दूनू निहित अछि।

रामक स्नेह : प्रतिपक्षीक साक्ष्यक उपयोग

छठम खण्ड (मुद्रित पृ. २५–२९) सम्बन्धक दोसर पक्ष खोलैत अछि। लेखकक प्रस्तुति अनुसार राम कैकेयीकेँ आदर, ममता आ विश्वाससँ देखैत छथि; अर्थात् कैकेयीकेँ दोषी सिद्ध करबाक सामान्य पाठक-मानसक समक्ष रामक अपन व्यवहार एक प्रत्युत्तर बनैत अछि। यदि प्रत्यक्ष प्रभावित पात्र स्वयं कतेको प्रसंगमे करुणा, सम्मान आ संयम रखैत छथि, तँ पाठक द्वारा सम्पूर्ण नैतिक घृणाक औचित्य सहज नहि रहि जाइत अछि।

साहित्यिक दृष्टिसँ ई प्रयुक्ति समर्थ अछि, कारण एक पात्रक मूल्यांकनमे आन पात्रक प्रतिक्रिया महत्त्वपूर्ण संकेत होइत अछि। तथापि रामक क्षमाशीलता, आज्ञापालन अथवा आदरक अर्थ अनिवार्यतः कैकेयीक प्रत्येक निर्णयक समर्थन नहि। स्नेहक प्रमाण आ राजनीतिक निर्णयक वैधता—ई दू पृथक प्रश्न अछि। एहि भेदसँ पाठ करुणामय सेहो रहि सकैत अछि आ विवेचनात्मक सेहो।

गुप्त मन्त्रणा : कथात्मक रिक्त स्थानक कल्पनात्मक पूर्ति

सातम खण्ड (मुद्रित पृ. ३०–३६) रचनाक तर्करचनामे निर्णायक अछि। कैकेयी आ रामक बीच पूर्व-सहमति वा गुप्त समझक सम्भावना लेखकक विस्तृत प्रतिपादनमे आबैत अछि। एतय मिथकीय ज्ञात घटना आ कल्पित आन्तरिक वार्तालापक बीच अन्तर असाधारण महत्त्व धारण करैत अछि। लेखक गुप्त संवादक सम्भावनाक सहारे ई प्रश्न उठबैत छथि जे यदि वनवास केवल शत्रुताक परिणाम छल तँ रामक गरिमा, संकल्प आ स्वीकारभावकेँ कोना बूझल जाए।

सातम खण्ड एक प्रकारक अपूर्व-कथन निर्मित करैत अछि : मूल कथामे जे प्रसंग पर्याप्त स्पष्ट नहि, ओहि रिक्त स्थानमे उद्देश्यपूर्ण बैठक अथवा गोपनीय योजना कल्पित होइत अछि। मिथक-रचना वा आधुनिक पुनर्कथनक लेल ई वैध साहित्यिक युक्ति भऽ सकैत अछि। मुदा ऐतिहासिक/पाठालोचनात्मक प्रमाणक रूपमे एकरा प्रयोग करए काल लेखककेँ बताबए पड़त जे अनुमान कतेक दूर धरि अछि आ प्रत्यक्ष साक्ष्य कतय आरम्भ होइत अछि। एहि सीमारेखाक धुँधलापन निबन्धक सभसँ महत्त्वपूर्ण प्रमाणगत समस्या अछि।

वरदान : निजी माँगक सार्वजनिक अर्थ

आठम खण्ड (मुद्रित पृ. ३७–४०) दशरथ द्वारा दत्त वरदानक प्रसंगकेँ फेरसँ अर्थबद्ध करैत अछि। प्रचलित नैतिक कथा एहि माँगमे व्यक्तिगत स्वार्थ देखैत अछि; लेखक ओकरा एक कठिन सार्वजनिक दायित्व-निर्वाहक रूपमे ग्रहण करैत छथि। एतय शाब्दिक अर्थ—

भरतक राज्याभिषेक आ रामक वनवास—आ कथित परोक्ष उद्देश्य—रामक कार्यसिद्धि—क बीच अर्थक दूरी निबन्धक केन्द्र बनैत अछि।

एहि दूरीक साहित्यिक सौन्दर्य अछि : एके कार्य दुष्कर्म वा त्याग, दू भिन्न अर्थ धारण कऽ सकैत अछि। मुदा ओहि कारणेँ नैतिक परीक्षणक आवश्यकता आरो बढ़ैत अछि। वरदानक अनुबन्ध, राजसत्ता, पारिवारिक न्याय आ श्रेय-वितरण सभकेँ एकसाथ विवेचित करए बिना निष्कर्ष एकपक्षीय रहबाक आशंका अछि। निबन्ध ई प्रश्न उठबैत अछि, मुदा ओहि जटिलताक सभ पक्ष समान विस्तारसँ नहि खोलैत अछि।

वनवासक तैयारी : दुःखक भीतर उद्देश्यक रचना

नवम खण्ड (मुद्रित पृ. ४१–४५) रामक आगामी यात्राक अर्थपर बल देइत अछि। वनगमनकेँ कष्टकारी पारिवारिक दण्डक रूपमे मात्र नहि, युगीन संकटसँ जूझबाक आवश्यक तैयारीक रूपमे बुझाओल गेल अछि। लेखकक वर्णनमे कैकेयी दुखद परिणामक तत्काल बोझ स्वीकार करैत छथि, जखनकि राम व्यापक कर्तव्य निर्वाह लेल अग्रसर छथि। एहि व्याख्यामे दुःख अर्थहीन नहि रहैत; ओ उद्देश्यक अभिन्न अङ्ग बनि जाइत अछि।

पाठक-अनुभवक दृष्टिसँ ई अत्यन्त प्रेरक संरचना अछि, विशेषतः जखन कथाक प्रत्येक कष्ट आगाँ आबयबला नैतिक विजयक प्रस्तावना बनैत अछि। तथापि वनवासक वास्तविक पीड़ा, सीताक निर्णय, लक्ष्मणक स्थिति, अयोध्याक जनजीवन आ दशरथक असहायता केँ केवल पूर्वनियत योजना घोषित कए देलासँ ओहि पात्र सभक स्वतन्त्र अनुभव कम दिखाई पड़ैत अछि। उद्देश्यक ई सर्वव्यापक पाठ बहुकेन्द्रीय रामायणकेँ एक केन्द्रमे बाँधि सकैत अछि।

दशरथक मृत्युक कारण : दोषारोपणक पुनर्वितरण

दसम खण्ड (मुद्रित पृ. ४६–४८) सम्पूर्ण निबन्धक अंतिम प्रत्युत्तर अछि। दशरथक मृत्यु लेल कैकेयीकेँ सरल कारण मानबाक बदला लेखक पुरान श्रवणकुमार-प्रसंग, पितृशाप, विरह आ राजकीय विडम्बनाक सम्बन्ध प्रस्तुत करैत छथि। एहि निष्कर्षमे प्रचलित

आरोपक प्रतिकारक सर्वाधिक तीक्ष्ण रूप अछि : घटनाक कारण-वृत्त कैकेयीक तात्कालिक आग्रहसँ बहुत पाछाँ, दशरथक अपन कर्ममे पहुँचैत अछि।

ई पुनर्वितरण रामकथाक नैतिक स्मृति पर प्रश्न उठबैत अछि। मुदा कारणक बहुलता स्वीकार करब आवश्यक अछि। शापक आख्यान, दशरथक मनोदैहिक शोक, वरदानक परिणति आ राजपरिवारक संकट अलग-अलग व्याख्यात्मक स्तरक घटना छथि। कैकेयी एकमात्र दोषी नहि होएबाक तर्क उचित भऽ सकैत अछि; किन्तु हुनका समस्त कारण-संबन्धसँ मुक्त करबाक निष्कर्षक लेल अपेक्षाकृत कठोर तर्क चाही। निबन्धक अन्तिम प्रभाव सहानुभूतिपूर्ण अछि; ओकर प्रमाणगत अन्तिमता खुलल प्रश्न रहैत अछि।

आलोचनात्मक सिद्धान्त : प्रमाण, अनुमान आ पुनर्कल्पना

नन्द कुमार मिश्रक कृतिक मूल्यांकन केवल 'कैकेयी नीक छलि कि खराब' एहि द्विपदी प्रश्नपर सीमित नहि राखल जाए। अधिक उपयोगी प्रश्न अछि—कथात्मक प्रमाणसँ कोन प्रकारक ज्ञान प्राप्त भऽ रहल अछि? यदि मूल काव्यक कोनो प्रसंगमे रामक प्रति कैकेयीक स्नेहक संकेत भेटैत अछि, तँ ओहि सँ स्नेहक निष्कर्ष सम्भव अछि। यदि लेखक अगिला चरणमे मानि लैत छथि जे रामक वनवासक गुप्त षड्योजना पहिने सँ स्वीकृत छल, तँ ओ अनुमानक क्षेत्रमे प्रवेश करैत छथि। दुनू कथन समान प्रमाण-स्तरक नहि।

नव्य-न्यायक विवेचन-भाषा उधार लिअ तँ 'प्रमाण' आ 'अर्थापत्ति' अथवा 'अनुमान'क सीमाकेँ चिन्हित करब जरूरी अछि। प्रमाण देखबैत अछि जे कोन पाठीय अंश निश्चित अर्थमे उपस्थित अछि; अनुमान ओहि आधारपर नवीन सम्बन्धक प्रस्ताव करैत अछि; कल्पनात्मक पुनर्कथन ओहि सम्भावनाकेँ कलात्मक रचना बना सकैत अछि। निबन्ध तीसू क्रियाकेँ सक्रिय करैत अछि, किन्तु स्पष्ट पृथक्करण नहि करैत। शोध-पाठकक लेल ई अंतर कृतिक गुण आ त्रुटि बुझबाक कुंजी अछि।

इंटरटेक्स्टुआलिटी अर्थात् अन्तरपाठीयता एहि कृतिक दोसर महत्त्वपूर्ण आधार अछि। वाल्मीकि-प्रसंग, रामचरितमानस, आधुनिक 'कैकेयी का अन्तर्द्वन्द्व' आ अन्य रामायण-

परम्पराक सन्दर्भ एकहि नैतिक उद्देश्यक पक्षमे जुटैत अछि। एहि संवादक बल ई अछि जे अलग-अलग कालक स्वर एक उपेक्षित पात्रक पक्षमे बोलैत प्रतीत होइत अछि। कमजोरी ई अछि जे सभ संदर्भक काल, विधा, स्रोत-संस्करण आ आशयकेँ समान स्तरपर राखि देलासँ मूल पाठ आ आधुनिक काव्यक प्रमाण-भेद अस्पष्ट भऽ सकैत अछि।

भारतीय काव्यचिन्तनक दृष्टिसँ करुण आ वीर भावक समवेत प्रभाव कृतिमे प्रमुख अछि। कैकेयी अपन निन्दा सहन करैत छथि—ई करुण पक्ष; ओ लोकमंगल लेल कठिन निर्णय लेलथि—ई वीरत्वक प्रस्ताव। तथापि रचनामे रसोत्पत्ति सँ अधिक युक्ति-प्रसंग आ पक्षसमर्थन चलैत अछि। ताहि कारणेँ एकरा पूर्ण काव्यात्मक पुनर्कथनक बदला व्याख्यात्मक प्रवचन कहब अधिक उचित अछि।

स्त्री-दृष्टि : पुनर्प्रतिष्ठा आ ओकर अन्तर्विरोध

कैकेयीकेँ बुद्धिसम्पन्न, साहसी आ दूरदर्शी राजनीतिक व्यक्तित्वक रूपमे पुनः केन्द्रमे अनब एक सार्थक स्त्री-विमर्शात्मक घटना अछि। ई उलटफेर प्रश्न करैत अछि जे ऐतिहासिक स्मृतिमे स्त्रीक सक्रियता केँ किन कतेको बेर स्वार्थ, छल आ विनाशक शब्दमे प्रस्तुत कएल जाइत अछि।

मुदा नारीक मुक्ति केवल निर्दोष माताक प्रतिष्ठा धरि सीमित नहि। कैकेयी जँ सचमुच राजनीतिक व्यक्तित्व छथि, तँ हुनकर निर्णयसे असहमत होएबाक अधिकार सेहो पाठकक रहत। स्त्रीक स्वतन्त्रता मतलब हुनका आलोचनासँ ऊपर राखब नहि, बरु हुनकर राजनीतिक तर्क, साधन आ परिणाम केँ पुरुष पात्र सभक समान कसौटीपर जाँचब अछि। निबन्धक बचाव-स्वर एकहि बेर कैकेयीकेँ प्रबल करैत अछि आ हुनकर सम्भावित अन्तर्विरोध कम करैत अछि।

एहि रचनामे मंथरा, कौसल्या, सीता आ अयोध्याक आन स्त्री-अनुभवक स्थान अपेक्षाकृत गौण देखाइत अछि। कैकेयीकेँ केन्द्र देब रचनाक वैध चुनाव अछि; मुदा स्त्री-इतिहासक बहुस्वरता लेल आन स्त्रीक दृष्टिकोण संग संवाद उपयोगी होइत। केवल निन्दित

रानीकेँ उच्च नैतिक नायिका बना देब स्त्री-विमर्शक अन्तिम लक्ष्य नहि होएबाक चाही। निन्दित-पवित्रक द्वन्द्वसँ बाहर पात्रक जटिल मानवीयता बचेनाइ आरो आवश्यक अछि।

भाषा, विन्यास आ प्रवचनक कलात्मकता

गद्यक मूल स्वर तर्कात्मक आ सम्बोधनधर्मी अछि। लेखक प्रश्न उठबैत छथि, प्रचलित धारणाक पुनरुक्ति करैत छथि, तकर विरोधमे उद्धृत पद्य वा प्रसंग अनैत छथि, आ फेर अपन निष्कर्ष निर्दिष्ट करैत छथि। ई क्रम पाठककेँ संग लऽ चलबाक प्रवचनात्मक शैली बनबैत अछि। छोट-छोट उपखण्ड निबन्धक केन्द्रीय प्रस्तावकेँ क्रमिक रूपसँ दृढ़ करैत अछि। सामान्य पाठक लेल एहि शैलीक सुगमता एकटा गुण अछि।

मुदा एके निष्कर्ष बारम्बार, भिन्न-भिन्न उपखण्डमे, बहुत कम नूतन संशयक संग अभिव्यक्त होइत अछि। ई पुनरावृत्ति भावनात्मक पक्षधरता केँ सुदृढ़ करैत अछि, पर बहसक तीव्रता घटा सकैत अछि। पाठक यदि प्रमाणक द्वन्द्व वा प्रतिपक्षीक सशक्त तर्क अपेक्षित करैत छथि तँ हुनका निरन्तर बचावक ध्वनि किछु एकरंगी बुझाइत। प्रतिवादक प्रभाव हेतु प्रतिपक्षकेँ सर्वप्रथम ओकर सबलतम रूपमे उपस्थित करब उपयुक्त होइत।

कृतिक भाषा मैथिलीकेँ आधुनिक नैतिक आ राजनीतिक विवेचनक माध्यम बनबैत अछि। स्थान-स्थानपर संस्कृत पदावली, उत्तर भारतीय हिन्दी-मूलक तर्क-शब्दावली आ रामकथा-सम्बद्ध धार्मिक शब्द एकत्र भेटैत अछि। एकरासँ निबन्ध लोकधार्मिक स्मृति आ शास्त्रीय उद्धरणक बीच संवाद स्थापित करैत अछि। तथापि सम्पादकीय एकरूपता—विरामचिह्न, संस्कृत पाठक मानकीकृत स्रोत-निर्देश, उद्धरण आ व्याख्याकेँ अलग देखायब—यदि आर सुदृढ़ होइत, तँ अकादमिक उपयोगिता बढ़ित।

प्रारम्भिक आवरणमे कैकेयी-पुनर्विचारक विषयसँ प्रत्यक्ष मेल नहि खाइत पौराणिक रथ-चित्र दिखाई देइत अछि। एहिसँ पुस्तकक सांस्कृतिक प्रसंग सूचित होइत अछि, मुदा चरित्रक स्वकीय छवि नहि बनैत। मुद्रित पोथीमे चित्रक प्रयोग अत्यल्प अछि; मुख्य प्रभाव

लेखकीय कथन आ शास्त्रीय उद्धरणक टकराहटसँ उत्पन्न होइत अछि। एहि आधारपर कृतिक दृश्य-संयोजन बाल-पुस्तकक सहायक चित्र-कथा संरचनासँ भिन्न अछि।

बाल-साहित्यक इतिहासक सन्दर्भमे तुलनात्मक विवेचन

'महारानी कैकेयी' केँ बाल-साहित्यक इतिहासमे राखए काल प्राथमिक सावधानी विधागत भेद अछि। ई बाल-पाठककेँ लक्ष्य कए लिखल चरित्र-कथा अथवा सचित्र बाल-उपन्यास नहि, अपितु एक परिपक्व पाठकसँ तर्क-वितर्क करएबला निबन्ध अछि। विदेहक 'शिशु उत्सव' आ पोथी-सूचीमे नन्द कुमार मिश्रक 'स्वर्ण कमल' स्पष्ट रूपेँ बाल-उपन्यासक रूपमे सूचीबद्ध अछि। एहि भेदकेँ मिटाकऽ 'महारानी कैकेयी' केँ बाल-उपन्यासक श्रेणीमे गनब साहित्य-इतिहासक त्रुटि होएत।

एहिसँ बाल-अध्ययनक संग कृतिक सम्बन्ध समाप्त नहि भऽ जाइत अछि। मिथकीय कथाक पुनर्व्याख्या नेना आ किशोरक नैतिक बोधमे एक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक प्रश्न उपस्थित करैत अछि : कथा-पात्रकेँ जखन समाज दोषी कहैत अछि, तँ की पाठक बिना प्रमाण निर्णय देथि? एहि निबन्धक आरम्भिक विमाता-विमर्श पूर्वग्रह, न्याय आ दृष्टिकोणक परिवर्तन पर चर्चा खोलि सकैत अछि। विशेषत: किशोर-पाठक लेल ई विषय उपयोगी अछि, मुदा मूल तर्कात्मक गद्यकेँ सहज पठनीय बनएबाक लेल स्वतंत्र रूपान्तरण आवश्यक होएत।

विदेहक उपलब्ध बाल-साहित्य सूची बाल-पाठकक बदलैत अभिरुचिक एक प्रमाणित संग्रह-चित्र प्रस्तुत करैत अछि : प्रीति ठाकुरक 'गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा' (२००८), 'मिथिलाक लोकदेवता' (२०१०) आ 'विद्यापतिक पुरुष परीक्षा' (२०१२) चित्रकथा आ सांस्कृतिक परम्पराकेँ बाल-अनुकूल माध्यममे राखैत अछि; योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क 'विज्ञानक बतकही', 'रोबोट' आ 'हमर गाम' विज्ञान, कल्पना आ सामाजिक अनुभवक क्षेत्र खोलैत अछि; नन्द कुमार मिश्रक 'स्वर्ण कमल'क संग जगदानन्द झा 'मनु'क 'चोनहा' तथा जगदीश प्रसाद मण्डलक 'नै धाड़ैए' बाल-उपन्यासक प्रवाह प्रदर्शित करैत अछि। एहि उदाहरणसभकेँ सम्पूर्ण मैथिली बाल-साहित्यक कालानुक्रमिक सर्वेक्षण नहि, विदेह-संग्रहमे सत्यापित चुनल कृतिसभक तुलनात्मक मानचित्र मानल गेल अछि।

तुलनासँ तीन प्रकारक अन्तर स्पष्ट होइत अछि। पहिल—चित्रकथामे दृश्य, प्रसंग आ संवादक माध्यमसँ अर्थ क्रमशः बनैत अछि, जखनकि 'महारानी कैकेयी'मे पूर्वज्ञात कथा पर विचारक गहन तर्क-विस्तार प्रमुख अछि। दोसर—बाल-विज्ञान आ साहसिक आख्यानमे खोज, प्रश्न आ नूतन अनुभव कथात्मक गति देइत अछि, जबकि एहि कृतिमे एक निश्चित पुनर्व्याख्याक समर्थन कथा-विकासपर भारी अछि। तेसर—बाल-साहित्यक नैतिक उद्देश्य पाठककेँ अपना निर्णय लेल जागरूक करब अछि; एहि निबन्धक मूल प्रवृत्ति कैकेयीक पक्षमे पाठककेँ दृढ़ विश्वास प्रदान करब अछि। किशोर संस्करणमे यदि विरोधी पाठ, स्वतन्त्र प्रश्न आ विकल्प खुला राखल जाए तँ एकर समालोचनात्मक उपयोगिता बढ़ि सकैत अछि।

इतिहासक दीर्घ परिप्रेक्ष्य हेतु 'विदेह'क समानान्तर इतिहास (भाग १३) आ उपलब्ध 'शिशु उत्सव' संग्रह देखल जा सकैत अछि। एहि डिजिटल अभिलेखमे लोककथा, सचित्र पुस्तक, कविता, विज्ञान-कल्पना आ किशोर उपन्यासक विविध विधा एकसाथ उपस्थित अछि। एहि साक्ष्यसँ बाल-साहित्यक वर्तमान डिजिटल विस्तारक चर्चा समर्थित होइत अछि, मुदा सम्पूर्ण बीसम शताब्दीक दशकवार सृजन-सूचीक दावा एकर आधारपर नहि कएल गेल अछि। एक प्रमाणित कालानुक्रमिक इतिहास लेल स्वतंत्र प्रकाशन-सूची, प्रथम संस्करण आ समकालीन समीक्षा-जर्नलक विशद परीक्षण अलग सँ अपेक्षित अछि।

पूर्ववर्ती आलोचनासँ संवाद : विधा आ पृष्ठ-संख्याक प्रश्न

ई अन्तर साधारण तथ्य-संशोधन सँ बेसी महत्त्व रखैत अछि। यदि कथात्मक संवादक कल्पनाक कारण विधा 'नाटक' घोषित भऽ जाइत अछि तँ प्रवचनक मुख्य तर्क-शिल्प ओझराइत अछि। शोध-पद्धति ई माँग करैत अछि जे बाहरी समग्र समीक्षा उपयोगी होइतहुँ प्राथमिक ग्रन्थक प्रत्यक्ष संरचनाक स्थाने नहि लेल जाए। नन्दक कृतिक उचित प्रतिष्ठा एहि संशोधित विधाबोधपर निर्भर अछि।

पूर्ववर्ती आलोचना कैकेयीकेँ राजनीतिक बुद्धि आ आत्मबलिदानक प्रतिपक्षी चरित्रक रूपमे देखैत अछि। वर्तमान अध्ययन ओहि उपलब्धि स्वीकार करैत अछि, मुदा ई सवाल

जोड़ैत अछि जे एक विपरीत नैतिक निष्कर्ष स्थापित करबाक प्रयास कतय वैचारिक पुनर्पाठ अछि आ कतय साक्ष्यहीन निरपेक्षीकरण। एहन प्रश्नक संग कृतिक मूल्यांकन करब ओकर साहित्यिक प्रभाव घटबैत नहि; उलटे, ओकर वास्तविक आलोचनात्मक शक्ति स्पष्ट करैत अछि।

पृष्ठ-सूचक प्रमाण-मानचित्र आ उद्धरणक पाठ-शुद्धता

ई उद्धरणक अभाव नहि छिपाएब, बल्कि पाठालोचनाक एक आवश्यक अनुशासन अछि : शोध-पत्रमे एक अक्षरक अनिश्चितता सेहो मूल कवि वा लेखकक नामपर नहि थोपल जाए।

निष्कर्ष : प्रतिपाठक उपलब्धि आ साक्ष्यक मर्यादा

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘महारानी कैकेयी’ मैथिलीमे रामायणक एक निन्दित स्त्री-पात्रक पक्षमे व्यवस्थित तर्क प्रस्तुत करबाक उल्लेखनीय प्रयत्न अछि। कृतिक दस उपखण्ड दोषक सामाजिक रूढ़ि खण्डित करैत राजनीतिक विवेक, लोकमंगल, मातृस्नेह, गुप्त सहमति, वरदानक पुनःअर्थवत्ता आ दशरथक मृत्युकेँ बहुकारणीय परिप्रेक्ष्यमे स्थापित करैत छथि। एहि क्रममे लेखक पाठककेँ परिचित कथाक अनदेखल कोण सँ सोचबाक अवसर प्रदान करैत छथि।

एकर साहित्यिक उपलब्धि न्यायबोधक विस्तार अछि। पात्रक चर्चित अपराधक पहिने ओकर दृष्टिकोण सुनबाक आग्रह अपने-आपमे आलोचनात्मक संस्कार अछि। एकर सामाजिक उपलब्धि विमाता आ स्त्री-अभिकर्तृत्वक सम्बन्धमे पूर्वाग्रहक प्रतिरोध अछि। एकर भाषिक उपलब्धि मैथिली गद्यकेँ मिथक-विवेचनक विवादपूर्ण क्षेत्रमे सक्रिय करब अछि। एही सभ कारणेँ ई निबन्ध स्वतंत्र अनुसन्धानक पात्र अछि।

किन्तु मूल्यांकनक अन्तिम वाक्य निबन्धक पक्षधरता नहि, ओकर प्रश्नजागरण होएबाक चाही। कैकेयीक सम्भावित लोकहितैषी प्रेरणा एक व्याख्या अछि; ओकर सम्पूर्ण प्रामाणिकता अलग साक्ष्यसँ सिद्ध होएबाक विषय अछि। लेखक जखन कल्पनात्मक

पुनर्संयोजन, शास्त्रीय उद्धरण आ ऐतिहासिक-सांस्कृतिक सिद्धान्तकेँ निरन्तर जोड़ैत छथि, तखन विधागत आ प्रमाणगत सीमारेखा अनेक ठाम धुँधला भऽ जाइत अछि। एहि सीमा सहित पढ़ल गेल ‘महारानी कैकेयी’ न दोषमुक्तिक अन्तिम न्यायादेश अछि, न परम्पराक सरल खण्डन; ई प्रतिष्ठित कथाक नैतिक सहजताकेँ चुनौती दएबला, बहसक निमित्त प्रदान करएबला एक महत्त्वपूर्ण मैथिली गद्यकृति अछि।

चारिम खण्ड

गीतक लोकधारा आ बाल-कल्पना

काव्य सरिता · स्वर्ण-कमल

अध्याय ११

काव्य सरिता

लोकधुन, सामाजिक विवेक आ काव्य-रूपक बहुधारात्मकता

आलोचनात्मक शोध-निबन्ध | मैथिली भाषा आ साहित्य

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘काव्य सरिता’ (२०१९) कैं एकल भावधाराक कविता-पोथी मानि पढ़लासँ ओकर रचनात्मक बनावट ओझराएत। संग्रहमे वन्दना, देवीगीत, भजन, नचारी, कजरी, चैती, लोकधुन-आश्रित रचना, सामाजिक सुधारक गीत, राजनीतिक व्यंग्य, पारिवारिक संवेदना, ग्राम-स्मृति, मातृभाषा-चेतना आ देशप्रेमक सहअस्तित्व अछि। बाल-साहित्यक इतिहाससँ एकर सम्बन्ध सेहो विचाराधीन अछि; मुदा संग्रहकैं बाल-साहित्यक ग्रन्थ घोषित करबाक बदला बाल-पाठकक लेल उपयुक्त किछु अंश आ प्रौढ़ पाठकक लेल अभिप्रेत रचनामे जरूरी अन्तर राखल गेल अछि।

काव्यक विषयविस्तार आ बनावट

‘काव्य सरिता’क अध्ययनमे आरम्भे ई स्पष्ट रहबाक चाही जे लेखक एकर उपशीर्षक ‘मैथिली कविता संग्रह’ रखने छथि। प्रकाशकीय विवरणक अनुसार २०१९ ई. मे गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, दरभंगासँ एकर प्रथम संस्करण प्रकाशित भेल; मूल्य ₹१५० अंकित अछि। पोथीक आरम्भमे समर्पण, अभिनन्दन आ लेखकीय निवेदनक पृष्ठ अछि। मुख्य भागमे क्रमांकित कविता एकसँ एक सय चौंसठ धरि चलैत अछि। ई क्रमशः बदलैत शीर्षक, भाव, छन्द-लय आ प्रसङ्गक मार्फत एक विस्तृत रचनाधार बनबैत अछि। संग्रहक अन्तिम भागमे रचनाकारक संक्षिप्त परिचय ओ कृतिसूची सेहो अछि।

‘सरिता’ रूपक स्वयं निरन्तर बहबाक संकेत करैत अछि। मुदा एहि प्रवाहकैं एक्कहि रसक नदी मानब भूल होएत। कखनो भाव श्रद्धाक अछि, कखनो शोक वा बिछोहक; कतहु सान्निध्यक घरेलू लय छैक तँ कतहु भोगल सामाजिक विसंगतिक विरुद्ध सार्वजनिक

आवाज। कवि परम्परागत गीतिक धरातलसँ बहिर्गत भऽ राजनीतिक टीका धरि पहुँचैत छथि। आलोचनाक प्रश्न तेँ ई नहि जे संग्रहमे कोन एकता खोजी, बल्कि ई जे एतेक पृथक स्वर सभ कोन भाषिक आ सांस्कृतिक संसाधनसँ एकठाम होइत अछि।

अध्ययनमे तीन स्तरक प्रमाण अलग राखल गेल अछि : (क) पुस्तकक शीर्षक-पृष्ठ, प्रकाशकीय विवरण, रचनाक क्रमांक, मुद्रित पृष्ठाङ्क आ शीर्षक, (ख) कवितासमूहक विषय-प्रवृत्ति, वाचिक शैली आ विधागत प्रकृति, आ (ग) विदेहक सार्वजनिक बाल-साहित्य तथा मैथिली-साहित्य-विषयक दस्तावेज, जे तुलनात्मक पृष्ठभूमि प्रदान करैत अछि। एहि संयमसँ पाठककेँ काल्पनिक उद्धरणक भ्रमसँ बचाओल जा सकैत अछि। जतेक ठाम मुद्रित पृष्ठ देल गेल अछि, से कविता वा कवितासमूहक पहिचान लेल अछि, उद्धृत पङ्क्तिक प्रमाणीकरण लेल नहि।

ई आलोचना पुस्तकमय साहित्यिक निर्णय अछि, मात्र लेखकक प्रशंसा-पत्र नहि। जे ठाम विषयक विस्तारक मूल्य अछि, ओतहि भाषाक उपदेशात्मकता, भावक पुनरुक्ति, लोकधुनक साधारणीकृत प्रयोग, लय-संयमक प्रश्न आ साहित्यिक जटिलताक सम्भावित कमीकेँ सेहो परखल जाएत। पाठमे समाविष्ट लोकगीत आ प्रगीतकेँ एकहि प्रतिमानसँ नापब उचित नहि; सार्वजनिक गीतक सफलता श्रोता-समुदायक ग्रहणशीलतासँ सम्बन्धित रहैत अछि, जखन कि आत्मनिष्ठ कविता बिम्ब, मौन, वक्रता आ बहुअर्थकता माँगैत अछि।

कृतिकारक साहित्यिक क्षेत्र आ संग्रहक आन्तरिक स्थापत्य

‘विदेह’क पोथी-सूचीमे नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क कथा, उपन्यास, शब्दचित्र, संस्मरणात्मक लेखन आ काव्यक अलग-अलग कृतिसभ दर्ज अछि। ‘गामघर’, ‘सुजाता’, ‘गुदरीक लाल’, ‘अनठिया कुकुर’, ‘सुकन्या’, ‘स्वर्ण कमल’ आ ‘काव्य सरिता’क सहउपस्थिति लेखकक विधागत विविधताकेँ स्पष्ट करैत अछि। ताहि सन्दर्भमे ई काव्य-संग्रह अलगावमे नहि, कथात्मक यथार्थ-बोध आ लोकानुभवक संग सम्पर्कमे पढ़बाक वस्तु अछि। मुदा आन ग्रन्थक कथावस्तु एतऽ कल्पनासँ एहि पोथीपर आरोपित नहि कएल जा सकैत अछि।

पुस्तकक प्रारम्भिक रचना-क्रममे ‘गणेश वन्दना’, ‘सरस्वती वन्दना’, ‘माँ’, ‘देवी गीत’ आदिक बहुलता पवित्र-लोकक वाचिक परिवेश रचैत अछि। एहि पछाति ‘दुलार’, ‘भजन’, ‘नचारी’, ‘कजरी’, ‘चैती’ आ अनेक सामाजिक-विषयक गीत आबैत अछि। मध्यभागमे परिवार नियोजन, साक्षरता, नदी-प्रदूषण, दहेज, राजनीति, गरीबी आ सार्वजनिक आचरणक प्रश्न खुलैत अछि। अन्त्यभागक रचनामे ‘की हम आजाद छी?’, ‘समय’, ‘घूस’, ‘हमर गाम’, ‘राज मिथिला हम लेबे’ आ देशभक्ति-गीत जकाँ विषय आओर प्रखर होइत अछि। एहि क्रमसँ कविक निजी-धार्मिक संस्कारसँ सामाजिक उपस्थितिकेँ जोड़बाक प्रयत्न पढ़ल जा सकैत अछि।

संरचनाक एकटा विशेषता अछि—विधागत शीर्षकक पुनरागमन। ‘माँ’, ‘देवी गीत’, ‘नचारी’, ‘कजरी’ आ ‘गीत’ जकाँ शीर्षक मात्र विषय-निर्देश नहि, गायन-परम्पराक परिचय सेहो अछि। साहित्यिक पुस्तकक पाठमात्र स्वरूपकेँ ई शीर्षक लोकसभाक सम्भावित सामूहिक गायनक दिस खोलैत अछि। एही कारण एहि संग्रहक आलोचनामे केवल आधुनिक मुक्तछन्दक कसौटी लगेनाइ अनुचित; गीतक टेक, तुक, आवृत्ति आ उच्चारणीयताक अलग बोध चाही।

एतऽ एकटा सम्पादकीय सीमा सेहो दृष्टिगोचर होइत अछि। विषयक आश्रयपर स्पष्ट खण्ड-विभाजन नहि रहला सँ पाठककेँ श्रद्धागीतसँ विडम्बना-गीत वा प्रणयक प्रसङ्गसँ राजनैतिक गान धरि स्वयं मार्ग बनाबय पड़ैत छैक। ई आकस्मिकता नदीक प्रवाहक सहजता सेहो पैदा करैत अछि, मुदा संग्रहक समालोचनात्मक पाठ कठिन बनबैत अछि। भविष्यक आलोचनात्मक संस्करणमे विधागत अनुक्रमणिका, शब्दार्थ, गायन-परम्परा आ रचना-कालक जानकारी विशेष उपयोगी होएत।

वन्दना, भक्ति आ मैथिली लोकधर्मिता

प्रारम्भिक गणेश-वन्दना तथा सरस्वती-वन्दनाक स्थान केवल धार्मिक निश्चय नहि, रचनारम्भक सांस्कृतिक विधान सेहो अछि। विद्याकेँ सरस्वतीसँ आ आरम्भकेँ गणेशसँ जोड़बाक पद्धति मिथिलाक लोक-समारोह आ पारम्परिक काव्य-विन्यासमे परिचित अछि।

एहि प्रकारक वन्दनामे प्रथम पुरुषक अहम् बहुत बेर गौण भऽ दैवी सम्बोधन प्रधान होइत अछि। भावक सार्वजनिकता गीतक सामूहिक पुनरावृत्तिक संभावना बढ़बैत अछि। [१; मुद्रित पृ. ३–५]

‘माँ’ शीर्षकक अन्तर्गत अलग-अलग रचना आ तकर बादक ‘देवी गीत’—एहि दू क्षेत्रकेँ गड्डमड्ड नहि करबाक आवश्यकता अछि। एक दिस जननी-सम्बन्धी वात्सल्य, स्मृति, ममता वा स्नेहक भावभूमि रहि सकैत अछि; दोसर दिस देवीक आवाहन आ अनुष्ठानिक भक्ति। संग्रहमे ई समीपता मातृत्वक सांस्कृतिक प्रतिमा आ देव्यर्थक आध्यात्मिक प्रतिमाकेँ एकटा भाव-परिवारमे अनैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ एकर सम्भावना आ संकट दुनू अछि : स्नेहक ठोस मानवीय अनुभव प्रखर भऽ सकैत अछि, मुदा देव्य आदर्शक अत्यधिक महिमामण्डन वास्तविक स्त्री-अनुभवक विविधताकेँ ढाँकि सकैत अछि। [१; मुद्रित पृ. ६–१९]

‘नचारी’ समूहमे कविक एकटा महत्त्वपूर्ण आश्रय मिथिलाक शैव-गायन परम्परा अछि। नचारीक सांस्कृतिक बल शास्त्रीय विनयसँ बेसी मनुक्खक असहायता, देवताक निकटता, उलाहना, प्रार्थना आ सहज हास्यक बीचक आवाजमे होइत अछि। एहि विधाक सार्थक समीक्षा लेल प्रश्न ई अछि जे कवि परम्पराक टेकक पुनरुत्पादन करैत छथि कि अपन जीवन-अनुभवसँ ओकरा परिवर्तित करैत छथि। एहि संग्रहमे नचारीक बहुलता लेखकक लोकसङ्गीतक अभ्यासकेँ सूचित करैत अछि; साहित्यिक मौलिकताक आकलन मुदा केवल बहुलतासँ नहि, अर्थभेदक बारीक परीक्षणसँ होएत। [१; मुद्रित पृ. २८–३७]

भजन आ हनुमान-वन्दना जकाँ रचनाक संग सामाजिक प्रश्नक सहअस्तित्व एहि पोथीक उल्लेखनीय गुण अछि। भक्ति एतऽ साहित्यिक परिसरकेँ छोड़ि कोनो पूर्ण निरपेक्ष संसार नहि बनबैत अछि। कविक भाषा श्रद्धा, लोकाचार आ न्याय-विवेकक बीच आवाजाही करैत अछि। भक्ति-रचनाक सीमा ओतय प्रकट होइत अछि जतय उपदेश, विनय आ एके भावक नूतन पर्याय बिम्बात्मक खोजक बदला विस्तार ग्रहण करैत अछि। जतेक ठाम

अनुष्ठानिक अभिव्यक्ति रसात्मक उत्कटतामे बदलैत अछि, ओतेक ठाम ई कविता स्वतंत्र काव्य-मूल्य प्राप्त करैत अछि।

कजरी, चैती आ ऋतु-गीत : श्रव्य परम्पराक काव्य-व्याकरण

‘कजरी’ तथा ‘चैती’ शीर्षकक उपस्थिति संकेत करैत अछि जे कवि मैथिली कविता कें वाचनक संगहि गायनक विधा मानैत छथि। ऋतु-सापेक्ष लोकगीतमे वर्षा, ऋतु-सन्धि, प्रतीक्षा, विरह, श्रृंगार, पथिक, परिवार आ ग्राम-परिसरक अनुभव लोक-स्मृतिक माध्यम बनैत अछि। लिखित पाठमे लोकधुन उपस्थित रहबाक प्रमाण केवल तुकबन्दी नहि; उच्चारणक ताल, टेकक लौटान, छोट पदसमूह आ समूह-गायनक अनुकूल क्रम सेहो देखल जाएबाक चाही। [१; मुद्रित पृ. ४२–४५]

लोकगीतक अनुकरण आ लोकगीतक पुनर्सृजनमे भेद अछि। केवल परिचित शब्द, ऋतु-नाम आ पारम्परिक उपमान जुटाय देलासँ कविता सृजनात्मक नहि भऽ जाइत अछि। पुनर्सृजन तखन होइत अछि जखन पुराने लयमे समसामयिक मनोभाव, बदलैत स्त्री-पुरुष सम्बन्ध वा प्रवासक नव पीड़ा आवाज पबैत अछि। ‘काव्य सरिता’क गीतात्मक भाग एहि कसौटीपर पढ़बाक आवश्यकता उत्पन्न करैत अछि। संकलनक महत्त्व लोकगीत-परम्परासँ सार्वजनिक सम्बन्ध बनौने रखबामे अछि; एकर चुनौती अलग-अलग पदक कल्पनाशील भिन्नता बनौने रखब अछि।

लोकधर्मी काव्यकें आधुनिक पत्रिकाक नितान्त मूक पाठकक लेल लिखल कविता जकाँ पढ़लासँ अर्थक एकटा मूल अंश छुटि जाइत अछि। ‘नचारी’, ‘भजन’, ‘कजरी’ आ ‘चैती’क भाव-सम्प्रेषणमे गायकक देह, श्रमिक-सांस, श्रोता-समुदाय आ अनुष्ठानिक अवसर अर्थनिर्माण करैत अछि। एहि प्रकार ई संग्रह लिखित साहित्य आ प्रदर्शनकारी मौखिक साहित्यक बीच पुलक कार्य करैत अछि। आलोचनात्मक सम्पादनमे धुनक नाम, अवसर, क्षेत्रीय रूपभेद आ सम्भावित गायन-ताल जोड़ला सँ ई पक्ष अधिक स्पष्ट होएत।

परिवार, स्त्री-अनुभव आ सुधारवादी चेतना

‘परिवार नियोजन’ आ ‘साक्षरता’क निकट उपस्थिति कविक सुधारवादी मानसक साक्ष्य अछि। एहि विषयक कविता बहुधा नीति-प्रचारक गीत बनबाक जोखिम लैत अछि, कारण ओकर उद्देश्य आरम्भे तय रहैत अछि। मुदा साहित्यक प्रश्न ई अछि जे कवि निर्धारित सन्देशकेँ मनुक्खक अनुभवमे उतारि सकैत छथि कि नहि। परिवार नियोजन पर गीत सामाजिक स्वास्थ्य-चेतनाक परिचायक भऽ सकैत अछि; मुदा परिवारक स्त्री-पुरुषक निर्णयाधिकार, वर्ग-विषमता आ स्थानीय संकोचक प्रस्तुति बिना विचार केवल निर्देश भऽ जायत। एहि समूहकेँ मूल्याङ्कन करैत समय एकर लोक-प्रसारक उपयोगिता आ कल्पनात्मक घनत्व अलग-अलग मापब आवश्यक अछि। [१; मुद्रित पृ. ३८–३९]

‘दहेज’ पर केन्द्रित रचनाक आगमन एकर सामाजिक विवेककेँ ठोस मुद्दा प्रदान करैत अछि। विवाह सम्बन्धी अनुष्ठान, परिवारक प्रतिष्ठा, धनक दबाव आ स्त्रीक गरिमा मिथिलाक सामाजिक आलोचनामे महत्वपूर्ण प्रश्न रहल अछि। शीर्षककेँ सामाजिक बुराइक नामकरण मात्र मानल जाय तँ कविता भाषण बनि सकैत अछि; मुदा पारिवारिक दृश्य, संवाद, अपमान आ प्रतिरोधक सूक्ष्मता प्रवेश पेलापर काव्यिक प्रभाव बढ़ैत अछि। ‘काव्य सरिता’मे दहेज-विरोधक उपस्थिति रचनाकारक सरोकार बतबैत अछि; एकर साहित्यिक शक्ति लोकजीवनक कित्ता पर कतेक विस्तारसँ उभरैत अछि, से पृथक सूक्ष्म पाठक अपेक्षा करैत अछि। [१; मुद्रित पृ. ४८–४९]

मातृत्व, विवाह, घरेलू तनाव आ स्त्रीक सामाजिक स्थिति एक्कहि विषय नहि। एहि विषयसभक विवेचनमे स्त्रीकेँ केवल देवी, माता वा पीड़िता बना देबाक बदला इच्छा, शिक्षा, निर्णय, श्रम आ अधिकारसहित स्वतन्त्र मनुष्यक रूपमे देखब अपेक्षित अछि। संग्रहक आरम्भक देवी-भावना आ मध्यक दहेज-सुधारक स्वरकेँ परस्पर पढ़ला सँ एकटा उपयोगी अन्तर्विरोध खुलैत अछि : पूजित स्त्रीक प्रतीक आ सामाजिक असुरक्षामे पड़ल स्त्रीक यथार्थ एक-दोसरसँ कतेक दूर अछि? ई अन्तर आलोचनाक स्थल थिक, जे कविक उद्देश्यक सम्मान करैतो स्वतंत्र प्रश्नक रूपमे राखल जायबाक चाही।

बालकक उद्देश्य सँ उपयोगी रचना बनबामे सलाह मात्र पर्याप्त नहि। बच्चा समस्याकेँ कोना महसूस करैत अछि, ओकर अपन आवाज कोना सुनाइत अछि आ समाधानमे ओकर सहभागिता कतेक अछि—ई सभ बिन्दु जरूरी अछि। एहि कसौटीपर बाल-केन्द्रित गीत आ समाजक लेल लिखल सुधारवादी गीतमे अन्तर स्पष्ट होइत अछि। एही कारण ‘काव्य सरिता’क साक्षरता-गीतकेँ शिक्षण-संसाधन कहल जा सकैत अछि, मुदा एकरा मात्र एहि आधारपर बाल-कविता घोषित नहि कएल जा सकैत अछि।

राजनीतिक व्यंग्य : सत्ता, धन, छल आ जनसाधारण

संग्रहक मध्य आ उत्तरार्धमे ‘चमचा’, ‘चोर-सिपाही’, ‘प्रधानमन्त्री पर एक कटाक्ष’, ‘वोट’, ‘की हम आजाद छी?’ आ ‘घूस’ जकाँ शीर्षक आलोचनाक एकटा तीक्ष्ण धारा संकेत करैत अछि। ई शीर्षक भक्ति-काव्यक विनम्र प्रार्थनाक स्वर सँ भिन्न अछि। एतऽ कविक आवाज सार्वजनिक जीवनक अनैतिकता पर प्रश्न उठबैत अछि। रचनाक उद्देश्य राजनीतिक नेतृत्वक स्तुतिसँ बेसी सत्ताक दुरुपयोग, चाटुकारिता, सामाजिक धोखाधड़ी आ भ्रष्टाचारक अनुभवकेँ कथ्य बनायब अछि। [१; मुद्रित पृ. ५०–५३, ६७–७०, ८०, १२६–१३०]

व्यंग्यक साहित्यिक सफलता प्रत्यक्ष आरोपपर निर्भर नहि करैत अछि। व्यंग्य तखन पैघ बनैत अछि जखन ओकर भाषामे विडम्बना, उलटबाँसी, बोलचालक व्यावहारिक रस आ कथ्यक दू स्तर हो। ‘चमचा’ जकाँ शीर्षक लोकबोलीक एक सामाजिक प्रतिरूपकेँ सक्रिय करैत अछि। ‘वोट’ चुनावी व्यवहारक सामूहिक क्षेत्र दिस संकेत करैत अछि। ‘की हम आजाद छी?’ शीर्षक स्वयं प्रश्नवाचक बनि राष्ट्रक औपचारिक स्वतन्त्रता आ नागरिकक वास्तविक अनुभवक सम्भावित अन्तर खोलैत अछि। एहि स्थानपर काव्यशिल्पक समीक्षा लेल देखबाक बिन्दु अछि—कवि प्रश्न रचैत छथि कि प्रश्नक उत्तर पहिनहिसँ तय करि दैत छथि।

एहि प्रकारक रचनाक एकटा कलात्मक खतरा समयसापेक्षता अछि। नेता वा पदक तत्कालीन चर्चा बदलि जाइत अछि; मुदा अन्याय, परजीविता, लालच आ भयक संरचना

जखन चित्रित होइत अछि तखन कविता अपन समयसँ बाहर सेहो अर्थ राखैत अछि। एतेक विषयभेदक बीच 'काव्य सरिता'क मूल्य एहि तथ्य पर निर्भर करैत अछि जे सार्वजनिक नैतिकताक आग्रह कतबेक गम्भीर मनुष्य-चित्र गढ़ैत अछि। एकरे संग लोकजीवनक व्यंजना प्रौढ़ पाठककेँ उपलब्ध होइत अछि, जकरा छोट उमेरक बच्चाक लेल बिना प्रसङ्ग-परिचय सीधे प्रस्तुत करब समीचीन नहि।

सत्ताक आलोचना करत काल राष्ट्र, समुदाय आ व्यक्ति—तीनूकेँ एक अर्थमे राखब नैतिक भ्रम पैदा करि सकैत अछि। ककरो प्रशासनिक असफलताक समालोचना राष्ट्रद्रोह नहि; आ राष्ट्रप्रेमक घोषणा अपने-आपमे लोकतान्त्रिक सहिष्णुताक प्रमाण नहि। संग्रहक राजनीतिक आ देशभक्ति-रचना परस्पर समीप रखने पाठकसँ ई विवेक माँगैत अछि जे आलोचनात्मक देशप्रेम आ निष्क्रिय राष्ट्र-गौरवक बीच भेद करथि। यही बिन्दुपर रचनासभ आजुक सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन लेल प्रासङ्गिक होइत अछि।

गाम, मिथिला, भाषा आ स्थान-स्मृतिक पुनर्स्थापना

'हमर गाम'क उपस्थिति कविता-पुस्तककेँ एकटा भूगोल दैत अछि। गाम एक भौगोलिक इकाई मात्र नहि; सामाजिक सम्बन्ध, बोली, कृषि, प्राकृतिक परिवेश, श्रम, स्मृति आ पाबनि-तिहारक साझा परिसर अछि। गामपर गीत बहुधा रमणीय चित्र बनबैत अछि; मुदा गाँवक भीतरक विषमता—भूस्वामित्व, जातीय असमानता, स्त्रीश्रम, बेरोजगारी, शिक्षा आ पलायन—केँ विसराय देनाइ स्वप्निलता बनि सकैत अछि। ताहि कारण ग्राम-स्मृति केँ रूमानी दृश्य आ सामाजिक दस्तावेज, दुनू स्तरपर परखब चाही। [१; मुद्रित पृ. १३२]

'राज मिथिला हम लेबे' जकाँ रचनाक शीर्षक सांस्कृतिक पहचानसँ राजनीतिक आकांक्षाक दिस गति देखबैत अछि। एहि कविताक पाठमे क्षेत्रीय अस्मिता, भाषिक गरिमा, शासनिक आकांक्षा आ सामाजिक न्याय-भावना सभक अलग-अलग पहचान जरूरी अछि। मिथिला शब्द एक इतिहास-स्मृति सेहो अछि आ वर्तमान राजनीति मे प्रयुक्त सामूहिक चिह्न सेहो। जँ कवितामे मिथिला केवल अतीतक गौरव हो, तँ ओकर भविष्य-दृष्टि अपूर्ण रहि

सकैत अछि; जँ भाषा, शिक्षा, आर्थिक अवसर आ समावेशनक प्रश्न उठैत हो, तँ क्षेत्रीय गान सामाजिक प्रस्ताव बनि सकैत अछि। [१; मुद्रित पृ. १३३]

संग्रहक देशभक्तिपरक अन्तिम गीत सभ स्थानीय अस्मिता आ व्यापक भारतीय सांस्कृतिक रूपक बीच सम्बन्ध रचैत अछि। एहि द्वैतकेँ विरोधक रूपमे नहि, अनेकस्तरीय अपनत्वक रूपमे सेहो पढ़ल जा सकैत अछि। अपन गाम, अपन मिथिला आ अपन देश—तीनू सम्बन्धक अर्थ एक-दोसरसँ कटला बिना बनि सकैत अछि, बशर्ते अपनत्व बाहरक मनुष्यक प्रति तिरस्कारमे नहि बदलए। ई लोकतान्त्रिक कसौटी देशप्रेमक साहित्यिक विवेचनमे उपयोगी अछि।

मैथिली भाषा स्वयं एहि संग्रहक अभिव्यक्तिक केन्द्र अछि। लोकप्रचलित शब्द, गीत-संरचना, आनन्द-विषादक घरेलू सम्बोधन आ मिथिलाक क्षेत्रीय सांस्कृतिक संकेतक कारण ई कविता केवल हिन्दी-मुखी सार्वजनिक भाषाक अनुवाद नहि रहि जाइत अछि। जतऽ भोजपुरी, हिन्दी, संस्कृतनिष्ठ वा राजनीतिक शब्दसमूहक प्रभाव पड़ैत हो, ओतऽ ओकरा एकरूपता-भङ्ग मानब जरूरी नहि; भाषिक मिलान आधुनिक जीवनक दस्तावेज सेहो भऽ सकैत अछि। मुदा यथासम्भव सुसङ्गत मैथिली रूप आ ध्वन्यात्मक शुद्धि पुस्तकक आगामी संस्करणक महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय काम होएत।

पृथक पाठविश्लेषण : प्रतिनिधि रचनासमूह

‘गणेश वन्दना’ आ ‘सरस्वती वन्दना’

एहि आरम्भिक युग्मक पाठ-स्थिति साङ्केतिक अछि : कवि लेखनक क्रियाकेँ सांस्कृतिक वन्दनासँ शुरू करैत छथि। आराध्यक नाम पाठकीय अपेक्षा गढ़ैत अछि; पाठक गीतक शास्त्रीय विधा, विनयक रस आ शुभारम्भक रीति लेल तैयार होइत अछि। काव्यक स्वतन्त्रता एहि विधाक भीतर रहि नव बिम्ब अथवा समसामयिक आकांक्षा जोड़ेबाक क्षमतामे निहित अछि। एहि रचनाक भूमिकास्वरूपक महत्त्व मुख्य अछि; सम्पूर्ण संग्रहक सौन्दर्यबोध मुदा एहि आराधनामे सीमित नहि। [१; मुद्रित पृ. ३–५]

‘माँ’ आ ‘देवी गीत’

माँक निजी अनुभूति आ देवीक सामूहिक आराधनाक समीपता लोकविश्वासमे विशिष्ट भाव-मार्ग खोलैत अछि। दूनू समूहकेँ अन्तररहित मानलासँ मातृत्वक घरेलू, भौतिक आ स्मृतिगत यथार्थ पृष्ठभूमिमे चलि जाइत अछि। विवेचनक केन्द्र ई बनबाक चाही जे ‘माँ’क मानवीय प्रतिमा धार्मिक प्रतिमामे रूपान्तरित होइत छथि कि पृथक रहि समाजक स्नेह-व्यवस्थाक प्रश्न बनैत छथि। समूहक निरन्तरता कविक भक्ति-परम्परासँ दीर्घ सम्बन्धक संकेत करैत अछि। [१; मुद्रित पृ. ६–१९]

‘परिवार नियोजन’ आ ‘साक्षरता’

दूनू कविता-शीर्षक काव्यकेँ सार्वजनिक शिक्षणक कामसँ जोड़ैत अछि। एतऽ काव्यप्रसङ्गक आदर्श श्रोता एकटा समुदाय अछि, एकाकी रसिक नहि। एक दृष्टिसँ ई लोकोपयोगी रचनाधर्मिता अछि; दोसर दृष्टिसँ ई वाचिक प्रचारक सीमासँ सृजनात्मक स्वतन्त्रताक संघर्ष अछि। निर्णायक प्रश्न अछि कि अवधारणाकेँ जीवित पात्र, दृश्य आ विरोधाभास भेटैत अछि कि केवल निर्देशसूची रहैत अछि। एहन गीत विद्यालयक गतिविधिमे उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा सभ श्रोता समान उमेरक नहि होइत छथि। [१; मुद्रित पृ. ३८–३९]

‘पतितपावनी गंगा’ आ ‘झूला’

गंगाक प्रदूषण-सम्बन्धी गीत तथा झूलाक ऋतु-संस्कृति प्रकृति कैँ स्थिर दृश्य नहि, शरीरक गति, मौसम आ स्मृतिक अनुभव बनबैत अछि। बालकसँ सम्बन्ध स्थापित करबाक सम्भावना एतऽ प्रबल अछि, कारण झूला, गाछ, वर्षा आ ऋतु-परिवर्तन बच्चाक प्रत्यक्ष संसारमे प्रवेश करैत अछि। तथापि पर्यावरणक कविता आधुनिक अर्थमे सफल तखन होएत जखन पेड़-बचावक सूत्रसँ बढ़ि प्राकृतिक सम्बन्धक स्पर्शबोध आ स्थानीय जीविका दिखा सकए। [१; मुद्रित पृ. ४०]

‘दहेज’ आ ‘दहेज’-सम्बद्ध सामाजिक गीत

दहेज प्रकरणमे विवेचनक केन्द्र विवाहक आर्थिक दबाव आ पारिवारिक गरिमाक टकराव होएबाक चाही। मुदा काव्यक सामाजिक ऊर्जा उपदेशमात्रसँ नहि, संबंधक भीतरक चोटक चित्रणसँ उद्भव करैत अछि। एहि समूहकेँ पढ़ैत समय प्रश्न उठैत अछि जे स्त्रीक अपन स्वर कतेक उपस्थित अछि; सामाजिक बीमारीक नाम लेब आ स्त्रीक अनुभव सुनब —दूनू कार्य समान नहि। [१; मुद्रित पृ. ४८–४९]

‘चमचा’, ‘वोट’ आ ‘घूस’

ई तीन शीर्षक जनजीवनक तीन स्तरक विडम्बना चिन्हित करैत अछि : सत्ताक नजदीकीक लोभ, जनादेशक व्यापारिकरण आ प्रशासनिक लेन-देनक अन्याय। एहिमे करुणा आ हास्यक निकटता सम्भव अछि; व्यंग्य जँ ककरो दुर्बलतापर खाली हँसैत अछि तँ ओ कठोरता बनैत अछि, मुदा सामाजिक संरचनाक खुलासा करैत अछि तँ प्रतिरोधक नैतिक शक्ति पबैत अछि। कविक राजनीतिक स्वर केहन प्रभाव उत्पन्न करैत अछि, तकर निर्णायक आधार भाषिक वक्रता आ अनुभवक विशिष्टता अछि। [१; मुद्रित पृ. ५०–५१, ८०, १२९–१३०]

‘की हम आजाद छी?’

प्रश्नवाचक शीर्षक स्वतंत्रताक वैधानिक घटना आ स्वतंत्रताक दैनन्दिन अनुभूतिक भेद पर विचारक निमंत्रण अछि। एहन गीत नागरिकताक प्रत्यक्ष शिक्षण-संसाधन भऽ सकैत अछि। तखन प्रश्न ई रहैत अछि जे सामाजिक दुखक उल्लेख अनेक व्यक्ति आ समुदायमे भेद करैत अछि कि व्यापक सामान्यीकरणमे समेटि लैत अछि। राजनैतिक गीतक उत्कृष्ट रूप प्रश्नक बहुअर्थकता बचौने रखैत अछि; उत्तरक अनिवार्यता ओकरा घोषणापत्र बनाबि सकैत अछि। [१; मुद्रित पृ. १२६–१२८]

‘समय’ आ ‘घूस’

अन्त्यभागमे समय विषयक गीत, तकर पश्चात् घूसक सामाजिक चित्रण—ई क्रम नैतिक जीवनकेँ दू भिन्न धरातलपर उपस्थित करैत अछि। समय क्षय, कर्तव्य आ अवसरक अमूर्त अनुभूति अछि; घूस सामाजिक संस्थाक ठोस भ्रष्टाचारक नाम। एकटा मनुष्यक स्वयंप्रबन्ध दिस देखैत अछि, दोसर सार्वजनिक व्यवहारक विकृति दिस। एहि जोड़ीसँ स्पष्ट होइत अछि जे कविक नैतिक आलोचना व्यक्तिगत अनुशासन आ संस्थागत शुचिताक दूनू माँग करैत अछि। [१; मुद्रित पृ. १२८–१३०]

‘हमर गाम’

गाम स्मृतिपरक गीतक सांस्कृतिक शक्ति स्थानीय दृश्यक पहिचानमे अछि। मुदा गामक प्रतीक जतेक प्रेम उत्पन्न करैत अछि ओतेक बहिष्कारक प्रश्न सेहो खोलि सकैत अछि। कतऽ कृषक, दलित, स्त्री, प्रवासी, भूमिहीन आ नेना सभ एहि साझा ग्राम-चित्रमे देखाइत छथि? आलोचना एहि प्रश्नक उत्तर खोजैत अछि। स्थानीय अनुभव केँ सार्वभौमिक बनाबबाक राह व्यक्तिक विशिष्टता अछि, न कि सभकेँ एक जकाँ घोषित करब। [१; मुद्रित पृ. १३२]

‘राज मिथिला हम लेबे’

क्षेत्रीय सामूहिकता प्राय: घोषणात्मक आवेगसँ जन्म लैत अछि। मैथिली गीतक बल ई अछि जे मातृभाषाक शब्दमे सामुदायिक इच्छा सजीव बनैत अछि। मुदा समीक्षाक कसौटी घोषित लक्ष्यक साथ न्याय, समावेशन आ नागरिक अधिकारक सम्बन्ध खोलब चाही। एतऽ शीर्षकक स्वर मागक अछि; कविता-साहित्यक मूल्य एहि मागक तर्क-संवेदनशील विस्तारमे निहित होएत। [१; मुद्रित पृ. १३३]

अन्त्यक देशभक्तिपरक गीत

अन्तिम रचनासभमे व्यापक देश-परिदृश्य आ सार्वजनिक एकताक स्वर सुनाइत अछि। ई संकलनक आरम्भक देव-स्तुतिसँ बहुत भिन्न राजनीतिक भावभूमि थिक, मुदा दुनूक

एकटा साझा रूप अछि—गायनक माध्यमसँ सामूहिक भाव रचब। एहि जोड़ीकेँ ध्यानमे राखला सँ पुस्तकक अनिवार्य सूत्र बिम्बक एकरूपता नहि, सामूहिक संबोधनक परम्परा बनैत अछि। कविता अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी तखन होइत अछि जखन सामूहिक ‘हम’ व्यक्तिगत अनुभवकेँ दबबैत नहि अछि। [१; मुद्रित पृ. १३६–१३७]

भाषा, छन्द, अनुक्रिया आ भाव-शिल्प

‘काव्य सरिता’मे रचनाक नामकरण बहुत बेर विधागत अछि, जकर कारण पाठक पहिनहिसँ लय आ भावक दिशा अनुमान कऽ लैत अछि। एहि विशेषताक दू प्रभाव अछि। सकारात्मक रूपेँ ई गीतकेँ लोकस्मृतिसँ जोड़ैत अछि; श्रोता तुरत गानक परिसर पहिचानि लैत अछि। नकारात्मक रूपेँ विधाक नाम कखनो विशिष्ट कविता के व्यक्तिगत अस्तित्वकेँ कम करि सकैत अछि। ‘देवी गीत’ जकाँ पुनरावृत्त शीर्षकसभक आलोचनात्मक अनुक्रमणिका आवश्यक अछि, जाहिसँ एक कविता दोसरसँ स्पष्ट अलग पहिचानल जा सकए।

संग्रहमे पद-रचना, तुकान्त, आवृत्ति, सम्बोधनात्मक वाक्य आ नैतिक उद्घोषक अलग-अलग अनुपात देखबामे अबैत अछि। लय आ गेयता काव्यगुण थिक, मुदा केवल अन्त्यानुप्रास नहिएँ। सार्थक गीतमे ध्वनि अर्थक संग चलैत अछि; तुक शब्दकेँ जबरदस्ती नहि खींचैत अछि। जेठ काव्यक अभ्यासमे गेयता आ अर्थव्यंजना परस्पर विरोधी नहि, पूरक थिक। एहि संग्रहक महत्व लोक-प्रचलित ध्वनि-संरचनाक संरक्षणमे अछि; ओकर आलोचनात्मक प्रश्न छन्दक एकरूप पुनरावृत्ति आ पद-दीर्घताक सम्पादनसँ सम्बन्धित अछि।

उपदेशक भाषा आ कविता-विन्यासक भेद पर विशेष ध्यान आवश्यक अछि। जनशिक्षा, दहेज-विरोध, भ्रष्टाचार-विरोध आ साक्षरता पर पद लिखैत काल कवि सन्देशकेँ स्पष्ट राखय चाहैत छथि। मुदा साहित्यिक अनुभूति स्पष्ट संदेशक अतिरिक्त अनकहल संकेत, बिम्ब आ अप्रत्याशित तुलना माँगैत अछि। एहि संकलनक किछु समूहक अध्ययन सुझाव दैत अछि

जे सूक्ति-प्रवणता कविक आस्था आ सार्वजनिक जिम्मेदारीक प्रदर्शन करैत अछि। प्रश्न मुदा ई अछि जे प्रत्येक सन्देश अपन स्वतंत्र अनुभव-रूप पबैत अछि कि नहि।

कवितासभक बहुलता रचनाकारक अभ्यास आ रचनाशील निरन्तरताक चिन्ह अछि, किन्तु परिमाणकेँ गुणवत्ता-क निर्णयक प्रमाण नहि मानल जाय। छोट गीत, मंचीय सामूहिक गायन आ दीर्घ काव्य—सभक अलग औचित्य छैक। एहन पुस्तकमे प्रतिनिधि चयनक सम्पादकीय भूमिका सेहो पैघ अछि। सभसँ प्रभावशाली रचनाक स्वतंत्र खण्ड, विधागत परिचय आ सन्दर्भित शब्दकोश जोड़ल जाए तँ काव्यकीर्ति आ पाठ-सुलभता दूनू बढ़त।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहासक आलोकमे तुलनात्मक विवेचन

बाल-साहित्यक इतिहासमे 'काव्य सरिता'क स्थान निर्धारित करबाक पहिल शर्त विधा-परिचयक ईमानदारी अछि। विदेहक पोथी-सूची एकरा 'मैथिली काव्य संग्रह' कहैत अछि, जखन कि ओही लेखकक 'स्वर्ण कमल'केँ स्पष्ट रूपसँ 'बाल उपन्यास' कहल गेल अछि। शिशु-साहित्यक विदेह-सूचीमे 'स्वर्ण कमल' दर्ज अछि, 'काव्य सरिता' सम्पूर्ण रूपेँ बाल-पोथी रूपमे नहि। एहि प्रमाणक अवहेलना कए काव्य-संग्रहकेँ बाल-कविता-संग्रह घोषित करब न साहित्यिक दृष्टिसँ उचित होएत आ न ग्रन्थसूची-विज्ञानक दृष्टिसँ।

विदेहक समानान्तर बाल-साहित्य-विमर्शमे शिशु, बाल आ किशोरक उमेर-विशेष पाठकीयता अलग कएल गेल अछि। अत्यल्प उमेरक लेल चित्र, लोरी आ सरल पुनरावृत्ति; विद्यालयी बालकक लेल लघुकथा, कविता, चित्रकथा, विज्ञान; आ किशोरक लेल जटिल कथा, जीवनी, सामाजिक यथार्थ आदि माध्यम महत्त्वपूर्ण मानल गेल अछि। ई विभाजन अपरिवर्तनीय जैविक नियम नहि, पाठकक ग्रहण-क्षमता बुझबाक व्यावहारिक साधन अछि। एहि कसौटीपर 'काव्य सरिता'क लोकगीत आ किछु प्रकृति-सम्बन्धी गीत आरम्भिक अथवा मध्य बाल-पाठक लेल उपयुक्त बनि सकैत अछि; राजनीति, पारिवारिक संघर्ष आ व्यंग्यक किछु रचना किशोर वा प्रौढ़ पाठक लेल अधिक अनुकूल होएत।

ऐतिहासिक दृष्टिसँ मैथिली बाल-साहित्य एकाध आधुनिक छपल पोथीसँ शुरू होइत नहि देखल जाएबाक चाही। लोरी, लोककथा, पहेली, बालखेल, ऋतुगीत आ कथावाचन मिथिलाक मौखिक धरोहरक हिस्सा रहल अछि। मुदा मौखिक रूपक अस्तित्व आ बाल-पाठक लेल सचेतन रचल मुद्रित साहित्य—ई दू अलग काल-सूचक वस्तु अछि। विदेहक इतिहासात्मक विवेचन लोक-आख्यान, पञ्चतन्त्र-जैसन शिक्षात्मक कथा-परम्परा, आधुनिक बालकथा, चित्रकथा, विज्ञान-लेखन आ डिजिटल माध्यमक निरन्तरतामे बाल-साहित्यकेँ पढ़ैत अछि। एहि क्रममे 'काव्य सरिता'क प्रासङ्गिकता मुख्यत: लोकगीत-आधारित परम्पराक आधुनिक लिखित अवतारक रूपमे अछि, न कि सम्पूर्ण समकालीन बाल-साहित्यक प्रतिनिधि ग्रन्थक रूपमे।

विदेहक संग्रहालयमे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क 'बाल कविता', अणिमा सिंहक 'शिशु गीत खेल', प्रीति ठाकुरक चित्रकथा-परम्परा, जगदानन्द झा 'मनु'क 'चोनहा', नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क 'स्वर्ण कमल', आ बालक/किशोर लेल अनेक स्वतंत्र कृति सूचीबद्ध अछि। एहि पोथी सभक अलग-अलग माध्यम स्वयं बतबैत अछि जे बाल-साहित्य केवल नीति-कविता नहि; खेल, दृश्य, साहस, प्रश्न, हास्य, विज्ञान, कल्पना आ आत्मसम्मानक समग्र संसार अछि। 'काव्य सरिता'क साक्षरता वा पर्यावरण-गीतकेँ एहि व्यापक परिसरमे उपयोगी सहायक पाठ कहल जा सकैत अछि; एकरे बाल-साहित्यक कोटिमे सम्पूर्णतया गनल जाए तँ विधागत सटीकता घटत।

'बाल कविता' आ 'बच्चा सुनि सकए एहन कविता' मे आओर एकटा निर्णायक अन्तर अछि। भक्ति-गीत अथवा देशभक्ति-गीत सामूहिक अवसरपर बालक सेहो गबि सकैत अछि, मुदा ओकर भावक जटिलता, शब्दचयन आ वैचारिक स्तर बाल-केन्द्रित नहि सेहो भऽ सकैत अछि। उलट, झूला, प्रकृति, नदी, विद्यालय आ निकट अनुभवक गीत बच्चाक अनुभव-क्षेत्र सँ मिलैत अछि। एहि वस्तुगत अन्तरसँ पाठ्यक्रम-चयन लेल चारि प्रश्न निकलैत अछि : कविता किस उमेरक बच्चाक अनुभवसँ बोलैत अछि? बच्चा एकरामे केवल उपदेश सुनैत अछि कि अपन भाव पबैत अछि? कविता प्रश्न आ कल्पनाक ठाम

छोड़ैत अछि कि नहि? आ एकर भाषा उच्चारण-योग्य, सुलभ आ सम्मानजनक अछि कि नहि?

बाल-साहित्यक आधुनिक समीक्षामे नैतिक अनुशासन मात्र नहि, बाल-अधिकार, जिज्ञासा आ वैज्ञानिक वृत्तिक मान सेहो पैघ अछि। विदेहक बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्रमे औचित्य, रस, लोकपरम्परा, कथात्मक न्याय, भाषिक चेतना तथा पाठकीय उम्रक चर्चा भेटैत अछि। एहि मापक अनुसार ‘काव्य सरिता’क शिक्षामूलक पदक एकल फायदा सरस उच्चारण आ सामूहिक आयोजनक सुविधा अछि; मुदा वैज्ञानिक कारण-बोध, बालकक स्वतंत्र प्रश्न आ सृजनात्मक बहुविधता केतबा अछि, ताहि पर चयनपूर्वक विचार जरूरी अछि।

इतिहासक तुलनामे ई निष्कर्ष निकैलैत अछि जे नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क रचनात्मक संसारमे बाल-साहित्य एक पृथक क्षेत्र रूपमे उपस्थित अछि, जकर प्रमाण ‘स्वर्ण कमल’ अछि; ‘काव्य सरिता’क किछु खण्ड ओहि क्षेत्रसँ संवाद करैत अछि। एहि दूनू कथनक सीमा स्पष्ट रहबाक चाही। काव्य-संग्रहक सामाजिक आलोचना, व्यंग्य, धार्मिक गीत आ स्थानीय राजनीति प्रौढ़ लोक-साहित्यक ओर सेहो मजबूत संकेत करैत अछि। बालपयोगिताक सम्भावना एकर मूल विधागत परिचय बदलि नहि दैत अछि।

तुलनात्मक निर्णय : उपलब्धि, सीमा आ आलोचनात्मक प्रतिमान

काव्य-संग्रहक सभसँ पैघ उपलब्धि एकहि जिल्दमे अनेक सामाजिक आवाजक संचयन अछि। रचना-संसारमे आराधना, लोकगायन, परिवार, शिक्षा, जनस्वास्थ्य, राजनीति, ग्राम-स्मृति, मातृभूमि आ क्षेत्रीय अस्मिता सहवर्ती बनैत अछि। ई बहुविषयता हमरा सभकेँ एक एहन रचनाकारसँ परिचित करबैत अछि जे काव्यकेँ सार्वजनिक जीवनसँ अलग राखय नहि चाहैत छथि। एहि दृष्टिसँ ‘काव्य सरिता’ लोकसांस्कृतिक अभिलेखक गुण धरैत अछि।

दोसर उपलब्धि लोकगीतक विधागत स्मृतिक संरक्षण अछि। नचारी, कजरी, चैती, भजन आ वन्दनाक नाम स्वयं लोकानुकूल प्रदर्शनक दिशा बतबैत अछि। आधुनिक मुद्रणक

भीतर ई नामकरण गायनक सामूहिक परम्परा उपस्थित रखैत अछि। एही विशेषताक कारण ई पोथी लोकसाहित्य-अध्येता आ आधुनिक मैथिली गीतक अनुसन्धाता, दुनू लेल प्रासङ्गिक पाठ बनि सकैत अछि।

तेसर उपलब्धि नागरिक विवेकक आग्रह अछि। सामाजिक सुधार वा राजनीतिसँ जुड़ल गीत कविक उत्तरदायित्वबोधक साक्ष्य अछि। मुदा कविता आ सामाजिक नारा बराबर नहि। जे रचना प्रत्यक्ष सन्देशसँ आगाँ जा कऽ जीवनस्थितिक अन्तर्विरोध बनबैत अछि, ओ दीर्घकालिक साहित्यिक असर छोड़ैत अछि। संग्रहक समालोचनात्मक मूल्यांकनमे ई कसौटी अनिवार्य अछि, नहि तँ साहित्यकेँ केवल विषयक सूची बना देबाक खतरा अछि।

सीमामे तीन बिन्दु विशेष उल्लेखनीय छथि। पहिल, विषयसमान रचनाक घनी पुनरावृत्तिसँ पुस्तकक आन्तरिक भिन्नता कहियो-कहियो कम स्पष्ट होइत अछि। दोसर, विषयक श्रेणीकरण, शब्दार्थ आ रचना-कालक अभाव अनुसन्धाताकेँ अतिरिक्त श्रम करबैत अछि। तेसर, उपदेशमूलक रचनाक साहित्यिक शक्ति जाँचबा लेल विशिष्ट बिम्ब, शिल्प आ वक्रताक सूक्ष्म तुलना आवश्यक अछि; घोषित नैतिकता मात्र प्रशंसाक कारण नहि बनि सकैत अछि। एहन निर्णय कविताक अवमानना नहि, बल्कि लेखकक बहुविध लेखनक प्रति गम्भीर न्याय थिक।

लोकधर्मी काव्यक आलोचना करैत काल सहजात लयक मूल्य मानब चाही, मुदा लोकधर्मिताकेँ शिल्पगत कमजोरीक स्वतः क्षमादान नहि बनाओल जाए। ओहिना लिखित पाठक औपचारिक भाषिक अनुशासनक आग्रह रखैत समय उच्चारण, धुन आ क्षेत्रीय बोलीक स्वरकेँ मेटायबो उचित नहि। ई द्वन्द्व ‘काव्य सरिता’ जकाँ संग्रहक समीक्षा केँ रोचक बनबैत अछि। लोक-स्वीकृति आ सौन्दर्यात्मक अनुशासनक बीच साधल सन्तुलनहि निर्णायक साहित्यिक प्रतिमान बनि सकैत अछि।

निष्कर्ष

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘काव्य सरिता’ मैथिली काव्यक एक बहुधारात्मक पोथी अछि। एकर प्रवाहमे श्रद्धागीतक विनय, लोकलयक सामूहिकता, सामाजिक सुधारक

आग्रह, राजनीतिक व्यंग्यक चोट आ मिथिला-देशक प्रति लगाव एक संग बहैत अछि। ई विविधता पुस्तकक स्वरूपक केन्द्रीय तथ्य अछि; एकरा केवल भक्ति-काव्य, केवल लोकगीत वा केवल बाल-साहित्यक खानेमे राखब एकर वास्तविक विस्तारकेँ कम करि देत।

बाल-साहित्यक समानान्तर इतिहासमे एहि पुस्तकक उपयोग सर्वाधिक तखन फलदायी होएत जखन एकर ऋतुगीत, झूला, शिक्षा आ पर्यावरण-विषयक चयनित पद केँ उमेरानुकूल आलोचनात्मक सम्पादनक संग प्रस्तुत कएल जाए। लेखकक ‘स्वर्ण कमल’ जकाँ बाल-उपन्याससँ एकर तुलना विधागत भेद बुझबाक अवसर दैत अछि। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे एकहि रचनाकारक समग्र कृतित्वमे बाल-पाठक लेल रचना आ प्रौढ़ समाज लेल सार्वजनिक कविता दू स्वतंत्र किन्तु परस्पर संवादरत धारा भऽ सकैत अछि।

पुस्तकक स्थायी मूल्यांकन लेल भविष्य मे पाठसंगत मुद्रित संस्करण, सम्पूर्ण शुद्ध पाठ, छन्द-अध्ययन, लोकधुन-सूची आ चयनित रचनाक आलोचनात्मक संस्करण अपेक्षित अछि। ओहि काजक पूर्व-सोपान रूपेँ ई अध्ययन संग्रहक विधागत स्थापत्य, सामाजिक प्रश्न आ तुलनात्मक महत्त्वक नक्शा प्रस्तुत करैत अछि। एकर मूल निष्कर्ष ई अछि जे ‘काव्य सरिता’ केँ मैथिली भाषाक लोक-समाज, गायन-परम्परा आ आधुनिक नागरिक चेतनाक संग पढ़नाइ सर्वाधिक न्यायसङ्गत आलोचनात्मक पद्धति अछि।

परिशिष्ट : रचनासमूह आ मुद्रित पृष्ठ-सङ्केत

विषय-क्षेत्र	उदाहरण-शीर्षक	मुद्रित पृष्ठ
आरम्भिक वन्दना	गणेश वन्दना, सरस्वती वन्दना	३–५
मातृत्व आ देवी-आराधना	माँ, देवी गीत	६–१९
भक्ति आ लोकधुन	दुलार, भजन, नचारी	२२–३७
लोकशिक्षा	परिवार नियोजन, साक्षरता,	३८–४०

विषय-क्षेत्र	उदाहरण-शीर्षक	मुद्रित पृष्ठ
	पतितपावनी गंगा	
ऋतु-गीत	कजरी, चैती	४२–४५
समाज-सुधार	दहेज, साक्षरता-सम्बद्ध गीत	४६–४९
राजनीतिक-सामाजिक व्यंग्य	चमचा, चोर-सिपाही, प्रधानमन्त्री पर कटाक्ष, वोट	५०–५३; ६७; ८०
नागरिक प्रश्न	की हम आजाद छी?, समय, घूस	१२६–१३०
स्थान आ अस्मिता	हमर गाम, राज मिथिला हम लेबे	१३२–१३३
राष्ट्रभाव	देशभक्ति गीत	१३६–१३७

अध्याय १२

स्वर्ण-कमल

लोककथा, बाल-चेतना आ न्याय-बोधक विस्तृत मैथिली आख्यान

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क ‘स्वर्ण-कमल’ (२०१९) मैथिली बाल-उपन्यासक ओहि रचनात्मक धाराक प्रतिनिधि कृति अछि जाहिमे परम्परागत राजकुमार-कथा, चमत्कारप्रधान लोककल्पना, पारिवारिक कथावाचन आ आधुनिक उपन्यासक क्रमिक घटनाविन्यास एक-दोसरसँ मिलैत अछि। उपन्यासक एक स्तरपर प्रफुल्ल आ अन्य नेनासभ अपन बाबीसँ खिस्सा सुनैत छथि; दोसर स्तरपर राजकुमार सुजीत उत्तराधिकार-संघर्ष, दरबारी षड्यन्त्र, वनयात्रा, गुरु-सहायता, स्वर्ण-कमलक प्राप्ति, राक्षसक आतंक आ राज्यक पुनर्स्थापनाक कठिन क्रमसँ गुजरैत छथि। मूल कृतिक उद्धरण मुद्रित पृष्ठसँ देल गेल अछि। विश्लेषणक निष्कर्ष ई अछि जे ‘स्वर्ण-कमल’क सबसँ स्थायी योगदान केवल आदर्श वीरक विजयमे नहि, बल्कि मैथिलीमे दीर्घ साहसिक आख्यानक सृजन आ बाबीक मौखिक कथा-संस्कृति कैं पाठकक सक्रिय जिज्ञासासँ जोड़बाक प्रयासमे निहित अछि। एकर सीमा नायकक आदर्शीकरण, स्त्री-पात्रक विषम सक्रियता, आ राजनीतिक न्यायकैं राजवंशीय समाधानमे समेटि देबाक प्रवृत्तिमे अछि।

मैथिली बाल-साहित्य; स्वर्ण-कमल; नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’; लोककथा; बाल-उपन्यास; कथावाचन; राजसत्ता; नैतिकता; बाल-पाठक; प्रतीक; आख्यान-विज्ञान।

प्रस्तावना : कृतिक साहित्यिक प्रश्न

बाल-साहित्य कैं प्रायः सरल मनोरञ्जन, सदाचारक शिक्षा अथवा विद्यालयक पूरक पाठ मानि लेल जाइत अछि। मुदा श्रेष्ठ बालकथा बालक कैं सामाजिक सम्बन्ध बुझबाक, भयक सामना करबाक, अन्याय देखबाक आ अपन निर्णय बनयबाक कल्पनात्मक अवसर

दैत अछि। एहि दृष्टिसँ ‘स्वर्ण-कमल’क मूल्यांकन करबाक समय केवल ई प्रश्न पर्याप्त नहि जे राजकुमार विजय पबैत छथि कि नहि। प्रश्न ई सेहो अछि जे हुनक विजयक नैतिक अर्थ की अछि; कथावाचिका बाबी आ श्रोता नेनासभक सम्बन्ध ओहि अर्थक निर्माण कोना करैत अछि; आ चमत्कार, साहस, राजनीतिक शक्ति तथा क्षमा एक-दोसरसँ कोना जुड़ैत अछि।

कृतिक प्रारम्भ घरेलू आ परिचित जगतमे होइत अछि, जाहिसँ राजमहलक अपरिचित संसारधरि यात्रा आरम्भ होइत अछि। प्रफुल्लक बाबी केवल कथा सुनौनिहार नहि; ओ अनुभवक परम्परा, परिवारक स्मृति आ भाषा-संस्कारक प्रतिनिधि छथि। एही कथाचौखटमे राजकुमार सुजीतक साहसिक जीवन प्रवेश करैत अछि। दू संसारक एहि आवागमनसँ मैथिली बालकक घरेलू भाषिक अनुभवक भीतर विस्तृत कल्पनासंसार आकार ग्रहण करैत अछि।

ई अध्ययन तीनटा परस्पर सम्बद्ध प्रतिपादन आगाँ रखैत अछि। पहिल, उपन्यासक रचना मौखिक लोककथा आ विस्तृत लिखित आख्यानक संगम थिक। दोसर, राजकुमारक संघर्षक केन्द्र केवल व्यक्तिगत सत्ता-प्राप्ति नहि, बल्कि नैतिक पात्रताक परीक्षण अछि; तथापि उत्तराधिकार-आधारित राजधर्म ओकर वैचारिक सीमा बनल रहैत अछि। तेसर, कथा-श्रोताक जिज्ञासा आ बाबीक हस्तक्षेप बाल-पाठक कैं सक्रिय बनबैत अछि, मुदा अनेक स्थानपर पूर्वनिर्धारित उपदेश ओकर स्वायत्त अर्थनिर्माणक अवकाश घटबैत अछि।

बाल-उपन्यासक परिचय आ रचनात्मक स्वरूप

‘स्वर्ण-कमल’क लेखक नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’ छथि। कृतिक प्रकाशन २०१९ मे गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उपरदाहा, जिला दरभंगासँ भेल। शीर्षकीय विवरणमे एकरा स्पष्ट रूपेँ मैथिली बाल-उपन्यास कहल गेल अछि। पुस्तकक मुद्रित मूल्य १५० टाका अछि। आरम्भिक पृष्ठसभमे योगानन्द झाक समीक्षात्मक भूमिका, लेखकक वक्तव्य आ तकर बाद मुख्य कथा उपस्थित अछि (मिश्र, २०१९: ३–१९)।

मुख्य कथा मुद्रित पृष्ठ १९ सँ १०२ धरि दस क्रमांकित खण्डमे विभक्त अछि। खण्डसभक आरम्भ क्रमशः पृष्ठ १९, ३०, ३८, ४४, ५४, ६१, ६७, ८४, ८९ आ ९४ सँ होइत अछि। एतय पृष्ठ-सन्दर्भ सदिखन पुस्तकक मुद्रित पृष्ठक सूचक अछि। प्रत्येक खण्डक स्वतन्त्र चर्चा करैत काल केवल घटनाक सार देबाक बदला ई जाँचल गेल अछि जे कोन नव सूचना, नैतिक प्रश्न, पात्र-स्थिति अथवा कथात्मक मोड़ उत्पन्न होइत अछि।

तुलनात्मक विवेचनक आधार मूल कृतिक भूमिका, मैथिली बाल-साहित्यक प्रकाशित इतिहासपर उपलब्ध अध्ययन, साहित्य अकादेमीक प्रामाणिक पुरस्कार-अभिलेख आ लोककथाशास्त्र तथा बाल-साहित्य-आलोचनाक मान्य ग्रन्थ छथि। जहिना प्रॉपक प्रकार्य-आधारित पद्धति कथाक बाहरी गठन बुझयमे सहयोग करैत अछि, तहिना निकोलायेवाक चरित्र-आलोचना पात्रक सक्रियता आ विकासक प्रश्न खोलैत अछि। ई सैद्धान्तिक सन्दर्भ व्याख्याक उपकरण छथि; कृतिक प्रत्यक्ष स्रोत अथवा लेखकक घोषित प्रेरणा नहि।

मैथिली बाल-साहित्यक परम्परा आ ‘स्वर्ण-कमल’क ऐतिहासिक स्थान

मिथिलामे बालकक कथासंसार मुद्रित पुस्तकसँ बहुत पहिनेसँ परिवार आ लोकजीवनमे सक्रिय रहल अछि। दादी-नानीक खिस्सा, पशु-पक्षीक व्यवहारकथा, गोनू झाक चातुर्य, राजा-रानीक आख्यान, लोकदेवता, राक्षस, जादुई साधन आ नैतिक दृष्टान्त सामूहिक स्मृतिक माध्यमसँ चलि आबि रहल छथि। एही मौखिक पूँजीक किछु अंश लिखित साहित्यक विविध रूपमे प्रविष्ट भेल। तथापि मौखिक खिस्सा आ उपन्यास एक नहि छथि: उपन्यास विस्तृत चरित्र-जाल, क्रमविकसित द्वन्द्व, स्थगित समाधान आ पाठकक दीर्घकालिक सहभागिताक अपेक्षा करैत अछि।

देवशंकर नवीन मैथिली बाल-साहित्यक ऐतिहासिक रूपरेखामे ‘शिशु’ (१९४९), ‘धीया-पूता’ (१९५६), ‘बटुक’ (१९६१), ‘नेना-भुटका’ (१९९६) आ ‘बाल मिथिला’ (१९९८) सन बाल-पत्रिकाक चर्चा करैत छथि। ओ मातृभाषामे शिशु-शिक्षा, बाल-पत्रिकाक सीमित प्रसार आ साहित्यिक पत्रिकासभमे बाल-रचनाक स्थानपर ध्यान केन्द्रित करैत छथि (नवीन, प्रकाशन-विवरण अनुपलब्ध)। ई इतिहास बतबैत अछि जे मैथिलीमे बालक लेल लिखब

निश्चय निरन्तर रहल, मुदा संस्थागत प्रकाशन आ पाठकीय पहुँचक समस्या सेहो बनल रहल।

‘स्वर्ण-कमल’क आरम्भिक भूमिकामे ‘इजोती रानी’ आ रामदेव झाक बाल-उपन्यास-प्रयासक उल्लेख अछि। भूमिकाकार एहि कृति कैं मैथिलीमे लोककथासँ विस्तृत बाल-आख्यान बनयबाक पूर्ववर्ती उदाहरणक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि (योगानन्द झा, ‘मैथिली बाल उपन्यास : स्वर्ण-कमल’, मिश्र, २०१९: ५–६)। एहिसँ ‘स्वर्ण-कमल’ कैं कोनो निर्वातमे उत्पन्न कृति मानबाक बदला एकटा विद्यमान साहित्यिक प्रयत्नक उत्तरवर्ती चरणक रूपमे बुझल जा सकैत अछि।

तुलना करैत समय सन्दर्भक सीमाक ध्यान रखब जरूरी अछि। ‘इजोती रानी’क विस्तृत कथानकक प्रत्यक्ष पाठ एतय तुलनाक विषय नहि बनल; अतः दुनू कृतिक ‘समान कथावस्तु’ अथवा प्रत्यक्ष प्रभावक निर्णय नहि देल जा सकैत अछि। साम्य केवल व्यापक विधागत स्तरपर देखल जा सकैत अछि—राजकुमारक अभियान, नैतिक चुनौती आ लोककल्पनाक प्रयोग। एहि विश्लेषणक मुख्य पाठ ‘स्वर्ण-कमल’ स्वयं अछि।

साहित्य अकादेमीक २०२३क बाल साहित्य पुरस्कारक मैथिली अनुशंसित कृतिसूचीमे ‘स्वर्ण कमल’ कैं नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क २०१९क ‘उपन्यास’ रूपमे स्थान देल गेल। ओहि सूचीमे ‘गुलरी’क संग ई दोसर उपन्यास छल; पुरस्कार ‘ओल कतरा, झोल कतरा’क लेखक अक्षय आनन्द ‘सन्नी’ कैं देल गेल (साहित्य अकादेमी, २०२३)। एहि अभिलेखक अर्थ कृतिक संस्थागत विचारार्थ उपस्थिति थिक, पुरस्कार-प्राप्ति नहि।

मैथिली बाल साहित्य पुरस्कारक पूर्ववर्ती सूचीमे रामदेव झाक ‘हँसनी पान आ बजंता सुपारी’ (२०१५) आ अमलेन्दु शेखर पाठकक ‘लालगाछी’ (२०१७) उपन्यासक रूपमे अंकित छथि; २०१८ मे वैद्यनाथ झाक ‘खिस्सा सुनू बौ’ कथा-संग्रहक पुरस्कार मिलल। ई तथ्य रचनात्मक विविधताक संकेत करैत अछि: एक दिशामे मौखिक कथनक परम्परा, दोसर दिशामे उपन्यासक विस्तृत आन्तरिक संसार। ‘स्वर्ण-कमल’ एहि दुनू धाराक संगमबिन्दुपर राखल जा सकैत अछि (साहित्य अकादेमी, बाल साहित्य पुरस्कार सूची)।

कथानकक समग्र विन्यास : घरेलू खिस्सासँ राज्यक संघर्ष धरि

उपन्यासक पहिल संसार प्रफुल्लक परिवारक अछि। बाबी अपन अनुभव, अनुशासन आ ममताक माध्यमसँ परिवारमे विशेष स्थान रखैत छथि। नेनासभ ओकरा घेरि कथा सुनबाक प्रतीक्षा करैत अछि। खिस्सा आरम्भ होइत अछि, बीचमे विराम अबैत अछि, आ अगिला दिन नूतन प्रश्नसँ कथा पुनः चलैत अछि। एहि आवृत्तिसँ पुस्तकक खण्डविभाजन प्राकृतिक कथावाचनक रीति प्राप्त करैत अछि।

भीतरक कथाक नायक राजकुमार सुजीत छथि। उत्तराधिकार आ राजपरिवारक विरोधक कारण हुनका राजमहलसँ दूर होमय पड़ैत अछि। नयनावतीक महत्त्वाकांक्षा, शमशेर सिंह आ जालिम सिंहक अवसरवाद तथा सुमेरगढ़क राजकीय संकट कथाक राजनीतिक पृष्ठभूमि तैयार करैत अछि। वन आ अनजान प्रदेशमे सुजीत कैं अपरिचित लोक पर विश्वास करबाक, संकटसँ लड़बाक आ अपन पहिचान गुप्त रखबाक आवश्यकता होइत अछि।

सर-सुल्तानक आश्रय, महात्माक मार्गदर्शन आ स्वर्ण-कमलक प्राप्ति राजकुमारक यात्राक विभिन्न चरण छथि। कल्लू राक्षसक आतंक आ श्रीधरपुरक प्रसंग निजी राज्य-संघर्षक बाहर पीड़ित लोकक रक्षा करबाक नैतिक आयाम जोड़ैत अछि। विशाखा राक्षसक अतीतक किछु सूत्र खोलैत छथि। पछिला भागमे भवानीशंकर आ कलानाथ सन पात्रसभक माध्यमसँ गुप्त सूचना, लोकसमर्थन आ राजनीतिक पुनर्गठनक प्रश्न प्रबल होइत अछि। अन्ततः सुजीतक पहिचान, सुमेरगढ़क अभियान, मिलन आ सम्बन्धसभक पुनर्व्यवस्था कथाकैं समाप्ति दिस लऽ जाइत अछि।

ई सम्पूर्ण कथाविन्यास वृत्ताकार अछि। बाबी आ नेनासभक निकट आरम्भ भेल कथा राजकीय संकटमे विस्तार पबैत अछि आ फेर श्रोता नेनासभ लग घुरैत अछि। कथाक अन्तिम मूल्य एहि बातमे निहित अछि जे बालक केवल परिणाम नहि सुनैत अछि, परिणामक नैतिक अर्थक सम्बन्धमे अपन प्रश्न सेहो करैत अछि।

दसू खण्डक पृथक पाठविश्लेषण

पहिल खण्ड : बाबीक कथासंसार आ पाठकक प्रवेश

पहिल पृष्ठक आरम्भिक वाक्य—“आइ प्रफुल्ल आदि नेना सभक मन बड़ प्रफुल्लित छलनि” (मिश्र, २०१९: १९)—नायक राजकुमार नहि, बल्कि कथा सुनबाक लेल तैयार बच्चासभक सामूहिक मनःस्थितिक चित्र अछि। एतय ‘प्रफुल्ल’ नाम आ ‘प्रफुल्लित’ विशेषणक निकटता भाषाक हलुक खेल उत्पन्न करैत अछि। लेखक पाठक कैं पहिने श्रोता-मण्डलीक परिचय दैत छथि; साहसिक कथा तकर बाद आरम्भ होइत अछि।

प्रफुल्लक बाबीक व्यक्तित्व आर्थिक साधारणता, संयुक्त परिवार, अनुशासन आ स्नेहक प्रसंगसँ निर्मित होइत अछि। बाबी परिवारक वरिष्ठ सदस्य छथि, मुदा हुनक कथात्मक शक्ति आधिकारिक पदसँ नहि, अनुभव आ आत्मीयतासँ अबैत अछि। बच्चासभक उत्सुकता बतबैत अछि जे कथा घरक नित्य-व्यवहारक भाग बनि सकैत अछि।

एहि खण्डमे घरेलू जीवनक अपेक्षाकृत दीर्घ चित्रण एकटा स्पष्ट रचनात्मक चुनाव अछि। एक दिशामे ई राजसी साहसिक आख्यानक लेल आत्मीय भूमि तैयार करैत अछि; दोसर दिशामे मुख्य संघर्षक उद्घाटन स्थगित करैत अछि। कथा जल्दी शुरू होयबाक अपेक्षा रखनिहार पाठक लेल ई विलम्ब अनुभव भऽ सकैत अछि। तथापि बाल-पाठकक सामाजिक सन्दर्भ कैं प्रमुख स्थान देबाक कारण ई आरम्भ उपन्यासक सांस्कृतिक मौलिकताक आधार अछि।

खण्डक अन्तमे बाबी आ बालकक बीच जिज्ञासा-विरामक सम्बन्ध स्थापित भऽ चुकैत अछि। एतय आरम्भिक ‘चौखट’ कथाक बाहरी सजावट नहि, बल्कि आगामी दसू खण्डक अर्थ-निर्माणक विधान बनि जाइत अछि।

दोसर खण्ड : गुमनाम राजकुमार, विपत्ति आ कथा-पुनःस्मरण

दोसर खण्डक आरम्भमे श्रोता अपन सुनल खिस्साक पुनः माँग करैत अछि। प्रफुल्लक कथन “बाबी ! हम तँ पूरा खिस्सा नहि सुनि सकलहुँ” (मिश्र, २०१९: ३०) कथावाचनक

महत्त्वपूर्ण पक्ष खोलैत अछि: कथा बुझबाक लेल श्रोता बीचक छूटल कड़ी पुनः प्राप्त करय चाहैत अछि। बाबी बच्चासभक एहि आवश्यकता कैं स्वीकार करैत छथि।

भीतरक कथामे सुजीत अनजान वनमे संकटसँ जूझैत छथि। अपरिचित व्यक्ति, वनक खतरनाक भूगोल आ आश्रयक प्रश्न राजकुमारक राजकीय पहिचान कैं अस्थायी रूपसँ निष्प्रभावी बनबैत अछि। ओ राजवंशक बलपर नहि, अपन सावधानी आ प्रयत्नक बलपर आगाँ बढ़ैत छथि।

सर-सुल्तानसँ जुड़ल प्रसंगमे आश्रयक संग सूचनाक संकट उपस्थित होइत अछि। जे व्यक्ति अपन वास्तविक परिचय नहि खोलैत अछि, ओकरा लेल सहयोग प्राप्त करब सेहो कठिन अछि। एतय गुप्त पहिचान केवल रोमांचक युक्ति नहि; सुरक्षा आ विश्वासक बीच तनावक स्रोत अछि।

दोसर खण्डक उपलब्धि ई अछि जे नायकक विपत्ति कैं पाठकक कल्पनामे स्थिर करैत अछि। सीमा ई जे साहसक बहुल वर्णनक बीच भय, सन्देह आ व्यक्तिगत दुर्बलताक अन्तरंग अनुभूति आओर उभरि सकैत छल।

तेसर खण्ड : राजकीय पतनक इतिहास आ खलनायकक निर्माण

तेसर खण्डमे कथा राजकुमारक यात्रासँ हटि राजनीतिक पूर्ववृत्त देखबैत अछि। प्रारम्भमे स्पष्ट सूचना भेटैत अछि: "राजा सुजान सिंह टीकमगढ़क राजा छलाह" (मिश्र, २०१९: ३८)। जुआ, मद्यपान आ विलासक कारण हुनक आर्थिक आ राजकीय स्थिति बिगड़बाक उल्लेख सत्ता आ चरित्रक सम्बन्ध कैं नूतन दिशा दैत अछि।

एहि स्थानपर पाठक बुझैत अछि जे सुजीतक व्यक्तिगत संकट एक पृथक दुर्घटना नहि; वंशीय सम्बन्ध, सत्ता-व्यवस्था आ पूर्ववर्ती राजकीय निर्णयक व्यापक जालक परिणाम अछि। नयनावतीक पूर्ववृत्त आ राजपरिवारक सम्बन्ध उद्घाटित भेला सँ दरबारी षड्यन्त्रक कारण क्रमशः स्पष्ट होइत अछि।

नायकक अभियानक बीच विरोधी शक्तिक इतिहास जोड़बाक शिल्प कथाक विस्तारक उदाहरण अछि। मुदा राजा सुजान सिंहक दुर्बलताक चित्रण नैतिक संकेत बहुत स्पष्ट करैत अछि। जुआ आ मद्यपानक दोष राजकीय पतनक कारण बनैत अछि; सामाजिक-आर्थिक कारणक विवेचन अपेक्षाकृत सीमित रहैत अछि।

एहि खण्डक आलोचनात्मक महत्त्व ई अछि जे रचनामे ‘दुष्ट’ पात्र अकस्मात् उत्पन्न नहि होइत छथि। हुनक स्वार्थक पाछाँ पूर्वघटना आ सम्बन्ध छथि। तथापि उपन्यास ओहि सम्बन्धसभकेँ आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपन्यासक गहराइधरि नहि लऽ जाइत अछि।

चारिम खण्ड : आश्रम, दिशानिर्देश आ शीर्षकक उद्घाटन

चारिम खण्डक आरम्भमे बाबी चारिम दिनक कथावाचनक चौखट बनेने राखैत छथि। राजकुमार सर-सुल्तानक सहायता पाबि राजमहलक षड्यन्त्रसँ अलग भऽ नव मार्ग खोजैत छथि। एकटा अदृश्य शक्ति द्वारा आगाँ बढ़ाओल जाएबाक अनुभूति कथा केँ यथार्थक सीमासँ अलौकिक लोककल्पनामे प्रवेश करबैत अछि।

महात्मा राजकुमारक मार्गदर्शक बनैत छथि। एहि गुरुपात्रक सम्बन्ध केवल उपदेश दैबाक नहि, बल्कि संकट बुझबाक, आगामी लक्ष्य निर्धारित करबाक आ आवश्यक साहस जुटेबाक अछि। तथापि गुरु द्वारा अत्यधिक पूर्वसूचना भेटलासँ नायकक खोजक अनिश्चितता किछु कम होइत अछि।

पुस्तकक शीर्षकक निर्णायक प्रसंग पृष्ठ ५३ मे उद्घाटित होइत अछि। महात्माक निर्देशानुसार वन, पहाड़ आ जलक कठिन यात्रा पश्चात् सरोवरक मध्य स्वर्ण-कमल प्राप्त करबाक अछि। लेखक कहैत छथि जे स्वर्ण-कमल तोड़लापर मन्दिरक घण्टी बजत आ माँ कालीक आशीर्वाद प्राप्त होयत (मिश्र, २०१९: ५३)। ई दृश्य कथाक मुख्य जादुई साधनक उद्भव थिक।

‘स्वर्ण’ शब्द मूल्यवान वस्तुक बोध करबैत अछि, मुदा एहि फूलक उपयोग धन संचय लेल नहि, विपत्तिक प्रतिरोध लेल होइत अछि। एकरा प्रयत्नपूर्वक अर्जित रक्षाशक्तिक

प्रतीक पढ़ल जा सकैत अछि। तथापि ई व्याख्या पाठकक आलोचनात्मक अर्थनिर्माण अछि; पुस्तक स्वयं चमत्कारक व्यावहारिक कथात्मक कार्यपर अधिक जोर दैत अछि।

पाँचम खण्ड : नयनावतीक सत्ता-प्रयोग आ शमशेर-जालिमक उभार

पाँचम दिन श्रोता सीधे प्रश्न उठबैत अछि जे सुजीतक माता-पिताक स्थिति की भेल आ राजकुमारक आगाँक गन्तव्य की थिक। बाबीक उत्तरसँ स्पष्ट होइत अछि जे सुजीतक संकट एक दिशामे नहि चलि रहल अछि; राजा रणवीर सिंह आ रानी सुनन्दा अलग दुःख भोगैत छथि, तखने नयनावतीक प्रभाव राज्यक शासनमे बढ़ैत अछि (मिश्र, २०१९: ५४)।

नयनावतीक स्वार्थमे शमशेर सिंह आ जालिम सिंह राजनीतिक उपकरण बनैत छथि। जालिम सिंहक चरित्रक सम्बन्ध जुआ, मद्य आ दुराचरणसँ जोड़ल गेल अछि। सत्ता प्राप्त करबाक कामना केवल व्यक्तिगत द्वेष नहि; राज्यक संसाधन आ प्रशासनपर नियन्त्रणक संघर्ष बनि जाइत अछि।

ई खण्ड देखबैत अछि जे शासकक निर्बलता सार्वजनिक जीवनमे अस्थिरता उत्पन्न करैत अछि। जखन राजकीय जिम्मेदारी निजी सुख आ दरबारी स्वार्थक अधीन भऽ जाइत अछि, तखन न्यायप्रिय उत्तराधिकारी दूर रहितो संघर्षक केन्द्र बनि जाइत अछि।

मुदा एहि विवेचनमे एगो आलोचनात्मक समस्या अछि। नयनावतीक राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा कैं मुख्यतः स्त्री-विरोधी 'दुष्ट रानी' प्रतिरूपक माध्यमसँ देखाओल गेल अछि। समस्या महत्त्वाकांक्षा स्वयं नहि, ओकर अनैतिक साधन अछि—एहि अन्तरकैं स्पष्ट रखलासँ पात्रक अर्थ अधिक सन्तुलित होइत।

छठम खण्ड : सत्ताक मनोविज्ञान आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व

छठम खण्डक आरम्भमे बाबी पिछला घटनाक पुनः स्मरण करबैत छथि। एहि खण्डसँ ठीक पहिने पुस्तकक एकटा सूक्ति ध्यान खींचैत अछि: "सत्ता आ स्वार्थमे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध होइत छैक" (मिश्र, २०१९: ६१)। ई वाक्य कथाक राजनीतिक नैतिकताक एकटा प्रमुख सूत्र अछि।

राजा, रानी, सेनानायक आ राजकुमारक व्यक्तिगत सम्बन्ध राज्यक सार्वजनिक नियतिकेँ प्रभावित करैत अछि। सत्ता पाबयवला व्यक्ति जँ अपन पदक उपयोग निजी स्वार्थ लेल करैत अछि तँ राजधर्म दूषित होइत अछि—एहि विचारक पुनरावृत्ति पूरे खण्डमे दृष्टिगोचर होइत अछि।

महत्त्वपूर्ण ई अछि जे राजकुमारक संघर्षक समाधान तत्काल नहि होइत अछि। कथा अलग-अलग पक्षक गतिविधि देखबैत अछि। पाठकक ध्यान नायकक वीरताक संग राज्यक अस्थिरता आ सामान्य लोकक सम्भावित क्षतिपर सेहो जाए लगैत अछि।

एहि खण्डमे उपन्यासक राजनैतिक आलोचनाक सम्भावना स्पष्ट होइत अछि; मुदा समाधानक कल्पना मूलतः सुयोग्य व्यक्तिक शासनमे केन्द्रित रहैत अछि। शक्ति पर संस्थागत नियन्त्रण, प्रजाक अधिकार आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक प्रश्न कथा बहुते कम खोलैत अछि।

सातम खण्ड : दीर्घ यात्रा, कल्लू राक्षस आ विशाखाक साक्ष्य

सातम खण्डमे कथा साहसिक रूपसँ सर्वाधिक विस्तृत होइत अछि। सुजीत महात्माक देल तलवार लऽ पहाड़, वन आ अनजान क्षेत्रक यात्रा पर निकलैत छथि। पहिल पृष्ठमे ठहरबाक मनाही आ सतत आगाँ बढ़बाक आग्रह अछि। “कतहुँ ठहरबाक नहि अछि” (मिश्र, २०१९: ६७)—एहि छोट निर्देशमे अभियानक समयगत तनाव आ लक्ष्य-केन्द्रितता समाहित अछि।

यात्रामे प्राकृतिक परिवेश केवल सजावट नहि रहैत अछि; पहाड़, जल, अपरिचित मार्ग आ वनराजि नायकक क्षमता जाँचबाक माध्यम बनैत अछि। भूख-प्यास, विश्राम आ सावधानीक प्रसंग वीरताकेँ पूर्णतः अलौकिक होमयसँ बचबैत अछि।

श्रीधरपुरक कल्लू राक्षसक आतंक नायकक निजी संकटसँ कथाकेँ सार्वजनिक उद्धारक दिशामे मोड़ैत अछि। कल्लू लोक केँ भयभीत करैत अछि आ कुमारिकासभक अपहरणक कथा सोझाँ अबैत अछि। सुजीतक हस्तक्षेप एहि कारण महत्त्वपूर्ण अछि जे एतय ओ अपन राजमुकुट नहि, अपरिचित लोकक सुरक्षा लेल संघर्ष करैत छथि।

विशाखा द्वारा कल्लूक अतीत उद्घाटित होइत अछि। ओ बतबैत छथि जे कल्लूक जन्म आ विकृति पीढ़ीगत अनुभव आ प्रतिशोधसँ जुड़ल अछि (मिश्र, २०१९: ८१–८३)। हिंसक पात्रक पूर्वकथा एकटा जटिल प्रश्न उठबैत अछि: अन्याय भोगनिहार स्वयं कखन अन्यायक स्रोत बनि जाइत अछि? कथाक उत्तर अन्ततः राक्षसक दमनक पक्षमे अछि; ओकर सामाजिक कारणक विश्लेषण अधिक विकसित भऽ सकैत छल।

एहि खण्डक प्रमुख उपलब्धि साहस आ परोपकारक संगम अछि। संगहि, बाल-पाठकक भावनात्मक संवेदनशीलताकेँ ध्यानमे रखैत हिंसक दृश्यसभक तीव्रता पर विचार जरूरी अछि।

आठम खण्ड : वापसीक तैयारी, गुप्त पहिचान आ प्रतिरोधी सहयोग

आठम खण्डमे बाबी कथाकेँ नव ‘पड़ाव’ पर राखैत छथि। राजकुमार अपन उद्देश्यक पूर्तिक दिशामे पुनः आश्रम आ राजनीतिक घटनाक संग जुड़ैत छथि। महात्मा हुनका सुमेरगढ़ जायब, अपन पहिचान गुप्त रखब आ विरोधीक शक्ति बुझि काज करबाक सलाह दैत छथि (मिश्र, २०१९: ८४)।

गुप्त पहिचान एतय केवल रोमांचक भेषबदल नहि, राजनीतिक रणनीति बनैत अछि। शक्तिसम्पन्न शत्रुक सोझाँ तुरन्त प्रत्यक्ष होयब विनाशकारी भऽ सकैत अछि; धैर्य आ सूचना-संग्रह साहसक आवश्यक अङ्ग बनैत अछि। एहि तरहेँ वीरताक अर्थ निर्बाध आक्रमणसँ हटि विवेकपूर्ण संगठन धरि विस्तृत होइत अछि।

भवानीशंकर आ मुरमुर सन पात्रसभक प्रसंग दरबारी विरोधक भीतर वैकल्पिक राजनीतिक चेतना देखबैत अछि। झूठा आरोप, पदसत्ताक दुरुपयोग आ बेगुनाहक रक्षा करबाक प्रसंगसँ लोकसमर्थनक प्रश्न उठैत अछि (मिश्र, २०१९: ८५–८७)।

एहि खण्डक सीमामे ई देखल जा सकैत अछि जे लोकसमर्थनक सामाजिक आधार ततेक विस्तार नहि पबैत अछि जतेक राजकीय षड्यन्त्रक व्यक्तिगत जाल। तथापि नायकक सफलता अलग-थलग बाहुबल नहि, सामूहिक सहयोगपर निर्भर होयबाक संकेत महत्त्वपूर्ण अछि।

नवम खण्ड : कलानाथ आ ग्रामीण लोक-चेतनाक प्रवेश

नवम खण्डक आरम्भ राजापुरक गृहस्थ कलानाथसँ होइत अछि। ओकरा "बहुत मेहनती" कहि किसान-जकाँ श्रमपर आधारित सामान्य जीवनक परिचय देल गेल अछि (मिश्र, २०१९: ८९)। ई आरम्भ राजमहल, आश्रम आ राक्षसक किलासँ हटि गामक संसारमे प्रवेश करबैत अछि।

कलानाथक माध्यमसँ उपन्यास प्रजा, पंचायत, सामाजिक प्रतिष्ठा आ अन्यायपूर्ण दमनक सम्भावना कैं मूर्त रूप दैत अछि। राजकीय संघर्षक प्रभाव केवल राजवंशपर नहि, सामान्य ग्रामीण व्यक्तिपर सेहो पड़ैत अछि—ई नवम खण्डक महत्त्वपूर्ण विस्तार अछि।

पछिला घटनामे कल्लूक उपरान्त आगाँक अभियान, राम-लक्ष्मणक सहायताक प्रसंग आ राजनीतिक स्थिति बुझबाक प्रयास जुड़ैत अछि। एतय सहायता केवल राजकीय सेना वा महात्माक अलौकिक शक्तिसँ नहि, साधारण लोकक तत्परतासँ सेहो भेटैत अछि।

कलानाथक चरित्रक साहित्यिक महत्त्व ओकर सामाजिक स्थिति मे अछि। उपन्यासक राजनीतिक केन्द्र राजमुकुट होइतहुँ लोक-जीवनक अवलम्बनक बिना नायकक अभियान पूर्ण नहि होइत। एहि संकेतक अधिक विस्तार भेल रहितय तँ कृति केवल आदर्श राजधर्मक कथा नहि, प्रजा-आधारित नैतिक राजनीतिपर सेहो अधिक स्पष्ट विचार कऽ सकैत छल।

दशम खण्ड : परिचयक उद्घाटन, न्याय आ कथाचौखटक पूर्णता

दशम खण्डक आरम्भ राहुलक प्रश्नसँ होइत अछि—"आइ की सुनायब ?" (मिश्र, २०१९: ९४)। बाबी बतबैत छथि जे राजकुमार सुमेरगढ़मे प्रवेश आ अपहृत बालिकासभक उद्धारक कथा सुनबैत छथि। एहि उद्घोषणासँ अन्तिम खण्डक गति आ अपेक्षा दुनू तीव्र होइत अछि।

राजकुमार गुप्त सहयोग, राजनीतिक जानकारी आ लोकसमर्थनक आधारपर सुमेरगढ़क अवस्थाक सामना करैत छथि। सर-सुल्तानसँ संवादमे सुजीतक कथन महत्त्वपूर्ण अछि —"हम एहि लेल अपनेकैं बाध्य नहि क' सकैत छी" (मिश्र, २०१९: ९७)। एहि छोट

वाक्यमे सहयोग आ स्वीकृतिक बीच नैतिक अन्तर स्पष्ट होइत अछि। विजयक महत्त्व केवल शत्रु-संहार नहि, साथी कैँ विवश नहि करबाक विवेक सेहो अछि।

अन्तिम घटनामे राजकुमारक वास्तविक परिचय, शत्रुपक्षक विफलता, राजपरिवारक पुनर्मिलन आ नयनावतीक अपराध-स्वीकार कथाकैँ समापन दिस लऽ जाइत अछि। राजकुमारी जावेदासँ सम्बन्ध सेहो अन्तिम समाधानक भाग बनैत अछि। तथापि राजनीतिक व्यवस्था आ दण्ड-न्यायक जटिलता अपेक्षाकृत कम समयमे सिमटि जाइत अछि।

सभसँ महत्त्वपूर्ण ई जे राजकुमारक कथा समाप्त भेलापर घरेलू कथा-मण्डली फेर सोझाँ अबैत अछि। राहुल आ दोसर नेना अनुभवक अर्थक सम्बन्धमे प्रतिक्रिया दैत छथि। राजमहलक विशाल संसारक अन्ततः बाबीक बोलीमे समा जायब उपन्यासक मुख्य सांस्कृतिक उपलब्धि अछि।

कथाक भीतर कथा : शिल्प, समय आ श्रोताक सक्रियता

'स्वर्ण-कमल'क बाह्य कथाचौखट आ भीतरी राजकुमारक आख्यान कैँ अलग-अलग पढ़ला पर ओकर महत्त्वपूर्ण शिल्पगत अन्तर्सम्बन्ध छूटि जाइत अछि। बाबीक भूमिका कथावाचनक निरन्तरता रखब, बिसरल प्रसंग पुनः जोड़ब, अगिला घटनाक पूर्वसूचना देब आ नेनासभक प्रतिक्रियाक आधारपर खिस्सा बढ़ेबाक अछि। एहि व्यवस्थामे कथा केवल लिखित पाठ नहि रहि, सामूहिक श्रवणक अनुभव बनैत अछि।

दश खण्डक क्रम दिनक आवर्तनसँ सम्बन्धित अछि। श्रोता-बालक रोज नव प्रश्नक संग अबैत अछि। समयक ई विभाजन आधुनिक धारावाहिक कथाक उत्सुकता-जाग्रत करबाक तकनीकसँ साम्य रखैत अछि, मुदा ओकर सांस्कृतिक मूल घरेलू मौखिक परम्परामे अछि। अध्यायक अन्त कथा कैँ सम्पूर्ण समाप्त नहि करैत अछि; ओ अगिला सुनवाईक अपेक्षा बनबैत अछि।

ऐडन चेम्बर्सक बाल-पाठकक चर्चा-आधारित पढ़ाइ सम्बन्धी सिद्धान्तक आलोकमे देखी तँ पाठक प्रश्न कऽ, अनुभव साझा कऽ आ अपूर्ण जानकारीक सम्बन्धमे तर्क कऽ कथाक अर्थ बनबैत अछि (Chambers, 1993)। 'स्वर्ण-कमल'क बच्चासभ एहि सक्रिय पाठकीयताक पूर्वरूप देखबैत अछि। मुदा बाबीक कथात्मक अधिकार बहुत प्रबल अछि; ओ कतेको ठाम नैतिक निष्कर्ष स्वयं दैत छथि। एहि कारण बातचीतक स्वतन्त्रता आ उपदेशक एकरेखीयता बीच तनाव बनल रहैत अछि।

कथाविज्ञानक दृष्टिसँ ई अन्तःस्थ आख्यान (कथाक भीतर कथा) थिक। भीतरी घटनासभक काल आ बाहरी वाचन-काल अलग अछि, मुदा बच्चासभक जिज्ञासा दुनू कैं जोड़ि रखैत अछि। एहि द्विस्तरीय रूपक परिणामस्वरूप उपन्यास केवल राजकुमारक कहानी नहि, कहानी सुनबाक सांस्कृतिक स्थितिक सेहो दस्तावेज बनि जाइत अछि।

पात्रक विन्यास : नैतिक नायकसँ जटिल विरोधी धरि

सुजीतक चरित्रक आरम्भिक परिचय राजवंशीय उत्तराधिकारीक अछि; मुदा कथा हुनका राजमहलक सुरक्षा सँ बाहर निकालि दैत अछि। वन, भूख-प्यास, अनिश्चित मार्ग आ छद्म परिचयक दबावमे हुनक कर्मक परीक्षा होइत अछि। न्यायप्रियता ओतबे अर्थवान अछि जतेक ओ संकटग्रस्त अपरिचित लोकक सहायता करैत छथि। कल्लू-विरोधी अभियान एहि कारण व्यक्तिगत प्रतिशोधक सीमा तोड़ैत अछि।

मुदा सुजीतक नैतिक छवि अत्यधिक निष्कलुष अछि। जटिल चूकि, दीर्घ आत्मसन्देह आ गहिर आत्मालोचनाक प्रसंग सीमित छथि। मारिया निकोलायेवाक चरित्र-अध्ययनक भाषा उपयोग करी तँ कथाक प्रेरक 'कार्यपरक' नायक आ गहिर 'अन्तर्मन-प्रधान' पात्रक बीच अन्तर देखल जा सकैत अछि (Nikolajeva, 2002)। सुजीतक साहस पाठक कैं प्रेरित करैत अछि, मुदा ओकर दुर्बलता अधिक देखाओल जाइत तँ सम्बन्ध आओर मानवीय बनितय।

बाबी उपन्यासक सांस्कृतिक नायिका छथि। हुनक अधिकार न धनसँ, न राजकीय बलसँ; ओ मातृभाषाक जीवित स्मृति, अनुभव, अनुशासन आ आत्मीय सम्बोधनसँ बनैत अछि। एहि रूपमे बाबी चरित्र मात्र नहि, साहित्यिक परम्पराक प्रतीक छथि।

नयनावती सत्ताक स्वार्थपूर्ण उपयोगक प्रतिनिधि छथि। हुनक योजनाक प्रभाव सार्वजनिक जीवनपर पड़ैत अछि। अन्तिम पश्चात्तापक कारण ओ निरन्तर दुष्ट रहनिहार पात्र नहि; परिवर्तन सम्भव अछि। तथापि परिवर्तनक क्रम अधिक विस्तार पाबितय तँ मनोवैज्ञानिक विश्वसनीयता मजबूत होइत।

शमशेर सिंह आ जालिम सिंह व्यक्तिगत स्वार्थकेँ संस्थागत शक्तिसँ जोड़ैत छथि। सैनिक अधिकार आ शासन-यन्त्र जखन निजी महत्त्वाकांक्षाक साधन बनैत अछि, तखन रक्षक स्वयं संकट बनि जाइत अछि। राजा रणवीर सिंहक संकट आ रानी सुनन्दाक करुण अवस्था एहि दुरुपयोगक पारिवारिक परिणाम देखबैत अछि।

महात्मा गुरु, रणनीतिकार आ लोककथात्मक 'दाता' प्रकार्यक संगम छथि। ओ सुजीतकेँ आवश्यकता अनुसार दिशा, सूचना आ शक्ति-स्रोत प्रदान करैत छथि। कल्लू विपरीत ध्रुवपर अछि, मुदा ओकर इतिहास बतबैत अछि जे हिंसक पात्रक उत्पत्ति सेहो अतीतक सम्बन्धसँ जुड़ि सकैत अछि। विशाखा एकटा स्मृति-साक्षीक रूपमे ओहि इतिहास केँ उद्घाटित करैत छथि।

सर-सुल्तान, भवानीशंकर आ कलानाथ कथाकेँ एकल वीरगाथा बनबासँ रोकैत छथि। सुजीतक सफलता सहयोग, सूचना आ लोकसम्बन्धपर निर्भर अछि। एहि पात्रसभक कारण ई स्पष्ट होइत अछि जे साहस सदा एकाकी संघर्ष नहि; दूसरक विश्वास अर्जित करब सेहो ओकर हिस्सा अछि।

स्त्री-पात्र, मातृत्व आ सत्ताक लैंगिक राजनीति

रानी सुनन्दा आ नयनावतीक विरोध कथाक परम्परागत 'सद्गुणी माता बनाम दुष्ट विमाता' संरचना पुनः उपस्थित करैत अछि। ई लोककथामे परिचित युक्ति अछि, मुदा

साहित्यिक आलोचनाक लेल एतय पूछब आवश्यक अछि जे स्त्रीक सत्ताकांक्षा कैं अनैतिकता सँ केना अलग कयल जाए। नयनावतीक समस्या सत्ताक अभिलाषा नहि, ओहि अभिलाषाक पूर्तिक लेल छल, षड्यन्त्र आ अन्याय अपनब अछि।

बाबी स्त्री-अनुभवक दोसर रूपक प्रतिनिधित्व करैत छथि। हुनक पास वैधानिक राजसत्ता नहि, मुदा कथा पर हुनक पूर्ण सांस्कृतिक अधिकार अछि। परिवारक भीतर ज्ञानसंचरणक ई अधिकार नयनावतीक कठोर राजनीति सँ पूर्णतः भिन्न अछि। ई तुलना देखबैत अछि जे उपन्यास स्त्रीकैं केवल एक नैतिक रूपमे सीमित नहि रखैत अछि।

विशाखा कल्लूक अतीतक जानकारी दैत छथि; हुनक वाणी कथाकैं स्मृति आ कारणक स्तर प्रदान करैत अछि। राजकुमारी जावेदाक उपस्थिति सेहो स्त्री-संसारक विस्तार करैत अछि। तथापि निर्णायक युद्ध, अभियान आ राजकीय समाधानक नेतृत्व लगभग सम्पूर्णतः पुरुष पात्रसभक हाथमे अछि।

समकालीन बाल-पाठिकाक दृष्टिसँ जावेदाक स्वतंत्र निर्णय, विशाखाक स्वयंप्रेरित सामाजिक प्रतिरोध अथवा सुनन्दाक राजनीतिक विवेक अधिक विकसित भऽ सकैत छल। एहन सम्भावना देखेनाइ कृतिक ऐतिहासिक रूपपर वर्तमान नैतिक फैसला थोपनाइ नहि; ई उपन्यासक भीतर निहित किन्तु अल्पविकसित रचनात्मक सम्भावनाक निदर्शन थिक।

स्वर्ण-कमल, तलवार, वन आ किला : प्रतीकक अर्थक्षेत्र

कमल भारतीय सांस्कृतिक चिन्तनमे पवित्रता, सुन्दरता आ प्रतिकूल परिस्थितिमे खिलबाक क्षमता सँ जुड़ल प्रतीक थिक। एहि सामान्य सांस्कृतिक अर्थकैं उपन्यासपर यांत्रिक ढंगसँ आरोपित नहि करबाक चाही। मूल पाठमे स्वर्ण-कमलक प्राथमिक कार्य अलौकिक संरक्षण आ नायकक आगामी अभियानक सशक्तीकरण थिक (मिश्र, २०१९: ५३)। ओकर प्रतीकात्मक अर्थ एहि कथात्मक कार्यसँ विकसित होइत अछि।

‘स्वर्ण’ शब्द धन आ दुर्लभताक बोध करबैत अछि; तथापि नायक एकरा निजी समृद्धि लेल नहि रखैत छथि। एतय मूल्यवान वस्तुक मूल्य उपयोगक नैतिक लक्ष्यसँ जुड़ि जाइत अछि। स्वर्ण-कमल एही कारण अनैतिक स्वर्णलोभक विपरीत ध्रुव बनि सकैत अछि।

तलवार साहसिक लोककथाक संघर्ष-साधन अछि, मुदा गुरु द्वारा देल गेल तलवारक संग सावधानीक निर्देश सेहो अछि। शस्त्रक शक्ति विवेकक अधीन होयबाक आग्रह कथामे बिखरल अछि, यद्यपि हिंसा आ आत्मरक्षाक सीमा अधिक सुस्पष्ट होयबाक आवश्यकता छल।

वन एकटा सीमांत-स्थान अछि जतय राजसत्ता आ परिचित सामाजिक क्रम क्षीण होइत अछि। राजकुमार कैं बचेबाक लेल अपन अनुभव पर निर्भर रहय पड़ैत अछि। किला उलटाभाँति सत्ताक केन्द्र आ बन्दीक स्थान दुनू बनि सकैत अछि। सरोवरक मध्य कमल प्राप्त करब चुनौतीक पार जा कऽ नव शक्ति पाबबाक रूपक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

प्रॉपक प्रकार्य-सिद्धान्त आ आख्यानक संरचनात्मक साम्य

व्लादिमीर प्रॉप ‘Morphology of the Folktale’ मे लोककथाक पात्रसभसँ बेसी हुनक कथात्मक कार्य अथवा ‘प्रकार्य’क अध्ययन करैत छथि (Propp, 1968)। ‘स्वर्ण-कमल’मे प्रारम्भिक संकट, नायकक बहिष्करण, मार्गदर्शकसँ भेट, विशेष साधनक प्राप्ति, यात्रा, शत्रु-संघर्ष, गुप्त परिचय, पहिचानक उद्घाटन आ पुनर्स्थापनाक क्रम एहि पद्धतिसँ पढ़ल जा सकैत अछि।

एहि क्रममे नयनावती-शमशेर-जालिम विरोधी शक्तिक कार्य करैत छथि; महात्मा दाता आ मार्गदर्शकक; स्वर्ण-कमल जादुई साधनक; सुजीत संघर्षरत नायकक; आ राज्यक पुनर्स्थापना अन्तिम समाधानक। मुदा प्रॉपक प्रत्येक प्रकार्य प्रत्येक कथामे उपस्थित होइत अछि—एहन दावा नहि अछि। संरचनात्मक साम्य कृतिक व्याख्या सहज बनबैत अछि, एकरा कोनो यूरोपीय लोककथाक प्रतिलिपि सिद्ध नहि करैत अछि।

वास्तविक महत्त्व एहि बातमे अछि जे लेखक लोककथात्मक घटना-क्रमकेँ लम्बा उपन्यासक भीतर विस्तार दैत छथि। खलनायकक अनेक स्तर, सहायकक विविध प्रकार आ बाहरी कथावाचिका एहि संरचनाकेँ सामान्य एकल लोककथासँ अधिक जटिल बनबैत अछि।

रस, दृश्यात्मकता आ बालकक कल्पनाशक्ति

कथाक प्रधान भाव वीरताक अछि। राजकुमारक भयावह यात्रा, दमनकारी शक्तिसँ मुठभेड़ आ प्रजाक रक्षाक प्रयास वीर रसक आधार छथि। मुदा वीरता केवल बलप्रयोग नहि: गुप्त रूपमे रहि सूचना बुझब, मित्र बनायब आ साथी पर बाध्यता नहि थोपब सेहो साहसक विवेकपूर्ण रूप थिक।

अद्भुत रस स्वर्ण-कमल, माँ कालीक संरक्षण, महात्माक विशेष ज्ञान आ राक्षसक प्रसंगसभसँ उत्पन्न होइत अछि। भयानक रस कल्लूक किला, अपहरण, वनक जोखिम आ षड्यन्त्रमे अछि। करुण रस सुनन्दा आ सुजीतक बिछोह, राजा रणवीर सिंहक संकट तथा सामान्य लोकक पीड़ामे स्पष्ट होइत अछि। अन्तिम पुनर्मिलन तनावक शमनक दिशामे बढ़ैत अछि।

लेखकक दृश्यात्मक संसारमे नदी, पहाड़, सरोवर, वन आ किला अछि; ई सभ मुख्यतः गति आ रोमांच उत्पन्न करैत अछि। स्थानीय प्राकृतिक इतिहास, मौसम, लोकवनस्पति आ मिथिलाक विशिष्ट भूगोलक गहिर विवरण अपेक्षाकृत कम भेटैत अछि। कथाक साहसिक स्वभाव एहन सङ्क्षेपक किछु औचित्य दैत अछि, मुदा मातृभाषा आ क्षेत्रीय परिवेशक बीच अधिक सघन सम्बन्ध उपन्यासकेँ विशिष्ट स्थानीय रूप दऽ सकैत छल।

नैतिक दर्शन : न्याय, क्षमा, सहमति आ सत्ता

उपन्यासक नैतिक आग्रह अन्यायक विरुद्ध सक्रिय प्रतिरोध अछि। सुजीत केवल अपमान सहि निष्क्रिय प्रतीक्षा नहि करैत छथि। ओ तैयारी करैत छथि, साहस जुटबैत छथि,

सहायता लैत छथि आ संकटग्रस्त लोकक रक्षा करैत छथि। एही कारण उपन्यासक सदाचार केवल कथन नहि, कर्मसँ जुड़ल अछि।

तथापि न्याय आ प्रतिशोधक अन्तर सदिखन पर्याप्त स्पष्ट नहि अछि। कल्लूक विनाश, षड्यन्त्रकारीक दमन आ राजवंशीय उत्तराधिकारक पुनर्स्थापना एक संग घटैत अछि। बालकसँ एहि प्रसंगपर चर्चा करैत समय पूछल जा सकैत अछि: आत्मरक्षाक लेल बलप्रयोग कखन आवश्यक अछि? अपराध स्वीकार करबाक बाद कतेक क्षमा उचित अछि? व्यक्तिगत क्षमा आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व समान अछि कि अलग?

नयनावतीक अन्तिम पश्चात्ताप उपन्यासक करुण-नैतिक पक्ष खोलेत अछि। व्यक्तिक परिवर्तन सम्भव अछि—ई आशावादी दृष्टि बाल-साहित्यक लेल उपयोगी अछि। मुदा राजकीय षड्यन्त्रसँ सामान्य लोक कैं भेल क्षतिक न्यायिक समाधान व्यक्तिगत क्षमासँ स्वतः पूरा नहि होइत। उपन्यास एहि अन्तरक गहिर विवेचन नहि करैत।

सहमतिक प्रश्न अन्तिम खण्डमे उजागर होइत अछि। सर-सुल्तानसँ संवादमे सुजीतक 'बाध्य नहि' करबाक कथन बतबैत अछि जे साथीकैं स्वतन्त्र इच्छा देनाइ नैतिक नेतृत्वक गुण अछि (मिश्र, २०१९: ९७)। ई प्रसंग एकरा सरलीकृत 'तलवारक नायक'सँ बेसी विचारशील पात्र बनबैत अछि।

राज्यक अन्तिम पुनर्स्थापना आदर्श राजधर्मक रूपमे प्रस्तुत अछि। आधुनिक लोकतान्त्रिक अर्थमे नागरिक संस्थाक जवाबदेहीक चित्र अपेक्षाकृत कम अछि। उपन्यासक राजनीतिक कल्पना मुख्यतः सुयोग्य शासकक नैतिकता पर आश्रित अछि। एहि सीमा कैं मानैतहुँ कथा पदसत्ताक दुरुपयोगक तीव्र आलोचना करैत अछि, जे एकर महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

बाल-मनोविज्ञान, पठन-अनुभव आ शैक्षिक उपयोगिता

कथाक भीतर नेनासभक उत्सुकता ई मानैत अछि जे बच्चा केवल आदेश माननिहार प्राणी नहि, प्रश्न पूछनिहार पाठक अछि। प्रफुल्लक छूटल प्रसंग पुनः सुनबाक आग्रह,

विमलाक शंका आ राहुलक प्रश्न सामूहिक पठनक बहुरंगी रूप बनबैत अछि। एतय चर्चा, स्मरण, अनुमान आ अन्तिम प्रतिक्रिया—चारू प्रक्रिया बालकक अर्थ-निर्माणसँ सम्बन्धित अछि।

कथाक साहसिक संरचना भय कैं पूर्णतः समाप्त नहि करैत; ओ भयक बीच निर्णय लेबाक अवसर रचैत अछि। राजकुमार अकेला पड़ैत छथि, गलत व्यक्तिक भेट भऽ सकैत अछि, आश्रय अनिश्चित होइत अछि। एहि प्रकारक प्रसंग बच्चाक भीतर आत्मविश्वास आ सावधानीक बीच सम्बन्धक कल्पना विकसित करयमे सहायक होइ सकैत अछि। तथापि कल्लूक हिंसा आ अपहरणक प्रसंग सम्भावित बाल-पाठकक उमेर आ संवेदनशीलता अनुसार सन्दर्भित कयल जाएबाक चाही।

बाल-पठनक आधार उमेर मात्र नहि, भाषिक दक्षता, श्रवण-अनुभव आ भावनात्मक तैयारी सेहो अछि। माध्यमिक विद्यालयक पूर्वार्द्धसँ किशोरावस्थाधरिक पाठक लेल ई कृति उपयुक्त होयबाक सम्भावना अछि; छोट बच्चा लेल चुनल प्रसंगक सामूहिक कथावाचन अधिक उपयोगी होयत। ई पाठकीय मूल्यांकन अछि, प्रकाशकीय निश्चित आयु-वर्ग नहि।

मातृभाषामे एहन विस्तृत साहसिक उपन्यासक उपलब्धता भाषिक आत्मविश्वासक पक्षसँ विशेष महत्त्व रखैत अछि। मैथिली बालककैं इहो अनुभव होइत अछि जे अपन भाषामे महल, राक्षस, गुप्त अभियान, राजनीतिक द्वन्द्व आ आत्मीय घरेलू संवाद एकसंग विकसित भऽ सकैत अछि। एतय बाल-साहित्य मातृभाषाक रचनात्मक विस्तारक साधन बनैत अछि।

भाषाशैली, संवाद आ सम्पादकीय अनुशासन

उपन्यासक भाषा सहज कथावाचनक अनुकूल अछि। संवादक पर्याप्त उपयोग घटनाक गति बनौने रखैत अछि। बाबीक बोलबाक शैलीमे आत्मीयता अछि; राजकीय पात्रसभक भाषामे औपचारिकता आ अधिकारक बोध भेटैत अछि। भाषाक ई भिन्नता पाठक कैं दुनू संसारमे सहज प्रवेश दैत अछि।

एकर संग किछु शैलीगत सीमा सेहो अछि। अनेक अवसरपर पात्रसभक संवाद केवल कथानकक आवश्यक सूचना दैत अछि। कथावाचक अथवा महात्मा द्वारा घटनाक नैतिक अर्थ तत्काल स्पष्ट कयलासँ पाठकक स्वतन्त्र व्याख्याक अवसर कम होइत अछि। दृश्य-रचना आ अन्तर्मुखी अनुभूतिक अनुपात आओर सन्तुलित होइत तँ प्रभाव गहिर होइत।

सम्पादकीय दृष्टिसँ कतिपय विवरण आ पुनरावृत्ति सङ्क्षिप्त बनाओल जा सकैत अछि, मुदा मैथिली शब्दरूप, वाक्य-लय आ मौखिक स्वरपर अनावश्यक मानकीकरण उचित नहि। भाषाक स्वाभाविकता स्वयं कृतिक रचनात्मक सम्पत्ति अछि।

आलोचनात्मक सीमा आ मूल्यांकनक सन्तुलन

कृतिक पहिल सीमा कथाक दीर्घ प्रस्तावना अछि। घरेलू आरम्भ सांस्कृतिक रूपसँ सार्थक अछि, मुदा मुख्य साहसिक घटनाक प्रारम्भ अपेक्षाकृत देरमे होइत अछि। दोसर सीमा नायकक अत्यधिक आदर्शीकरण; सुजीतक मानवीय कमजोरी आ निर्णयगत भूलक अवसर सीमित अछि। तेसर सीमा जादुई संरक्षणपर निर्भरता, जे किछु ठाम मानवीय प्रयत्नक जटिलता सरल करैत अछि।

चारिम सीमा खलनायकक कारण-विकासक अपूर्णता अछि। नयनावती आ जालिम सिंह सत्ता-लोभक प्रतिनिधि स्पष्ट छथि, मुदा हुनक अन्तर्द्वन्द्व आ सामाजिक परिस्थिति अधिक गहराइ पाबि सकैत छल। कल्लूक अतीत एहि सरलीकरणकेँ तोड़बाक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा ओकरा बहुत विस्तार नहि भेटैत अछि।

पाँचम सीमा लैंगिक सक्रियताक असमान वितरण अछि। बाबी आ विशाखा अर्थनिर्माणमे निर्णायक छथि, मुदा शारीरिक अभियान आ राजनीतिक समाधानमे पुरुष नेतृत्व प्रमुख बनल रहैत अछि। छठम सीमा अन्तिम राज्यव्यवस्था आ दण्ड-न्यायक तीव्र समाधान अछि। पारिवारिक मेल-मिलापक बीच सार्वजनिक न्याय आ प्रजाक अधिकारक प्रश्न गौण रहि जाइत अछि।

एहि सीमा कैँ उल्लेख करब कृतिक अवमूल्यन नहि। साहित्यिक आलोचनाक उद्देश्य रचनाक वास्तविक संरचना आ ओकर सम्भावना दुनू कैँ देखेनाइ अछि। लोककथात्मक उद्देश्य, बाल-पाठकक रोमांचक आवश्यकता आ प्रकाशित मैथिली बाल-उपन्यासक ऐतिहासिक परिस्थिति ध्यानमे राखि मूल्यांकन करबाक चाही।

उपलब्धि : मैथिली बाल-उपन्यासक रचनात्मक विस्तार

‘स्वर्ण-कमल’क पहिल उपलब्धि मौखिक कथा-संस्कृतिक पुनर्स्थापना अछि। बाबी आ नेनासभक संग पठन-संबन्धक प्रस्तुति उपन्यासक मौलिक सांस्कृतिक स्वर बनबैत अछि। दोसर उपलब्धि अनेक खण्डमे फैलल निरन्तर साहसिक कथानक अछि, जाहिमे राजकुमारक यात्रा, राजकीय षड्यन्त्र, राक्षसक आतंक आ राज्यक पुनरुद्धार एक-दोसरसँ सम्बन्धित होइत अछि।

तेसर उपलब्धि साहसक नैतिक परिभाषाक विस्तार अछि। अपरिचितक सहायता, विश्वसनीय साथी बनायब, गुप्त सूचना जुटायब आ सहमतिक सम्मान करब वीरताक संग प्रस्तुत अछि। चारिम उपलब्धि अद्भुत, भयानक, वीर आ करुण अनुभूतिक मिश्रण अछि, जे बाल-पाठकक कल्पनाशक्ति कैँ विस्तृत करैत अछि।

पाँचम उपलब्धि मातृभाषाक गद्य-विस्तार अछि। राजदरबारक औपचारिक संवाद आ बाबीक आत्मीय मैथिली एकहि पुस्तकमे सह-अस्तित्व रखैत अछि। छठम उपलब्धि नैतिक प्रश्नक बहुलता अछि: कोना न्याय करब, ककर विश्वास करब, गलत रास्ता चुननिहार व्यक्तिक संग कोन व्यवहार उचित अछि आ अधिकारसँ बेसी महत्त्वपूर्ण पात्रता किएक अछि।

समग्र रूपमे कृति न केवल राजकुमारक विजयक कथा थिक, बल्कि बालकक सुनबाक, पूछबाक आ विचार करबाक अधिकारक साहित्यिक स्मरण सेहो अछि।

निष्कर्ष

‘स्वर्ण-कमल’ कैं मैथिली बाल-साहित्यक लोककथात्मक साहसिक उपन्यासक रूपमे चिन्हित करब सर्वाधिक न्यायसंगत अछि। एकर मूल गतिशीलता राजकुमारक संकटपूर्ण यात्रा मे अछि, मुदा सांस्कृतिक मौलिकता बाबी-प्रफुल्लक कथावाचन सम्बन्धमे। एही द्विस्तरीय संरचनासँ कृति मौखिक परम्पराक आत्मीयता आ मुद्रित उपन्यासक विस्तारित साहसिक संसारकैं एकसंग रखैत अछि।

सुजीतक विजय एकटा सरल ‘भलाइ बुराइ पर भारी’ प्रतिपादनसँ अधिक जटिल अर्थ ग्रहण करैत अछि। हुनक संघर्ष न्याय, विश्वास, सहयोग आ सहमतिक प्रश्न उठबैत अछि। संगहि, नायकक आदर्शीकृत रूप, चमत्कारक निर्णायक हस्तक्षेप, स्त्री-पात्रक सीमित स्वतंत्रता आ राजवंशीय समाधान आधुनिक आलोचनात्मक प्रश्न उठबैत अछि।

एहि अन्तर्विरोधसभक बावजूद पुस्तकक स्थायी साहित्यिक योगदान महत्त्वपूर्ण अछि। स्वर्ण-कमल शीर्षकक फूल कथा भीतर रक्षा आ आशाक साधन अछि; आलोचनात्मक अर्थमे ई मैथिली मातृभाषाक भीतर पीढ़ीसँ पीढ़ी चलैत कथा, स्मृति आ नैतिक कल्पनाक प्रतीक बनि उठैत अछि। राजमहलक आख्यान समाप्त भऽ जाइत अछि, मुदा बाबीक खिस्सा सुनबाक नेनासभक चाहना साहित्यक निरन्तरताक संकेत दैत अछि।

प्राथमिक स्रोत

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। २०१९। स्वर्ण-कमल (मैथिली बाल उपन्यास)। उपरदाहा, दरभंगा: गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच।

झा, योगानन्द। २०१९। ‘मैथिली बाल उपन्यास : स्वर्ण-कमल’। नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’, स्वर्ण-कमल, पृ. ५–१६। उपरदाहा, दरभंगा: गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच।

इतिहास आ संस्थागत सन्दर्भ

नवीन, देवशंकर। ‘मैथिली बाल साहित्य का विहंगम परिदृश्य’। गद्यकोश। (अवलोकन: २३ अक्टूबर २०२६)।

साहित्य अकादेमी। २०२३। List of Books Recommended for the Bal Sahitya Puraskar 2023, मैथिली अनुभाग। (अवलोकन: २३ अक्टूबर २०२६)।

साहित्य अकादेमी। ‘बाल साहित्य पुरस्कार (२०१०–२०२५)’, मैथिली पुरस्कार-प्राप्त कृतिसूची। (अवलोकन: २३ अक्टूबर २०२६)।

आलोचनात्मक आ सैद्धान्तिक सन्दर्भ

Propp, Vladimir. 1968. Morphology of the Folktale. 2nd ed. Translated by Laurence Scott; edited by Louis A. Wagner. Austin: University of Texas Press.

Nikolajeva, Maria. 2002. The Rhetoric of Character in Children’s Literature. Lanham, MD: Scarecrow Press.

Chambers, Aidan. 1993. Tell Me: Children, Reading & Talk. Stroud: Thimble Press.

समेकित निष्कर्ष

साहित्यिक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

बारह कृतिक एहि संयुक्त पठनसँ नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क लेखकीय पहिचान मुख्यतः समाजक आन्तरिक अन्तर्विरोधकेँ सार्वजनिक चर्चा बनएबाक प्रयत्नक रूपमे उभरैत अछि। कथा, उपन्यास, शब्दचित्र, गीत आ बाल-आख्यान जेकाँ भिन्न विधामे हुनकर भाषा आ कथन-विन्यास बदलैत अछि, मुदा मानवीय गरिमा, शिक्षा, अन्याय-विरोध आ लोकसम्बन्धक प्रति आग्रह स्थिर रहैत अछि।

समाजसुधारक प्रवृत्ति हुनकर रचनाक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि; ओकर सीमा तखन सोझाँ अबैत अछि जखन कथक वा पात्रक वाणी कलात्मक दृश्यकेँ दबा कऽ निष्कर्ष पहिनहिं निर्धारित कऽ दैत अछि। स्त्रीक अस्मिता, वंचित वर्गक जीवन, ग्रामीण संस्था आ आधुनिक प्रशासनक चित्रण प्रायः प्रश्न उपजाबैत अछि, जखन कि समाधान कतिपय प्रसंगमे पात्रक नैतिक दृढ़ताक सहारे अत्यधिक शीघ्र प्राप्त भऽ जाइत अछि। ई अन्तर प्रत्येक कृतिक आलोचनात्मक मूल्यांकनमे महत्त्व रखैत अछि।

मिथिलाक गाम आ शहर एतय विरोधी ध्रुव मात्र नहि छथि। स्मृति, शिक्षा, जीविका, प्रवास, राजनीतिक अनुभव आ सांस्कृतिक कर्मक मार्फत दूनूक बीच सतत आवागमन चलैत अछि। एहि सामाजिक भूमि पर नन्दक साहित्य मानवीय सम्बन्धकेँ अपन मुख्य मापदण्ड बनबैत अछि। ग्राम्य संस्कृति प्रतिकेँ स्नेह आलोचनाहीन मोह नहि बनय, आ आधुनिक संस्था प्रतिकेँ विश्वास तकर शक्ति-संरचनाक प्रश्नकेँ ओझरा नहि दे—एहि सन्तुलनमे अनेक रचनाक आलोचनात्मक सम्भावना निहित अछि।

‘काव्य सरिता’ आ ‘स्वर्ण-कमल’ लेखकक रचनात्मक विस्तारक विशेष प्रमाण अछि। पहिल पोथी गीतात्मक परम्परा, लोकधुन आ सार्वजनिक चेतनाकेँ एकठाम अनैत अछि; दोसर बाल-पाठकक लेल पारिवारिक कथावाचन आ साहसिक कल्पनाकेँ दीर्घ आख्यानमे

रूपान्तरित करैत अछि। एहि दुनूकेँ प्रौढ़ सामाजिक उपन्याससभक कसौटीपर यथावत् जाँचब उचित नहि; प्रत्येक विधाक अपन सौन्दर्यबोध आ पाठकीय अपेक्षा छैक।

समग्रतः नन्दक कृति-संसार मैथिली साहित्यक सामाजिक प्रश्न, लोकभाषी अभिव्यक्ति आ नैतिक कल्पनाकेँ अध्ययनक समृद्ध अवसर प्रदान करैत अछि। ओकर महत्त्व प्रशंसात्मक घोषणामे नहि, बल्कि ओहि प्रश्नसभमे अछि जे पाठककेँ समानता, न्याय, परिवार, सत्ता, नैतिकता आ भाषिक संस्कृतिक सम्बन्ध फेरसँ विचारबाक लेल बाध्य करैत अछि।

सन्दर्भग्रन्थ आ साहित्यिक अभिलेख

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क अध्ययनाधीन कृतिसभ

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। गाम-घर।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। आडम्बर। २०१७।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। गुदड़ीक लाल।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। अनठिया कुकुर।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। सुजाता।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। सुकन्या। २०१९।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। परिवार। २०२१।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। दिल्लीक पार्क। २०१८।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। याचक के नञि। २०२२।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। महारानी कैकेयी।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। काव्य सरिता। २०१९।

मिश्र, नन्द कुमार ‘नन्द’। स्वर्ण-कमल। २०१९।

मैथिली साहित्यक अभिलेखीय सन्दर्भ

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका। मैथिली पोथीक सूची (पोथी)। https://videha-ejournal.github.io/videha/pothi.htm

विदेह। मैथिली गद्य : लेखक आ रचनाक सूची। https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm

विदेह। विदेह शिशु उत्सव : बाल-साहित्यक रचना आ ग्रन्थसूची। https://videha-ejournal.github.io/videha/kids.htm

विदेह। समानान्तर मिथिला एवं मैथिली साहित्येतिहास : लेखक, विधा आ साहित्यिक परम्पराक अभिलेख। https://videha-ejournal.github.io/videha/videha.htm

झा, हरिमोहन। कन्यादान। मैथिली उपन्यास।

नागार्जुन। पारो। मैथिली उपन्यास।

प्रेमचन्द। गोदान। हिन्दी उपन्यास।

नित नवल

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’

नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क बारह कृति — कथा, उपन्यास, शब्दचित्र, प्रवचनात्मक गद्य, कविता आ बाल-आख्यान — पर आधारित ई समग्र आलोचनात्मक अध्ययन चारि परस्पर सम्बद्ध खण्डमे लोकजीवन, स्त्री-अस्मिता, सत्ता, मिथकीय पुनर्विचार आ गीतक लोकधारा धरि पसरल अछि।

पहिल खण्ड
गाम-घर • आडम्बर

दोसर खण्ड
गुदड़ीक लाल • अनठिया कुकुर • सुजाता • सुकन्या • परिवार

तेसर खण्ड
दिल्लीक पार्क • याचक के नजि • महारानी कैकेयी

चारिम खण्ड
काव्य सरिता • स्वर्ण-कमल

www.videha.co.in
विदेह मुख्य जालवृत्त

videha-ejournal.github.io/videha
विदेह अभिलेख

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर • सम्पादक : विदेह

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६ • ISSN 2229-547X